तेलुगु

# श्री मौल्ल रामायणमु

भुवनवाणी ट्रस्ट लखनऊ-३

तेलुगु

# श्री मोल्ल रामायण

( नागरी लिप्यन्तरण-सहित हिन्दी अनुवाद )

मूल रचयिता

**मोल्ल**

अनुवाद एवं लिप्यन्तरण

**डॉ० सीएच्० रामुलु**

प्रकाशक

**भुवन वाणी ट्रस्ट**

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—२२६००३

प्रथम संस्करण—

१९७७ ई०

मूल्य– २०·०० रुपया

क्रमसंख्या 5717
प्राप्ति तिथि........
विभाग....
श्रेणी..........
STATE MUSEUM, LUCKNOW.

मुद्रक:—

**वाणी प्रेस**

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ–२२६००३

# समर्पण

भारतीय वाङ्मय रूपी

वटवृक्ष की तेलुगु शाखा की अनुपम कृति

'श्री मोल्ल रामायण' का यह

सानुवाद नागरी-लिप्यन्तरण, तेलुगु प्रदेश की

आदि कवयित्री उस भारतीय

कुम्हारिन महिलारत्न 'मोल्ल' की

पुण्य स्मृति में,

सादर समर्पित।

नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी सभापति

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| समर्पण— | ३ |
| विषय-सूची | ४-६ |
| भूमिका—महामहिम डॉ० एम० चेन्ना रेड्डी, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश | ७-८ |
| प्रकाशकीय | ९-१० |
| तेलुगु भाषा और लिपि डॉ० भीमसेन निर्मल | ११-१२ |
| अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार का वक्तव्य | १३-१४ |
| मोल्ल रामायण एवं मोल्ल का परिचय | १५-२४ |
| तेलुगु-देवनागरी वर्णमाला चार्ट | २५ |
| अवतरणिका, इष्टदेव-वन्दना | २७ |
| संस्कृत तथा आंध्र के महाकवियों की स्तुति | २९ |
| मोल्ल का कविता-विलास | ३१ |
| रामकथा की सुधा-माधुरी | ३३ |
| **बालकाण्ड** | **३५-६७** |
| अयोध्यापुर का वैभव | ३५ |
| दशरथ का राजधर्म पालन | ४१ |
| दशरथ का पुत्रकामेष्टि करना | ४५ |
| सुरों की प्रार्थना और श्रीमहाविष्णु का समयदान | ४५ |
| अग्निदेव का प्रत्यक्ष होकर दशरथ को क्षीरान्न देना | ४७ |
| कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा के गर्भ लक्षण | ४९ |
| श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न का अवतार | ४९ |
| यज्ञ-रक्षार्थ विश्वामित्र का राम को माँगना | ५१ |
| कौशिक की आज्ञा से राम के हाथों ताड़का-वध | ५१ |
| राम द्वारा राक्षसों का वध व यज्ञ-रक्षा | ५३ |
| श्रीराम की चरणधूलि-स्पर्श से अहल्या-उद्धार | ५५ |
| सीता-स्वयंवर | ५५ |
| शिवधनुष को तोड़नेवाले को सीता देने की जनक-प्रतिज्ञा | ५७ |
| राजकुमारों का शिवचाप हिला न सकना | ५७ |
| मुनि की आज्ञा पाकर श्रीराम का शिवधनुभंग | ५८ |
| सीताराम के कल्याण का वैभव | ६१ |
| दशरथ-राम को देख परशुराम द्वारा अपमान | ६३ |
| नारायण-चाप के साथ परशुराम का विष्णु तेज श्रीराम द्वारा हरण | ६५ |
| आश्वासान्त पद्य-गद्य | ६७ |
| **अयोध्याकाण्ड** | **६९** |
| श्रीराम पट्टाभिषेक की तैयारी | ६९ |
| सूर्यास्त समय का वर्णन | ६९ |
| चन्द्रोदय का वर्णन | ७१ |
| प्रभात का वर्णन | ७३ |
| राम को वन में भेजने के लिए कैकेयी का षड्यंत्र | ७५ |
| गुह की प्रपत्ति | ७७ |
| भरद्वाज का आदरातिथ्य | ७७ |
| भरत की मातृभक्ति | ७९ |
| श्रीराम-पादुकाओं का प्रदान | ७९ |
| विराधवध | ७९ |
| आश्वास के अंत का पद्य एवं गद्य | ८१ |
| **अरण्यकाण्ड** | **८२** |
| पंचवटी में सीता-राम का मधुर जीवन | ८३ |
| शूर्पनखा का राम लक्ष्मण पर मोहित होना | ८५ |
| शूर्पनखा से सीता-सौन्दर्य सुनकर रावण की कामान्धता | ८७ |
| राम का कनकमृग का पीछा करना | ९१ |
| संन्यासी वेष में रावण का सीताहरण | ९३ |

| विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| रावण का विरोध करनेवाला जटायु | ९५ |
| सीता को न देख राम की विरह-व्यथा | ९७ |
| श्रीराम को लक्ष्मण का सान्त्वना देना | ९९ |
| जटायु का राम को रावण की दुश्चेष्टा का पता देना | १०१ |
| शवरी की मधुर भक्ति | १०३ |
| आश्वासांत का पद्य-गद्य | १०३ |
| **किष्किन्धाकाण्ड** | **१०५** |
| सुग्रीव की आज्ञा से राम लक्ष्मण के पास हनुमान का आगमन | १०५ |
| श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता | १७० |
| वालि-सुग्रीव संघर्ष | १०९ |
| राम का वालि को मार गिराना | १०९ |
| सुग्रीव को वानर-राज्य का पट्टाभिषेक | १०९ |
| वर्षा ऋतु में राम का सीता वियोग में परिताप | १११ |
| सीतान्वेषण के लिए वानर वीरों को सुग्रीव का भेजना | ११३ |
| आश्वासांत पद्य-गद्य | ११५ |
| संपाति का वानरों को सीता का पता बताना | ११७ |
| हनुमान का सागर लाघना | ११९ |
| लंकानगर का सदर्शन | १२१ |
| सीता के लिए लंका में हनुमान द्वारा खोज | १२३ |
| मदनातुर रावण की सीता से प्रर्थना | १२५ |
| रावण का सीता पर कोप | १३५ |
| जानकी का सन्ताप | १३९ |
| त्रिजटा का स्वप्न वृत्तांत | १३९ |
| हनुमान का सीता को राम की कुशलवार्ता देना | १४१ |
| श्रीराम की मुद्रिका प्रदान करना | १४३ |
| हनुमान का श्रीराम के सुशोभित गुणों का वर्णन करना | १४५ |
| आकाश को छूता हुआ हनुमान का रूप | १४७ |
| श्रीराम को सीता का सन्देश | १४७ |
| हनुमान का विक्रम विहार | १५१ |
| हनुमान का रोष के साथ राक्षस-संहार | १५३ |
| हनुमान का जाम्बुमाली-वध | १५७ |

| विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| अक्षयकुमार तथा पवनपुत्र का संग्राम | १५९ |
| अक्षयकुमार आदि का संहार | १६१ |
| इन्द्रजित का हनुमान पर आक्रमण | १६३ |
| मेघनाद का भयंकर समर | १६५ |
| ब्रह्मास्त्र के वशीभूत हनुमान | १६९ |
| हनुमान की रावण द्वारा निन्दा | १७१ |
| हनुमान द्वारा श्रीराम का गुण-कीर्तन | १७३ |
| रावण को विभीषण के हितवचन | १७७ |
| दधिवन में वानर वीरों की उत्साह-क्रीड़ा | १८१ |
| अंगदादि से दधिमुख का पराभव | १८५ |
| सुग्रीव की आज्ञा से वानरों का किष्किधा-पुनरागमन | १८५ |
| हनुमान द्वारा श्रीराम को सीता-कुशल निवेदन | १८७ |
| सीता का शिरोरत्न देख श्रीराम को दुख | १८७ |
| आश्वासान्त पद्य-गद्य | १८९ |
| **युद्धकाण्ड-प्रथमाश्वास** | **१९१** |
| श्रीराम का लंका-अभियान | १९१ |
| राक्षसों के साथ रावण की मन्त्रणा | १९३ |
| रावण को विभीषण का हितोपदेश | १९५ |
| रावण का विभीषण-दूषण | १९९ |
| रावण को प्रहस्त के शांतवचन | २०१ |
| विभीषण की शरणागति | २०३ |
| विभीषण द्वारा राम को रावण का बल-सम्पदा-परिचय | २०५ |
| समुद्र पर पर्वतों से सेतु निर्माण | २०५ |
| समुद्र में पर्वतों को निगलने वाले महामत्स्य | २०७ |
| नल द्वारा सेतु-निर्माण | २०९ |
| रावण से अतिकाय द्वारा वानरों का अत्याचार वर्णन | २११ |
| कुम्भकरण की वीरता | २११ |
| अतिकाय-कुम्भकरण-मरण | २१३ |
| इन्द्रजित द्वारा ब्रह्मास्त्र से वानर-सेना निहत | २१३ |
| हनुमान द्वारा लाई संजीवनो से वानर-पुनरुज्जीवन | २१७ |

| विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| कुम्भ-निकुम्भ आदि की मृत्यु | २१७ |
| श्रीराम द्वारा मकराक्ष-वध | २२३ |
| वानरों को वीरता सुनकर रावण-भय | २२७ |
| इन्द्रजित का माया-समर | २२७ |
| लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजित-संहार | २३१ |
| आश्वासान्त पद्य-गद्य | २३३ |
| **युद्धकाण्ड-द्वितीयाश्वास** | **२३५** |
| रणक्षेत्र में रावण-आगमन | २३५ |
| रावण-सुग्रीव युद्ध | २३७ |
| पवनसुत द्वारा सुपार्श्व की समाप्ति | २३९ |
| राम-रावण का भयंकर संग्राम | २४१ |
| रावण का शक्ति-प्रहार, लक्ष्मण-मूर्च्छा | २४५ |
| श्रीराम-संताप | २४९ |
| संजीवनी हेतु हनुमान-प्रयाण | २५१ |
| कालनेमि का कपट-उपाय | २५३ |
| शापविमुक्ता मकर का देवकन्या-रूप | २५५ |
| कालनेमि की कालगति | २५५ |
| हनुमान द्वारा संजीवनी पर्वत लाना | २५७ |
| माल्यवन्त-मरण | २५९ |
| संजीवनी से लक्ष्मण-चेतना | २६१ |
| आश्वासान्त पद्य-गद्य | २६१ |

| विषय | पृष्ठसंख्या |
|---|---|
| **युद्धकाण्ड-तृतीयाश्वास** | **२६३** |
| रावण द्वारा शत्रुञ्जय होम | २६३ |
| मंदोदरी का दीनालाप | २६७ |
| रावण के साथ समर-आरम्भ | २६९ |
| वन्दीजन के द्वारा रावण की स्तुति | २७१ |
| हनुमान द्वारा खड्गरोम का वध | २७५ |
| सर्परोमादि का संहार | २७५ |
| श्रीराम के लिए इन्द्ररथ का भेजना | २७७ |
| राम-रावण का समर | २७९ |
| राम-रावण के वीरालाप | २८५ |
| कटते ही फिर उगते रावण के सिर | २८७ |
| विभीषण का बताया रावण का मृत्यु-रहस्य | २९१ |
| श्रीराम के ब्रह्मास्त्र से रावण-हनन | २९३ |
| मंदोदरी का विलाप | २९५ |
| विभीषण का श्रीराम की विजय सीता से निवेदित | २९७ |
| सीता का अग्नि-प्रवेश | २९७ |
| ब्रह्मा द्वारा सीता की सुशीलता की प्रशंसा | २९९ |
| देवताओं द्वारा श्रीराम-स्तवन | २९९ |
| सीता-लक्ष्मण-सुग्रीव-सहित श्रीराम का पुष्पक विमान पर प्रयाण | ३०१ |
| अयोध्या नगर में प्रवेश | ३०३ |
| श्रीराम का धर्मपरिपालन-फलश्रुति | ३०५ |
| आश्वासान्त पद्य-गद्य | ३०७ |

# भूमिका

आध्यात्मिकता भारतीय राष्ट्र की प्राण-शक्ति है। सुदूर वैदिक काल से लेकर महात्मा गांधी के आधुनिक युग तक अनेक रूप रूपान्तरों और प्रकारान्तरों में यही शक्ति हमारे राष्ट्र को स्पन्दित और नियन्त्रित करती रही है। हमारे जीवन का प्रत्येक अंग, व्यक्तिगत अथवा सामूहिक,

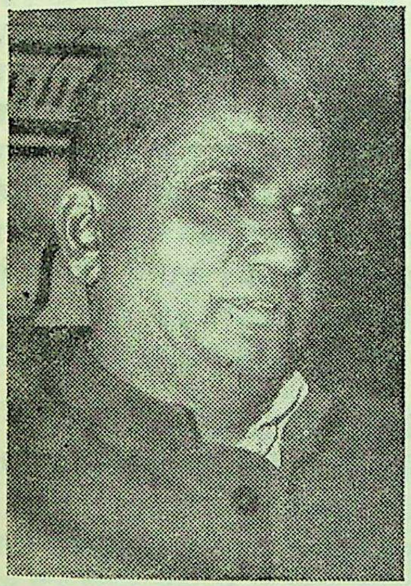

राजनैतिक अथवा आर्थिक, और जीवन का छोटे से छोटा पहलू, यहाँ तक कि भोजन और स्नान तक, ऐसी नैतिक संहिता से मर्यादित है, जिसका स्रोत आध्यात्मिकता है। इतिहास के निविड़ अन्धकार और भीषण उत्पीड़न के क्षणों में भी इसी संजीवनी शक्ति ने हमें जीवन ही नहीं प्रदान किया, बल्कि विकास और सौष्ठव से अभिषिक्त भी किया। हमारा यह दायित्व है कि हम इस प्राण-शक्ति को पहचानें तथा उसे वर्तमान और भविष्य के सन्दर्भ में नवीन आकार-प्रकार प्रदान करें। जो व्यक्ति अथवा समुदाय इस शाश्वत सन्देश तथा तथ्य को द्वार-द्वार तक पहुँचाता है, वह राष्ट्र की अनन्यतम सेवा करता है।

भगवान राम का जीवन और कृतित्व हमारी आध्यात्मिक संस्कृति का मूलाधार है। उनका शैशव, उनका विद्यार्थी जीवन, उनका यौवन व उनका दाम्पत्य जीवन और उनका राजस, वैयक्तिक विलास के लिए नहीं, बल्कि कठोर धार्मिक मर्यादाओं तथा उच्च नैतिक मूल्यों की वेदी पर आहुति मात्र हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समय-समय पर अनेक ऋषियों, मुनियों और समर्पित व्यक्तियों ने अपनी-अपनी दृष्टि से आंकलन

किया है । मुझे यह कहने में गौरव है कि आन्ध्र प्रदेश और तेलगू भाषा में राम-काव्य की जितनी प्रचुरता व बहुलता है, वह दूसरे क्षेत्र अथवा भाषा में उपलब्ध नहीं । तेलगू भाषा में रचित राम-काव्यों में 'मॉल्ल रामायण' एक संक्षेप काव्य के रूप में सर्वाधिक जनप्रिय, एवं मर्मस्पर्शी माना जाता है । आश्चर्य होता है कि आज से लगभग ५०० वर्ष पूर्व, सामन्तकालीन युग में एक पिछड़ी हुई जाति में जन्म लेकर एक नारी, मॉल्ल, ने कैसे इस प्रकार की उच्च साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रचुरताओं से परिपूर्ण रचना की परिकल्पना एवं सृष्टि की होगी । आन्ध्र प्रदेश की सामाजिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विशिष्टताओं की सुवास से उच्छ्वसित मॉल्ल रामायण भगवान् राम के जीवनार्घ की एक अम्लान नैवेद्य है ।

भुवन वाणी ट्रस्ट, ऐसी मूल्यवान, क्षेत्रीय सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक रचनाओं को जो कि देश और काल के गर्त में दबी-छिपी हुई हैं, मौन, निस्वार्थ भाव से राष्ट्रलिपि एवं भाषा में प्रस्तुत करके प्रकाश में लाने का एक महान कार्य कर रहा है। उन्होंने मॉल्ल रामायण को भाषा-टीका समेत प्रस्तुत करके राष्ट्रीय संस्कृति के परिपोषण की दिशा में निस्सन्देह नया मानदण्ड स्थापित किया है । हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सशक्त, सोद्देश्य एवं प्रखर हुआ है । मैं ट्रस्ट के सभापति, श्री नन्दकुमार जी अवस्थी, तथा सर्व-सम्बन्धित को इस विशिष्ट उपलब्धि के लिये बधाई देता हूँ तथा उनके सत्प्रयास की सराहना करता हूँ ।

(डॉ०) एम० चेन्ना रेड्डी
(महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)

राजभवन, लखनऊ
दिनाङ्क २२ फरवरी, १९७७

# प्रकाशकीय परिशिष्ट

विषयवस्तु—भुवन वाणी ट्रस्ट के माध्यम से नागरी लिपि का मञ्च, विना किसी भेदभाव के प्रत्येक भाषा और मान्यता के लिए खुला है। भुवन की भाषाओं का सत्साहित्य नागरी लिपि में उद्भूत होकर अखिल भूतल की सामग्री बने; ज्ञानमात्र अविभाज्य रूप से सबको सुलभ होकर सबकी समान सम्पत्ति हो; यह ट्रस्ट का सर्वोपरि उद्देश्य है। तॆलुगु भाषा की अनुपम कृति 'श्री मॊल्ल रामायण' इसी उद्देश्य की पूर्ति की एक कड़ी है। श्री मॊल्ल रामायण और उसकी रचयिता भगवदर्पिता कुम्हारिन मॊल्ल का, विद्वान् अनुवादक ने पृष्ठ १५-२४ पर विस्तृत वर्णन दिया है।

भारतीय वाङ्मय की तॆलुगु शाखा के तीन अनुपम ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण, प्रकाशन की दौर में था। ट्रस्ट की विद्वत् परिषद् के वरिष्ठ सदस्य श्री भीमसेन निर्मल जी तॆलुगु की प्रख्यात 'रंगनाथ रामायण' का उल्था कर रहे हैं। पोतन्न कृत 'महाभागवतमु' का कार्य भी उन्हीं की देख-रेख में चल रहा है। प्रस्तुत मॊल्ल रामायण की ख्याति मैंने अरसे से सुन रखी थी। शतिओं पूर्व, एक सामान्य कुम्हार परिवार की अपढ़ महिला द्वारा विरचित, आन्ध्रप्रदेश में सर्वाधिक लोकप्रिय, सरल फिर भी अलंकारमय, मॊल्ल रामायण जैसा भक्ति काव्य, भारत के लिए, भारती नारी के लिए, और हम सब के लिए बड़े गौरव की बात है। अपने भाषाई-सेतुकरण के उद्देश्य के अनुरूप मेरी उत्कण्ठा प्रबलतर होती रही कि यह रामायण-रत्न तॆलुगु क्षेत्र तक ही सीमित न रह कर, सारे देश को सुलभ हो जाय।

सुतरां, डॉ० निर्मल ने इस पुनीत कार्य की व्यवस्था की। उन्होंने यह कार्य अपने होनहार शिष्य डॉ० सीएच्० रामुलु, एम० ए०, पीएच्० डी० के सुपुर्द किया। डॉ० रामुलु की जन्मतिथि ९ नवंबर, १९४० है। अपनी अवस्था के अनुरूप उन्होंने अपने को इस कार्य में इतना व्यस्त और लीन कर दिया कि दो ही तीन मास में पूरी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद और नागरी लिप्यन्तरण पूरा करके ट्रस्ट के हवाले कर दिया। उनके अदम्य उत्साह और कर्मठता को देख कर, यन्त्रस्थ 'रंगनाथ रामायण' के मुद्रण को कुछ शिथिल करते हुए, ट्रस्ट का सारा बल 'मॊल्ल रामायण' के प्रकाशन पर लगा देना श्रेयस्कर समझा गया। फलतः, तॆलुगु 'मॊल्ल रामायण' का यह हिन्दी रूपान्तर पाठकों के सम्मुख इतना शीघ्र प्रस्तुत करने में हम समर्थ हो सके। ३६-३७ वर्ष की आयु के डॉ० रामुलु ने 'सूर और पोतन्न के काव्य में भक्तितत्व' पर शोध-कार्य किया है। भाषाई जगत् ऐसे ही कर्मठ और निष्ठावान् विद्वानों पर निर्भर है। हमें आशा है कि अब भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा आयोजित तॆलुगु के दो अन्य प्रसिद्ध ग्रन्थ,

'रंगनाथ रामायण' और 'पोतन्न भागवतमु' के सानुवाद लिप्यन्तरण भी शीघ्र ही पूरे हो कर जनता के सम्मुख आयेंगे।

'श्री मोल्ल रामायण', अति प्रख्यात होते हुए भी अब तक तेलुगु क्षेत्र में ही सुपरिचित थी। आज नागरी-कलेवर में वही श्रेष्ठ काव्य सारे देश में प्रसारित होने जा रहा है। तेलुगु की अञ्चलीय साहित्य-सम्पदा, सारे देश की सम्पदा बन रही है।

अमर-भारती सलिला की तेलुगू नामक शुचि धारा।
पहन नागरी-पट उसने अब भारत-भ्रमण विचारा॥

लिपि और छंद—दक्षिण परम्परा की शैली के अनुसार ग्रन्थ के अनेक छन्दों में प्रत्येक पंक्ति का द्वितीय अक्षर एक दूसरे के समान और नीचे आता है। यह दक्षिणी भाषाओं का विशिष्ट छन्द-अलङ्कार है। कन्द, उत्पलमाल, चम्पकमाल आदि छंद ग्रन्थ में अवलोकनीय हैं। लिपि के सम्बन्ध में विशेष विवरण ११-१२ तथा २५ पृष्ठ पर देखिये।

भूमिका—महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, डॉ० एम० चेन्ना रेड्डी परमधार्मिक और राष्ट्रीय एकता के निष्ठावान् उपासक हैं। भुवन वाणी ट्रस्ट के, लिपि और भाषा के माध्यम से भाषा-सेतुबन्ध के क्रान्तिकारी कार्यक्रम को उनकी अपार सहायता और आत्मीयता प्राप्त है। डॉ० रेड्डी ने तेलुगु भाषा के इस अनुपम ग्रन्थरत्न पर भूमिका लिखने की कृपा की है। उनके इस अनुग्रह ने ट्रस्ट के कार्य और अनूदित ग्रन्थ को अपरिमित गरिमा प्रदान की है।

आभार-प्रदर्शन—ट्रस्ट को, कई उदार सदाशयों, विद्वानों, एवं उत्तर-प्रदेश शासन से प्राप्त सहायता से बड़ा सहारा मिलता रहा है। अन्य भाषाई ग्रन्थों के साथ, तेलुगु 'श्री मोल्ल रामायण' भी अपनी सहज गति से प्रकाशित होती रहती। सौभाग्य से केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री माननीय श्री डी० पी० यादव, भारत सरकार के राष्ट्रभाषा सलाहकार बहुभाषा-मर्मज्ञ श्री रमाप्रसन्न नायक और शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय के शिक्षानिदेशक श्री सनत्कुमार चतुर्वेदी जी की अनुकम्पा हुई। इसके परिणाम स्वरूप ग्रन्थ परिपूर्णता को प्राप्त हुआ। हम उनके अतिशय अनुग्रहीत हैं। हम विश्वास के साथ निवेदन करते हैं कि भुवन वाणी ट्रस्ट की भाषाई सेतुकरण की विशाल और अद्वितीय योजना उत्तरोत्तर फलवती होकर शासन और जनता को संतुष्ट करती रहेगी।

लखनऊ
२५ मार्च, १९७७

**नन्दकुमार अवस्थी**
**मुख्यन्यासी सभापति, भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३**

## तेलुगुभाषा और लिपि

तेलुगु मूलतः द्रविड़ भाषा-परिवार से सम्बद्ध भाषा है, किन्तु वह संस्कृत से इतनी प्रभावित है कि कुछ विद्वान् उसे संस्कृत-जन्य ही मानते हैं। उत्तर और दक्षिण के सन्धिस्थल पर स्थित होने के कारण यह स्वाभाविक ही है कि तेलुगु अथवा आन्ध्र-भाषा संस्कृत-भाषा तथा साहित्य से अत्यधिक प्रभावित हो जाय।

पृष्ठ २५ पर प्रस्तुत तेलुगु (देवनागरी) वर्णमाला चार्ट से स्पष्ट होगा कि अन्य भारतीय भाषाओं के समान ही तेलुगु ने भी नागरी-वर्णमाला के क्रम को अपनाया है। किन्तु नागरी-वर्णमाला की अपेक्षा तेलुगु में ॠ (दीर्घ), ह्रस्व ए (ऍ) और ह्रस्व ओ (ऑ), च और ज के दन्त्य रूप, घर्षण ध्वनि वाला र (ऱ) और ळ अधिक हैं।

Italian of the East मानी गई तेलुगु की विशेषता 'अजन्त' (स्वरान्तता) होना है। अर्थात् प्रत्येक शब्द के अन्त में कोई न कोई स्वर (अधिकतर 'उ' या 'इ') होता है और उसका पूरा-पूरा उच्चारण किया जाता है। शब्द के मध्य में आनेवाले स्वर का भी पूरा-पूरा उच्चारण किया जाता है। अतः नागरी लिपि में दिए गए तेलुगु शब्दों को पढ़ते समय, उनके स्वरान्त उच्चारण पर अवश्य ध्यान रखना चाहिए। 'जल' लिखकर हिन्दी की भाँति उसे 'जल्' न पढ़कर 'ल' को सस्वर पढ़ना चाहिए।

'ऋ' का उच्चारण बहुधा 'रु' के समान होता है। यथा 'ऋण', 'कृष्ण', 'गृह' आदि का उच्चारण 'रुण', 'क्रुष्ण', 'ग्रुह' के समान होता है।

'ए' और 'ओ' के ह्रस्व रूप भी प्रचलित हैं। उनके लिए 'ऍ' और 'ऑ' तथा उनकी मात्राओं के लिए ॅ और ॉ का प्रयोग किया गया है।

'ऌ' और 'ॡ' सिखाए तो जाते हैं पर उनका प्रयोग नहीं के बराबर होता है।

'च' और 'ज' के (च़, ज़) दन्त्य और तालव्य दोनों प्रकार के उच्चारण तेलुगु में विद्यमान हैं। किन्तु आजकल उनका प्रयोग नहीं होता। तेलुगु में सरल 'र' के अतिरिक्त घर्षण ध्वनि वाला 'ऱ' का भी प्रयोग होता है।

तेलुगु में बहुधा 'थ' का उच्चारण 'ध' के समान किया जाता है। यथा 'रथमु' को 'रधमु' और 'ग्रंथ' को 'ग्रंध' कहा जाता है। इसका कारण दोनों अक्षरों का रूपसाम्य माना जाता है।

संस्कृत के कई लकारान्त शब्दों में 'ल' के स्थान पर 'ळ' का प्रयोग होता है। यथा कला = कळा, मंगल = मंगळ, गरल = गरळ, मुरली = मुरळी, सरल = सरळ आदि।

तालव्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' के उच्चारण में अन्तर स्पष्ट है।

तेलुगु के कुछ शब्दों में अर्धानुस्वार का प्रयोग होता है। यह उस स्थान पर प्राचीनकाल में प्रयुक्त अनुस्वार का बचा हुआ रूप है। इसका न तो उच्चारण होता है, न आधुनिक काल में प्रयोग ही होता है। उस चिह्न को लिप्यन्तरण में छोड़ दिया गया है।

तेलुगु में वर्गान्त अनुनासिक के स्थान पर सर्वथा अनुस्वार का ही प्रयोग किया जाता है। किन्तु देवनागरी लिप्यन्तरण में ह्रस्व ऍ और ऑ की मात्राओं के 'पश्चात्-अनुनासिक' को मुद्रण की सुविधा के लिए वर्गान्त अनुनासिक ढंग पर लिखना अपनाया गया है यथा रॆण्ट, रॆण्डु, बॊन्दुटयु आदि।

साधारणतया तेलुगु के शब्द दीर्घान्त नहीं होते। अतः संस्कृत के दीर्घान्त शब्द तेलुगु में ह्रस्वान्त रूप में प्रयुक्त होते हैं। यथा पिता = पित, कमला = कमल, पार्वती = पार्वति, गौरी = गौरि, अपराधी = अपराधि आदि।

तेलुगु वाक्य के मध्य में स्वर का कदापि प्रयोग नहीं होता। वह स्वर अपने से पूर्व के व्यंजन से जुड़ जाता है। बहुधा क, च, ट, त, प ये व्यंजन (इन्हें सरलाक्षर कहते हैं) ग, ज, ड, द, ब, में बदल जाते हैं। इस नियम को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। यथा कृत्य = गृत्य, प्रणव = ब्रणव, परिचित = बरिचित, चंड = जंड आदि।

कुछ शब्दों के अन्त में नकार (हलन्त) होता है। सन्धि के नियमों के अनुसार वह पश्चात्-स्वर में मिल जाता है। यथा, विदूरुन् + अकृत्रिम = विदूरुनकृत्रिम, अरुदुगान् + इन्द्रिय = अरुदुगानिन्द्रिय आदि।

संस्कृत के शतप्रतिशत शब्दों का प्रयोग तेलुगु में होता है। हाँ कुछ शब्दों के अर्थ हिन्दी से भिन्न हैं। तेलुगु काव्य में लंबे-लंबे समासों का प्रयोग बहुधा होता है। यह तेलुगु की अपनी विशिष्टता है; 'समास-बहुला' भाषा है।

तेलुगु के नागरी लिप्यन्तरण को पढ़ते समय उपरोक्त नियमों को ध्यान में रखने से, हिन्दी और तेलुगु में भाषागत समानता के दर्शन होंगे। अतेलुगु-भाषी यदि तेलुगुवत् विशुद्ध उच्चारण के अभ्यस्त होना चाहते हैं तो उपर्युक्त निर्देशों के अतिरिक्त तेलुगुभाषियों से सत्संग का भी लाभ उठायें।

डॉ० भीमसेन 'निर्मल'
एम० ए० पीएच० डी०
(रीडर, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद)

# अनुवादक का वक्तव्य

तेलुगु साहित्य में पावनचरितात्मा, प्रथम कवयित्री मोल्ल द्वारा विरचित रामायण का नागरी लिप्यन्तरण-सहित हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यन्त आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ ने अपने सकल भाषाई सेतुकरण की विपुल योजना के अन्तर्गत तेलुगु के मूर्धन्य रामायण काव्य, मोल्ल रामायण के नागरी संस्करण को राष्ट्र के सम्मुख रखने का विचार अपनाया, और यह पुष्कल कार्य दैवयोग से मेरे ज़िम्मे आया। मोल्ल रामायण जैसे गरिमामय तेलुगु काव्य को हिन्दी अनुवाद सहित नागरी में लिप्यन्तरित करने का यह प्रयास सचमुच मुझे कृतकृत्य कर रहा है।

मोल्ल रामायण के नागरी लिप्यन्तरण सहित अनुवाद कार्य को सम्भालने से पूर्व, और कार्य समाप्ति तक भी मैं भुवन वाणी ट्रस्ट से समुचित रूप से परिचित न था। कार्य-समाप्ति के बाद, मुद्रण की समस्याओं को सुलझाते समय, ट्रस्ट के न्यासी अध्यक्ष श्रद्धेय पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी जी के दर्शन हुए। कोई दैवी प्रेरणा, दोनों के हृदयों को बाँधनेवाली कोई आन्तरिक सद्भावना ही थी, जिसने इस कार्य को आगे बढ़ाया। मैंने इसे दैवी कार्य समझा और सर्वात्मना समर्पित हुआ। इसके मूल में अवश्य ही, माँ भारती की आशीष, आदान-प्रदान की पुनीत भावना, एवं अन्त:सलिला के रूप में भारतीय जीवन के समन्वयात्मक उदात्त तत्त्व निहित हैं। परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि ट्रस्ट के इस पुनीत कार्य को हर प्रकार का बल मिले और भारत की जनता, लिपि और भाषा के माध्यम से 'अनेकता में एकता' के दर्शन कर, भारतीय आत्मा का साक्षात्कार कर सके।

नम्र निवेदन है कि नागरी लिप्यन्तरण की दिशा में मेरा यह प्रथम प्रयास है। इस कार्य को सम्भालने में पूज्य गुरुवर डा० भीमसेन 'निर्मल' जी, रीडर, उस्मानिया विश्वविद्यालय का आद्योपान्त सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है, जिसके लिए आपको शतशत नमन करता हूँ।

प्रकाशक ने, तॆलुगु भाषा से अपरिचित होकर भी, पद्यों को सुन्दर ढंग से रूपायित कर, शुद्धता का ध्यान रखा है, जिसके लिए आपको अत्यन्त परिश्रम करना पड़ा है। आपकी लगन तथा योग्यता के कारण पुस्तक का कलेवर, साज-सज्जा सुन्दर बन पड़ी है। सचमुच आप स्तुति के पात्र हैं। मैं आभार प्रकट करता हूँ।

आशा करता हूँ कि भारतीय साहित्य के सेतुबन्ध-रूपी इस महान यज्ञ में मेरी 'गिलहरी भक्ति' का समादर होगा। (तॆलुगु का प्रसिद्ध राम काव्य 'रंगनाथ रामायण' में एक अवाल्मीकीय प्रासंगिक कथा है, जिसके अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के सेतुबन्ध-निर्माण में गिलहरी ने पूँछ से रेती को ला-लाकर, बाँधकर डालते हुए, अपनी भक्ति प्रकट की थी; यही गिलहरी-भक्ति के नाम से प्रसिद्ध है।) मेरी विनम्र प्रार्थना है कि विद्वान् तथा सुहृदजन इस प्रयास को सस्नेह स्वीकार करेंगे।

डॉ० सीएच० रामुलु

# मोल्ल रामायण - एक परिचय

भारतीय जीवन तथा संस्कृति के अवलम्ब के रूप में प्रतिष्ठित ग्रंथों में रामायण तथा महाभारत, निरन्तर कर्मरत आन्ध्रों के लिए आदर के पात्र एवं आदर्श ग्रंथ हुए। महाभारत के द्व्यर्थि, त्र्यर्थि काव्यों के रूप में कथाकाव्य रचे गये। किन्तु रामायण की तो अटूट परम्परा ही चल पड़ी। आन्ध्रों को श्रीरामचन्द्र से बढ़कर इष्टदेव नहीं है और रामायण से बढ़कर प्रीतिपात्र कथा नहीं है। क्या साहित्य में, क्या दैनिक जीवन में, जहाँ सुनिए, वह पवित्र नाम प्रतिध्वनित होता सुनायी पड़ेगा। रामचन्द्र जी ने वनवास के चौदह वर्षों का अधिक भाग, आन्ध्र देश में दण्डकारण्य और गोदावरी के किनारों पर ही बिताया था। उस पावन स्मृति को जाग्रत करनेवाले अनेक स्थान और चिह्न, आन्ध्रप्रदेश में यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम की पुनीत-गाथा गानेवाले महानुभावों से आन्ध्र-साहित्य भरा पड़ा है। काव्य-प्रबन्ध, कल्याण-काव्य, ठेठ तेलुगु-काव्य, द्विपद-काव्य, लघु-काव्य, द्व्यर्थि-काव्य, त्र्यर्थि-काव्य, दण्डक, यक्षगान, गेय, गीत, वचन-काव्य, शतक, नाटक (स्वतंत्र तथा अनूदित), दूषण-काव्य आदि विविध प्रक्रियाओं में तेलुगु वाङ्मय में रामकथा प्रसारित हुई है। तेलुगु भाषा में रामकाव्य की जितनी बहुलता है उतनी अन्य भाषा-साहित्यों में नहीं। तेलुगु में रंगनाथ रामायण, भास्कर रामायण, मोल्ल रामायण, रामाभ्युदयमु, रघुनाथ रामायण, एकोजी रामायण, गोपीनाथ रामायण आदि बहुप्रसिद्ध हैं। आधुनिक युग में कविसम्राट् विश्वनाथ सत्यनारायण कृत 'श्रीरामायण कल्पवृक्षमु' है। विपुल काव्यों में रंगनाथ रामायण तथा संक्षेप काव्यों में मोल्ल रामायण का बहुल प्रचार है। मोल्ल ने मधुमधुर शब्दों में काव्य रचने की प्रतिज्ञा कर, उसे सार्थक बना दिया है।

तेलुगु राम-काव्य-परम्परा में महिलाकृत रामायण चार हैं—मोल्ल रामायण, मधुरवाणीकृत संस्कृतीकृत रघुनाथ रामायण, शीरमु सुभद्रमाम्बा कृत सुभद्रा रामायण, चेब्रोलु सरस्वती कृत सरस्वती रामायण। इन सब में प्रचार, प्रसार एवं ख्याति की दृष्टि से मोल्ल रामायण अग्रणीय है।

मोल्ल रामायण की प्रमुख विशेषता यही है कि कवयित्री मातृ मोल्ल ने श्रीराम कथामृत को मातृ-ममता से युक्त कवोष्ण-कवल बनाकर आन्ध्र-जनता-रूपी भोले-भाले बच्चों को खिलाया है। बालकाण्ड से अरण्य-काण्ड तक सरपट चलता हुआ कथाकथन का वेग, इस तत्त्व को स्पष्ट करता है। मोल्ल के इस प्रकार सरल शैली में गहन काव्य रचने के अनेक कारण हैं, जिनमें मोल्ल का जीवन तथा परिस्थितियाँ प्रमुख हैं।

## मोल्ल का जीवन तथा परिस्थितियाँ

निरन्तर रामनाम स्मरण में समय बिताते हुए राम-काव्य की रचना करनेवाली आतुकूरि मोल्ल तेलुगु साहित्य की प्रथम कवयित्री है। मोल्ल कौन है? वह कैसी है? किस जाति में पैदा हुई? माता-पिता कौन है? किस गाँव की है? किस काल में हुई? कितने वर्ष तक जीवित रही? विवाह हुआ है या नहीं? पति कौन है? सन्तान हुई है? आदि-आदि सन्देह मोल्ल रामायण के पाठकों के मन में सहज ही उठते हैं। किन्तु अपने जीवन की विशेषताओं को प्रकट करने की रीति प्राचीन कवियों में न होने के कारण मोल्ल की जीवन-सम्बन्धी सामग्री प्राप्त नहीं होती। तिस पर राज-दरबारों में राज-सम्मान के मोह-लोभ में न जाने वाले पोतन्न, मोल्ल, वेमन जैसे भक्त कवियों के जीवन के सम्बन्ध में तो सामग्री नहीं के बराबर प्राप्त होती है।

अन्तःसाक्ष्य के आधार पर, गुरुलिंग जंगम की अर्चना में तत्पर, शिवभक्तिरत मोल्ल आतुकूरि केसन की वरपुत्री मानी जाती है। दूसरी बात यह है कि वह गोपवरम के विख्यात श्रीकण्ठ मल्लेश के वर-प्रसाद से कविता करना सीख गई है। यह गोपवरम आज के नेल्लूर के समीप एक गाँव माना जाता है। आश्वासान्त गद्य में 'केसन सेट्टी तनय' रहने के कारण लोग मोल्ल के वैश्य होने का अनुमान करते हैं। किन्तु जनश्रुतियाँ उसका कुम्हारिन होने के पक्ष में हैं। राजसभाओं के कुचक्रों से त्रस्त होकर उसने काव्य को नरांकित न कर श्रीरामचन्द्र को समर्पित किया। पुष्ट प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि मोल्ल का जीवनकाल ई० सन् १३२०-१४०० माना जाता है। मोल्ल ब्रह्मचारिणी रही होगी। पिता शिव के भक्त थे तो मोल्ल राम की भक्त। इस प्रकार पिता और पुत्री दोनों के अन्तरंग में शिव-केशव की अद्वैत भक्ति का भाव पल्लवित-पुष्पित हुआ, और वह रामफल के रूप में आन्ध्रजनता-रूपी शुकों को रुचिकर ही नहीं, अमृत-तुल्य सिद्ध हुआ है।

## काव्य की विशिष्टता

मोल्ल ने रामकथा-कथन में प्रमुख प्रसंगों को सरल रीति में प्रस्तुत किया है। सरल होकर भी फीका न होकर सालंकार, विद्वत्तापूर्ण, औचित्य-सम्पदा से विलसित, प्रकृति वर्णनों से भरापूरा सुन्दरकाव्य का निर्माण किया। अपने से पूर्व अनेकों कवियों ने रामायण की रचना की, फिर भी वह रामायण ही की रचना क्यों चाहती है ? इस प्रश्न को मोल्ल ने स्वयं उठाया और अपने ढंग से उत्तर भी दिया। वह कहती है—

आदि रघु रामु चरितमु सादरमुग विन्न ग्रोत्तयै लक्षण सं-
पादम्मै पुण्य स्थिति, वेदम्मै तोचकुन्न वेरिनें चेप्पन्

[यह रघुराम का चरित है। इसके सुनने में नित्य-नवीन काव्य-लक्षणों का सम्पादन होकर पुण्य-स्थिति वेद के समान द्योतित होती है। ऐसा नहीं तो मैं क्या कोई पगली हूँ, जो पुनः इसी कथा को कहूँ ?]

और वह प्रश्न करती है कि भुक्ति और मुक्ति का मूल तो रामचन्द्र हैं! उनकी स्तुति करने में दोष ही क्या है ? वह उदाहरण देकर समझाती है कि एक वेश्या के अपने तोते का नाम श्रीराम रखकर पुकारने से उसका उद्धार हुआ, तो उस राम की स्तुति करने से परम आनन्द की प्राप्ति क्यों नहीं होगी ? वह यह नहीं कहती कि मैं प्रतिभा-सम्पन्ना हूँ, अतः रामकथा-कथन करूँगी। वह कहती है कि देशीय शब्द, तेलुगु-संस्कृत की संधियों का ज्ञान, काव्य-रीतियाँ, समास, अर्थ, भावार्थ, काव्य परिपाक, रसभाव, चमत्कार, बहुवर्ण, धातु, क्रियाएँ, अलंकार, विभक्तियाँ, छन्दोलक्षण, काव्य-सम्पदा, शब्दकोश आदि-आदि जानती ही नहीं हूँ। फिर भी वह सुन्दर काव्य बनाने की प्रतिज्ञा करती है। काव्य के आरम्भ में मोल्ल ने तेलुगु-कविता के लक्षणों का सुन्दर दिग्दर्शन कराया है—

वलिपपु सन्न पय्येदनु वासिग गंधपुबूत तोडुतन्
गोलदिग गानवच्चु वलिगुब्ब चनुंगव ठीविनोप्पुगा
देलुगनि चेप्पु चोट गडुतेटल माटल ग्रोत्तरीतुलं
बोलुपु वहिपकुन्न मरि पोंदगुने पटहादि शब्दमुल्

[मलमल के झीने अँचल में चंदनलेप से युक्त, अधखुले स्तनों की सुन्दरता के समान ही तेलुगु कविता को सरल व सरस शब्दों से युक्त हो, मनोहर होनी चाहिए। अन्यथा गूढ एवं कटु शब्दों में नगाड़े के से परुष स्वरों में सुन्दरता ही कहा ?]

अपनी विद्या एवं पाण्डित्य-प्रदर्शन के लिए संस्कृत के दीर्घ समासों

से युक्त काव्य रचना करना मोल्ल को अभीष्ट नहीं। ध्वनिपूर्ण, मधुमधुर ठेठ तेलुगु शब्दों में काव्य रचने को ठान लेती है। वह कहती है—

तेनें सोक नोरु तीयन यगु रीति    तोडनर्थ मॆल्ल    दोचकुंड
गूढ शब्दमुलनु    गूर्चिन काव्यम्मु    मूग चॆविटि वारि मुच्चटगुनु

[जैसे मधु के लगते ही सारा मुँह मीठा हो जाता है, वैसे ही सुनते ही अर्थ समझ में आजाना चाहिए। गूढ और कठिन शब्दों से युक्त काव्य तो बहरों और गूँगों का तमाशा होगा !]

मोल्ल कुम्हारिन है, शूद्रजाति की है। अतः वह जानती है कि रामायण संस्कृतमय होकर साधारण जनता की पहुँच के बाहर हो जाएगी। श्रीराम की भक्ति तथा शक्ति के बल पर वह काव्य रचना करती है। परमार्थ साधन के लिए वह काव्य गान करती है। गोपवरम के श्रीकण्ठ-मल्लेश के प्रसाद से वह कविता करना सीख गई। ये सारी बातें उसकी प्रतिभा, प्रतिज्ञा तथा अतुलित विनय-भावना को ही प्रकट करती हैं।

वह कहती है कि सुललित-प्रताप, गुणसागर राम नृपाल की स्तुति करनेवाली जिह्वा को छोटे-मोटे राजाओं की स्तुति करना रुचिकर क्यों कर होगा ? रामचन्द्र के कहने पर ही वह अपने राम के पुण्यचरित का गान करती है और अन्त में उन्हीं के चरणकमलों में समर्पित करती है। इससे मोल्ल के स्वभाव तथा व्यक्तित्व का पता चलता है।

मोल्ल रामायण के अनेक प्रसंगों में स्वभावोक्ति का सुन्दर चित्रण हुआ है। पार्वती की स्तुति के प्रसंग में भोले-भाले बालक और उनकी चेष्टाएं तथा मातृ-हृदय का दृश्य उपस्थित हो जाता है। इसी प्रकार लक्ष्मी की स्तुति में 'कामदेव की माँ' कहकर ही वह तृप्त होती है।

सरस्वती की स्तुति में—ब्रह्मा से भेंटकर, विहँसकर आँखों से आरती उतारकर मोद प्रदान करनेवाली, एवं विद्याओं की जननी, विनयशील-सम्पन्ना, गृहिणी की मर्यादाओं से परिपूर्ण होकर भारतीय नारी के रूप में ब्रह्मचारिणी होने का विश्वास समर्थित होता है।

सुन्दरकाण्ड तक अतिवेग से कथाक्रम चलता है। इस कथा-वेग के कारण मोल्ल ने कई प्रसंगों को संक्षिप्त कर दिया है या छोड़ दिया है; यथा श्रवणकुमार चरित, मंथरावृत्तान्त आदि। अहल्या शाप-विमोचन का संक्षिप्त वर्णन हुआ है, किन्तु अहल्या-चरित का नहीं। कबंधवध, सुग्रीव तथा रावण का द्वन्द्व युद्ध, सीता को लाकर त्रिजटा का युद्ध दिखाना आदि वाल्मीकीय प्रसंगों को छोड़ भी दिया है। विश्वामित्र के यज्ञ-रक्षण

में मारीच-सुबाहुवध के वर्णन में किंचित् परिवर्तन किया गया है। हनुमान का लंका में सीतान्वेषण को संक्षिप्त कर दिया गया है। वनगमन के समय रामचन्द्र दशरथ से मिलकर ही नहीं जाते। संक्षेप में कहने की इच्छा के कारण कतिपय प्रसंगों को छोड़ने के लिए विवश हुई।

विविध काण्डों की गद्य-पद्य-संख्या से विदित होता है कि मौल्ल ने किन प्रसंगों को विस्तृत रूप से वर्णन किया है और किन प्रसंगों को छोड़ दिया है। क्रम निम्न प्रकार का है—अवतारिका-२४; बालकाण्ड-१००; अयोध्याकाण्ड-४३; अरण्यकाण्ड-७५; किष्किन्धाकाण्ड-२७; सुन्दरकाण्ड-२४९; युद्धकाण्ड-३५१। रामायण श्रीविष्णु के अवतार की कथा है, दुष्ट-दमन और शिष्ट-रक्षण प्रधान प्रयोजन है। अत: सुन्दरकाण्ड से पूर्व तक की कथा संक्षेप में कहकर, सुन्दरकाण्ड और युद्धकाण्ड का वर्णन विस्तार से किया है। प्रधान कथा को भंग न करते हुए मौल्ल ने भी अपनी रुचि के अनुकूल-प्रसंगों को घटा-बढ़ाकर रामायण की रचना की है। मौल्ल कृत रामायण में कथाभाग संक्षिप्त और प्रवाहमयी है। छहों काण्डों में लगभग नौ सौ पद्य हैं। उनकी झाँकी का आनन्द लीजिये—

## मार्मिक प्रसंग और काव्यगत विशेषताएँ

बालकाण्ड के अन्तर्गत अयोध्यापुरी का वैभव, सीता-कल्याण, परशुराम का गर्वभंग आदि का विस्तृत रूप से वर्णन हुआ है। सीता-स्वयंवर में भाग लेने के लिए विविध देशों के राजकुमारों का विविध वाहनों पर आरूढ़ होकर ठेलाठेली करते हुए कोलाहल के साथ आगमन, धूप-दीप-गंध-अक्षतादि से पूजित कर शिव-चाप का सभामध्य में लाया जाना और उसे देख 'यह चाप है या पहाड़ी' कहते हुए राजकुमारों का भाग खड़े होना आदि का सरस एवं हास्यपूर्ण वर्णन हुआ है। इसी प्रसंग में, लक्ष्मण का कहना कि धरातल न हिले! प्रजा को ठीक गह रखे! आदिशेष भूमि को धारण करे! कच्छप भूमि तथा आदिशेष को ठीक गह रखे! वराहपुरुष भूदेवी, आदिशेष, कच्छप को पकड़े रहे और दिग्गज इन सबको धरे रहें, क्योंकि भूवर रामचन्द्र शिव-चाप को चढ़ाने जा रहा है।" धनुर्भंजन का महत्त्व एवं सीता-स्वयंवर का भव्य वर्णन आदि से हुआ है, जो गोस्वामी तुलसीदास के वर्णन का स्मरण दिलाता है।

सीता, माण्डवी, ऊर्मिला, श्रुतिकीर्ति के विवाह में जनक के प्रबन्ध, दशरथ का बन्धु-मित्र-परिवार के साथ आ जाना, अगवानी कर जनक का स्वागत करना, आवास पर मर्यादाएँ; भव्य-विवाह, अपनी बेटियों को भरण में वस्तुवाहनादि देकर भेजना आदि के वर्णन में तेलुगु-परिवार के विवाह-रीतियों का दृश्य उपस्थित हो जाता है।

मोल्ल रामायण के अध्ययन से पता चलता है कि मोल्ल ने पूर्ववर्ती कवियों के ग्रन्थों का मनन अवश्य किया है। बालकाण्ड में साकेत नगरी के वर्णन में प्रयुक्त व्यतिरेक अलंकार से युक्त पद्यों में कादम्बरी का स्पष्ट प्रभाव है। यथा—

प्रकटानु राग संपन्नुलौदुरु गानि रमणीय रुक्मकारकुलु गारु,
शुभ पवित्रोज्ज्वल सूत्रधारुलु गानि टक्करि हास्य नाटकुलु गारु,
उभय सन्ध्यादि विद्युक्त कर्मुलु गानि चर्चिपगा निशाचरुलु गारु,
तिलकिंचि चूड सद्विजु लौदुरु गानि तलपंग पक्षि जातमुलु गारु,
बाडबुलु गानि यग्नि रूपमुल गारु, पंडितुलु गानि विज्ञुल पगिदि गारु,
धीवरुलु गानि जातिनिंदितुलु गारु, परम पावनुलापुरि धरणि सुरुलु ।।

[उस नगर के रहनेवाले ब्राह्मण सम्पन्न हैं पर धन-दौलत से नहीं, अनुराग से; शुभ, पवित्र और उज्वल सूत्रधार (अर्थात् जनेऊ पहने) हैं, पर नाटक के सूत्रधार नहीं; आपस्तम्भ आदि सूत्रों के अनुयायी प्रातःसायं नियमित कर्म करनेवाले हैं, पर निशाचर नहीं हैं; वेदोक्त कर्म करने वाले सच्चे द्विज हैं, पर द्विजगण (पक्षि-गण) नहीं। बाडव(-ब्राह्मण) हैं, पर (बाडव) अग्निरूप नहीं। पण्डित हैं, पर पक्षि-ज्ञान रखनेवाले नहीं। धीवर (श्रेष्ठ बुद्धिवाले) हैं, पर मछुआरे (धीवर) नहीं। ऐसे हैं उस नगर के पावन भूमिसुर।]

अयोध्याकाण्ड में सूर्यास्त, चन्द्रोदय तथा प्रभात के वर्णन में, मणि-माणिक्यों के रंगों के चित्रण में, स्त्रियों के मन में रंगों के प्रति सहज आकर्षण का बोध होता है। सन्ध्या, निशा, वर्षा का वर्णन, जार-चोर-विहार, चन्द्रिका-विलास आदिका सुन्दर वर्णन किया गया है। रात में विविध प्रकार की नायिकाओं का अपने उपपतियों के साथ रमण करने का सरस वर्णन हुआ है। अयोध्याकाण्ड में प्रकृति वर्णन की एक झाँकी लीजिए—

भानु सहस्र सत्किरण पंक्तुलनुद्भव मैन या बृह-
द्भानुनि बॆट्ट बॆल्लडकबड् सुधांबुधि मीद मीगडल्
पूनि समीरुचे गॆरलि पूर्व दिशंगनु पट्ट दानि पै
फेन मनंगनॊप्पे शशि बिम्बमु तूरुपु कॊंडपै दगन्।

[सूर्य के सहस्र किरणों से उत्पन्न अग्नि की उष्णता के कारण सुधा का समुद्र खूब खौल उठा। उस दूध पर उत्पन्न मलाई, हवा के मारे एक जगह इकट्ठी हो गई। उस पर के फेन के समान ही पूर्व दिशा में चन्द्रमा दिखाई पड़ा।]

ज्योत्स्ना में क्रीड़ाएं करनेवाले चकोर-दंपतियों की एक सुन्दर झांकी का दर्शन कीजिए—

वॆन्नॆल तीगलन् गॊनलु वेडुक मुक्कुल द्रुंचि तॆच्चि ता-
कॊन्न प्रियांगनाततिकि गूरिमि नोरिकि निच्चि केलिकिन्
सन्नपु गंठ नालमुलु सन्नलु सेसि सुखिचॆ निपुगन्
दिन्ननि चन्द्रकान्तमणि तिन्नॆल मीद चकोर दंपतुल् ॥

[चाँदनी-रूपी लता के फूलों को अपनी चोंचों से लाकर अपनी प्रियाओं को देते हुए, चन्द्रकान्तशिलाओं पर सुख से निवसित वे चकोरों के जोड़े ।]

केवट की भक्ति का प्रसंग तो सचमुच मानस के प्रसंग का स्मरण दिलाता है। श्रीराम के पैर धोने के लिए केवट ने सुन्दर बहाना बनाया है। सुनिए कवयित्री के ही शब्दों में—

सुडि गॊनि राम पादमुलु सोकिन धूलि वहिंचि रायि ये-
र्पड नॊक कान्त यय्यॆनट पन्नुग नीतनि पादरेणु वि-
य्यॆड वडि नोड सोक निदि येमगुनोयनि संशयात्मुडै
कडगॆ गुहुंडु रामपदकंज युगंबु भयम्मु पॆंपुनन् ॥

[राम की प्रदक्षिणा कर गुह ने यह सोचा कि जब इनकी चरण-धूलि के स्पर्श से एक शिला स्त्री बन सकती है, तो काठ की बनी मेरी नौका की बात ही क्या ? मग्न-मन से उसने संशय और भय दिखाते हुए श्रीराम के पदपंकजों को धोया ।]

इस पद्य को पढ़कर बरबस तुलसीदास जी की "माँगी नाव न केवट आना ।... ... ... मोहि पदपदुम पखारन कहहू ॥" वाली चौपाइयाँ स्मरण हो आती हैं ।

अरण्यकाण्ड में मार्गमध्य में 'चेंचु' नामक वनजाति की वधुएँ सीता-राम-लक्ष्मण के दर्शन कर उनकी दशा पर तरस खाती हैं । इनकी पादचारिता के लिए ब्रह्मा को कोसती हैं । ऐसा लगता है कि तुलसी और मॊल्ल दोनों एक साथ बैठकर स्वर मिलाकर रामकथा का गान कर रहे हों ।

शूर्पणखा के कान, नाक काटने में पहले उसका दोष दिखाकर दण्डित करने में मॊल्ल ने औचित्य दिखाया है । शूर्पणखा के द्वारा सीता के सुन्दर रूप का वर्णन भव्य है । ऐसे वर्णनों में सीता के रूप का वर्णन भी प्रबन्ध-काव्य की नायिका का वर्णन प्रतीत होता है । मॊल्ल के काव्य पर पूर्व के

श्रृंगार-काव्यों का एवं प्रबन्ध-कथा-वर्णनों का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। अर्थात् श्रृंगाररस का खुलकर वर्णन किया गया है। श्रीराम के वियोग का वर्णन हृदय-विदारक है; फिर भी, वियोग-प्रसंग में संयोग-श्रृंगार का परमरम्य वर्णन हुआ है। शायद अन्य रामायणकारों ने भक्तिवश सीता-राम के संयोग-वर्णन का साहस न किया हो।

स्वर्णमृग की माया को जानकर, उसका वधकर, उसका चर्म निकालकर धनुष की नोक पर लटकाकर आनेवाला रामचन्द्र कोई वन्य जाति का शिकारी लगता है। मॉल्ल की यह स्वतंत्र कल्पना है। शबरी की भक्ति का उदात्त चित्र भी सुन्दर ढंग से उपस्थित किया गया है।

सुन्दरकाण्ड के अन्तर्गत हनुमान के सीतान्वेषण के अवसर पर वानर-चेष्टाओं का सूक्ष्म तथा सहज चित्रण हुआ है। रावण का सीता को समझाकर थक जाना और सीता को टुकड़े-टुकड़े कर खा जाने को कहना आदि में राक्षसी वृत्ति तथा क्रूरता का चित्रण हुआ है। रावण-हनुमान संवाद में मॉल्ल के सम्भाषण-चातुर्य का पता चलता है। युद्ध के सन्दर्भ में रावण के पातालगृह-यज्ञ को भंग करने के लिए वानरों के द्वारा मन्दोदरी को खींच लाकर रावण को क्रोधित कराने में मॉल्ल की प्रसंग-पटुता प्रदर्शित होती है। भक्ति, करुणा, शान्त, श्रृंगाररस-प्रधान प्रसंगों का वर्णन मॉल्ल ने जिस प्रकार सरस शैली में किया, उसी प्रकार स्त्री होकर भी युद्धों के प्रसंग में वीर, रौद्र, भयानक, बीभत्स आदि रसों के वर्णन में भी अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित किया है।

युद्धकाण्ड अपेक्षाकृत लम्बा बन पड़ा है। इसमें विभीषण-शरणागति, लक्ष्मण-मूर्छा, इन्द्रजित-वध आदि कुछ हृदयग्राही प्रसंग हैं। मॉल्ल ने सुन्दरकाण्ड तथा युद्धकाण्ड का विस्तृत रूप में रचने का लक्ष्य रखकर उसे बड़ी दक्षता के साथ निभाया है।

## सीता का उज्ज्वल चरित्र

मॉल्ल रामायण में सीता की शील-सम्पदा का उत्कृष्ट रूप है। धनुभंजन के पश्चात् सिर झुकाकर लजाती हुई सीता पहली बार दर्शन देती है। किन्तु वही सीता रावण को तुच्छ समझ कर तृणकण हाथ में लेकर, उसे सम्बोधित कर कहती है कि पति को देवता माननेवाली स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करना अनुचित है; ऐसे लोगों की आयु घट जाती है। उसे विश्वास है कि उसका पति स्वयं आदिनारायण है, वह अत्याचारी को अवश्य दण्डित करेगा।

स्वर्णमृग के भ्रम में सीता ने लक्ष्मण को भला-बुरा कहा था;

जिसका उसे क्षोभ है। क्षमा-याचना का उसे मौका न मिला। सीतान्वेषण को आये हुए हनुमान को सामने देखकर वह अति प्रसन्न हो, उनसे लक्ष्मण के प्रति प्रार्थना करने को कहती है कि उन वचनों को मन में न लाएँ। सीता जी और हनुमान के वार्तालाप में कवयित्री की एक नयी सूझ है। हनुमान जब सीता को भुजाओं पर उठाकर ले जाने की बात कहता है, उसे यह कहकर टाल देती है कि उसके बल-पराक्रम में सन्देह तो नहीं है, किन्तु इससे श्रीराम की ख्याति घट जायेगी। सीता जी का उत्तर कितना समुचित बन पड़ा है, सुनिए—

दोंगिलि तॆच्चिन दैत्युनि संगड्डुलगु वानि वारि साहस मॊप्पन्
संगर मुखमुन जंपक दॊंगिलि कॊनि पोवंगनगुनॆ दोरलकु नॆंदुन् ?

[मुझे चुराकर लानेवाले दैत्य को, उसके बन्धुमित्रों-सहित रणरंग में वध किये बिना ही, मुझे चोरी-चोरी ले जाना उन महानुभावों (श्रीराम-लक्ष्मण) को कहाँ शोभा देता है ?]

युद्ध के पश्चात् धर्ममूर्ति राम ने जब सीता से कहा कि वह कहीं भी चली जाय, तो वह सीधा-सादा सवाल करती है कि उसका क्या दोष है। इससे अकुटिल, निष्पाप, निर्दोष, पतिव्रता नारी का हृदय प्रकट होता है। सीता ने अपनी शील-सम्पदा से राम के धर्म-कवच को तोड़ दिया। वह मॊल्ल की सीता है। अन्तिम समय तक धीर, गम्भीर तथा संघर्षरत है। संक्षेप में ही सही, मॊल्ल ने सीता को विजय-किरीट पहनाया है। इस प्रकार मॊल्ल रामायण में सीता के चरित्र को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

## शिल्प-कौशल

काव्य-शिल्प की दृष्टि से मॊल्ल रामायण तॆलुगु का श्रेष्ठ काव्य है। स्वभावोक्ति का प्रयोग कर, रूपवर्णन कहते हुए, पाठक के नेत्रों के सामने वर्ण्य-विषय को चलचित्र की नाईं उपस्थित करने में मॊल्ल अद्वितीय है। उदाहरण के लिए वाली-वध करनेवाले श्रीरामचन्द्र जी को लीजिए—

सालमुचॆंत निलिचि रघुसत्तमुडम्मीर वोसि शब्दनि-
र्मूलमु गाग विल्दिविचि मुष्टियु, दृष्टियु गूर्चि गोत्र भृ-
त्कूलमु वज्रपात हति गूलुविधंबुन गूलनेसॆ न
व्वालि प्रतापशालि मृडुवंदन शीलि सुरालि मॆच्चगन्।

[वृक्ष की आड़ में खड़े होकर रघुवंशोत्तम ने धनुष साध कर, खामोशी के साथ, मुष्टि और दृष्टि एकाग्र कर, पर्वतराज के पक्ष

काटनेवाले वज्रपात के समान प्रतापी, ईश्वरभक्त वाली को, देवताओं को प्रसन्न करते हुए मार गिराया ।]

मानों ऐसा लगता है श्रीराम धनुष ताने, वाली का वध करते समय, हमारी आँखों के सामाने खड़े हैं। अन्तिम पंक्ति में अन्त्यपदानुप्रास की छटा अवलोकनीय है। इसी प्रकार का रूप-वर्णन हनुमान जी के समुद्र लाँघते समय का है—

मोगमु बिगिंचि पादमुलु मोत्तमुगा नट नूदिन्नोक्कि नी-
टुग मोगमेत्ति भीकर कठोर खंबुन नार्चि बाहुल-
त्यगणित लील नूचि वलयंबुग वालमु द्रिप्पि ब्रेगुनन्
सगमु नगम्मु ग्रुंग गपिनाथुडु निंगिकि दाटे रिव्वुनन् ।

[चेहरे की नसों को तानकर, चरणों को एक जगह रख, मुख ऊपर की तरफ करके भयंकर रूप से ललकार कर बाहुओं को लहरों की तरह हिलाकर, पुच्छ को गोल घुमाकर, इस ज़ोर से आकाश की ओर उड़े कि आधा पर्वत नीचे धँस गया ।]

इस प्रकार भावनाओं की कोमलता और अभिव्यक्ति की कलात्मकता को दरसा कर मोल्ल ने यह सिद्ध किया है कि वह अबला भी कविता करने में कितना निपुण है। औचित्यपूर्ण पदविन्यास, रूपक, यमक आदि सुन्दर शब्दालंकार सरल भाव-व्यंजना, प्रवाहमयी प्राञ्जल शैली आदि अनेक काव्य-गुणों से युक्त मोल्लकृत रामायण आन्ध्रसाहित्य में एक विशिष्ट स्थान का अधिकारी है। कहावतें, मुहावरे, तेलुगु-संस्कृत शब्दों का मणिकांचन संयोग, काव्य को चार चाँद लगाते हैं। कथा-शिल्प, काव्य-शिल्प, वर्णन-कौशल, सम्भाषण-चातुर्य, पात्रौचित्य, भाषा-चमत्कारों से विलसित होकर मोल्ल रामायण प्रौढ़-रचना होते हुए भी सरल तथा सुबोध है, और इसीलिए आन्ध्रजन-मानस पर सुप्रतिष्ठित होकर समादृत है ।

किसी को भी सहज सम्भाव्य रूप से कवि बनानेवाली कथा की छन्दबद्ध रचना करके, महाकवयित्री मोल्ल ने आंध्रजनता के हृदय में घर कर लिया है। अनन्य काव्य-कुसुम से तेलुगु-शारदा की चरण-सेवा करनेवाली मोल्ल धन्य है ।

डॉ० सीएच० रामुलु
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, आर्ट्स एण्ड साइंस कॉलिज
वरंगल—(५०६०१०) (आं० प्र०)

श्री

# मौल्ल रामायण

## तेलुगु-देवनागरी वर्णमाला

అअ ఆआ ఇइ ఈई ఉउ
क का कि की कु

ఊऊ ఋऋ ౠॠ ఌऌ ౡॡ
कू कृ कॄ

ఎऎ ఏए ఐऐ ఒऒ ఓओ
कॆ के कै कॊ को

ఔऔ అంअं అఃअः
कौ कं कः

కक ఖख గग ఘघ ఙङ

చच ఛछ జज ఝझ ఞञ

టट ఠठ డड ఢढ ణण

తत థथ దद ధध నन

పप ఫफ బब భभ మम

యय రर లల వव శश

షष సस హह క్షक्ष ఱऱ,र

ళळ


# भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—२२६००३

श्री

# मोल्ल रामायण

## अवतारिक

इष्टदेवतासन्तुति

उत्प०—श्री महिमाभिरामुडु, वशिष्ठ महामुनि पूजितुंडु, सु-
त्राम वधूकळाभरण रक्षकुडाश्रित पोषकुंडु, दू-
र्वामल सन्निभांगुडु, महागुणशालि दयारुंडु, श्री-
रामुडु प्रोचु भक्ततति रंजिलुनट्लुग नॆल्लकालमुन् ॥ १ ॥

उत्प०—श्रीनगमंदिरुं, डमरसेवितु, डर्धशशांकमौळि, स-
न्मौनिमन:पयोजदिननायकु, डब्जभवामरेश्वर-
ध्यान लसत्प्रसन्नु, डतिधन्युडु, शेषविभूषणुंडु, वि-
द्यानिधि,मल्लिकार्जुनुडु,ता निडु माकु शुभंबु लॊप्पगन् ॥ २ ॥

उत्प०—तॆल्लनि पुंडरीकमुल तेजमु मॆच्चनि कन्नुदोयितो
नल्लनि शक्रनीलरुचि नव्वडु चक्कनि देहकांतितो
नल्लन बिल्लग्रोवि करमंचित संज्ञल निंपु निंपगा
गॊल्लतलन् विराळि तग गॊल्पॆडु कृष्णुडु प्रोचुगावुतन् ॥ ३ ॥

उत्प०—मिंचि, समस्तलोकमुलु मिन्नक ता दननेर्पुमीर नि-
र्मिंचि,प्रगल्भतन् मॆरसि,मेलुनु गीडुनु ब्राणिकोट्लु से-
विंच घटिंचि शास्त्रमुलु, वेदमुलुं गॊनियाडुचुंडु ना
कांचन गर्भुडिच्चु नधिकंबुग नायुवु नीप्सितार्थमुल् ॥ ४ ॥

सी०-चन्द्रखंड कलापु, जारु वामन रूपु, गलित चंचल कर्णु, गमल वर्णु,
मोदकोज्ज्वलबाहु, मूषकोत्तम वाहु, भद्रेभ वदनु, सद्भक्त सदनु,
सन्मुनि स्तुति पात्रु, शैल सम्भवपुत्रु, ननुदिनामोदु, विद्याप्रसादु,
बरम दयाभ्यासु, बाशांकुशोल्लासु नुरुतरख्यातु, नागोपवीतु,

श्री

# मोल्ल रामायण

## अवतरणिका

### इष्टदेव-वन्दना

श्री महिमा से अभिराम बने (तथा) वशिष्ठ महामुनि से पूजित, सुत्राम (इंद्र)-कलाभरण-रक्षक, आश्रित-पोषक, दूर्वामल-सन्निभांग (दूर्वा की निर्मलता के समान अंगवाले), महागुणशाली, दयावान् (ऐसा) श्रीराम सदा आनन्दित रखते हुए, भक्त-तति (भक्तसमूह) की रक्षा करेगा ।। १ ।।

श्रीनगमन्दिर के वासी, अमर-सेवित, अर्द्ध-शशांक मौली (वाले), सन्मौनियों के मन रूपी पयोज (कमल) के दिन-नायक (सूर्य), अब्ज-भव (ब्रह्मा) (और) अमरेश्वर के ध्यान (करने) से प्रसन्न होनेवाले, अतिधन्य, शेष- (सर्प-) विभूषण (वाले), विद्यानिधि (ऐसा) मल्लिकार्जुन (शिव) स्वयं हमारा शुभ करेगा ।। २ ।।

श्वेत पुंडरीक (श्वेत कमल) के तेज को मात करनेवाले नयन-द्वय से तथा श्यामल शक्र (इंद्र) की नील-कांति का परिहास करनेवाली कोमल देह-कांति से विभूषित तथा कर में मुरली धारण कर संकेतों से शोभायमान् होते हुए ग्वालबालाओं को विरह-पीडा देनेवाला कृष्ण (हमारी) रक्षा करता रहेगा ।। ३ ।।

अति दक्षता से समस्त लोकों का निर्माण कर, प्रगल्भता से मण्डित, प्राणिकोटि को शुभ-अशुभ घटित करते हुए, शास्त्र तथा वेदों से स्तुत्य होनेवाले कांचन-गर्भ (ब्रह्मा) (हमें) ईप्सितार्थ (इच्छित कामनाएँ) प्रदान करता रहेगा ।। ४ ।।

चंद्रखण्ड-कलापी, चारुवामन-रूपी, कलित चंचल कर्ण (से युक्त), कमल (जैसे) वर्ण (वाले), मोदकों से उज्ज्वल बने बाहुओं (से युक्त), मूषकोत्तम-वाहन (वाले), भद्र-इभ (श्रेष्ठगज)-वदन (वाले), सद्भक्तों के लिये सदन (निलय), सन्मुनियों के स्तुति-पात्र, शैल-संभवा (गिरिजा) के पुत्र, अनुदिन-आमोदी (प्रसन्न), विद्या प्रदान करने

तेटगीति— लोक वंदित गुणवंतु, नेक दंतु,
नतुल हेरंबु, सत्करुणावलंबु,
विमल रविकोटितेजु, श्रीविघ्नराजु,
ब्रथित वाक्प्रौढि सेविंचि प्रस्तुतिंतु ॥ ५ ॥

चम्प०— करिमुखुडुं, गुमारुडु विकारपुजेतल मुद्दु सूपुचुन्
गुरुवुलु वारुचुन्नेंदुट गुप्पुन दाटुचु गन्नु दोयितो
शिरमुलु रायुचुं गबरि जेंचिन चुंद्रुनि बट्टि तीयगा
गरमुलु जाप नव्वेंडु जगम्मुलतल्लि शुभंबुलीवुतन् ॥ ६ ॥

उत्प०— सामज युग्ममिंपलर जल्लनि नीरु पसिंडि कुंडलन्
वेमरु वंचि वंचि कडुवेडुकतो नभिषिक्तु जेयगा
दामरपुव्वु गद्दिय मुदंबुन नुंडेडि लोकमात मा
कामुनितल्लि लोकमुल गाचु गृपामति नेल्ल कालमुन् ॥ ७ ॥

उत्प०— मेलिमि मंचुकोंड नुपमिंपगजालिन यंचनेक्कि, वा-
ह्याळि नटिंचि वच्चु चतुरास्यु नेंदुर्कोनि नव्वु देरगा
वालिक सोगकन्नुल निवाळि योनर्चि, मुदंबुगूर्चु वि-
द्यालय, वाणि शब्दमुल नर्थमुलन् सततंबु माकिडुन् ॥ ८ ॥

## संस्कृतांध्र महाकवि स्तुति

सी०- सुर सन्नुत ज्ञानु सुविवेकि वाल्मीकि, नखिल वेदागमावासु व्यासु
घोरांधकार प्रभारवि भारवि, सत्कांति हिमकर श्लाघु माघु,
विविध कळा नीति विख्याति भवभूति, ब्रकट कार्यधुरीणु भट्टबाणु,
मानिनीलोक सम्मद भद्रु शिवभद्रु, गविता रसोल्लासु गालिदासु।

तेटगीति— स्तुत गुणोद्दामु नाचन सोमु, भीमु,
नव्य मंजुल वाग्धुर्यु नन्नपार्यु,
रसिकुडैनट्टि श्रीनाथु, रंगनाथु,
दिक्क कविराजु, भोजु नुतिंचि मिंचि ॥ ९ ॥

कन्द— तोल्लिटि यिप्पटि सत्कवि
वल्लभुलनु रसिक विनुत वाग्विभव कळा
मल्लुल गविता रचनल
बल्लिदुलैनट्टि घनुल भक्तिग दलतुन् ॥ १० ॥

वाले, परम दया के अभ्यासी, पाशांकुश (धारणकर) उल्लसित रहने वाले[1], सुविख्यात, नागोपवीत को धारण करनेवाले, लोकवन्दित, गुणवान्, एकदंत (वाले), अतुल हेरम्ब (शौर्य से गर्वीले बने), सत्करुणा के अवलम्ब, विमल-कोटि-रवि के तेज से सम्पन्न, श्री विघ्नराज की समुचित-वाक्-प्रौढ़ता से सेवा तथा प्रस्तुति करूँगी ।। ५ ।।

अपनी विकृत चेष्टाओं से प्यारे बनते हुए, बिखरे कुन्तल से शोभित, गिरते-पड़ते चलते हुए, आँखें मटकाते हुए, विचित्र गति से सिर हिलाते हुए, (माँ के मुख से मुख मिलाकर नज़र बचाकर) माँ की शिखा में सुशोभित चन्द्र (आभूषण विशेष) को पकड़ने के प्रयत्न में बाहें फैलाकर आगे बढ़नेवाले, करि (गज) -मुखवाले गणेश तथा कुमार को देख आनन्दित होनेवाली जगज्जननी (पार्वती) (हमें) शुभ प्रदान करेगी ।। ६ ।।

सामज (हाथी)- युगल (जोड़े) के ठण्डे जल को स्वर्ण-कलशों के द्वारा सुन्दर-ढंग से बार-बार झुक-झुककर आनन्द-सहित अभिषिक्त करते समय, कमलपीठ पर मुदित हो उपविष्ट, लोकमाता, हमारे कामदेव की माता, कृपामति से युक्त होकर, अखंड संपदाएँ प्रदान करेगी ।। ७ ।।

श्रेष्ठ हिमालय को मात करनेवाले हंस पर आरूढ़ होकर, वाह्यालि (वायुसेवन-हवाखोरी) का अभिनय करनेवाले चतुरास्य (ब्रह्मा) से भेंटकर, विहँसकर, आँखों से आरती उतारकर, मोद को प्रदान करनेवाली विद्या की आलया, वाणी, सदा हमें शब्द तथा अर्थ प्रदान करेगी ।। ८ ।।

### संस्कृत तथा आंध्र के महाकवियों की स्तुति

सुरों से सन्नुत (प्रशंसित), ज्ञानी, सुविवेकी वाल्मीकि, अखिल वेदागमावासी व्यास, घोर अन्धकार के लिये रवि की प्रभा (सम) भारवि, हिमकर की सत्कांति के समान श्लाघ्य माघ, विविध कलानीति से विख्यात् भवभूति, प्रकटकार्य धुरीण (कार्य-कुशल) भट्टबाण, मानिनी-लोक-सम्मत भद्र शिवभद्र, कविता-रस के उल्लासी कालिदास, स्तुत्य गुणोद्दाम नाचनसोम (तथा) भीम, नव्यमंजुल वाग्धुर्य नन्नयार्य, रसिक श्रीनाथ (तथा) रंगनाथ, कविराज तिक्कना (आदि) की स्तुति कर, धीशक्ति से संपन्न होकर, ।। ९ ।।

प्राचीन, अर्वाचीन सत्कवि-वल्लभ तथा रसिक-विनुत वाग्विभव की कला में मल्ल (एवं) कविता की रचनाओं में प्रवीण ऐसे महान् कविवरों का भक्तिपूर्वक स्मरण करती हूँ ।। १० ।।

---

१. इस समास का 'परशुवराभ्यास' (परशु के संचालन के श्रेष्ठ अभ्यास से युक्त) पाठांतर भी प्राप्त होता है ।

कन्द— गुरुलिंग　　जंगमार्चन
परुड्डनु, शिवभक्ति रतुड्ड, बांधव, हितुड्डन्
गुरुडातुकूरि　　केसय
वर पुत्रिनि मोल्लयनग वरलिन दानन् ।। ११ ।।

मोल्ल कविता विलसनमु

सी०— देशीयपदमुलु देनुगुलु सांस्कृतुल् संधुलु प्राज्ञुलशब्दवितति
शय्यलु रीतुलु जाटुप्रबंधंबु लायासमासंबुलर्थदृष्टि
भावार्थमुलु गाव्यपरिपाकमुलु रस भाव चमत्कृतुल् पलुकु सरवि
बहुवर्णमुलुनु विभक्तुलु धातुललंकृतिच्छंदोविलक्षणमुलु
तेटगीति— गाव्यसंपद क्रियलु निघंटुवुलुनु
ग्रममु लेवियु नेरुग, विख्यात गोप-
वरपु श्रीकंठमल्लेशुवरमु चेत
नेरि गवित्वंबु जेप्पगा नेर्चुदान ।। १२ ।।
कन्द— चेप्पुमनि　　रामचंद्रुड्ड
सेप्पिचिन पलुकुमीद जेप्पेद ने ने-
ल्लप्पुडु　　निहपरसाधन
मिप्पुण्यचरित्र, तप्पुलेंचकुडु कवुल् ।। १३ ।।
वचनमु— अनि मरियुनु, ।। १४ ।।
कन्द— वलिपपुसन्नपय्येदनु वासिग गंधपुबूततोडुतन्
गोलदिन गानवच्चुवलिगुब्बचनुंगव ठीवि नोप्पगा
देलुगनि चेप्पुचोट गड्डदेटलमाटल ग्रोत्तरीतुलं
बोलुपु वहिपकुन्न, मरिपोंदगुने पटहादिशब्दमुल् ।। १५ ।।
कन्द— मुनु　　संस्कृतमुल　　देटग
देनिंगिंचेडिचोट नेमि देलियक युंडन्
दनविद्य　　मेरय　　ग्रम्मर
घनमगु संस्कृतमु जेप्पगा रुच्चियगुने ? ।। १६ ।।
आट०— तेने सोक नोरु तीयन यगु रीति
दोड　　नर्थमेल्ल　　दोचकुंड
गूढ　　शब्दमुलनु　　गूर्चिनकाव्यम्मु
मूग　　चेविटिवारि　　मुच्चटगुनु ।। १७ ।।

गुरुलिंग जंगम की अर्चना में तत्पर, शिवभक्तिरत, बान्धव-हितैषी (मेरे) गुरु-आतुकूरि केसया की वर-पुत्री मोल्ल नामधारी हूँ ।। ११ ।।

## मोल्ल का कविता विलास

देशी, तेलुगु (तथा) संस्कृत शब्दावली, सन्धि, प्राज्ञों की शब्दतति, शय्याएँ, रीतियाँ (आदि को) प्रकट करनेवाले प्रबन्ध, (तथा) प्रचुर समास, अर्थ दृष्टि, भावार्थ, काव्य-परिपाक, रस-भाव-चमत्कार प्रकट करने का ढंग, (तथा) बहुवर्ण, विभक्तियाँ, धातुएँ, अलंकार, विभिन्न छन्द, काव्य-सम्पदा, क्रियाएँ, शब्दकोष, रचना का कोई क्रम नहीं जानती । (मैंने तो) सुविख्यात गोपवरम के श्रीकण्ठ मल्लेश के वर प्रसाद से कविता करना सीखा है ।। १२ ।।

रामचन्द्र के आदेश पर यह (काव्य) कह रही हूँ । इह और पर की साधना के लिए सदा यह पुण्य चरित (साधन) है । (मेरी रचना में) कविगण दोष न गिनें ।। १३ ।।

और फिर— ।। १४ ।।

तेलुगु-कविता-कन्या के वर्णन के प्रसंग में विशेषकर स्वच्छ (श्वेत) पतले-वस्त्र के आँचल की आड़ में, सुंदरता से चन्दन के लेप से युक्त हो, किंचित प्रकट होनेवाले गोल स्तनों की शोभा का वर्णन स्पष्ट सुन्दर शब्दों में नई शैली (व) रीति में न हो तो क्या पटहादि शब्द फबते हैं (शोभा देते हैं ? ) ।। १५ ।।

संस्कृत का तेलुगु में स्पष्ट अनुवाद करते हुए यदि क्लिष्ट कर दिया, अपनी विद्या को प्रकट करने के लिए संस्कृत-गर्भित कर दिया तो (वह कविता) रुचिकर कैसे होगी ? ।। १६ ।।

मधु के स्पर्श मात्र से ही जिस प्रकार मुँह मीठा हो जाता है, उसी प्रकार अर्थ झट स्पष्ट न होकर, गूढ़ शब्दों से रचित (होता है तो वह) काव्य मूक-बधिरों का वार्तालाप (मात्र) हो जाता है ।। १७ ।।

कन्द-- कंदुवमाटलु, सामॆत
लंदमुगा गूर्चि चॆप्प नदि तॆनुगुनकुन्
बॊंदै, रुचियै, वीनुल
विंदै, मरि कानुपिंचु विबुधुल मदिकिन् ।। १८ ।।

वचनमु– अनि मरियुनु, ।। १९ ।।

रामकथा सुधामाधुरि

कन्द— आदि रघुरामुचरितमु
नादरमुग विन्न ग्रॊत्तयै, लक्षण सं-
पादम्मै, पुण्यस्थिति
वेदम्मै तोचकुन्न वॆरिनॆ चॆप्पन् ? ।। २० ।।

उत्प०– राजित कीर्तियैन रघुरामुचरित्रमु मुन् गवीश्वरुल्
तेज मॆलर्प जॆप्पिरनि तॆलिसियु ग्रम्मरजॆप्पने? ललन्
भूजन कल्पकंबगुचु, भुक्तिकि मुक्तिकि मूलमंचु ना
राजुनु दैवमैन रघुरामु नुतिंचिन दप्पु गलगुने ? ।। २१ ।।

कन्द— वारांगन श्रीरामुनि
पेरिडि राचिलुक बिलिचि पॆंपु वहिंचॆन्;
नेरुपु गल चंदंबुन
ना रामुनि विनुति सेय हर्षमु गादे ? ।। २२ ।।

कन्द— नेरिचि पॊगडिन वारिनि,
नेरक कॊनियाडुवारि निजकृप मनुपं-
गारण मगुटकु भक्तियॆ-
कारण मगु गानि चदुवु कारण मगुने ? ।। २३ ।।

उत्प०— सल्ललितप्रतापगुणसागरुडै विलसिल्ल, धात्रिपै
बल्लिदुडैन राम नरपालकुनिन् स्तुति सेयु जिह्वकुन्
जिल्लर राजलोकमुनु जेकोनि मॆच्चग निच्च पुट्टुने?
यल्लमु बॆल्लमुंदिनुचु नप्पटिकप्पटि कास सेयुने ? ।। २४ ।।

चमत्कार से युक्त वचन, कहावतों के द्वारा, सुन्दर रीति से सजाकर काव्य रचने पर, वह तेलुगु के अनुकूल होकर, विबुध जनों को रुचिकर तथा कर्णपेय होगा ।। १८ ।।

और फिर— ।। १९ ।।

### रामकथा की सुधा माधुरी

कोई रघुराम के प्राचीन (सनातन) चरित को आदर के साथ सुन ले तो नित्य, नवीन, विलक्षण तथा पुण्य स्थिति (मोक्ष की प्राप्ति के लिए) वेद के समान यदि द्योतित न हो तो मैं क्या कोई पगली हूँ जो यह कथा कहूँ ? ।। २० ।।

भव्य कीर्ति से युक्त रघुराम के चरित का वर्णन कवीश्वरों ने पहले ही तेज को प्रकट करते हुए किया था । ऐसा जानकर भी मैं दुबारा क्यों कहने लगी ? इसलिए कि भू-जनों के लिये कल्पवृक्ष तथा भक्ति एवं मुक्ति का मूल उस राजा की, भगवान रघुराम की स्तुति करने में क्या कोई दोष होगा ? (अर्थात्) स्तुति करने में कोई दोष नहीं है ।। २१ ।।

वारांगना (वेश्या) ने श्रीराम का नाम लेकर तोते को बुलाया और मोक्ष प्राप्त कर लिया । यथा सामर्थ्य उस राम की स्तुति करने में हर्ष नहीं होगा क्या ? ।। २२ ।।

पढ़-लिखकर स्तुति करनेवालों (तथा) अनपढ़ हो प्रशंसा करनेवालों (सभी लोगों) को (श्रीराम) का अपनी कृपा से उद्धार करने का कारण भक्ति ही है । इसका हेतु (भक्ति नहीं) क्या कभी विद्या हो सकती है ?।। २३ ।।

सल्ललित-प्रताप-गुण-सागर सदृश विलसित होकर पृथ्वी पर बली बने नरपाल राम की स्तुति करनेवाली जिह्वा को इधर-उधर के (अधम) राजलोक की स्तुति करने की इच्छा कैसे होगी ? अदरक-गुड़ खाते हुए, किसी दिन की (शुभ) इच्छा उसी दिन पूरी कैसे कर लूँ ? (अर्थात् तात्कालिक इच्छाओं की पूर्ति न कर परमपद की प्राप्ति की कामना करती हूँ ।) ।। २४ ।।

# बाल काण्डमु

## कथा प्रारम्भमु

वचनमु– अनि वितर्किंचि, मुदंबुन निष्ट-देवता प्रार्थनंबुनु
बुरातन कवींद्र स्तुतियुनुं जेसि ना यौनर्पंबूनिन मौल्ल
रामायण महाकाव्यमुनकु गथाक्रमंबॆट्टुलनिन, ॥ १ ॥

## अयोध्यापुर वैभवमु

सीसमु– सरयूनदीतीर सततसन्मंगळ प्राभवोन्नतमहावैभवम्मु,
कनकगोपुरहर्म्यघनकवाटोज्ज्वलत्प्राकारगोपुर श्रीकरम्मु,
गजवाजिरथ भटगणिकातपत्र चामरकेतुतोरण मण्डितम्मु,
धरणी वधूटिकाभरण विभ्रम रेख दरिसिंचु माणिक्य दर्पणम्मु,

तेटगीति— भानुकुलदीप राजन्य पट्टभद्र
भासिनवरत्नखचित सिंहासनम्मु,
नाग नुति कॆक्कु महिम ननारतम्मु,
धर्मनिलयम्मु, महि नयोध्यापुरम्मु ॥ २ ॥

सीसमु– मदनागयूथ समग्रदेशमु गानि कुटिलवर्तन शेषकुलमु गादु,
आहवोर्वीजय हरिनिवासमु गानि कीशसमुत्करांकितमु गादु,
सुन्दरस्यंदनमंदिरंबगु गानि संततमंजुळाश्रयमु गादु,
मोहनगणिकासमूहगेहमु गानि यूथिकानिकरसंयुतमु गादु,

तेटगीति— सरस सत्पुण्यजन निवासम्मु गानि
कठिननिर्दयदत्यसंघम्मु गादु,
कादु कादनि कौनियाड गलिगिनट्टि
पुरवराग्रम्मु साकेतपुरवरम्मु ॥ ३ ॥

सीसमु– भूरिविद्याप्रौढि शारदापीठमै गणुतिप सत्यलोकम्मुवोलॆ,
महनीयगुण सर्वमंगळावासमै पौगडॊंदु कैलासनगमुवोलॆ,
ललितसंपच्छालि लक्ष्मीनिवासमै युरवैनवैकुंठपुरमुवोलॆ,
विरचित प्रख्यात हरिचंदनाढ्यमै यारूढि नमरालयम्मु वोलॆ,

# बाल काण्ड

## कथा प्रारम्भ

इस प्रकार वितर्क कर, आनन्द से इष्टदेवता की प्रार्थना और प्राचीन कवीन्द्रों की स्तुतिकर मैंने जिस मोल्ल रामायण का प्रारम्भ करना चाहा, उसका कथा-क्रम इस प्रकार है ।। १ ।।

## अयोध्यापुर का वैभव

सरयू नदी के तटपर अयोध्यापुर सदा सन्मंगल तथा कीर्ति से उन्नत महावैभवशाली नगर है । कनक गोपुर से युक्त हर्म्य, घन कपाट से उज्ज्वल बने प्राकार, गोपुर आदि श्रीकर हैं । गजवाजि (हाथी-घोड़े), रथ, भट, गणिका, छत्र, चामर, केतु, तोरण से मण्डित है । अयोध्यापुर धरणीवधूटिका के आभरण की विभ्रम रेखा को प्रकाशित करनेवाला माणिक्य-दर्पण है । भानुकुल-दीपक राजाओं की पट्टभद्रता को भासित करनेवाला नवरत्न-खचित सिंहासन है । ऐसा स्तुत्य महिमा से युक्त वह (नगर) धरती पर धर्म का निलय है ।। २ ।।

मदनाग (मदवतियों के) यूथ (समूह से संयुक्त) प्रदेश है । किन्तु मदनागों (कुटिल वर्तनवाले शेष नागों) का कुल (समूह) नहीं है । आहव (युद्ध) में उर्वी पर विजयी हरि (विष्णु) का निवास है, किन्तु हीन बन्दरों का समूह नहीं है । सुन्दर स्यंदन (रथ, वाहन) का मन्दिर (निलय) है किन्तु सदा सुकुमारता का आश्रय नहीं है । मोहिनी गणिकाओं (वेश्याओं) के समूह का घर है, किन्तु यूथिका (जूही का पौधा, जंगली पौधा व फूल) के समूह से संयुत नहीं है । सरस (रसिक) तथा पुण्य जनों का निवास है, किन्तु कठिन, निर्दयी दैत्यसंघ का (निवास) नहीं है । "नहीं है-नहीं है" ऐसा स्तुत्य साकेत-पुरवर (अयोध्या) सब नगरों में श्रेष्ठ है ।। ३ ।।

(वह नगर) भूरि विद्या की प्रौढ़ता से शारदा-पीठ बन, गणना में सत्यलोक के समान है, महनीय गुणों से सर्वमंगलों का आवास बन, औचित्य सम्पन्न वैकुण्ठपुर के समान है । तथा विशेषरूप से निर्मित प्रख्यात हरिचंदन से सम्पन्न हो, आरूढ रूप से अमरालय के समान

तेटगीति— राजराज निवासमै तेजरिल्लि
नरवरोत्तर दिग्भाग नगरिवोलॆ;
सकल जनमुलु गॊनियाड जगमुलंदु
बॊलुपु मीरुनु साकेत-पुर-वरम्मु ॥ ४ ॥

कन्द— इम्मुल नप्पुरि वप्रमु
कॊम्मुलपै नुंडि पुरमुकॊम्मलु वेड्कन्
दम्मुलचुट्टमु पदजल-
जम्मुलु पूजितुरॊगि नजस्रमु ब्रीतिन् ॥ ५ ॥

कन्द— परुवुन मुरुवै युंडुनु
सुरपुरमुन गल्पतरुलु चूपर किंपै;
परुवुन मुरुवै युंडुनु
दुरगंबु लयोध्य गल प्रतोळिकलंदुन् ॥ ६ ॥

कन्द— दान[1] गुणम्मुन सुरपुरि
नेनाड्डुनु नमररत्न मॆन्निक कॆक्कुन्;
दान[2] गुणंबुन मिक्किलि
येनुगु लापुरमुलोन नॆन्निक कॆक्कुन् ॥ ७ ॥

कन्द— कवि गुरु बुध मित्रादुलु
विविधार्चनलनु सुरपुरि[3] वेलयुदुरॆलमिन्;
गविगुरुबुधमित्रादुलु
विविधार्चनलं बुरमुन वेलयुदु रॆपुड्डुन् ॥ ८ ॥

कन्द— भोगानुरागसंपद
भोगुलु वर्तितु रंदु भूनुतलीलन्;
भोगानुरागसंपद
भोगुलु वर्तितु रिंदु भूनुतलीलन् ॥ ९ ॥

सी०—प्रकटाग्नि होत्र[4] संपन्नुलौदुरु गानि रमणीयरुक्मकारकुलु गारु,
शुभ पवित्रोज्ज्वल सूत्रधारुलु गानि टक्करि हास्य नाटकुलु गारु,
उभय संध्यादि विध्युक्तकर्मुलु गानि चर्चिपगा निशाचरुलु गारु,
तिलर्किचि चूड सद्विजुलौदुरे कानि तलपंग बक्षिजातमुलु कारु

---

१. दातृत्व २. मदजल ३. विविधार्चनल नमरपुरि। (पाठान्तर से श्लेष का पोषण हुआ है।) ४. प्रकटानुराग (पाठांतर)।

है। उत्तर दिशा में स्थित राजराज कुबेर के निवासस्थान अलकापुरी के समान तेजस्वी तथा जगत के सकल जन से प्रशंसित साकेतपुरी विलसित है ॥ ४ ॥

पर्वत के शिखरों के समान उस पुरी के भवनों के कलशों पर से पुरकामिनियाँ बड़े ही आनन्द और प्रीति के साथ कमल-बान्धव के चरण-कमलों की पूजा सदा करती हैं ॥ ५ ॥

सुरपुर में कल्पतरु जिस प्रकार अपने यौवन में सुन्दर ढँग से विलसित होकर, दर्शकों के लिए नयनानन्दकर होते हैं, उसी प्रकार अयोध्या की शालाओं में घोड़े अपने यौवन को पाकर हृष्ट-पुष्ट हो विलसित हैं ॥ ६ ॥

दान गुण (दातृत्व) के लिए सुरपुर में अमररत्न (चिन्तामणि) सर्वदा प्रसिद्ध है तो इस पुर में दानगुण (मदजल-धाराओं) के कारण गजगण प्रसिद्ध हैं ॥ ७ ॥

कवि (शुक्र), गुरु (बृहस्पति), बुध, मित्र (सूर्य) आदि सुरपुरी में विविध अर्चनाओं से सुन्दरता से सम्मानित होते रहते हैं, तो (इस) नगर में कवि, गुरु (जन), बुध (पंडित), मित्रादि विविध अर्चनाओं से सदा सम्मानित होते रहते हैं ॥ ८ ॥

भोग (फणि) के अनुराग की सम्पदा से भोगीजन (नाग) प्रशंसनीय रूप से वहाँ (अन्य लोक में) विचरते हैं, तो यहाँ भोगीजन (रसिक, विलासी) भोग के अनुराग की सम्पदा से स्पृहणीय रूप से विचरते रहते हैं ॥ ९ ॥

प्रकट अग्निहोत्र सम्पन्न तो हैं किन्तु रमणीय स्वर्णकार (सुनार) नहीं है। शुभ, पवित्र तथा उज्ज्वल सूत्र को धारण करने-वाले हैं, किन्तु कपट हास्य करनेवाले नट नहीं हैं। उभय संध्याओं में विधियुक्त कर्म करनेवाले हैं, किन्तु विचार करें तो निशाचर (राक्षस) नहीं हैं। विचारकर देखने पर वे सद्द्विज तो हैं, किन्तु विचार करने पर पक्षी-जात (द्विज) तो नहीं हैं। बाडव (ब्राह्मण) तो हैं किन्तु बड़वा-अग्निरूपा क्रोधी नहीं है। पंडित हैं परन्तु चालाक नहीं हैं।

तेटगीति— बाडबुलु गानि यग्नि रूपमुलु गारु,
पंडितुलु गानि विज्ञुलपगिदि गारु,
धीवरुलु गानि जातिनिंदितुलु गारु,
परम पावनु लापुरि धरणिसुरुलु ॥ १० ॥

उत्प०— राजुलु कान्तियंदु, रति राजुलु रूपमुनंदु, वाहिनी-
राजुलु दानमंदु, मृगराजुलु विक्रमकेळियंदु, गो
राजुलु भोगमंदु, दिन राजुलु संतत तेजमंदु, रा
राजुलु मानमंदु नगरम्मुन राजकुमारु लंदरुन् ॥ ११ ॥

सी०-तग दान विख्याति धर गुबेरुलु गानि सततांग कुष्ठ पीडितुलु गारु,
निर्मल सत्योक्ति धर्म सूतुलु गानि चर्चिंप ननृत भाषकुलु गारु,
प्रकट विभूति सौभाग्य रुद्रुलु गानि वसुधपै रोषमानसुलु गारु,
कमनीय गांभीर्य घनसमुद्रुलु गानि यतुलित भंग संगतुलु गारु,
तेटगीति— वर्तकुलु गानि पक्षुलेवरुस गारु,
भोगुले गानि पामु लैंप्पुडुनु गारु,
सरसुले कानि कौलकुल जाड गारु,
वन्नेंकेक्किन यप्पुरि वैश्युलेंल्ल ॥ १२ ॥

कन्द— पंटल भाग्यमु[1] गलरै
पंटल पै बंटलमर ब्रतुकुदुरेंपुडुन्
बंटलु बाडियु गलया
पंटलु मौंदलैन कापुप्रज लानगरिन् ॥ १३ ॥

सीसमु—कलिकिचूपुलचेत गरगिंप नेर्तुरु ब्रह्मचारुलनैन भ्रांति गौंलिपि,
मृदुवचोरचनल वर्दालिप नेर्तुरु घन मुनींद्रुल नैन गच्चडमुलु,
वलपुलु पैंजल्लि वलपिंप नेर्तुरु संन्यासुलनु नैन ज्ञलमु पट्टि,
सुरत बंधम्मुल जौंक्किप नेर्तुरु व्रतमुलु गैकौंन्न यतुल नैन,
तेटगीति— नचल मैक्किप नेरुतु रौषधमुल,
मरुलु गौंलुपंग नेर्तुरु मंत्रमुलनु,
धनमु लंकिप नेर्तुरु तक्कु सेसि,
वासिकेंक्किन यप्पुरि वारसतुलु ॥ १४ ॥

---

१. भाग्योदयुलै—(पाठांतर) (धन सम्पदाओं का उदय जिनके यहाँ हुआ है)

धीवर (बुद्धि में श्रेष्ठ) हैं, किन्तु निन्दित जाति के धीवर (मछुए) नहीं है। (इस प्रकार) उस नगर के ब्राह्मण परम पावन हैं ॥ १० ॥

इस नगर के सभी राजकुमार कांति में राजा (चन्द्र) हैं, रूप में रतिराज (मन्मथ) हैं, दान में वाहिनीराज (नदी, सागर) हैं, विक्रम क्रीड़ा में मृगराज हैं, भोग में वृषभराज हैं, सतत् तेज में दिनराज (सूर्य) हैं, मान में राजराज (दुर्योधन) हैं ॥ ११ ॥

धरती पर दान गुण में विख्यात कुबेर हैं, किन्तु सतत् अंगों में कुष्ठ रोग से पीड़ित (दान-पीब की धारा) नहीं है, निर्मल तथा सत्य-उक्ति तथा धर्म के प्रसूत हैं किन्तु चर्चा करने पर भी अनृतभाषी नहीं है, प्रकट विभूति-सौभाग्य से रुद्र हैं, किन्तु वसुधा पर (स्थित) रोष मानसवाले नहीं हैं, कमनीय गंभीरता में घन-समुद्र रूप हैं किन्तु अतुलित भंग (अपमान और लहरें) की संगति करनेवाले नहीं है। व्यापारी हैं किन्तु पक्षपात करनेवाले (पक्षी) नहीं हैं। भोगी (विलासी) तो हैं किन्तु भोगी (साँप) नहीं हैं। सरस (रसिक) हैं किन्तु सरोवर नहीं है। इस प्रकार उस नगर के समस्त वैश्य लब्धप्रतिष्ठ हैं ॥ १२ ॥

फसल जिनका भाग्य है, जो फसल पर फसल उगाते जीवन व्यतीत करते हैं, धान और दूध जिनकी फसल हैं, वे किसान उस नगर की प्रजा हैं ॥ १३ ॥

उस नगर की प्रसिद्ध वार-सतियाँ (वेश्याएँ) मनोहर वीक्षणों के द्वारा ब्रह्मचारियों को भी भ्रांत कर, द्रवित कर सकती हैं। मृदुल वचन-रचना के द्वारा महामुनियों के भी कौपीन उतार सकती हैं। प्रेम बिखेरकर संन्यासियों को भी हठ से प्रेम सिखा सकती हैं। व्रतधारी यतियों को भी सुरति (संभोग) के बन्धनों में प्रसन्न कर सकती हैं। औषधियाँ खिलाकर अचल (अचंचल तथा समाधिस्थ) करना जानती हैं। मंत्रों (जादू टोना) के द्वारा प्रेम करना जानती हैं। धोखे में डालकर धन कमाना जानती हैं ॥ १४ ॥

सी०-शारद गायत्रि शांडिल्य गालव कपिल कौशिक कुल ख्याति गलिगि,
मदन विष्वक्सेन माधव नारद शुक वैजयंतिकार्जुनुलु गलिगि,
चंद्रार्क गुह गिरि संभव जय वृष कुंभ बाणादुल गॊमरु मिगिलि,
सुमन ऐरावत सुरभि शक्रामृत पारिजातमुल सॊपार गलिगि,
तेटगीति– ब्रह्मनिलयम्मु, वैकुंठ पट्टणम्मु,
नाग कंकणु शैलम्मु, नाक पुरमु,
ललितगति बोलि, येवेळ दुलनु दूगि,
घनतनॊप्पारु नप्पुरि वनमुलॆल्ल ।। १५ ।।

चम्प०– कनक विलास कुंभमुलु गब्बि कुचंबुल लील, जित्र के-
तनमुलु पैटकॊंगुल विधंबुन ग्राल, गवाक्षमुल् रहिन्
गनुगव यट्ल पॊल्पॆसगगा भुवि भोगुलु मॆच्च भोगिनी-
जनमुल रीति जॆल्वमरु सौधनिकायमु पायकप्पुरिन् ।। १६ ।।
तेटगीति– मकर, कच्छप, शंख, पद्ममुलु गलिगि,
धनदुनगरम्मुपै गालु द्रव्वुचुंडु
सरसमाधुर्य गांभीर्य सरणि बेचि
गुरुतु मीरिन यप्पुरि कॊलकुलॆल्ल ।। १७ ।।
गीतमु– अमृत धारा प्रवाहम्मुनंदु नॆपुडु
नॊक्क धेनुवु दिवि नुन्न नुचित मगुनॆ ?
अमृत - धारा - प्रवाहम्मुनंदु नॆपुडु
बॆक्कु धेनुवु लप्पुरि बेरु नॊंदु ।। १८ ।।
कन्द– ई करणि सकल - विभव-
श्रीकर मयि ता ब्रसिद्धि जॆलगुचु महिमन्
नाक पुरितोड नॊरयुचु
साकेत पुरम्मु वॆलयु जगमु नुतिपन् ।। १९ ।।
वचनमु– अट्टि महापट्टणंबुन कधीश्वरुंडॆट्टिवाडनग—

## दशरथुनि धर्मपालनमु

सी०– तन कीर्ति कर्पूर ततिचेत वासिचॆ बट्टुतर ब्रह्मांड-भाण्ड मॆल्ल
दन शौर्य दीप्तिचॆ निर्नबिब मनयंबु बगलॆल्ल मागुडु वडग जेसॆ
दन दानविख्याति ननुदिनंबुनु नर्थि दारिद्र्यमुलु वॆळ्ळबार दरिमॆ
दन नीति महिमचे जन लोकमंतयु दगिलि संततमुनु बॊगडदनरॆ

उस नगर के सब वन शारदा, गायत्री, शांडिल्य, गालव, कपिल, कौशिक के कुल की ख्याति को धारण किए हुए; मदन, विष्वक्सेन, माधव, नारद, शुक, वैजयंती, अर्जुन (पुष्प जातियाँ) को लिए हुए; चंद्रार्क, गुह, गिरिसंभव, जय, वृष, कुंभ, बाणादि की मनोहरता से अधिक संपन्न हो; सुमन, ऐरावत, सुरभि, शक्रामृत, पारिजात के सौन्दर्य को लिये हुए; समय-समय पर ललित गति से युक्त बनकर ब्रह्म-निलय, वैकुण्ठ-पट्टण, नाग-कंकण शैल (कैलास गिरि), और नाकपुर की तुलना में सदा सुशोभित हैं ॥ १५ ॥

उस नगर के भवनसमूह स्वर्ण-विलसित कलशों के कुच-कुंभों के समान, चित्र-केतन के आँचल के समान शोभित होने पर, गवाक्षों के आँखों के समान सुशोभित होने पर, धरती के भोगीजनों से प्रशंसित भोगिनी-जन (वेश्या) के समान सुन्दर बने हुए हैं ॥ १६ ॥

मकर, कच्छप, शंख, पद्म को लिये हुए सरस माधुर्य, गाम्भीर्य से युक्त उस पुरी के सभी सरोवर (मानों) धनद की नगरी से होड़ लेते रहते हैं ॥ १७ ॥

अमृतधारा-प्रवाह में एक कामधेनु का स्वर्ग में ही प्रसिद्ध होना कहाँ तक समीचीन है ? इसलिए (कि जब) अमृत-(दुग्ध) धारा-प्रवाह में इस पुरी की अनेक धेनुएँ प्रसिद्ध हुई हैं ॥ १८ ॥

इस प्रकार सकल वैभव का श्रीकर हो स्वयं धरती पर प्रसिद्ध होते हुए, स्वर्ग की पुरी की बराबरी करती हुई साकेतपुरी जगत में प्रशंसित होकर विराजमान है ॥ १९ ॥

ऐसे महापट्टण का अधीश्वर कैसा है ? यह पूछें तो—

## दशरथ का धर्मानुसार पालन

(दशरथ) अपनी कीर्ति-रूपी कर्पूर-समूह के साथ पटुतर ब्रह्माण्ड-भाण्ड में सुवासित हुए। अपने शौर्य की दीप्ति से सूर्य-बिम्ब को भी दिन में भी सदा मलिन करके रख दिया। अपने दान की ख्याति से अनुदिन अर्थियों (याचकों) के दारिद्र्य को दूर भगाया। अपनी नीति की महिमा से सर्वदा जनलोकों (प्रजा) से निरंतर प्रशंसित होते हुए

तेटगीति— भळिर ! कॊनियाड बात्रमै परगिनट्टि
वैरि - नृपजाल - मेघ - समीरणुंडु,
दिनकरान्वय - पाथोधि - वनजवैरि,
निशित - कौक्षेयक - करुंडु दशरथुंडु ॥ २० ॥

सी०— पालिपडविनीति परुल मन्नन जेसि पालिंचु सज्जन प्रतति नॆपुडु,
मनुपडॆन्नडु जोरुलनु गारवमु जेसि मनुचु नाश्रित कोटि घनमुगाग,
वॆरपॆरुंगडु वैरिवीरुल बॊंडगन्न वॆरचु बॊंकॆयॆड दॊरलुनो यनि,
तलकडर्थि व्रातमुलु मीरि पैकॊन्न दलकु धर्मम्मॆंदु दप्पुनॊ यनि,
तेटगीति— सरवि बोंषिप डरिगणषट्क मॆपुडु,
वॆलय बोंषिंचु नित्यम्मु विप्रवरुल,
भास्करान्वय - तेजो - विभासितुंडु,
मान - धुर्युंडु दशरथक्ष्मावरुंडु ॥ २१ ॥

सी०— कनगोरडॊंकनाडु गन्नुल बर-वधू-लावण्य-सौभाग्यलक्षणमुलु,
विनगोरडॊंकनाडु वीनुल किंपुगा गॊलुचुवारल मीदि कॊंडॆमुलनु,
चित्तंबु वॆडलिंचि जिह्वाग्रमुन गोरि पलुकडु काठिन्य भाषणमुलु,
तलपडिचुक यैन धनकांक्ष नेनाडु बंधु मित्राश्रित प्रतति जॆरुप,
तेटगीति— सतत गांभीर्य धैर्य भूषण परुंडु,
वार्तकॆक्किन राजन्य वर्तनुंडु,
सकल भूपाल जनसभा सन्नुतुंडु,
धर्म तात्पर्य निरतुंडु, दशरथुंडु ॥ २२ ॥

सी०— विरहातिशयमुन वृद्धिपॊंदग लेक विषधरुंडनु गोर विषमु बूने,
तापंबु क्रॊव्विंचि तरियिंप नोपक पलुमारु गडगंड्ल बडियॆ गरुलु
कंदर्प शर वृष्टि नंद नोपक घृष्टि वनवासमुन ग्रुस्सि वनरु सूपॆ,
दीपिंचि वलपापनोपक कूर्मंबु कुक्षिलोपल दल ग्रुक्किकॊनियॆ,
तेटगीति— कुंभिनी - कांत तममीदि कूर्मि विडिचि
प्रकट राजन्य मस्तकाभरणमुकुट-
चारु माणिक्यदीपित चरणुडैन
दशरथाधीशु भुजपीठि दगिलिनंत ॥ २३ ॥

कन्द— आ राजु राज्यमंदलि
वारॆल्लनु निरत धर्मवर्तनुलगुचुन्
भूरि स्थिर विभवंबुल
दारिद्र्यं बॆरुग रॆट्टि तरि नेनाडुन् ॥ २४ ॥

विराजमान हुए, शत्रुराजा-रूपी मेघ-समूह के लिए पवन सदृश तथा सूर्यवंशी सागर के लिये वनजवैरी (चन्द्र) सम होकर, स्तुति का पात्र बनकर, निशित खड्ग धारण करनेवाला है दशरथ ॥ २० ॥

अनीतिपरों का सम्मान करके, पालन नहीं करता; सज्जनों का सदा आदर से पालन करता है। चोरों का लाड़-प्यार कभी नहीं करता और आश्रित-कोटि का बड़ा सम्मान कर रक्षा करता है। अरिवीरों (शत्रुओं) को देख कभी घबराता नहीं, किन्तु असत्य-भाषण से डरता रहता है। याचक-समूहों के घेर लेने पर परेशान नहीं होता, किंतु धर्म को आँच न आये (इस बात से) सदा डरता रहता है। अरिगण षट् (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य) का कभी पोषण नहीं करता, विप्रवरों का नित्य पोषण करता है। भास्कर-कुल में तेज से विभासित (तथा) मान का धनी है धरणीपति दशरथ ॥ २१ ॥

परायी स्त्रियों के लावण्य, सौभाग्य के लक्षणों को कभी आँखों से देखना नहीं चाहता। अपने सेवकों पर शिकायतों को, कभी कान लगाकर सुनना नहीं चाहता। चित्त लगाकर कठिन भाषण (वचन) जीभ पर नहीं लाता। धन की आकांक्षा से बन्धु-मित्र तथा आश्रित-प्रतति (-समूह) का अहित कभी नहीं सोचता। सदा गाम्भीर्य-धैर्य भूषणों से विभूषित, प्रसिद्ध राजन्य, सकल भूपालों की जनसभाओं में सन्नुत (तथा) धर्म-तात्पर्य-निरत है दशरथ ॥ २२ ॥

जब कुंभिनी-कांता (भू-रमणी) अपने पर प्रेम छोड़, प्रसिद्ध राजाओं के मस्तकों के आभरण और मुकुटों के सुन्दर माणिक्य-कांति से दीप्तिमान चरणवाले दशरथ के भुजपीठ पर स्थित हुई (तभी) (भू-रमणी के प्रेम में) विरह की अतिशयता न बढ़े, इसलिए विषधर (आदि शेष) ने दाढ़ों में विष धारण किया। विरह-ताप की अधिकता का ध्यान कर (उसे) पार न कर सक, दिग्गज कई बार अनेक संकट झेलते रहे। कन्दर्प की शरवृष्टि से पीड़ित हो, वराह ने वनवास कर, (अपने) दुःख को प्रकट किया। प्रेम की पीड़ा से दुखी हो, कूर्म ने सिर को अपने ही पेट में छिपा लिया ॥ २३ ॥

उस राजा के राज्य में सब लोग सदा धर्म के अनुसार आचरण करते हैं। भूरि श्री-वैभव से युक्त हो दारिद्रय को कभी किसी दिन जानते नहीं ॥ २४ ॥

वचनमु– इट्टि महाधैर्य-संपन्नुंडुनु, महैश्वर्य-धुर्युंडुनु नगु
दशरथमहाराजु सकल सामंत राजलोक पूज्यमानुंडगुचु
ब्राज्यंबगु राज्यंबु नेलुचु नॊक्क नाडु ।। २५ ।।

दशरथुंडु पुत्रकामेष्टि काविंचुट

सी०– संतान लब्धिकै चिंतिचि चिंतिचि, शिष्टवर्तनुडौ वशिष्टु जूचि
तन कोंकि विनुपिंप, विनि मुनिसिंहुंडु पलिकॆ ऋष्यश्रुंगुनॆलमि देर,
घनुडातडॊगि बुत्रकामेष्टि यनुपेर यागम्मु गाविंप नंदुवलन
विनुति कॆक्कग जालु तनयुलु गलुगुट सिद्धम्मु, नामाट बुद्धिलोन

तेटगीति– निलुपुमनि जॆप्प, नाराजु नॆम्मितोड
नकुटिलात्मकु ना विभांडकुनि तनयु
नॆलमि राविंचि, पुत्र-कामेष्टि यनॆडि
जन्न मॊनरिंचु चुन्नट्टि समयमुननु ।। २६ ।।

सुरल मॊरलालिंचि श्रीमहाविष्णुवभय मॊसगुट

उत्प०— रावणु चेति बाधल निरंतरमुन् बडि वेगि, मूकलै
देवतलॆल्ल गीष्पतिकि दॆल्लमुगा नॆरिगिंप,वारि रा-
जीव-तनूजुडुन्नॆडकु शीघ्रम तोड्कॊनि पोयिचॆप्प,ना
देवुडु विष्णु सन्निधिकि दिग्गन जेकॊनि पोयि यच्चटन् ।।२७।।

वचनमु— अप्पुराण पुरुषोत्तमुं गांचि, नमस्करिंचि, यिंद्रादि देवतलं
जूपि, ब्रह्म यिट्लनि विन्नविंचॆ ।। २८ ।।

उत्प०— रावणुडुग्रुडै तन पराक्रम शक्तिनि वीरि संपदल्
वाविरि गॊल्ललाडि त्रिदिवंबुनु बाडुग जेय, नेडु दे
वावळि दीन भावमुन नक्कड नुंडग नोडि, भीतिचे
देवर गान वच्चॆ निक देवर चित्तमु वीरि भाग्यमुन् ।। २९ ।।

वचनमु— अनि विन्नविंचिन विनि वनरुहलोचनुंडु दयायत्त
चित्तुंडै यनिमिष नायकुनि गूर्चि यिट्लानतिच्चॆ ।। ३० ।।

तेटगीति–वनज - गुर्भुनि गूर्चि रावणुडु मुन्नु
तपमु जेसिन वरमिच्चु तरिनि दनकु
नेरिचे जावु लेकुंड गोरुवाडु
नरुल वानरुलनु जॆप्प मरचिनाडु ।। ३१ ।।

ऐसे महान धैर्य-सम्पन्न, महैश्वर्यशाली, समस्त सामन्त राजाओं से पूजित होते हुए महाराजा दशरथ अति विस्तृत राज्य का पालन कर रहे थे। ऐसे समय में एक दिन— ॥ २५ ॥

### दशरथ का पुत्र कामेष्टि करना

संतान की प्राप्ति की अतीव चिंता करके, (दशरथ ने) शिष्टवर्तनवाले वशिष्ट को अवलोककर, अपनी इच्छा व्यक्त की। (उसे) सुन मुनिसिंह ने कहा "प्रेम से ऋष्य श्रृंग को बुला लाने पर, उस महात्मा के क्रम से पुत्र कामेष्टि-नामक यज्ञ कराने पर, उससे प्रख्यात होनेवाले पुत्र अवश्य पैदा होंगे। मेरे ये वचन अपनी बुद्धि में गाँठ बाँध रखो।" तब उस राजा ने आदर के साथ अकुटिलात्मक उस विभांडक के पुत्र (ऋष्यश्रृंग) को प्रेम से बुलाया और पुत्र-कामेष्टि नामक यज्ञ कराते समय— ॥ २६ ॥

### सुरों की प्रार्थना और श्रीमहाविष्णु का अभयदान

रावण के हाथ सदा पीड़ित होकर, समस्त देवताओं ने झुंड बाँधकर बृहस्पति से स्पष्ट कह सुनाया। (तब वे) उन्हें राजीव-तनूज (ब्रह्मा) के यहाँ ले जाकर कहने पर, वह देव उन्हें विष्णु-सन्निधि में शीघ्र ले गये, वहाँ ॥ २७ ॥

उस पुराणपुरुषोत्तम के दर्शनकर, नमस्कारकर, इन्द्रादि देवताओं को दिखाकर, ब्रह्मा ने इस प्रकार निवेदन किया ॥ २८ ॥

रावण ने बड़े क्रूर तथा भयंकर होकर अपने पराक्रम की शक्ति से इनकी सम्पदाओं को खूब लूटकर त्रिदिव (स्वर्ग) को उजाड़ दिया। आज देवावली (देवताओं का समूह) दीनभाव से वहाँ न रह सक, भयभीत हो, आपके दर्शन के लिए आये। अब आपकी दया, और इनका भाग्य! ॥ २९ ॥

इस प्रकार देवताओं के निवेदन करने पर, (सब) सुनकर वनरुहलोचन ने दयापूर्ण चित्त हो, अनिमिषनायक (इन्द्र) के प्रति इस प्रकार आज्ञा दी ॥ ३० ॥

पूर्व में रावण ने वनजगर्भ (ब्रह्मा) के प्रति तपस्या की। वर प्रदान करते समय, किसी के हाथ अपनी मृत्यु न हो, ऐसा कहते हुए, नर और वानरों को वह (रावण) भूल गया ॥ ३१ ॥

वचनमु— अक्कारणंबुनं जेसि, ॥ ३२ ॥

तेटगीति— वनरु गलिगेंनु मनकु रावणुनि जंप,
विनुडु मीरेंल्ल ना माट वेड्क मीर,
दशरथुंडनु राजु संतान - कांक्ष
नोंनर जन्नंबु गाविंचु - चुन्नवाडु ॥ ३३ ॥

कन्द— धरणीपति यगु दशरथ-
नर - नायकुनिंट बुट्टि नर रूपमुनं
बेंरिगेंद; मीरुनु मेमुनु
सुर - कंटकुमीद लावु सूपुट कोंरकै ॥ ३४ ॥

कन्द— कोंदरु कपि वंशंबुन
गोंदरु भल्लुक - कुलमुन गुरुबलयुतुलै
यंदरु नन्नि तेरंगुल
बृंदारकुलार ! पुट्टि पेंरुगुडु भुविपैं ॥ ३५ ॥

वचनमु— अनि; कृपाधुरीणुंडैन नारायणुडानतिच्चिन विनि वनजासनादि देवता निकरंबव्वनजोदरुनि पादारविंदमुलकु वंदनम्मुलाचरिंचि, निज निवासम्मुलकुं जनिरय्यवसरम्मुन, ॥३६॥

अग्निदेवुडु प्रत्यक्षमै दशरथुनकु बायसमिच्चुट

मत्तेभमु—इल साकेतनृपालशेखरुडु दा हेला-विलासंबुतो
फलकांक्षन् ग्रतुवुंबोंनर्चिन येंडन् बंगारुपात्रम्मुलो-
पल दुग्धान्नमु चाल निंचुकोंनि ताम्रत्यक्षमै निल्चि नि-
र्मल तेजंबुन बावकुंडनियें प्रेमन् मंजु वाक्यंबुलन् ॥ ३७ ॥

कन्द— भूपाल ! नीदु भार्यल-
की पायस मारगिंपनिम्मी ! तनयुल्
श्रीपति - पुत्र - समानुलु
रूपसु लुदयितुरमित रूप स्फूर्तिन् ॥ ३८ ॥

वचनमु— अनि चेंप्पि यप्पायस पात्रंबु चेतिकिच्चिन ॥ ३९ ॥

आट०— पायसम्मु रेंडु भागमुल् गाविंचि,
यग्रसतुल कीय, नंदुलोन
सगमु सगमु दीसि मुगुद सुमित्रकु
नोंसगि, रंत नामें मेंसवें ब्रीति ॥ ४० ॥

उस कारण से ।। ३२ ।।

रावण-वध का हमें मौका मिल गया । मेरी बात को आप सब सोत्साह सुन लीजिये । दशरथ नामक राजा संतान की आकांक्षा से यज्ञ कर रहा है ।। ३३ ।।

धरणीपति राजा दशरथ के घर में जन्म लेकर अब मैं नररूप से बढ़ूंगा । आप भी सुर-कंटक (रावण) पर बलप्रदर्शन करने के लिए ।। ३४ ।।

हे बृन्दारको (देवताओ) ! कुछ कपिवंश में और कुछ भल्लूक-वंश में सब प्रकार से धरती पर जन्म लेकर, गुरु-बलशाली होकर बढ़ो ।। ३५ ।।

कृपाधुरीण नारायण के ऐसी आज्ञा देने पर, सुनकर वनजासन (ब्रह्मा) आदि देवता-समूह उस वनजोदर (विष्णु) के पादारविन्दों का वन्दन कर निज निवासों को चला गया । उस अवसर पर ।। ३६ ।।

### अग्निदेव का प्रत्यक्ष होकर दशरथ को क्षीरान्न देना

पृथ्वी पर साकेत-नृपालशेखर (दशरथ) ने स्वयं हेलाविलास के साथ फल की आकांक्षा से यज्ञ किया । उस समय स्वर्णपात्र में दुग्धान्न को अधिकता से भर लेकर पावक ने स्वयं निर्मल तेज से प्रत्यक्ष हो, खड़े होकर प्रेम के साथ मंजुल वचन कहे ।। ३७ ।।

"भूपाल ! अपनी पत्नियों को यह क्षीरान्न खिला दो । श्रीपति के पुत्रों के समान, रूपवान (तथा) अमित रूप-स्फूर्ति-संयुक्त पुत्रों का उदय होगा" ।। ३८ ।।

इस प्रकार कहते हुए, (अग्निदेव के) पायसान्न-पात्र को (दशरथ के) हाथों में धर देने पर, ।। ३९ ।।

दुग्धान्न को दो भाग कर अग्र (बड़ी) सतियों को दिया, तो (दोनों ने) अपने-अपने पायस में आधा-आधा कर सुमित्रा को दिया । तब उसने (सुमित्रा ने) प्रीति से (उसका) भक्षण किया ।। ४० ।।

### कौसल्या कैकेयी सुमित्रल दौहृद लक्षणमुलु

वचनमु— अंतंगोन्नि दिनंबुलकु गौसल्या कैकेयी सुमित्रलु गर्भवतुलै यॊप्पारुचुंड ।। ४१ ।।

सी०— धवलाक्षुलनुमाट तथ्यंबु गाविप दॆलुपॆक्कि कन्नुलु तेटलय्यॆ,
नीलकुंतल लनि नॆगडिन यामाट निलुपंग नॆरुलपै नलुपु सूपॆ,
गुरुकुचलनुमाट सरवि भाषिपंग दोरमै कुचमुल नीरु वट्टॆ,
मंजु भाषिणु लनुमाट दप्पक युंड मॆलतल पलुकुलु मृदुवु लय्यॆ

तेटगीति— गामिनु लटंट निक्कमै कांतलंदु
मीरि मेलैन रुचुलपै गोरिकय्यॆ,
सवति पोरन दमलोन सारॆ सारॆ
कोकिलितलु, बॆट्टु चिट्टुमुलु बुट्टॆ ।। ४२ ।।

वचनमु— मरियुनु, ।। ४३ ।।

सी०-तनुमध्यलनु माट दप्पिप गाबोलु बॊरलेक नडुमुलु पॊंदल जॊच्चॆ,
गुचमुलु बंगारु कुंडलो यनुमाट कल्लगा नग्रमुल् नल्लनय्यॆ,
जंद्रास्यलनुमाट सरवि मान्पग बोलु गळलविलासम्मु पलुचनय्यॆ,
सुंदरुलनुमाट संदियम्मुगबोलु गर्भ भारम्मुल गांति दप्पॆ

तेटगीति— ननुचु गनुगॊन्न वारॆल्ल नाडुचुंड
गट्टु चीरल व्रेकंबु पुट्टुचुंड
नासतुलजूचि यंदरु नलरुचुंड
गांतलकु नंत गर्भमुल् कानुपिचॆ ।। ४४ ।।

### श्रीराम भरत लक्ष्मण शत्रुघ्नुल यवतारमु

वचनमु—इट्लु दुर्भरंबुलैन गर्भंबुलु दाल्चिन कौसल्यादि कांतात्रयम्मुनु जैत्रमासम्मुन, शुक्लपक्षम्मुन, नवमी, भानुवासरम्मुन, बुनर्वसु नक्षत्रंबुन, गर्कटक लग्नंबुन, श्रीराम भरत लक्ष्मण शत्रुघ्नुलं गांचिनं ददनंतरंबुन दशरथुंडु यथोचित कर्तव्यंबुलु जरपि, यप्पदि दिनंबुलु नरिष्टंबु लेक प्रतिदिन प्रवर्द्धमानमगुचुन्न कुमार चतुष्टयंबुनकु गालोचितंबुलगु चौलोपनयनादि कृत्यंबुलुगाविंचि,वॆंडियु विद्याप्रवीणु लगुनट्टुलॊनर्चि, गजाश्वरथारोहणंबुलु नेर्पि, धनुर्वेद पारगुलंगाविंचि पॆंचुचुन्न समयम्मुन ।।४५।।

### कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा के गर्भ-लक्षण

तब कुछ दिनों के पश्चात् कौसल्या, कैकेयी और सुमित्रा गर्भ धारण कर विलसित होती रहीं, ।। ४१ ।।

धवलाक्षी हैं—(इस) कथन को तथ्यसिद्ध करने हेतु, उनकी आँखों में सफेदी आ गयी। नीलकुन्तला हैं—(इस) वचन को सार्थक करने के लिए केशजाल काला हो गया। गुरु कुचांगी हैं—(इस) बात को सही करने के लिए स्तनों में पानी भर आया (स्तन पीन हो गए।) मंजुभाषिणी हैं—(इस) वचन को सत्य करने के लिए कोमलांगियों के वचन मृदुल हो गए। कामिनियाँ हैं—(यह) कथन सच होकर, कांताओं में रुचियों (पदार्थों) पर कामना जगी। सौतियाडाह है—इसको सहज सार्थक करने के लिए बार-बार वमन करने लगीं। (ये सब) गर्भिणी स्त्रियों के मनोविकार अधिकता से (उनमें) पैदा हुए ।। ४२ ।।

और फिर ।। ४३ ।।

तनुमध्या (पतली कमरवाली) हैं—इस कथन को टालने (असत्य करने) के लिए शायद कमर मोटी होने लगी। कुचों को स्वर्ण-कलश कहना अनुचित बताने के लिए अग्रभाग (चूचुक) काले हो गये। चन्द्रास्य हैं—(इस) बात को असत्य सिद्ध करने हेतु कलाओं का विलास (मुखसौन्दर्य) फीका हो गया। सुन्दरियाँ हैं (इस) कथन को सन्देहास्पद करने के लिए गर्भ-भार के कारण कान्ति कम हुई। जिन्होंने उन्हें देखा, वे इस प्रकार कह रही थीं। वस्त्रों के बीच में से गर्भ का आभास हो रहा था। उन सतियों को देख सबके उल्लसित होने, पर (उन) कान्ताओं के गर्भ दीख पड़े ।। ४४ ।।

### श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न का अवतार

इस प्रकार दुर्भर गर्भ-धारण के पश्चात् कौसल्यादि कांतात्रय ने चैत्रमास, शुक्लपक्ष, नवमी, रविवार, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्कटलग्न पर श्रीराम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न को जन्म दिया। तदुपरान्त दशरथ ने यथोचित कर्त्तव्य सम्पन्नकर, दस दिन तक किसी अरिष्ट के बिना प्रतिदिन प्रवर्द्धित कुमार चतुष्टय का समयोचित चौल-उपनयन आदि कृत्य संपन्न करवाकर, फिर विद्याप्रवीण बनाया; गज, अश्व, रथारोहण आदि सिखाया और धनुर्वेद में पारंगत करवाया। इस प्रकार (उनका) लालन-पालन करते समय में ।। ४५ ।।

याग रक्षणमुनकु रामुनि बंपुमनि विश्वामित्रुनि वेडिकोलु

सी०-ऒकनाडु शुभगोष्ठि नुर्वीश्वरुडु मंत्रि हित पुरोहितुलुनु नॆलमि जेरि,
बंधुवर्गमु रायबारुलु जारुलु बरिचारकुलु नॆल्ल सरवि जेरि,
गायकुलुनु भृत्य गणमुनु मित्रुलु सतुलुनु सुतुलुनु जक्क नलरि,
सरसुलु जतुरुलु बरिहासकुलु गळावंतुलु गडु नॊक्क वंक जेरि

तेटगीति— कॊलुव गॊलुवुन्न यॆड, वच्चि कुशिक-पुत्रु-
डर्थि दीविंचि, तावच्चिनट्टि कार्य
मधिपुनकु जॆप्प, मदिलोन नदरि पडुचु
विनय मॊप्पार निट्लनि विन्नविंचॆ ॥ ४६ ॥

कन्द— रामुडु दनुजुलतो सं-
ग्राममु सेयंग गलडे ? कंदु गदा ! ने
ने मिम्मु गॊलिचि वच्चॆद
नो मुनिराजेंद्र ! यरुगु मुचित प्रौढिन् ॥ ४७ ॥

मत्ते०— अनिनं गौशिकुडात्म नव्वि, विनुमय्या! राज! नीचेत गा-
दनरा दैननु राक्षसुल् विपुल गर्वाटोप बाहाबलुल्,
घनुडी रामुडु दक्क वारि गॆलुवंगा राडु, पिन्नंचु नी-
वनुमानिंपक पंपुमिक, ग्रतु रक्षार्थंबु भूनायका! ॥ ४८ ॥

वचनमु— अनि प्रियोक्तुलु पलुकुचुन्न विश्वामित्रुनकु मित्र-
कुल-पवित्रुंडैन दशरथुंडु माराड नोडि यप्पुडु, ॥ ४९ ॥

कन्द— मुनिनाथु वॆंट सुत्रा-
मुनि नलजडि वॆट्टुचुन्न मूर्खुलपै रा-
मुनि; सौमित्रिनि वॆस न-
म्मुनितो नानंद-वार्धि मुनुगुचु बनिचॆन् ॥ ५० ॥

कौशिकुनि याज्ञप रामुडु ताटकनु गूल्चुट

मत्ते०— वारि दोड्कॊनि कौशिकुंडट वच्चु नय्यॆड घोर कां-
तार मध्यमुनंदु नॊक्कतॆ दैत्यकामिनि भीकरा-
कारमॊप्पग नट्टहास विकार मेर्पड वच्चु ना
क्रूर राक्षसि जूचि यम्मुनि-कुंजरुंडॊगि रामुनिन् ॥ ५१ ॥

### यज्ञ-रक्षार्थ राम को भेजने के लिए विश्वामित्र का निवेदन

एक दिन शुभ गोष्ठी में उर्वीश्वर दशरथ अपने मंत्री तथा हितवर-पुरोहितों के साथ विराजमान थे। बन्धुवर्ग, राजदूत, गुप्तचर, परिचारक (सेवक) आदि से परिवेष्ठित थे। गीतकार, भृत्यगण, मित्र, सतियों तथा सुत-सहित सभा अलंकृत थी। रसिक चतुरगण, परिहासकर्त्ता, कलावन्त (वेश्याएँ) आदि एक ओर एकत्रित थे। इस प्रकार राजा का दरबार लगा हुआ था। उस समय कुशिकपुत्र (कौशिक) ने आकर प्रेम से आशीष दी और अपने आगमन का कार्य राजा को बताया। मन में घबराते हुए, विनय के विलसित होने पर (राजा ने) यों निवेदन किया ॥ ४६ ॥

राम दनुजों से संग्राम कर सकेगा? वह तो छोटा बालक है न! मुनिराज! मैं ही आपकी सेवा करने आ जाऊँगा। आप उचित प्रौढ़ता से जाइए। (मैं यह-अभी आ रहा हूँ) ॥ ४७ ॥

(ऐसा) कहने पर, कौशिक ने मन में हँसकर (कहा) :—"राजा! सुनो! आपके वश की बात नहीं है, ऐसा कहना तो नहीं चाहिए। किन्तु राक्षस विपुल घमण्डी और बाहुबली हैं। महान् इस राम के अतिरिक्त अन्यों के लिए उन्हें जीतना असम्भव है। छोटे हैं, ऐसा सन्देह मत करो! हे भूनायक! क्रतु की रक्षा के लिए अब (उन्हें) भेज दो ॥ ४८ ॥

इस प्रकार प्रियभाषण करनेवाले विश्वामित्र से, सूर्यवंश को पवित्र करनेवाला (राजा) दशरथ जवाब न दे सका ··· तब ··· ॥ ४९ ॥

सुत्राम् (इन्द्र) को पीड़ा देनेवाले मूर्खों पर (वध के लिए) दशरथ ने राम और सौमित्र को, मुनिनाथ के साथ, (आनन्दसमुद्र) में ऊभचूभ होते हुए भेज दिया ॥ ५० ॥

### कौशिक की आज्ञा से राम के हाथों ताड़का-वध

राम-लक्ष्मण को साथ लेकर कौशिक चले जा रहे थे। उस अवसर पर घोरारण्य के बीच में एक दैत्यकामिनी डरावने आकार से, अट्टहास के विकसित होने पर, आई। उस क्रूर राक्षसी को देख मुनिकुंजर ने झट राम से, ॥ ५१ ॥

कन्द— ताटक वच्चिन ददिगो
याटदि यनि यॆंचुचु मॊगमाडक नी वी
पाटि पडनेयु मनि तड-
बाटुन शंकिंचु रामभद्रुन कनियॆन् ॥ ५२ ॥

वचनमु— इट्लु चॆप्पिन या मुनिचंद्रुनि पल्कुलालिंचि
रामचंद्रुंडु तन यंतरंगम्मुन निट्लनि वितर्किंचॆ : ॥ ५३ ॥

कन्द— ई याडुदानि जंपग
ना यम्मुन केमि गॊप्प ? नगरे वीरुल् ?
ची! यनि रोयुचु नम्मुनि-
नायकु भय मॆरिगि तन मनम्मुन नलुकन् ॥ ५४ ॥

कन्द— व्रेटु गॊनि रामचंद्रुडु
सूटिग नॊक दिट्ट कोल सुरलु नुतिपन्
घोटक - सम - वक्षस्थल,
दाटक नत्युग्रलील धरपैगूल्चॆन् ॥ ५५ ॥

वचनमु— इट्लु ताटकं गीटणंचिन यंत, नम्मुनींद्रुंडु मेटि संतोषम्मुन
रामुनि गॊनियाडुचु, नश्रमंबुन निजाश्रमंबुन केतेंचि,
राम सौमित्रुल सायंबुन जन्नंबु सेयुचुन्न समयंबुन ॥ ५६ ॥

रामुडु राक्षसुलनु जंपि तपसि जन्नमुनु गाचुट

कन्द— आकाशवीथि नॆलकॊनि
राकासुलु गुरिसि रमित रक्तमु, बललं-
बा कौशिकु यज्ञमुपै
भीकरमुग, मुनि गणंबु भीतिन् बॊंदन् ॥ ५७ ॥

उत्प०-अम्बर वीथि निलिचि त्रिदशांतकु लॆंतयु नेचि रक्तमां-
संबुलु गाधि-नंदनुनि जन्नमुपै गुरियंग, नंतलो
नंबररत्नवंशकलशांबुधिचंद्रुडु, रामचंद्रुडु-
ग्रंबुग द्रुंचॆ जंडबलगर्वुल दम्मुडु दानु नॊक्कटै ॥ ५८ ॥

वचनमु— इट्लु रामचंद्रुंडु सांद्र प्रतापंबु मिंच निंद्रारुल द्रुंचिन
नम्मुनिचंद्रुडु निर्विघ्नंबुगा जन्नंबॊनर्चि, राम सौमित्रुलं
बूजिंचॆ नट्टि समयम्मुन; ॥ ५९ ॥

अपने को आड़ में (रखकर) डरते हुए, रामचन्द्र से कहा—"वह देखो ! ताड़का आ गयी । स्त्री है (इसलिए) आसान मत मानो, खेल न करो, तुम इसे इसी समय गिरा दो" ।। ५२ ।।

इस प्रकार कहने पर, मुनिचन्द्र के वचन सुन रामचन्द्र ने अपने मन में इस प्रकार (तर्क-) वितर्क किया ।। ५३ ।।

इस स्त्री के वध करने से मेरे बाण का बड़प्पन क्या होगा ? वीर लोग हँसेंगे नहीं ? छिः कहते घृणा (प्रकट) करते हुए फिर उस मुनिनाथ के भय को जानकर, क्रोध से, ।। ५४ ।।

राम ने दृढ़ बाण से सीधे घोटका-(घोड़ी-) समवक्षस्थल वाली ताड़का को धराशाई किया जिसकी प्रशंसा देवताओं ने की ।। ५५ ।।

इस प्रकार ताड़का के वध के पश्चात् उस मुनीन्द्र ने अधिक हर्ष के साथ राम की प्रशंसा की (और) अश्रम (बिना श्रम के) से निज-आश्रम पहुँचकर, राम और लक्ष्मण की सहायता से यज्ञ सम्पन्न करते समय, ।। ५६ ।।

### राम का राक्षसों का वध कर तापस के यज्ञ की रक्षा करना

राक्षसों ने आकाश-वीथी में स्थिर बनकर, कौशिक के यज्ञ पर भीकर-रूप से अमित रक्त (तथा) मांस की वर्षा की । इसे देख मुनिगण भयभीत हुए । ।। ५७ ।।

त्रिदशान्तकों (राक्षसों) ने अम्बर-वीथी में खड़े होकर गाधिनन्दन (विश्वामित्र) के यज्ञ पर रक्त-मांसादि की वर्षा की । इतने में अम्बर-रत्न (सूर्य-) वंशरूपी कलशाम्बुधि के चन्द्र रामचन्द्र ने अनुज से मिलकर उग्रगति से प्रचण्डबल के कारण घमण्डी बने राक्षसों का वध किया । ।। ५८ ।।

इस प्रकार रामचन्द्र के सान्द्रप्रताप के औन्नत्य से इन्द्रारियों (राक्षसों) का वध करने पर, मुनिचन्द्र ने निर्विघ्न रूप से यज्ञ को पूरा कर, राम-लक्ष्मण की पूजा की । उस समय (विदित हुआ)— ।। ५९ ।।

कन्द— धरणीसुतयगु सीतकु
बरिणयमोनर्रिप जनक पार्थिवुडिल भू-
वर - सुतुल रंडनि स्वयं-
वर मोगि जाटिंचे नेल्लवारलु विनगन् ।। ६० ।।

वचनमु— इट्लु स्वयंवर-महोत्सव-घोषंबुन संतोषम्मु नोंदि, विश्वामित्रुंडु राम सौमित्रुल मिथिला-नगरंबुनकु दोड्कोनि, चनुचुंडु मार्गंबुन; ।। ६१ ।।

श्रीरामुनि पादधूळि सोक नहल्ययैन शिल

कन्द— मुदि तापसि वेनुवेंटनु
वदलक चनुदेंचुनट्टि वडि रामुनि श्री-
पद - रजमु सोकि, चित्रं
बोंदवग गनुपट्टे नेंदुट नोकयुपलमटन् ।। ६२ ।।

कन्द— पदनै, योप्पिदमै, कडु
गदलुचु बंगारु पूदे करगिन रीतिन्,
मेदलुचु, लावण्य स्थिति
सुदतिग जूपट्टि निलिचे सुरुचिर लीलन् ।। ६३ ।।

उत्प०-आ मुनि वल्लभुंडु कोनियाडुचु बाडुचु,वेड्कतोड श्री-
रामुनि जूचि यिट्लनियॆ,राम! भवत्पदधूळि सोकि,यी
भामिनि रायि मुन्नु, कुलपावन! चूडग जित्रमय्ये नी
नाम मेरुंगु वारलकु नम्मग वच्चुनु भुक्ति मुक्तुलुन् ।। ६४ ।।

वचनमु— अनि यक्कांता-रत्नंबु पूर्व-वृत्तांतंबंतयु नेंतयु संतसम्मुन नम्मनुजेंद्र-नंदनुल कोरिंगिपुचु, मिथिला नगरंबुनकुं जनियेनच्चट; ।। ६५ ।।

सीता स्वयंवरमु

सी०— द्रविड कर्णाटांध्र यवन महाराष्ट्र राजकुमारुलु तेजमलर
बांड्य घूर्जर लाट बर्बर मलयाळ भूप नंदनुलु विस्फूर्ति मीर,
गौळ केरळ सिंधु काशि कोसल साळ्व धरणीश पुत्रुलु सिरि वेलुंग,
मगध मत्स्य कळिंग माळव नेपाळ नृप तनूभवुलु नेन्निककु नेक्क,

धरणी-सुता सीता का परिणय करने के लिए राजा जनक ने धरती के सब राजकुमारों का स्वागत करते हुए, स्वयंवर का (इस प्रकार) एलान किया जिसे समस्त लोग सुनें (जान लें) ।। ६० ।।

इस प्रकार स्वयंवर-महोत्सव की घोषणा से विश्वामित्र संतुष्ट होकर, राम-लक्ष्मण को साथ लेकर, मिथिला नगरी को रवाना हुए। मार्ग में, ।। ६१ ।।

### श्रीराम की चरणधूलि के स्पर्श से शिला का अहल्या होना

वृद्ध तापस के पीछे-पीछे अनारत चलनेवाले राम के श्रीपद-रज के स्पर्श से एक शिला विचित्र रीति से परिवर्तित होती वहाँ दीख पड़ी ।। ६२ ।।

पहले पिघलकर, औचित्य से कंपित होते हुए जिस प्रकार सोने की गुरिया गलती है, उसी प्रकार हिलते-डुलते, लावण्य स्थिति में सुरुचिर लीला से (वह) स्त्री के रूप में दिखाई पड़ी ।। ६३ ।।

उस मुनिवल्लभ ने श्रीराम की प्रशंसा करते हुए (गुण) गाते हुए, सोत्साह श्रीराम को देखकर यों कहा—'हे राम ! आपकी चरणधूलि के स्पर्श से यह शिला स्त्री बन गई। पहले यह कुलपावनी थी। यह देखने में विचित्र है। तुम्हारे नाम के महत्त्व को जाननेवालों के लिए भुक्ति तथा मुक्ति निश्चित है ।। ६४ ।।

(ऐसा) कह मुनिवर ने मनुजेन्द्रनन्दनों को उस कान्तारत्न के समस्त पूर्व-वृत्तान्त को, अधिक आनन्द के साथ बताते हुए, मिथिला नगर की ओर प्रस्थान किया ।। ६५ ।।

### सीता-स्वयंवर

द्रविड़, कर्नाटक, आन्ध्र, यवन, महाराष्ट्र के राजकुमार, अपने तेज के विलसित होने पर, पाण्ड्य, घूर्जर, लाट, बर्बर, मलयाल के भूपनन्दन, अपनी विस्फूर्ति के औन्नत्य से, गौल (गौड़), केरल, सिंधु, काशी, कोसल, साल्व के धरणीशकुमार अपने वैभव के प्रकाशित होने पर, मगध, मत्स्य, कलिंग, मालव, नेपाल के नृपतनूभव विख्यात होते हुए,

तेटगीति— मरियु नुत्कल कोंकण मद्र पौंड्र
वत्स गांधार सौराष्ट्र वंग चोळ
राज्यमुल नोंप्पु छप्पन्न राज - सुतुलु
वच्चि रक्कामिनी स्वयंवरमुनकुनु ॥ ६६ ॥

उत्प०— कोंदरु पल्लकील, मरि कोंदरु तेरुल, नंदलंबुलं-
गोंदरु, कोंदरश्वमुल, गोंदरु मत्त गजेंद्र संघमुन्,
गोंदरु स्वर्ण डोलिकल,गोरिक नोक्कि नृपाल नंदनुल्
संदडिगाग वच्चिरि, बुजंबु बुजंबुनु द्रोपुलाडगन् ॥ ६७ ॥

वचनमु— अट्टि समयंबुन ॥ ६८ ॥

चम्प०-गुरु भुज शक्ति गल्गु पदि कोट्ल जनंबुल बंप, वारु ना
हरुनि शरासनंबु गोनि याडुचु-बाडुचु गोंचु वच्चि,सु-
स्थिरमुग वेदिमध्यमुन जेर्चिन,दानिकि धूप दीपमुल्
विरुलुनु गंधमक्षतलु वेडुक निच्चिरि चूड नोंप्पुगन् ॥ ६९ ॥

वचनमु— अट्टि समयंबुन जनक भूपालुंडु राजकुमारुलं गनुं-
गोनि यिट्लनियें ॥ ७० ॥

शिवधनुवु नेक्कु पेट्टिन धीरुनकु सीत नित्तुननि जनकुनि प्रकटन

उत्प०—कोंकक सावधान मति गूर्चि विनुंडिदे, मत्तनूज कै
युंकुव सेसिनाड विविधोज्ज्वलमैन धनंबु, गान नी
शंकरु चाप मेक्किडिन सत्त्व-धनुंडगुवानि कित्तु नी
पंकजनेत्र सीत, नरपालकुलार! निजंबु सप्पितिन् ॥ ७१ ॥

आट०— अनुचु बलुकुचुन्न यवनीश - तिलकुनि
वाक्यमुलकु नुब्बि, वसुमतीश-
सुतुलु दामु तामे मतिलोन जेलगुचु
दग्गरंगबोयि धनुवुजूचि, ॥ ७२ ॥

राजकुमारुलु शिवचापमुनु गदल्प नोड्डुट

कन्द— विल्ला ? यिदि कोंडा ? यनि
तल्लडपडि संशयंबु तलकोन मदिलो
बल्लिदुलगु नृप - नंदनु-
लेल्लरु दौदवुल नुंडिरेंतयु भीतिन् ॥ ७३ ॥

और उत्कल, कोंकण, मद्र, पौण्ड्र, वत्स, गांधार, सौराष्ट्र, वंग, चोल आदि छप्पन (देशों के) राजसुत, उस कामिनी के स्वयंबर में आये थे ॥ ६६ ॥

कुछ लोग पालकियों में और कुछ लोग रथों पर, कुछ लोग आन्दोलिकाओं (पालकियों) में, कुछ लोग अश्वों पर, कुछ लोग मत्त गजेन्द्रसंघ पर, कुछ लोग स्वर्ण-डोलिकाओं में अपनी-अपनी रुचि के अनुसार आरूढ़ होकर, भुजा से भुजा रगड़ाते हुए (ठेला-ठेली करते हुए) नृपालनन्दन (राजकुमार) बड़े ही कोलाहल के साथ आये ॥ ६७ ॥

उस समय में ॥ ६८ ॥

अत्यधिक भुजबलशाली दस करोड़ जनों के भेजा जाने पर, उन्होंने शिव-चाप की प्रशंसा करते हुए, गाते हुए उसे लाकर वेदिका के बीच में सुस्थिरता से रख दिया। दीप, धूप, फूल, गंध, अक्षत आनन्द के साथ, सुन्दरता के साथ (उसे) प्रदान किया ॥ ६९ ॥

ऐसे समय पर जनक भूपाल ने राजकुमारों को देखकर इस प्रकार कहा— ॥ ७० ॥

### शिव-धनुष को चढ़ानेवाले धीर को सीता देने का जनक का प्रकटीकरण

हे नरपालको ! बिना किसी संकोच के, सावधान चित्त हो, सुन लीजिये। अपनी बेटी के लिए विविध उज्ज्वल धनराशि को कन्याशुल्क के रूप में रखा है। इसलिए शंकर-चाप को चढ़ा सकनेवाले महान् शक्तिशाली को पंकजनेत्री इस सीता को दूँगा। सत्य कह दिया है ॥७१॥

ऐसा कहनेवाले अवनीश-तिलक के वचनों से फूलकर वसुमतीश-सुतों ने स्वयं अपने मन में उत्साहित हो समीप जाकर धनुष को देखा ॥ ७२ ॥

### राजकुमारों का शिवचाप हिला न सकना

यह धनुष है कि पहाड़ ? मन के ऐसा कल्लोलित होने पर, मन में संदेह उत्पन्न होने पर, नृपनन्दन सबके सब भयभीत होकर दूर रह गये ॥ ७३ ॥

कन्द— कोंदरु डग्गर नोडिरि,
कोंदरु साहसमु चेसि कोदंडमुतो
नंदंद पैनगि पारिरि
संदुल गोंदुलनु दूरि, सत्त्वमु लेमिन् ।। ७४ ।।

सी०— गालि दूलिन रीतिगा नेत्त जालक,तमु दामें सिग्गुन दलनु वंचि,
कौगिलिंचिन लोनु गाक वेंग्गलमैन,भीतिचे मिक्किलि बीरुवोयि,
करमुल नंदंद पोरलिंचि चूचिन, गदलक युन्न जीकाकु नोंदि,
बाषाणमुन्नट्टि पगिदि मार्दवमेमि गानराकुंडिन गळवळिंचि,
तेटगीति— राजसूनुलु कोंदरु तेजमुडिगि,
जगति राजुल मोसपुच्चंग दलचि,
जनकुडीसाय गाविंचें, जालुननुचु
दलगि पोयिरि दव्वुगा धनुवु विडिचि ।। ७५ ।।

सी०-यिदि पर्वताकार, मी विल्लु कनुविच्चि तेरि चूडगरादु देवतलकु,
नट्टुगाक मुनु शेष कटकुनि धनुवंट,हरुडे कावले गाक, हरियु गाक,
तक्किन वारिकि दरमें यी कोदंडमेत्तंग? दगु चेव यट्लु गलुगु ?
दीनि डग्गर नेल ? दीनि कोडगनेल ? परुलचे नव्वुलु पडगनेल ?
तेटगीति— गुरुतु सेसियु दम लावु कोलदि दामें
तेलियवलें गाक, यूरक तिवुरनेल ?
योरुल सोम्मुलु तमकेल दोरुकु ? ननुचु
दलगि पोयिरि राजनंदनुलु गनुचु ।। ७६ ।।

वचनमु— अंत विश्वामित्रमुनींद्रुडु रामचंद्रुनि मुखावलोकनंबु
जेसिन, ।। ७७ ।।

मुनियानति श्रीरामुनिचे शिव धनुर्भंगमु

चम्प०-कदलकुमी धरातलम,काश्यपि बट्टु,फणींद्र भूविषा-
स्पदुलनु बट्टु, कूर्मम रसातलभोगि ढुली कुलीशुलन्
वदलक पट्टु, घृणि धरणीफणिकच्छप पोत्रिवर्गमुन्
बोदुवुचु बट्टुडी करुलु, भूवरुडीशुनि चापमेक्किडुन् ।। ७८ ।।
कन्द— उर्वी - नंदनकै रा-
मोर्वीपति येत्तु निप्पुडुग्रुनि चापं-
बुर्वि बट्टुडु दिग्दं-
त्युर्वीधर किटि फणींद्रुलूतग गडिमिन् ।। ७९ ।।

कुछ लोग (शिवचाप के) समीप जाने से हारे। कुछ लोग साहस कर कोदण्ड को यहाँ-वहाँ हिलाने की कोशिश कर शक्ति के अभाव में, गलियों-कूचों में घुस, भाग निकले ।। ७४ ।।

(कुछ ने) उसे उठा न सक, हवा के झोंके के समान शर्म के मारे स्वयं सिर झुका लिया। आलिंगन करने पर भी वश में न आने पर भाराधिक्य से (उनके प्रयत्न) अति व्यर्थ हो गए। हाथों से यहाँ-वहाँ डुलाकर देखने पर भी उसके अचल रहने पर, वे व्याकुल हुए। पाषाण के समान रहकर किंचित् भी कोमलता को न पाकर वे कल्लोलित हुए। कुछ राजकुमार तेजविहीन हो गये और कहने लगे कि जगत के राजाओं को धोखा देने के लिए जनक ने यह माया रचायी है। बस ! बहुत हो चुका। कहते हुए धनुष को छोड़ सब दूर चले गए ।। ७५ ।।

यह धनुष पर्वताकार में है। इसे देवता लोग भी आँख उठाकर नहीं देख सकते। यही नहीं, सुना पूर्व में यह शिव का चाप है, हर या हरि ही होना चाहिए, उन्हें छोड़ अन्य इसे उठा नहीं सकते। अन्य में इतनी शक्ति कहाँ से आयेगी ? इसके समीप जाना ही क्यों ? हार जाना क्यों ? और दूसरों से हँसी का पात्र बनना ही क्यों ? अपनी शक्ति को आप पहचानकर, चुप रहने में भलाई है। बेकार प्रयत्न करना क्यों ? दूसरों की सम्पत्ति हमें प्राप्त कैसे होगी ? कहते हुए सब राजनन्दन धनुष से दूर हटते गये ।। ७६ ।।

इतने में मुनींद्र विश्वामित्र ने रामचन्द्र के मुख का अवलोकन किया। (अर्थात् संकेत कर आज्ञा दे दी) ।। ७७ ।।

### मुनि की आज्ञा पाकर श्रीराम का शिवधनुर्भंग

हे धरातल ! मत हिलो ! हे कश्यपी ! फणीन्द्र (आदिशेष) भूविषास्पदों (दाढ़ों) को पकड़ लो। कूर्म ! रसातल के नाग-कुलीशों को ठीक सम्हाल रखो। हे वराह ! धरणी, फणीश, कच्छप आदि त्रिवर्ग को न छोड़कर पकड़े रहो ! (क्यों कि) भूवर रामचन्द्र ईशचाप को चढ़ाने जा रहा है ।। ७८ ।।

उर्वी-नन्दना (सीता) के लिए उर्वीपति राम अब उग्र (शिव-) चाप को उठायेगा। दिग्गज, उर्वीधर, किटि (वराह), फणींद्र के सहारे साहस से उर्वी को सम्हाल लीजिए ।। ७९ ।।

वचनमु— अनुचु लक्ष्मणुंडु दॆलुपुचुन्न समयंबुन, ।। ८० ।।

मत्ते०— इनवंशोद्भवुडैन राघवुडु, भूमीशात्मजुल् वेड्कतो
दनु वीक्षिप, मुनीश्वरुंडलर, गोदंडंबु चेनंदि, चि-
व्वन मोपॆट्टि, गुणंबुपट्टि, पट्टु बाहाशक्तितो दीसिनन्,
दुनिगॆन् जापमु भूरि घोषमुन, वार्धुल् म्रोयु चंदंबुनन् ।। ८१ ।।

आट०— धनुवु　दुनिमिनंत　धरणीशसूनुलु
शिरमु　लॆल्ल　वंचि　सिग्गु　पडिरि;
सीत　मेनु　वंचॆ;　श्रीरामचंद्रुनि
बॊंगडेनपुडु　जनकभूविभुंडु ।। ८२ ।।

सीता रामुल कल्याण वैभवमु

वच०— इट्लु श्रीरामचंद्रुनि सत्त्व-संपदकु मॆच्चि, संतोषिंचि, जनक महाराजु विवाहंबु सेयुवाडै रम्मनि दशरथेश्वरुनि पेरिट शुभलेखलु व्रायिंचि पंचिन, दशरथ महाराजुनु शुभलेखलं जदिविंचि, संतोषंबुन नानंद-बाष्पंबुलु ग्रम्मुदेर मंत्रि-प्रवरुंडगु सुमंत्रुनिबिलिपिंचि "सुमंत्रा! यिपुडु मन मंदरमुनु बयलु देरि मिथिला पट्टणंबुनकु बोयि यट जनक महाराजु निंट मन राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्नुलकु विवाह-महोत्सवमु जरुप बलयु, गावुन वशिष्ठादि द्विजवर्युलनु, गौसल्यादि कांता-जनम्मुनु, नरुंधति मॊदलुगागल भूसुर-भार्यलनु मरियु सकल बंधु-जनंबुनु राविंचि, बंगरु टरदंबुल निडिकॊनि दोड्कॊनि र"म्मनि यंपिन नतंडुनु महाप्रसादंबनि तत्क्षणम यंतः पुरंबुनकुं बोयि कौसल्य कैक सुमित्र मॊदलगु राजकांत-लनु, वशिष्ठादि द्विज वरिष्ठुलनु नरुंधति मॊदलुगागल मुत्तैदुवलनु, मिगिलिन सकल बंधुजनम्मुनु राविंचि, युक्त-प्रकारम्मुगा गनक रथम्मुलपै निडिकॊनि, दशरथ महाराजु कडकुं गॊनिवच्चिन, यंत दशरथुंडु पुत्रद्वय-सहितम्मुग रथमारोहिंचि, समस्त सेना समन्वितुंडगुचु, वाद्य घोषंबुलु दश दिशलु निंड, नडचुचुन्न समयम्मुन; नंतकु मुंदु जनक भूवल्लभुंडु दशरथ महीपालु नॆदुर्कॊनि, तोडि तॆच्चि, यडुगुलु गडिगि, यर्घ्यपाद्यादि विधुल विध्युक्तंबुगा बूजिंचि,

इस प्रकार लक्ष्मण के कहते समय, ।। ८० ।।

इनवंशोद्भव (सूर्यकुलोत्पन्न) राघव ने भूमीशात्मजों (राजकुमारों) के उत्साह से अपने को देखते रहने पर, मुनीश्वर के प्रसन्न होने पर, कोदण्ड को हाथ में लेकर, झट से चढ़ाकर, पटुबाहुबल से प्रत्यंचा खींचने पर भूरि घोष के साथ, समुद्रों के ध्वनि (गर्जना) करने के समान, चाप टूट गया ।। ८१ ।।

धनुष को तोड़ते ही समस्त धरणीसुतों (राजकुमारों) ने सिर नीचा कर लिया और लज्जित हुए। सीता का शरीर फूल गया। राजा जनक ने (श्रीरामचन्द्र की) प्रशंसा की ।। ८२ ।।

### सीता-राम के कल्याण का वैभव

इस प्रकार श्रीरामचन्द्र की सत्त्व-सम्पदा की प्रशंसाकर, प्रसन्न हो, महाराजा जनक ने विवाह रचाने की इच्छा से दशरथेश्वर के नाम, शुभ-पत्र (शुभ-निमंत्रण) लिखवाकर भेजा। महाराजा दशरथ ने भी उन शुभ-पत्रों को पढ़वाकर सुमंत्र को बुलाकर (कहा) "हे सुमंत्र ! अब हम सबको निकलकर मिथिला नगर जाकर वहाँ महाराजा जनक के घर पर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का विवाह-महोत्सव सम्पन्न करना है। अतः वशिष्ठादि द्विजवरों को, कौसल्यादि कान्ताजनों को, अरुंधती-आदि भूसुर-भार्याओं को तथा सकल बन्धुजनों को लेकर स्वर्ण-रथों पर बिठाकर लिवा लाओ।" भेजने पर उसने भी महाप्रसाद मानकर, तत्क्षण ही अन्तःपुर जाकर कौसल्या, सुमित्रा आदि राज-कान्ताओं को, वशिष्ठादि द्विजवरिष्ठों को, अरुन्धती आदि सुहागिनों को और शेष सकल बन्धुवर्ग को समुचित रीति से रथों पर बिठाकर महाराज दशरथ के यहाँ उपस्थित किया। तब दशरथ ने पुत्रद्वय सहित रथ पर आरूढ होकर, समस्त सेना-समन्वित हो, वाद्यघोष के दस दिशाओं में भर जाते समय, मिथिला की ओर प्रस्थान किया। इसके पहले ही जनक-भूवल्लभ ने दशरथ-महीपाल की अगवानी कर स्वागत किया। चरण धोकर, अर्घ्य-पाद्यादि विधियों से विधिवत् पूजाकर, अमूल्य वस्तुओं की भेंट कर, सकल सम्पदाओं से पूर्ण निवेश का

मानितंबुग गानुक लोसंगि, सकल संपत्संपूर्णमयिन निवेशमुं गल्पिचि, यंदु बेंड्लिवारिनि विडियिंचे, नंत नक्कड गनक-विकारमैन पीठमुपै गूर्चुन्न समयम्मुन "देवा! शुभ-मुहूर्तंबासन्न मगुचुन्नदि र"म्मनि वशिष्ठुंडु सनुदेर, नातडु सनि, रामलक्ष्मण भरत शत्रुघ्नुलकु मंगळ-स्नानम्मु जेयिंचि, निर्मलांबराभरणंबु लोसंगि, वेर्वेर नोक्क मुहूर्तमुन दन कूतु सीतनु श्रीरामचंद्रुनकुनु, दन तम्मुडु कुशध्वजुनि कूतुलगु मांडव्यूर्मिळा श्रुतकीर्तुलनु भरत लक्ष्मण शत्रुघ्नुलकुनु निच्चि, विवाहमुं जेसि, तन प्रिय तनयल कोक्कोकर्तेकु नूरेसि भद्र गजम्मुलनु, वेयेसि तुरंगंबुलुनु, बदिवेलु दासी जनम्मुनु, लक्ष धेनुवुलुनु नरणंबु लिच्चि, दशरथादि राजलोकम्मुनकु बहुमानम्मुगा नवरत्न खचित भूषणम्मुलुनु, जीनिचीनांबरम्मुलुनु नोसंगि, सुगंध द्रव्यमुल नर्पिंचि, पूजिचि यंपे; नंत दशरथ महाराजु मरलि ययोध्या पट्टणंबुनकु वच्चुचुंडगा मध्ये मार्गंबुन, ॥ ८३ ॥

दशरथरामुनि गनि परशुरामुनि यधिक्षेपमु

आट०— परशुरामु डड्डुपडि वच्चि, मी नाम
मेव्वरनिन, मोलक नव्वुतोड
नेनु दशरथुंड, नितडु ना पुत्रुंडु,
रामुडंड्रु पेरु, भीम - बलुडु ॥ ८४ ॥

वचनमु— अनि विनिर्पिचिन ग्रोधावेशवशंवदुंडै यप्पुडप्परशु
रामुंडु रामुं गनुंगोनि यिट्लनियें; ॥ ८५ ॥

कन्द— रामुडु नेनै युंडग
नामीद नोकंडु गलिगेना मरि ? यौगा-
केमाये, रण मोनपंग
रामा ! रम्मनुचु बरशुरामुडु पिलिचेन् ॥ ८६ ॥

वचनमु— पिलिच्चिन तोडने रामचंद्रुंडतनि किट्लनियें : ॥ ८७ ॥

आट०— ब्राह्मणुंड वीवु परम पवित्रुंड-
वदियु गाक भार्गवान्वयुंड-
वैन निन्नु दोडरि याहव स्थलमुन
जगडमाड नाकु दगुने चेपुम ? ॥ ८८ ॥

निर्माणकर, उसमें बरातियों का प्रवेश करवाया। तब वहाँ स्वर्ण से बने पीठ पर (राजा दशरथ) उपविष्ट हो रहे। तब वशिष्ठ ने आकर कहा कि "देव! शुभ मुहूर्त आसन्न हो रहा है, चलिए।" तब उस (जनक) ने जाकर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का मंगल स्नानादि करवाकर, निर्मल अम्बर आभरणादि से विभूषितकर, अलग-अलग एक ही मुहूर्त में अपनी बेटी सीता को श्रीरामचन्द्र से, अपने अनुज कुशध्वज की पुत्रियाँ माण्डवी, ऊर्मिला, श्रुतिकीर्ति का भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न से विवाह सम्पन्न करवाये। राजा ने अपनी प्रिय पुत्रियों में से प्रत्येक को एक-एक सौ भद्रगज, हजार अश्व, दस हजार दासीजन, लाख गायें वरण (विवाह के बाद बेटी और दामाद को दी जानेवाली सम्पत्ति) में (दहेजरूप) प्रदान किया। दशरथादि राजलोक को पुरस्कार के रूप में नवरत्न-खचित भूषण, चीनी चीनाम्बर (रेशमी कपड़े) देकर, सुगंध द्रव्यादि समर्पितकर पूजाकर भेजा। तब महाराजा दशरथ के अयोध्या को वापस लौटते समय मार्गमध्य में, ॥ ८३ ॥

### दशरथ राम को देख परशुराम द्वारा अपमान

परशुराम ने रोककर पूछा कि आपका नाम क्या है? दशरथ ने मंदहास से कहा, मैं दशरथ हूँ। यह मेरा पुत्र है, (इसे) राम कहते हैं, (यह) भीमबली है ॥ ८४ ॥

ऐसा कहने पर क्रोधावेश के वशीभूत होकर परशुराम ने राम को देखकर इस प्रकार कहा— ॥ ८५ ॥

"मैं राम हूँ। मेरे अतिरिक्त भी कोई राम पैदा हुआ क्या? हुआ तो क्या हुआ? कोई मुझे युद्ध में जीते? तब देखेंगे।" (इस प्रकार) परशुराम ने राम को रण के लिए ललकारा ॥ ८६ ॥

ललकारते ही रामचन्द्र ने उससे यों कहा— ॥ ८७ ॥

"ब्राह्मण हो, परम पवित्र हो। उस पर भार्गववंश के हो। ऐसे तुम्हें छेड़कर, युद्धस्थल में (तुम्हारे साथ) सप्रयत्न विग्रह करना मेरे लिए कहाँ तक उचित है? कहो तो" ॥ ८८ ॥

वचनमु— अनिन विनि परशुरामुंडिट्लनियॆ : ।। ८९ ।।

उत्प०- शस्त्रमु दालिचनं दगनॆ? सन्नुति कॆक्किन भार्गवुंडनन्
शास्त्रमु गादु, ना कॆदिरि संगर-भूमिनि निलिचनंतने
शास्त्रमुखंबुलन् नृपुल जक्कुग जेयुदुगान निप्पुडुन्
शस्त्रमु शास्त्रमुं गलवु साहस वृत्तिनि रम्मु पोरगन् ।। ९० ।।

वचनमु— अनिन रामचंद्रुंडिट्लनियॆ : ।। ९१ ।।

मत्ते०— विनु, मावंटि नृपालुरैन गलनन् वीरत्वमुं जूपगा
ननुवौगाक, महानुभावुडवु, निन्नालंबुलो मीरगा
नेनयन् धर्मुवॆ माकु जूड? मरि नी वेमन्न नीमाटकुं
गनलन्, बंतमु कादु माकॆपुडु दोर्गर्वंबु मी पट्टुनन् ।। ९२ ।।

वचनमु— अनिन विनि यॆंतयु संतोषिंचि भार्गव रामुंडारघु-
रामुनितो निट्लनियॆ : ।। ९३ ।।

आट०— शिवुनि चिवुकु विल्लु शीघ्रंबॆ यलनाडु
विरिचिनाड ननुचु विर्रवीग-
वलदु, नेडु नाकु वशमैन यी चाप-
मॆक्कु पॆट्टि तिवियु मितॆ चालु ।। ९४ ।।

उत्प०— रामुडु गीमुडंचुनु धराजनुलॆल्ल नुतिंप दिट्टवै-
भीमुनि चापमुन् विरिचि प्रेलॆदवंदुलकेमिगानि, यी
श्रीमहिळेशु कार्मुकमु जेकॊनि यॆक्किडुदेनि नेडु नी-
तो मरि पोरु सलिप पडद्रोतु रणस्थलि नी शरीरमुन् ।। ९५ ।।

श्री रामुडु परशुरामुनि नारायण चापमुतो गूड विष्णु तेजमु नंदिकॊनुट

चम्प०— अनि तन चेतिविल्लु नृपुलंदरु जूडग नंदियीय, ना
धनुवुनु गूडि तेजमु ब्रतापमु रामुनि जॆंदॆ, नंतने
जनवरु डा शरासनमु जिक्कग नॆक्किडि वाडि बाण मं-
दुन निडि येदि लक्ष्यमन द्रोवलु सूपिन द्रुंचॆ ग्रक्कुनन् ।। ९६ ।।

वचनमु— इट्लु महा प्रतापंबुन ना विलु द्रुंचि, यनर्गळ
प्रतापम्मुन भार्गव रामु दोर्गर्वंबु निर्गर्वंबु गाविंचि, जयम्मु
गैकॊन्न कुमारुनि गौगिलिंचुकॊनि, दशरथुंडु कुमार

यह सुनकर परशुराम ने इस प्रकार कहा— ।। ८९ ।।

"शस्त्र धारण करने से ही (क्या) हो गया ? मैं सुविख्यात ब्राह्मण हूँ। शास्त्र (ही) नहीं, युद्धभूमि में मेरे सामने होते ही, शस्त्रों के द्वारा भी सब राजाओं को ठीक कर देता हूँ, सबक़ सिखा देता हूँ। अब तो शस्त्र-शास्त्र दोनों हैं। साहस-वृत्ति से युद्ध करने आओ" ।। ९० ।।

इस पर रामचन्द्र ने इस प्रकार कहा— ।। ९१ ।।

"सुनो, यदि हम जैसे (तुम भी) नृपाल होते तो वीरता दिखाना समीचीन होता। तुम महानुभाव हो। युद्ध में प्रबलता दिखाना हमारे लिए धर्म है क्या ? तुम कुछ भी कहो। तुम्हारी बात पर युद्ध करना उचित नहीं है। तुम्हारे प्रति (अपने) बाहुबल पर गर्व दिखाना सदा हमारे लिए अनुचित है ।। ९२ ।।

ऐसा कथन सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हो भार्गव राम ने रघुराम से इस प्रकार कहा— ।। ९३ ।।

"शिव जी के जीर्ण धनुष को उस दिन शीघ्र तोड़ दिया है, इस पर गर्व मत करो। मेरे अधीनस्थ इस चाप को आज चढ़ाकर दिखाओ। यही पर्याप्त है ।। ९४ ।।

राम-गीम[1] कहते हुए धरती के लोगों से सन्नुत (प्रशंसित) होते हुए, बहुत धैर्यशाली होकर, बकवास करते हो कि भीम (शंकर) का चाप तोड़ दिया है। वह क्यों ? श्रीमहिला (श्रीदेवी)[2] के ईश (नारायण) के चाप को हाथ में लेकर चढ़ा दोगे तो आज तुम्हारे साथ संघर्ष कर रणस्थल में तुम्हारे शरीर को गिराकर रख दूँगा" ।। ९५ ।।

**परशुराम के नारायण-चाप के साथ (ही) विष्णुतेज को श्रीराम का ग्रहण करना**

(ऐसा) कह सब राजाओं के देखते-देखते परशुराम ने अपने हाथ के धनुष को राम के हाथ में (ज्यों ही) दिया (त्यों ही) उसके साथ ही (परशुराम का) तेज और प्रताप (भी) राम में प्रविष्ट हो गया। तभी जनवर ने उस शरासन को ठीक तरह से चढ़ाकर उस पर बाण रखकर पूछा कि (कहो, हमारे शर का) लक्ष्य क्या है ? (स्वर्ग के) मार्ग को बताने पर झट से उन(स्वर्ग-सोपानों) को काट दिया ।। ९६ ।।

इस प्रकार महाप्रताप से उस धनुष को तोड़कर भार्गवराम के अनर्गल प्रलाप और बाहुबल के गर्व को निगर्व (दूर) कर, विजयी

---

१. राम-जीम, पसुपु-गिसुपु ऐसा द्वित्व द्रविड़भाषाओं में प्रचार में है। दूसरे शब्द का अर्थ नहीं होता। हिन्दी में जैसे कपड़ा-सपड़ा।

२. श्री (लक्ष्मी)-महिला (देवी) के ईश।

चतुष्टयम्मुतो नयोध्यानगरंबु ब्रवेशिंचि सुखोन्नति राज्यंबु नेलुचुन्न समयंबुन, ।। ९७ ।।

शार्दू०-पारावार गभीरिकिन्, द्युति लसत्पद्मारिकिन्, नित्य वि-
स्फारोदार विहारिकिन्, सुजन-रक्षा-दक्ष दक्षारिकिन्,
साराचार विचारिकिन्, मदरिपुक्ष्मापाल संहारिकिन्,
वीरा साटि नृपालकुल्? दशरथोर्वीनाथ जंभारिकिन् ।। ९८ ।।

वचनमु— अनि कॊनियाड दगिन नृपाल-शेखरुडु धर्म-मार्गंबु नॊक्किकतयेनि दप्पकुंड राज्यंबु सेयुचुंडॆननुट विनि, नारदुनि वाल्मीकि महामुनीश्वरुंडट मीदि कथाविधानं बॆट्टिदनि यडुगुटयु, ।। ९९ ।।

आश्वासांत पद्य गद्यमुलु

कन्द— जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !
जलजासन विनुत, पाद जलजात ! सुधा-
जलराशि - भव्य - मन्दिर
जलजाकर चारु हंस ! जानकि - नाथा ।।१००।।

गद्यमु— इदि श्री गौरीश्वर-वर-प्रसाद-लब्ध गुरु-जंगमार्चन विनोद (नित्य शैवाचार संपन्न) सूरि-जनविनुत कविता चमत्करातुकूरि केसनसॆट्टि तनय मॊल्ल नामधेय विरचितंबैन श्रीरामायण महाकाव्यंबुनंदु बालकांडमु सर्वमु नेकाश्वासमु :

कुमार (राम) का आलिंगन कर दशरथ अपने कुमार चतुष्टय के साथ अयोध्यानगर में प्रवेश कर सुख और उन्नति के साथ राज्य करता रहा। उस समय— ।। ९७ ।।

सागर के समान गम्भीर, पद्मारि (चन्द्र) के समान कांतिमान, प्रतिदिन दिल खोलकर उदार हो दान करनेवाले दाता, सुजनों की रक्षा में दक्षारि (शिव) के समान दक्ष (निपुण), आचरण के सार का विचार करनेवाले और अहंकारी शत्रु राजाओं का वध करनेवाले, उर्वीनाथ-जंभारि (राजाओं में इन्द्र) के सदृश दशरथ के समान क्या अन्य राजा हो सकते हैं ? (नहीं) ।। ९८ ।।

इस प्रकार प्रशंसा के योग्य नृपाल-शेखर धर्ममार्ग से किंचित भी विचलित न होते हुए (दशरथ) राज्य कर रहा था। ऐसी कथा सुनकर महामुनीश्वर वाल्मीकि ने नारद से आगे की कथा का विधान पूछा— ।। ९९ ।।

### आश्वासान्त पद्य और गद्य

"हे जलजाक्ष ! हे भक्तवत्सल ! हे जलजासन (ब्रह्मा) से विनुत पादजलजात (चरणकमल) वाले ! हे सुधाजलराशि के भव्य-मंदिर-रूपी जलजाकर (सरोवर) में विहार करनेवाले सुन्दर हंस ! हे जानकीनाथ ! (मैं तुम्हारी वन्दना करती हूँ)" ।। १०० ।।

यह श्री गौरीश्वर के वर के प्रसाद को प्राप्त, गुरु-जंगम के अर्चन के विनोदी, (नित्य शैवाचार सम्पन्न) सूरिजन (श्रेष्ठजन) से विनुत, कविता में चतुर, आतुकरि केसन सेट्टि की[1] तनूजा मोल्ल नाम-धारी से विरचित श्रीरामायण महाकाव्य में बालकाण्ड का यह एक आश्वास पूरा (हो गया) है।

---

१. मोल्ल के पिता नाम है।

# अयोध्या काण्डमु

कन्द— कंदर्परूप ! खंडित-
कंदर्प - विरोधि - चाप ! करुणाद्वीपा !
वंदितशुभनामा ! मुनि
संदोहस्तुत्यभूम ! जानकि - रामा ! ॥ १ ॥

वचनमु— श्री नारद मुनीश्वरुंडु वाल्मीकि महामुनि कॆरिंगिचिन तॆरंगु विनिपिंचॆद नाकर्णिंपुमु : ॥ २ ॥

श्रीरामनकु पट्टाभिषेक सन्नाहमु

सी०— तन सुमंत्रादि प्रधानुलतो गूडि सुख गोष्ठि नुंडंग नखिल मुनुल
जक्कगा राविंचि, सम्मदंबुन वंश गुरुवुतो दशरथ धरणि नाथु
डनियॆ : नी भूभारमंतयु नॊक्कट नॆलिति जालदे येक हेळि ?
नट्टुगाक पगतुर नवलील गॆल्चिति, निलिपिति धर्मम्मु निष्ठतोड

तेटगीति— नितचालदे ? याशकु नॆंतकॆंत ?
रामुचंद्रुनि धरणिकि राजु गाग
मीरु सूडंग बट्टंबु भूरि महिम
गट्टवलयुनु मंचि लग्नमुन जॆलगि, ॥ ३ ॥

तेटगीति— अनुचु गुरुनकु दॆल्पि, तानतनि सम्म-
तमुन सौभाग्य - मंगळ - द्रव्य समिति
गूर्चुंडनुचुनु मंत्रुलकुनु नॆरुंग
जॆप्पि, शृंगार मी पुरि जेयुडनियॆ ॥ ४ ॥

वचनमु— अट्टि समयंबुन, ॥ ५ ॥

सूर्यास्तमय वर्णनमु

तेटगीति— पगलु प्राग्भागमुन नुंडि गगन वीथि
जरम दिक्कुन केगगा श्रममु दोचि
चॆमट पट्टिन स्नानंबु जेय नरुगु
करणि, नपराब्धिलो दिवाकरुडु ग्रुंकॆ ॥ ६ ॥

# अयोध्या काण्ड

कंदर्प (मन्मथ के समान सुन्दर) रूपवाले! कंदर्प के विरोधी (शिव) के चाप को खण्डित करनेवाले हे करुणाद्वीप! वंदित शुभनाम वाले! मुनिगण से स्तुत्य भूपाल! जानकी के राम! (तुमको नमन स्वीकार हो)।॥ १ ॥

श्री नारद मुनीश्वर ने वाल्मीकि महामुनि को जो विदित किया, उस (कथा-विधान को) सुनाऊँगी, सुनो! ॥ २ ॥

### श्रीराम-पट्टाभिषेक की तैयारी

अपने सुमंत्रादि प्रधानों के साथ सुखद गोष्ठी में स्थित हो, (महाराज ने) अखिल मुनियों को बुलाया और सम्मोद से वंशगुरु वशिष्ठ से धरणीनाथ दशरथ ने कहा— "मैंने इस समस्त भूभार को अकेले (अपनी) लीला से सम्भाला है न? यही नहीं, शत्रुओं को सरलता से जीत लिया है और धर्म को तत्परता से प्रतिष्ठित रखा है। यह पर्याप्त नहीं है क्या? आशा की भी कोई सीमा है? आप लोगों के समक्ष रामचन्द्र को भूरि महिमा के साथ, शुभलग्न पर, अधिक आनन्द से धरती का राजा बनाना चाहिए" ॥ ३ ॥

(इस प्रकार) कहते हुए गुरु को (मन्तव्य) बताकर, स्वयं उनकी सम्मति से सौभाग्यप्रद मंगलद्रव्यादि को जुटाने के लिए मंत्रियों को आदेश देकर कहा, इस नगरी को अलंकृत कीजिए ॥ ४ ॥

ऐसे समय में— ॥ ५ ॥

### सूर्यास्तमय का वर्णन

दिवाकर अपराब्धि में डूब गया, मानो दिनभर गगन-वीथि पर प्राची से पश्चिम दिशा की ओर चल-चलकर थक गया हो और पसीने से तर होने पर स्नान करने जा रहा हो ॥ ६ ॥

कन्द— मेलिमि संध्या - रागमु
व्रालिन चीकटियु गलिसि वरुणुनि वंकन्
नीलमु गेंपुनु नतिकिन
पोलिक जूपट्टे नट नभोमणि तलगन् ॥ ७ ॥

कन्द— वारक कल्पद्रुममुन
गोरकमुलु पुट्टिटनट्लु गुरुतर कांतिन्
दारकमुलु तलसूपेन्
जोरानीकम्मु मिगुल स्रुक्कुचु नुंडन् ॥ ८ ॥

आ०— कारु मोंगुलु रीति, गाटुक चंदान,
नीटि भाति, निंद्र - नील महिम
माष-राशि पोलिक, मरि मरि यपुडंध-
कार मवनि येल्ल गलय बर्वे ॥ ९ ॥

वचनमु— अट्टि समयंबुन ॥ १० ॥

च०— तलवरुलन्, निजाधिपुल, दर्पकु नेर्पुन गन्नु ब्रामि, य-
त्तल, दम पिन्न पापल, नुदारत नेर्पड निद्रपुच्चि, नि-
र्मल कर कंकणावळुलु, मट्टेलु रट्टुग स्रोगनीक, वि-
च्चल विडिगा जरिंचिरोंगि जारलतांगुलु मध्य रात्रुलन्॥ ११ ॥

च०— सुरतमु लेक युस्सुरनु जोटि, मगंडुडिकिंचु कांतयुन्,
सरस मेरुंगु चंद्रमुखि, सावडिदंटयु, बेरकत्तेयुन्,
बरपुरुषाभिलाषमुनु बायनि भामिनि, पोरुकट्टुनन्
बरगिन भामलादि युपभर्तल गूडि चरिंचिरत्तरिन् ॥ १२ ॥

चन्द्रोदय वर्णनमु

उ०— भानु सहस्र सत्किरण पंक्तुलनुद्भवमैन या बृह-
द्भानुनि वेंट्ट बेल्लुडुकबड्डु सुधांबुधि मीदि मीगडल्
पूनि समीरुचे देरल बूर्व दिशं गनुपट्ट दानिपै
फेनमनंग नोप्पे शशिबिंबमु तूरुपुगोंडपै दगन् ॥ १३ ॥

च०— कुमुदमुलुं, जकोरमुलु, गोमल सस्यमु, जंद्रकांतमुल्
रमण जेलंग वेन्नेल तिरंबुग जेसे जगंबु लुब्बगा,
गमलमुलुन्, वियोगु, लधिकंबुग जोरुलु, जक्रवाकमुल्
रमण गलंग वेन्नेल तिरंबुग गाचे जगंबु लुब्बगान् ॥ १४ ॥

पश्चिम दिशा में नभोमणि (सूरज) के संलग्न होने पर ऐसा दीखा मानो निखरे हुए सन्ध्याराग (एवं) अन्धकार रूपी नीलमणि (और) लालमणि को (एक साथ) जड़ दिया गया हो ॥ ७ ॥

गुरुतर कांति से तारे निकलकर आये, मानो कल्पद्रुम में निरन्तर कलियाँ निकल आयी हों, और चोरगण अत्यन्त कमज़ोर पड़ गये ॥ ८ ॥

काले मेघ की रीति, काजल की तरह, जल की भाँति, इन्द्रनील-महिमा-सम, माषराशि (काले रंग की उड़द की राशि) के समान क्रमगति से तब अन्धकार समस्त अवनितल पर छा गया ॥ ९ ॥

ऐसे समय में, ॥ १० ॥

दलनायकों (कोतवालों) को, (तथा) अपने अधिपतियों (पतियों) की आँखों में चतुराई से धूल झोंककर, सास तथा अपने छोटे बच्चों को ठीक तरह से सुलाकर, निर्मल-करकंकणावली तथा अनवटों को अधिक मुखरित न होने देते हुए जार-लतांगियों ने मध्यरात्रि में उच्छृङ्खलता से विहार किया ॥ ११ ॥

सुरति के अभाव में दुखी होनेवाली स्त्री, पति से सताई जानेवाली कान्ता, सरसता को जाननेवाली चन्द्रमुखी, सहवास की जोड़ी चाहनेवाली, सौदा करनेवाली (वेश्या), परपुरुष की अभिलाषा को न छोड़नेवाली भामा, बलात्कार रति को चाहनेवाली आदि कामिनियाँ अपने उपपतियों के साथ विहार करने लगीं ॥ १२ ॥

### चन्द्रोदय का वर्णन

भानु की सहस्रों सत्किरणों की पंक्तियों में उद्भूत उस बृहद् भानु की गर्मी से खौलनेवाली सुधांबुधि के उपरिभाग की मलाई की परतें समीर के कारण पूर्व दिशा में दिखाई पड़ीं । उन पर फेन के समान शशि-बिम्ब प्राची-पर्वत पर समुचित ढंग से दिखाई पड़ा ॥ १३ ॥

कुमुद, चकोर, कोमल सस्य (और) चन्द्रशिखाओं की रमणीयता से उल्लसित होकर सर्वजगत को प्रफुल्लित करते हुए, चाँदनी स्थिर हो रही । कमल, वियोगी (गण), अधिकता से चोर, (और) चक्रवाक (आदि) को रमणीयता से व्याकुल करते हुए (और) सर्वजगत् को (वेदना से) फुलाते हुए चाँदनी स्थिर हो छिटकती रही ॥ १४ ॥

उ०— नारदुलैरि सन्मुनुलु, नाक महीजमुलय्ये भूजमुल्,
शारदलैरि भामिनुलु, शंकर शैलमुलय्ये गोत्रमुल्,
पारदमय्ये नीरधुलु, पन्नग नायकुलैरि नागमुल्,
वारिद-वर्गमेल्ल सित वर्णमुलय्येनु बंडुवेन्नेलन् ।। १५ ।।

च०— कोंडुकुदर्यिचे नंचलरि कोरि सुधांबुधि मिन्नु मुट्टि,य-
प्पुडु जगमेल्ल गप्पेनन बूर्णत नोंदेनु सांद्र चंद्रिकल्
पुडमिकि बालवेल्लि गति बोल्पेसलारग जंद्रुडोप्पे, न-
य्युडुपति मेनि मच्चयुनु नोप्पे बयोनिधि बद्मनाभुडै ।। १६ ।।

बचनमु— अट्टि समयंबुन, ।। १७ ।।

उ०— कोरि चकोर दंपतुलु गुंपुलु गुंपुलु गूडि, रंतुलन्
बेरिन चंद्रिका-रसमु बेकोनि माकोनि पोट्ट निंडगा
बारण सेसि, पेन् बयल ब्राकुचु, जंचुपुटंबु लेत्तुचुन्,
बेरेमु वारुचुंडे मदि ब्रेम जनिप वधूटि कोटिकिन् ।। १८ ।।

उ०— वेन्नेल तीगलन् गोनलु वेडुक मुक्कल द्रुंचि तेच्चि, ता-
कोन्न प्रियांगना ततिकि गूरिमि नोरिकि निच्चि,केळिकिन्
सन्नपु गंठ नाळमुल सन्नलु सेसि सुखिचे निपुगन्
दिन्ननि चंद्रकांतमणि तिन्नेलमीद जकोर दंपतुल् ।। १९ ।।

## प्रभात वर्णनमु

तेटगीति— पाक शासनि चेमंति बंति दिविकि
नेंगुर वैचिन कैवडि नेमि चेप्प
बांडु वर्णंबुतो बूर्व भाग सीम
सोंपु मीरग वेगुरुजुक्क वोडिचे ।। २० ।।

वचनमु— अट्टि समयंबुन, ।। २१ ।।

कन्द— रवि चनुदेंचेनु जनुडी
दिवियलु, नक्षत्र समिति, तिमिरमु, शशियुन्
बवलेमिटि ? कनु रीतिनि
गुवलयमुन गूळ्ळ गोळ्लु गूयग सागेन् ।। २२ ।।

स्वच्छ चाँदनी मानो सन्मुनिगण नारद (जो श्वेत वर्णवाले माने जाते हैं) हुए, वृक्षगण नाक-महीज (कल्पवृक्ष) हुए, भामिनियाँ शारदाएँ (श्वेत वर्णवाली) हुईं। सारे पर्वत कैलाश गिरि हुए, सागर क्षीर-समुद्र हुए, नाग (सर्प) नागराज हुए, समस्त वारिद वर्ग सित वर्ण में भासित हुआ ।। १५ ।।

पुत्र पैदा हुआ है, इस खुशी में सुधाम्बुधि (क्षीर-सागर) उछल-उछलकर आकाश को छूकर समस्त जगत पर छा गया, इस प्रकार चन्द्र की सान्द्र चन्द्रिकाएँ पूर्णता को प्राप्त हुईं। चन्द्र धरती के लिए 'पालवेल्लि'[1] (घर में देवता के ऊपर का वितान) के समान शोभित हुआ। उस उडुपति (नक्षत्रपति, चन्द्र) के शरीर का तिल भी पयोनिधि में पद्मनाभ के समान विलसित हुआ ।। १६ ।।

ऐसी वेला में, ।। १७ ।।

कामना से प्रेरित हो, चकोर-दम्पति (गण) विलास से घनीभूत चन्द्रिका-रस को पेट भर पान कर, खुले मैदान में विचरण करते हुए, चोंच उठाकर अनुराग प्रदर्शित करने लगे, जिससे वधूटिकोटि के मन में प्रेम पैदा हो जाय ।। १८ ।।

चन्द्रिका-लताओं के कोंपलों के टुकड़ों को तोड़ लाकर नियराये प्रियांगना-गण के मुख में प्रेम से पहुँचाकर, कोमल कलकण्ठ से केलि का संकेत कर, चन्द्रकांत-मणियों की वेदिकाओं पर चकोर-दम्पतियों ने रतिसुख का अनुभव मनोहरता से किया ।। १९ ।।

**प्रभात का वर्णन**

मानो इन्द्र ने सेवती के फूलों की गेंद आकाश में फेंकी हो, पूर्व दिशा में बड़े ही सुन्दर रीति से पाण्डुवर्ण में शुक्रतारे का उदय हुआ। इसका वर्णन कैसे करूँ? ।। २० ।।

ऐसे समय में, ।। २१ ।।

लोक के घोंसलों में मुर्गे बाँग देने लगे, मानो यह कह रहे हों कि रवि का आगमन हुआ है। अब चलो! दीपक, नक्षत्र समिति, तिमिर, शशि, दिन में क्यों रहें? ।। २२ ।।

---

१. देव विग्रह पर बाँस की तीलियों का या श्वेतवस्त्र का वितान (चँदोवा)। उसे पालवेल्लि कहते हैं। उसे फूलों से सजाया जाता है।

च०— वदलक पद्मराग-मणि वज्रपु दर्मे॑न बट्टि नेर्पु पें-
पॊंदवग दूर्पु कॊंडपयि कॊप्पुग दॆंच्चिजगद् गुरुंडु दा-
द्रिदशवरेण्यु कट्टॆदुर देकुव निलिपन दर्पणंबु ना
नुदयमु नॊंदॆ भानुंडु समुज्ज्वल कोकनद प्रदीप्तुलन् ॥ २३ ॥

वचनमु— आरात्रि राजशेखरुनि चित्तंबुवच्चुनट्टुगा मॆलंगि,
यातडु दन्नु मॆच्चुटॆरिंगि, कैक यिट्लनियॆ : ॥ २४ ॥

रामुनि गानलकु बंपुटक कैक पन्नागमु

आ०— वसुमतीश ! नाकु वरमिच्चि तप्पुट
तगवु गादु मीकु, दलपुलोन
मरचिनारदेमॊ; मन्निंचि तॊल्लिटि
यीवु लीयवलयु नी क्षणंब ॥ २५ ॥

कन्द— जननाथ ! ना कुमारुनि
विनुडी पट्टंबु गट्टि वेवेगनु, रा-
मुनि मुनिगा ननुपुडु मरि
वनमुन बदुनालुगेंड्लु वर्तिपंगन् ॥ २६ ॥

व०— अनि प्रार्थिंचिन विनि पार्थिवेंद्रुडु डिल्लपडि तल्लडिल्लुचु
नुल्लंबु गलंगि मुसुंगिडि यच्चेडिय पलिकिन पलुकुलकु माराड-
नोडि मिन्नक युन्न समयंबुन, सुमंत्रुडेतेंचि 'स्वामी! रामचंद्रुनि
बट्टंबु गट्ट सुमुहूर्तंबासन्नंबय्यॆ गावुन मिम्मु नच्चटिकि विच्चेय
नवधरिंपु'डनि वशिष्ठ भगवानुंडु विन्नविंचुमनि पंपॆननि
चॆप्पिन कैक यिट्लनियॆ : ॥ २७ ॥

म०— अनिलो मुन्नु नृपालु चित्तमुन केनाह्लादमुंगूर्चि, ना
तनयुं बट्टमु गट्टि, राघवुनि बद्नालगेंड्लु कांतारमं-
दुनु वर्तिल्लग बंप गॊन्न वरमुन् द्रोयंग रादॆंतयुन्
वनसीमन् मुनिवृत्ति नुंडु मनुडी वेळंब या रामुनिन् ॥ २८ ॥

कन्द— अनिपलुकु कैक पलुकुलु
विनि वेगम मरल वच्चि विन्नदनंबुन्
दनुक वशिष्ठुनि तोडन्
विनुपिंचॆ सुमंत्रुडट्टि विधमेर्पडगन् ॥ २९ ॥

निरन्तर पद्मराग मणि को वज्र से तराश कर कौशल से प्राची पर्वत पर मनोहरता से लाकर जगद्गुरु ब्रह्मा के स्वयं त्रिदश-वरेण्य (देवताओं में श्रेष्ठः इन्द्र) के सम्मुख रखा हुआ दर्पण तुल्य, भानु समुज्ज्वल कोकनद की कांतियों से प्रदीप्त होकर उदित हुआ ॥ २३ ॥

उस रात में राजशेखर (दशरथ) के मन के अनुकूल बरत कर (उसे प्रसन्न कर), उनकी अपनी प्रशंसा करते जानकर, कैकेयी ने इस प्रकार कहा ॥ २४ ॥

### राम को वन में भेजने के लिए कैकेयी का षड्यंत्र

"हे वसुमतीश ! मुझे वर प्रदान कर मुकर जाना आपके लिए न्यायसंगत नहीं है। संभवतः मन में भूल गये हों। समादर कर, पूर्व के वरों को इसी क्षण प्रदान कीजिए ॥ २५ ॥

जननाथ ! सुनिये ! मेरे पुत्र का शीघ्रातिशीघ्र पट्टाभिषेक कर, फिर राम को मुनिरीति से चौदह वर्ष तक रहने के लिए वन भेजिये" ॥ २६ ॥

ऐसा कह प्रार्थना करने पर, सुनकर राजा शिथिल हो, आकुल हो मन में व्याकुल हुए। (उत्तरीय से मुँह) ढककर उस स्त्री के वचनों के प्रतिवचन न देते बस, चुप रहे। उस समय सुमंत्र ने आकर (कहा) :— "स्वामी ! रामचन्द्र के पट्टाभिषेक का सुमुहूर्त आसन्न हुआ है। अतः वशिष्ठ भगवान ने आपको वहाँ पधारने का निवेदन करने मुझे भेजा है।" ऐसा कहने पर कैकेयी ने इस प्रकार कहा ॥ २७ ॥

"पूर्व में युद्ध में नृपाल के चित्त को आह्लादित कर, (मैंने) अपने बेटे भरत को पट्टाभिषिक्तकर, राघव को चौदह वर्ष तक कान्तार (वन) में जीवन व्यतीत करने के वर पाये हैं। उन्हें किंचित भी नकारना नहीं। (अस्तु) राम से कह दो कि वह शीघ्र मुनिवृत्ति ग्रहण कर वन प्रान्त में रहे" ॥ २८ ॥

इस प्रकार बोलनेवाली कैकेयी के वचन सुनकर सुमन्त्र ने तुरत लौटकर लज्जा-भाव से वशिष्ठ को सारी बातें कह सुनायीं ॥ २९ ॥

सीता लक्ष्मणुलतो श्रीरामुनि यटवी निर्गमनमु

**वचनमु**– अनिन विनि वशिष्ठादि प्रमुखुलुनु, सुमंत्रादि प्रधान जनंबुलुनु, सैन्यंबुलुनु, बरिवारंबुलुनु विन्ननै युन्न नासन्न येरिंगि, रामचंद्रुंडु राजचिह्नंबुलु त्यजिंचि, जटाविभूति वल्कलंबुलु दाल्चि, धनुर्धरुंडै युन्नंत; लक्ष्मणुंडुनु भूपुत्रिकयुनु दोडंजनुदेर, दल्लुलकु नमस्करिंचि, वशिष्ठानुमतंबुन नाशीर्वचनंबुलु गैकोनि, यास्थानंबु वेलुवडि यरण्यंबुन करुगुनप्पुडु पुरजनुलंदरुनु बुरपुरंबोक्कुचु, दशरथमहाराजुनु दूषिंचुचु, गैकनु निंदिंचुचु, मूकलै शोकिंचुचुंड; नदि यंतयु विनि दशरथुंडु पुरोहितामात्य बंधुवर्गंबुलतो श्रीरामचंद्रुडेगिन त्रोवंजन्नंत; ना रामुडु दूरंबुनं जनियें, दशरथुंडुनु मरलि वच्चि पुत्रशोकंबुन नाकपुरंबुनकुं जनियें ददनंतरंब, ।। ३० ।।

गुहुनि प्रपत्ति

आ०— चनुचु राघवुंडु स्वर्णदि योंड्डुन
गुहुनि गांचि यतनि गुस्तरिंचि
तडयकोडबेट्टि दाटिंपु मनवुडु
नट्ल चेयदलचि यात्मलोन ।। ३१ ।।

च०-'सुडिगोनि रामु पादमुलु सोकिन धूळि वहिंचि रायि ये-
पंड नोक कांत यय्ये नट, पन्नुग नीतनि पादरेणु वि-
य्येडवडि नोड सोक निदियेमगुनो' यनि संशयात्मुडै
कडिगे गुहुंडु रामपद कंज युगम्मु भयम्मु पेंपुनन् ।। ३२ ।।

**वच०**— इट्लु श्रीरामचंद्रुनि श्रीपादंबुल नीटगडिगि, योडपै नेक्किंचि, यम्मुव्वुर नव्वलिकि दाटिंचिन ना क्षणंब ।। ३३ ।।

भरद्वाज मुनि यादरातिथ्यमु

उ०— राजकुलावतंसुडगु रामुडु तम्मुडु दानु ना भर-
द्वाज महा मुनींद्रुपदवारिजमुल् गनि म्रोक्क, नातडं
भोज-हितान्वयाब्धि-परिपूर्ण-सुधाकरुडैन रामुनि-
बूजलोनर्चि कंद-फल-मूलमुलं बरितृप्तु जेसिनन् ।। ३४ ।।

**वचनमु**— संतसिंचुचु नारात्रि यच्चट निवसिंचि मरुसटि दिनमर्कोदयम्मुन ।। ३५ ।।

## सीता लक्ष्मण के साथ श्रीराम का वन-गमन

(ऐसा) कथन सुनकर वशिष्ठादि प्रमुख (जन), सुमंत्रादि प्रधान (मंत्री) जन, सेना, समस्त परिवार निरुत्साहित हो रहे। यह संकेत जानकर रामचन्द्र राजचिह्नों को त्यागकर जटा-विभूति-वल्कल धारण कर धनुर्धारी हुए। लक्ष्मण तथा भूपुत्रिका सीता दोनों साथ हो लिये। माताओं को प्रणाम कर, वशिष्ठ की स्वीकृति से आशीष ग्रहण कर आस्थान (राजसभा) से निकलकर, अरण्य को जाते समय समस्त पुरजन अत्यन्त व्याकुल होते हुए, महाराजा दशरथ का दूषण तथा कैकेयी की निन्दा करते हुए झुंड बाँधकर शोक संतप्त हुए। वह सब सुनकर दशरथ अपने पुरोहित, अमात्य और बन्धुवर्ग के साथ श्रीराम के प्रस्थान की दिशा में चल पड़े। तब तक राम बहुत दूर चले गये। (यह जानकर) दशरथ लौटकर पुत्रशोक से नाकपुर को गये (स्वर्गस्थ हुए)। तदुपरान्त, ॥ ३० ॥

## गुह (केवट) की प्रपत्ति[1]

चलते हुए राघव ने स्वर्ण-नदी के तट पर गुह को देखकर उसे सांत्वना दे, विलम्ब न कर, (नाव के द्वारा नदी) पार कराने को कहा। तब उसने अपनी आत्मा में ऐसा करना चाहकर— ॥ ३१ ॥

कहा— "सुनते हैं, राम के चरणों में लगी धूलि के स्पर्श से एक पत्थर (अद्भुत) ढंग से कान्ता हो गई; अतः इनके पादरेणु यहाँ झट मेरी नाव का स्पर्श करें तो इसकी दशा क्या होगी ?" ऐसा संशयात्मा हो, भय के आधिक्य से गुह ने राम के चरण-कमल-युगल धोये ॥ ३२ ॥

इस प्रकार श्रीरामचन्द्र के श्रीचरणों को जल से धोकर, नाव पर चढ़ाया और उन तीनों को उस पार पहुँचाया। उसी क्षण—॥ ३३ ॥

## भरद्वाज मुनि का आदरातिथ्य

राजकुल-श्रेष्ठ राम ने अनुज के साथ, भरद्वाज मुनीन्द्र के चरण-कमलों को देख, प्रणाम किया। उसने सूर्यवंशरूपी सागर के लिए पूर्णचन्द्ररूपी राम की पूजाकर, कन्दमूल फलादि से परितृप्त किया ॥ ३४ ॥

सन्तोष के साथ उस रात को वहाँ रहकर दूसरे दिन सूर्योदय होते ही—॥ ३५ ॥

---

१. अनन्य भक्ति।

आ०-मुदमुतोड दन्नु मुनि भरद्वाजुंडु भक्ति ननुप, रामभद्रुडंत
जनियें भ्रातृ दार सहितुडै सन्मुनिकूटमुनकु जित्रकूटमुनकु ।। ३६ ।।

भरतुनि भातृ भक्ति

म०— घनुडा रामुडु चित्रकूटमुन वेड्कंजेरि युन्नंतलो
नन, दंतावळवाजिरत्नरथनानायोधसंघंबुतो-
ड, नमात्य द्विज बंधु वर्गमुलतोडंगूडि वाद्यंबुलं
जनुदेंचेन् भरतुंडु रामुकडकुन् सद्भक्ति संपन्नुडै ।। ३७ ।।

सीसमु—
चनुदेंचि, रामुनि चरणंबुलकु श्रोक्कि, कैकेयि चेसिन कपटमुनकु
नगरंबु विडिचि,यी पगिदि घोरारण्यमुन किट्लु रानेल मुनुल पगिदि?
नदि गाक, मन तंड्रि यत्यंतमैनट्टि पुत्र शोकंबुन बोक्कि पोक्कि
त्रिदशालयम्मुन देवेंद्रु गन बोये, ननि चेप्प विनि रामुडंतलोन

ते०— भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न धरणि सुतल
गूडि दु:खिचि दु:खिचि, कोंत वडिकि
नाप्त वर्गंबुचे मानें, नंतमीद
भरतु डिट्लनें श्रीरामभद्रुतोड : ।। ३८ ।।

ते०— "राजु लेकुन्नचो मरि राष्ट्रमंदु
गार्य मेट्लौनु ? मी रेरुंगनिदि कलदे ?
नेटि समयान बट्टंबु निलुपुकोंनग
दिरिगि विच्चेयु" डनुडु ना भरतुतोड ।। ३९ ।।

वचनमु— श्रीरामचंद्रुंडिट्लनियें : ।। ४० ।।

श्री पादुका प्रदानमु

च०— जनकुडु सेसिनट्टि मितिजक्कग दीर्चि, कडंक नेनु व-
च्चिचन गुरिदाक,भूतलमु जेकोंनि राज्यमु जेयु,माट गा-
दनकु मटन्न, नोल्लनन, नातनिकिं दन पादुका युगं-
बोनरग निच्चि पोम्मनुचु नुर्विकि राजुग बंचे सोंपुगन् ।। ४१ ।।

विराध वध

वचनमु— इट्लु भरतुनि भरताग्रजुं डनुनयिंचि मरलिंचि,
नाकलोक कवाटंबगु चित्रकूटंबु कदलि सौमित्रि भूपुत्रलंगूडि

मुदित होकर भरद्वाज के अपने को भक्ति के साथ विदा करने पर तब रामभद्र ने भ्रातृ और दारा सहित सन्मुनिकूट-चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया ।। ३६ ।।

### भरत की भ्रातृभक्ति

महापुरुष रामचन्द्र सोत्साह चित्रकूट पहुँचकर (वहाँ) रहने लगे। तब गज-वाजि-रत्नों से, रथ एवं अनेक योद्धाओं से, (तथा) अमात्य, द्विज, बन्धुवर्ग के साथ वाद्यों के साथ (घोष करते हुए) भरत सद्भक्ति से सम्पन्न हो, राम के समीप पहुँचा ।। ३७ ।।

आकर राम के चरणों में प्रणामकर, (भरत ने कहा)— "कैकेयी-कृत कपट के कारण नगर छोड़कर, इस प्रकार घोर (भयंकर) अरण्य में मुनि-सदृश इस तरह आना क्यों (कहाँ तक समीचीन है) ? हमारे पिता पुत्र-शोक में अत्यन्त दुखी हो-होकर त्रिदशालय (स्वर्ग) में देवेन्द्र के दर्शन करने गये।" यह सुनकर रामचन्द्र ने भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और धरणीसुता (सीता) के साथ दुखी हो-होकर, कुछ समय के उपरान्त आप्तवर्ग से (सान्त्वना पाने के पश्चात्) दुःख छोड़ दिया। उसके बाद भरत ने रामचन्द्र से इस प्रकार कहा—।। ३८ ।।

"यदि राष्ट्र में राजा न हो तो कार्य कैसे चलेगा ? आपसे अविदित क्या है ? आज के समय राज्य को सम्भालने के लिए आप वापस चलिए।" तब भरत से—।। ३९ ।।

श्रीरामचन्द्र ने इस प्रकार कहा— ।। ४० ।।

### श्री पादुकाओं का प्रदान

"पिता की आज्ञा का ठीक तरह से पालन करके अन्त में मेरे आने तक भूतल (पृथ्वी) सम्भालते हुए राज्य करते रहो। मेरी बात मानो !" भरत ने इन्कार किया। तब राम ने सुन्दर रीति से अपनी पादुका-युग का प्रदानकर, भरत को उर्वी का राजा बनाकर मनोहरता से भेज दिया ।। ४१ ।।

### आश्वासान्त पद्य और गद्य

इस प्रकार भरत को भरताग्रज (राम) ने, समझा-बुझाकर लौटा दिया, सीता (और) लक्ष्मण के साथ चले कि नाकलोक (स्वर्ग) के द्वार

पोवुनेंड, नटवी-मध्यंबुन विराधुंडनु दैत्याधमुं डपराधंबु चेसि, दिग्गन डग्गरि जगती-तनूभव नेत्तुकोनि गगन मार्गंबुन कोगिरि-पोवुनेंड वाडि बाणंबुन वानि कंठंबुनु द्रुंचि, गारुडास्त्रंबुन मरल नोय्यन जनक-नंदननंडिचि, भयंबु वापि, प्रियंबु सूपि, योय्य नोय्यन नय्येंड नुन्न यत्रि महामुनि याश्रमंबुनकुं जनि, घनंबुन ना घनुंडु सेयु पूजलं गैकोनि, रामचंद्रुंडच्चटि मुनींद्रुलकु दैत्युल वलनि भयंबु लेकुंड नभयं-बिच्चि, मन्ननं गोन्नि दिनंबु लाया मुनुल याश्रमंबुल निलुचुचु, वारलनुप शरभादि मृगोत्कर शरण्यंबगु नरण्यंबु जोच्चि पोयेननि चेप्पिन विनि नारदुनि वाल्मीकि मुनींद्रुडट्टुमीदि कथा विधानं बेट्टिदनि यडुगुटयु ।। ४२ ।।

आश्वासांत पद्य गद्यमुलु

कन्द— जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !
जलजासन - विनुत - पाद - जलजात ! सुधा-
जलराशि - भव्य - मन्दिर
जलजाकर-चारु-हंस ! जानकि-नाथा ! ।। ४३ ।।

इति श्री गौरीश्वर वर प्रसाद लब्ध, गुरु जंगमार्चन विनोद, (नित्य शैवाचार सम्पन्न) सूरिजन विनुत, कविता चमत्कारातु-कूरि केसन सेट्टि तनय, मोल्ल नामधेय विरचितंबैन श्रीरामायण महाकाव्यमुनंदयोध्याकांडमु सर्वमु नेकाश्वासमु ।

के समान अरण्य के बीच विराध नामक दैत्याधम, अपराध कर, तत्क्षण निकट आकर, सीता को उठाकर गगनमार्ग में उड़ जाने लगा। तब निशित, (तीक्ष्ण) बाण से उसका कण्ठ काटकर, गरुडास्त्र से जनक-नन्दना को धीरे से उतार लिया। प्रेम (-भाव) प्रदर्शित कर, भय को दूर कर, धीरे-धीरे अत्रिमहर्षि के आश्रम पहुँचकर वहाँ उस महात्मा से महत्तर रीति से पूजित होकर, रामचन्द्र वहाँ के मुनिगणों को दैत्याधमों से भय न हो, ऐसा अभयदान देकर, संस्तुत हुए। उन-उन मुनियों के आश्रमों में कतिपय दिन बिताकर, उनके बिदा करने पर, शरभ आदि क्रूर मृगों का निलय बने घने जंगल में प्रवेश कर आगे बढ़ते गये। (ऐसा) कथन सुनकर, वाल्मीकि मुनीन्द्र द्वारा आगे के कथा-विधान के बारे में नारद से पूछे जाने पर—॥ ४२ ॥

### आश्वास के अंत का पद्य एवं गद्य

हे जलजाक्ष! हे भक्तवत्सल! हे जलजासन (ब्रह्मा) से विनुत पादजलजात (चरण-कमल) वाले! हे सुधा-जलराशि (क्षीर सरोवर) में विहार करने वाले सुंदर हंस! हे जानकीनाथ! (मैं वन्दना करती हूँ)— ॥ ४३ ॥

यह श्री गौरीश्वर के वर के प्रसाद को प्राप्त, गुरु जंगम के अर्चन के विनोदी, (नित्य-शैवाचार-सम्पन्न) सूरिजन (श्रेष्ठजन) से विनुत, कविता में चतुर, आतुकूरि केसन सेट्टि की तनूजा मोल्ल नामधारी से विरचित श्री रामायण महाकाव्य में अयोध्याकाण्ड का यह एकाश्वास पूरा (हो गया) है।

# अरण्य काण्डमु

कन्द— मुनि - दत्त - धनुर्वेदा !
मुनिनाथ - प्रिय - सती - सुपूजित - पादा !
जनकार्चित - गुण - धामा !
सनकादि - स्तव्य - नाम ! जानकि - रामा ।। १ ।।

वचनमु— श्री नारद मुनीश्वरुंडु वाल्मीकि कोंड्रिंगिचिन तेरंगु विनिर्पिचेद : ।। २ ।।

पंचवटिलो सीतारामुल मधुर जीवनमु

च०-"इतनिकि बादचारितन मेटिकि वच्चेनो? पट्टभद्रु, डी-
सति नवरूपरेखलनु जक्कनि दय्युनु निट्टि दुर्दशल
प्रतिवसियिंचुटेट्लो? रतिराज समानुल वीरि नेल यी
गति बडद्रोचे ब्रह्म?" यनि कांतुरु चेंचेतलम्महात्मुलन् ।। ३ ।।

सी०— नडुव नेरनि कोम्म यडुगुलु पोक्कुलै शर्कर स्थलमुल श्रममु जेंदे,
वीचिन चेतुल व्रेळळु नेत्तुरु ग्रम्मि पोटमर्लु केंपुल पोल्कि नमरे,
वडिगालि सुडिवडि वाडिन ले दीग भावंबुननु मेनि चेव तग्गॆ,
बूर्ण चंद्रुनि कांति पुन्नम वेकुव गनुपट्टु गति मोमु कळल विडिचे,

तेटगीति— धवुनि नडुगडुगुनकु गैदंड गोनुचु,
नोगडु दप्पिनि निट्टूर्पु लेगसि चिगुरु-
बोदवु लेंडग, नीडकु नुदिल गोनुचु,
मनसुलो जेव यूतग जनेडु वेळ ।। ४ ।।

बचनमु— इट्ला सीतयु रामुंडुनु सत्यऋषि बोनि सौमित्रियु गतिपय प्रयाणंबुल बंचवटिकि जनि, संतोष भरितांतरंगुलै, ।। ५ ।।

कन्द— अच्चट गोन्नि दिनंबुलु
मुच्चटपडि युंड दलचि मुनि मुख्युलचे
मच्चिक दम्मुडु दानुनु
ग्रच्चर नोक पर्णशाल गाविंचि तगन् ।। ६ ।।

आ०— अंदु रामचंद्रुडनुजन्मुडुनु दानु गोन्नि वासरंबु लुन्नवेल
विकृत वेषधारि वेवेग नट शूर्पणख यनंग दैत्य नारि योर्तु ।। ७ ।।

# अरण्य काण्ड

मुनिदत्त धनुर्वेदी ! मुनिनाथ (गौतम) की प्रियसति से सुपूजित चरणवाले ! (राजा) जनक से अर्चित गुणधाम (वाले) ! सनकादि से स्तव्य (स्तुत्य) नाम वाले ! जानकी-राम ! (तुम्हें नमः) ॥ १ ॥

श्री नारद मुनीश्वर के द्वारा वाल्मीकि को बताया गया कथा-विधान सुनाऊँगी ॥ २ ॥

**पंचवटी में सीता-राम का मधुर जीवन**

चेंचुजाति (आन्ध्र की एक वनवासी-जाति) की स्त्रियाँ, यह सोचती हुई इन महात्माओं के दर्शन करती हैं कि ये तो पट्टाभिषिक्त राजा हैं; फिर इनको पता नहीं, पाद-चारित्व क्यों प्राप्त हुआ ? यह सती नवरूपरेखाओं से सुंदर होती हुई भी ऐसी दुर्दशा में क्यों रह रही है ? रति और राजा (मन्मथ) के समान इन लोगों को ब्रह्मा ने ऐसी दुःस्थिति में क्यों डाल दिया ? ॥ ३ ॥

चलने में अशक्त सुकुमारी के कर्कश प्रदेशों में (घूमने से) पाँवों में छाले पड़ गये हैं। पंखा करने के कारण अंगुलियों में रक्त उभर आया है। उनमें उभरे छाले पद्मराग-मणियों के समान विराजमान हैं। झंझा की लपेट में फँसकर, मुरझाई कोमल लता की भाँति देह की सामर्थ्य कम हुई। पूर्णिमा के प्रातःकाल में पूर्णचन्द्र की कान्ति जिस प्रकार निस्तेज होकर दिखाई देती है, उसी प्रकार (सीता के) मुख ने कलाओं को छोड़ दिया (कलाविहीन हो गया)। पग-पग पर पति के हाथ का सहारा लेते हुए, बढ़ती हुई प्यास के मारे उसाँस भरती हुई, कोमल ओठों के सूखने पर छाया में रुकते हुए (सीता) मनोबल के ही सहारे चल रही है। ऐसे समय में—॥ ४ ॥

इस प्रकार सीता, राम तथा सत्य ऋषि के सदृश सौमित्र (लक्ष्मण) ने कतिपय प्रयाणों के बाद पंचवटी पहुँचकर आनन्द भरित अंतरंगवाले होते हुए, ॥ ५ ॥

वहाँ कुछ दिन बिताने की इच्छा से श्रेष्ठ मुनियों से परामर्श लेकर, अनुज के साथ स्वयं शीघ्र ही एक पर्णशाला का समुचित रूप से निर्माण किया ॥ ६ ॥

वहाँ रामचन्द्र ने अनुजन्म (अनुज) के साथ कतिपय दिन निवास किया। उस समय में विकृत वेषधारी शूर्पनखा नामक एक दैत्यनारी अति वेग से वहाँ आयी ॥ ७ ॥

चुप्पनाक रामलक्ष्मणुल मोहिंचि पराभूतुरालगुट

वचनमु— रामुनि गनि प्रेमाभिरामंबगु मनंबुन दग्नु गामिंचि रम्मनिन, रामचंद्रुंडु सौमित्रि जूप, नतडु मुग्नु मा यन्न नभिलषिंचुटंजेसि नाकु दोषंबु गान, नीवा रामुनि कडकु मरल जनुमन्न नदि यट्लचेसिन, रामचंद्रुंडु तिरुग लक्ष्मणुं जूपिन गोपिंचि या राक्षसि मनुजेंद्र सूनुल दंडिपं-दलंचिन नॆंरिंगि, भरतानुजुंडु दानि नासिका-कर्णंबुलु गोसिवैचिन नदि नॆत्तुरु जोत्तिल्लं बसिपापयुं बोलि येड्चुचु खरदूषणादि सोदरुलकुं जॆप्पिन वारु गनलि-राक्षणंबुन ।। ८ ।।

कन्द— पदुनालुगु वेल दैत्युलु
मदमुन सोदरुलु गॊलव मंडुचु शूरा-
स्पद मगु रथ निकरमुतो
गदनंबुन रामु कडकु खरुडेतॆंचॆन् ।। ९ ।।

खरदूषणादि राक्षस संहारमु

आट०— खरुडु वच्चिनट्टि कलकलं बालिंचि,
राघवुंडु तनदु रमणि यॊद्द
दॊलग कुंड ननुजु दोडुगा गापुंचि,
बॆदर कंत गलनि कॆंदिरि निलिचॆ ।। १० ।।

शार्दू०-आवेळन् खरुडुग्रवृत्ति लय कालाभील घोराकृतुल्
दैवारन्, गजवाजि संघमुलतो, दैत्याळितो, भूरि रो-
षाविर्भूत मनस्कुडै नडिचॆ गर्वारंभ संरंभुडै
देवव्रातमु भीति नॊंदि कलगन् देजंबु सॊंपारगन् ।। ११ ।।

वचनमु— इट्लु खरुंडु सनुदॆंचि भयंकरंबुगा रणंबु सेयु समयंबुन, ।। १२ ।।

उत्प०— अप्पुडु रामचंद्रुडु भयंकर रौद्र रसंबु कन्नुलन्
निप्पुलु राल्चुचुन् नॆरय, निर्जरुलार्व, विचित्रशस्त्रमुल्
कुप्पलु गाग सेयुचुन्, गुंजर वाजि रथावळुल् धरन्
दप्पक कूल्चुचुन्, रुधिर धारल देल्चॆ सुरारि संघमुन् ।। १३ ।।

वचनमु— अट्टि समयंबुन, ।। १४ ।।

### शूर्पनखा का राम-लक्ष्मण पर मोहित हो पराभूत होना

राम को देख प्रेम से अभिराम बने मन से अपने पास कामभाव से आने को कहा। रामचन्द्र ने (उसे) सौमित्र को दिखाया। और लक्ष्मण ने यह कहकर उसे पुनः राम के पास भेज दिया कि पहले तुमने हमारे अग्रज की अभिलाषा की थी इसलिए (तुम्हें स्वीकार करना) मेरे लिए दोष है। उसने ऐसा ही किया तो राम ने पुनः लक्ष्मण को बताया। (तब) क्रोधित हो, उस राक्षसी ने राजकुमारों को दंडित करने को सोचा। यह जानकर भरतानुज (लक्ष्मण) ने उसकी नाक और कान काट दिये। खून के बह उठने पर वह शिशु की नाईं रोती हुई जाकर, खर-दूषण आदि सहोदरों से (यह सब) कह सुनाया। (यह सुनकर) वे उसी क्षण आग बबूले हो गए ॥ ८ ॥

चौदह हजार मदमत्त राक्षस (और) मद से (मण्डित) सहोदरों की सेवाएँ करते रहने पर, (क्रोध से) जलते हुए, शूरास्पद रथ-समूह को लेकर, युद्ध करने के लिए, राम के पास खर आ गया ॥ ९ ॥

### खर दूषणादि राक्षसों का संहार

खर के आगमन का कोलाहल सुनकर, राघव ने अपनी रमणी (सीता) के पास लक्ष्मण को अचल रूप से रक्षार्थ रखा। (और) निर्भीकता से युद्ध में (राक्षसों का) सामना किया ॥ १० ॥

उस समय खर उग्र वृत्ति के साथ प्रलय काल के भयंकर घोर आकारों को धारण करता हुआ, गज-वाजि समूहों (तथा) दैत्यवर्ग के साथ अत्यधिक रोष-आविर्भूत मनवाला होता हुआ, गर्व के आरंभ के संरम्भ के तेज के सौंदर्य से सम्पन्न होकर, देवतागण के भयभीत होने पर, चल पड़ा ॥ ११ ॥

इस प्रकार खर के आकर भयंकर रूप से रण करते समय ॥ १२ ॥

तब रामचन्द्र ने भयंकर रौद्ररस के मारे, आँखों से आग उगलते हुए, निर्जरों के चीख पुकार करने पर, विचित्र शस्त्रों को ढेर करते हुए, कुंजर-वाजि रथावलियों को धराशायी कर देते हुए, सुरारि (राक्षस)-संघ (समूह) को रुधिर की धाराओं में ऊभ-चूभ कर दिया ॥ १३ ॥

ऐसे समय— ॥ १४ ॥

कन्द— करितुरग स्यंदनमुलु
बरिवारमु देंगिन पिदप बट्टु रोषमुनन्
गरकर पड्डुचुनु नेंदिरिन
खर - करवंशजुडु द्रुंचें खरुनि शिरंबुन् ।। १५ ।।

वचनमु— त्वुंचिनं गनि तींड्रबुगा, ।। १६ ।।

कन्द— घोषिंचि, रामचंद्रुनि
दूषिंचुचु वच्चिनट्टि दूषणु मीदन्
रोषिंचि, सुरलु कड्डु सं-
तोषिंपग वानि करमु द्रुंचें गडंकन् ।। १७ ।।

आट०— त्रिशिरुडंत गनलि दिव्यास्त्र संपद
रामुमीद जूपि रण मोनर्चें,
मूडु शरमु लतडु मुर्दलिंचि यट वानि
मूडु तलल द्रुंचें मोग्गरमुन ।। १८ ।।

वचनमु— इट्लु खरादि राक्षसुल शिक्षिंचि, जयंबु गोनि,
धनुवेंक्कुडिंचि, मरलि पर्णशाल केतेंचि, तम्मुडुनु दानुनु
सम्मदंबुनं गलिसियुन्न समयंबुन; ।। १९ ।।

शूर्पणख वलन सीता सौंदर्यमुनु विन्न रावणुनि कामांधत

चम्प०— चलमुन वंत शूर्पणख सय्यन लंककु नेगि, रावणुं
गोलुवुन गांचि म्रोक्कि, तनकुन् नृपसूनुलु सेसिनट्टि चे-
तलु विनुपिंचि, वारु तम तंड्रि यनुज्ञनु वच्चि, कानलो-
पल दिरुगाडु चंदमुलु बन्नुग नेर्पड जेप्पि पिम्मटन् ।।२०।।

कन्द— आ रामु भार्य विभ्रम-
मे राजकुमार्तेलंदु नेरुगमु विनु मुन्
धारुणि लोपल गासिनु-
ला रमणिकि साटि पोल रभिनुति सेयन् ।। २१ ।।

सी०— कन्नुलु कलुवलो? कामु बाणंबुलो ? तेलिविगा निंतिकि देलियरादु,
पलुकुलु किन्नेर पलकुलो? चिलुकल पलुकुलो? नाति केर्परुपरादु,
अमृतांशु बिंबमो ? यद्दमो? नेम्मोमु तेंपुतो सतिकि भाविंप रादु,
कुचमुलु बंगारु कुंडलो ? चक्रवाकम्मुलो ? चेलि केरुगंग रादु,

करि, तुरग, रथ और परिवार के कट जाने के पश्चात् अत्यधिक रोष तथा पराक्रम से खर ने सामना किया, तो खरकर (सूर्य)-वंशज (रामचन्द्र) ने खर के शिर का खण्डन किया ।। १५ ।।

खण्डन करने पर भयंकर रूप से— ।। १६ ।।

घोष (गर्जन) करता हुआ, रामचन्द्र का दूषण करता हुआ, दूषण आ गया। उस पर क्रोधित हो राम ने उसे झट काट कर फेंका जिससे सुर अधिक आनन्दित हो गए ।। १७ ।।

तब त्रिशिर ने क्रुद्ध होकर दिव्यास्त्र-संपत्ति (शक्ति) को प्रकट करते हुए राम के साथ युद्ध किया। राम ने संग्राम में उसे तीन शरों से धमकाकर उसके तीनों सिर काट दिये ।। १८ ।।

इस प्रकार खरादि राक्षसों को दण्डित कर विजयी हो, धनुष की डोरी उतार कर, फिर पर्ण-शाला को आये। वहाँ अनुज के साथ स्वयं सम्मोद के साथ मिलकर रहे। उस समय— ।। १९ ।।

**शूर्पणखा द्वारा सीता-सौन्दर्य का श्रवण करनेवाले रावण की कामान्धता**

हठ करके धूर्त्त स्त्री शूर्पणखा ने शीघ्र लंका जाकर, सभा में रावण के दर्शन कर प्रणाम किया। अपने प्रति नृपसुतों के किये कार्य सुनाये। उनके अपने पिता की आज्ञा के कारण आकर वन में भ्रमण करने का विधान समुचित रूप से, ढंग से कह सुनाया। बाद में— ।। २० ।।

(उसने कहा) उस राम की पत्नी के सौन्दर्य को किन्हीं (अन्य) राजकुमारियों में नहीं देखा। सुनो, अभिनुति (वर्णन) करने पर, इस धरणी की कामिनियाँ उस रमणी की तुलना में नहीं टिकतीं ।। २१ ।।

तेटगीति— कुरुलु नीलंबुलो ? तेटि गुंपु लॉक्को ?
पिरुदु पुलिनंबॉ ? मन्मथु पेंड्लि यरुगों ?
यनुचु गोंदरु संशयं बंदुचुंड
वेलदि यॉप्पारु लावण्य विभ्रममुल ॥ २२ ॥

कन्द— कलदो ! लेदो ! यनुचुनु
बलुमरु नॅन्नडुमु जूचि पलुकुदु,
बलिमो ! कलिमो ! यनुचुनु
बलुमरु जघनंबु जूचि पलुकुदु रितरुल् ॥ २३ ॥

सी०— षट्पदंबुल पैकि संपेंग पुव्वुल, जलजातमुल पैकि जंदमाम,
गिसलयंबुल पैकि वेंस गलकंठमुल्, सिंधुरम्मुल पैकि सिंहमुलनु,
दॉंडपंडुल पैकि दॉड्ड राचिलुकल, नलरु दूडुल पैकि नंच पिंडु,
बंडु वेन्नॅल निग्गु पैकि जकोरमुल्, पवनंबु मीदिकि बापरेनि,

तेटगीति— मरुडु वैरंबु चेसिन माड्कि, नलक
नासिका करानन चरण स्वनमुलु
वर - पयोधर - मध्योष्ठ - वचन - बाहु
गमन - हासाक्षु - लूर्पारु रमणि कमरें ॥ २४ ॥

कन्द— बंगारु नीरु निलुवुन
बॉंगारुचु नुंड नजुडु वोसिन माड्किन्,
शृंगार मॅल्ल निलुवुन
बॉंगारुचु नुंडु गरगि पोसिन माड्किन् ॥ २५ ॥

वचनमु— अट्टि वयोरूपंबुलनु गनुपट्टुनट्टि यक्कांता - रत्नंबु
नीकु सिद्धिचॅनेनि नीवु त्रिभुवनंबुलु विजयंबु चेसिन यंत
कन्ननु संतसितुवन्न विनि, कामाशुगंबुलं दगिलि,
कामांधुंडै कन्नुलु गानक यन्नु कॉनि तन्नु दा मरचि,
यॉड्डोलगंबु सालिंचि, पुष्पकंबनु विमान - रत्नंबुपै
नधिष्ठिंचि, मारीचु कडकुं जनि, प्रार्थिंचि, 'नीवु कनक
मृगंबवै जनस्थानंबुनकुंजनि, दशरथ नंदनुंडगु श्रीरामुंडुन्न
पर्णशाल कडंबॉडकट्टिन, नतंडुनु निन्नु वॅनुकॉनु, नीवु
नतनि नति दूरंबुगा गॉनिपोयि मायंबैन, नेनु रामुनि
भार्यं गॉनिवत्तु' ननिन विनि सम्मतिलक मारुत्तरं
बिच्चिन, रावणुंडुग्रुंडै मंडिपड, नतंडा सन्न यॅरिंगि,
कनक मृग रूपंबुनु दाल्चॅ, ना क्षणंबुन; ॥ २६ ॥

इंती (स्त्री-सीता) की आँखें कुमुद हैं या कामबाण ? (इसे) चतुरता से भी कह नहीं सकते। नाती (स्त्री-सीता) के वचन किन्नर के वचन हैं या तोते के बोल ? स्पष्ट कह नहीं सकते। इस सती का मुख अमृतांश-बिम्ब (चन्द्र) है या दर्पण ? साहस से (सप्रयत्न) इस बात की कल्पना नहीं कर सकते। सखी के कुच स्वर्ण-कलश हैं या चक्रवाक ? नहीं कह सकते। केश नील मणियाँ हैं या भ्रमरगण ? नितम्ब पुलिन हैं या मन्मथ की विवाह-वेदिका है ? ऐसा कुछ लोगों के संशय-मग्न होने पर, वह कोमलांगी लावण्य (तथा) विभ्रम से विराजमान् है ॥ २२ ॥

इतर लोग (उसकी) कमर को बार-बार देखकर कहते हैं कि वास्तव में वह है या नहीं ? अन्य जन बार-बार जघन को निरख कर कहते हैं कि वह आधिक्य (विस्तार) है या श्री (सौंदर्य) संपन्नता ? ॥ २३ ॥

भौरों पर चम्पाओं को, कमलों पर चन्द्र को, किसलयों पर कलकण्ठी (कोयलों) को, हाथियों पर सिंहों को, बिम्बा-फलों पर श्रेष्ठ शुकों को, शोभायमान कमल-नालों पर हंस-समूह को, स्वच्छ चाँदनी की चमक पर चकोरों को, पवन पर सर्पराज को (क्रमशः) कामदेव ने वैर भाव से भेज दिया हो, (इस प्रकार) केश, नासिका, कर, आनन, चरण, स्वन, श्रेष्ठ पयोधर, मध्य (कमर), ओष्ठ, वचन, बाहु, गमन, हास, आँखें तथा श्वास (आदि) उस रमणी में सज गये ॥ २४ ॥

स्वर्णजल के मानों शोभा से उमड़ते समय ब्रह्मा ने (उस स्वर्ण से) शरीर को ढाला हो (तथा) समस्त श्रृंगार को गलाकर (सीता के) शरीर को ढाल कर बना दिया हो ॥ २५ ॥

इस प्रकार वय और रूप से दिखाई पड़ने वाली वह कान्तारत्न यदि तुम्हें प्राप्त हो जायगी तो तुम्हारे त्रिभुवनों पर विजय प्राप्त करने की अपेक्षा मैं अधिक प्रसन्न हो जाऊँगी। (ऐसा) कहने पर, सुनकर, कामबाण के शिकार बन, कामान्ध हो, आँखों के मुँद जाने पर, अपने आपको भूलकर, सभा का समापन कर, पुष्पक नामक श्रेष्ठ विमान पर आरूढ़ हो, मारीच के यहाँ जाकर, (उससे) प्रार्थना की कि तुम कनक मृग बनकर, जनस्थान को जाकर, दशरथ-नन्दन श्रीराम की पर्णशाला के समीप-प्रान्त में दीख पड़ोगे तो वह तुम्हारे पीछे लगेगा तो तुम उसे बहुत दूर तक ले जाकर अदृश्य हो जाओ। मैं राम की पत्नी को ले आऊँगा। (ऐसा) कहने पर सुनकर मारीच ने प्रत्युत्तर दिया (असम्मति प्रकट की)। तो रावण उग्र हो आग बबूला हो गया। (तब) उस संकेत को जानकर उसने कनक-मृग के रूप को धारण किया। उस क्षण में— ॥ २६ ॥

कन्द— ओडलॆल्लनु बंगारमु,
पौड लॆल्लनु रत्न समिति बोलिन मॆऱुपुल्
नडलॆल्ल नॆऱपि मॆलगॆडु
कडलॆल्ल विलास रेखा कळलंदॊप्पॆन् ।। २७ ।।

वचनमु— इट्लु कनक मृगाकारंबु गैकॊनि पर्णशाल कडकुं बोयि मॆलंगुनप्पुडु, ।। २८ ।।

कन्द— कनियुनु विनियुनु नॆऱुगमु
कनक मृगं, बनुचु वेड्क गडलुकॊनंगन्
गनग, मृगंबद्भुत मिदि
कनक मृगं, बेमि सेयगलदो मीदन् ।। २९ ।।

वचनमु— अनि कनुगॊन्न मुनि जनंबुलु मनंबुलं दलकुनॆड, ना मृगंबुनु मृगनेत्र यगु धात्री-पुत्रि गनि दानि नभिलर्षिचिन, ना सन्न यॆऱिगि सौमित्रिनि भूमिजकुं दोडिडि, श्रीरामचंद्रुंडु दानि वॆनुकॊनि चनुचुन्न यवसरम्मुन; ।। ३० ।।

रामुडु बंगारु जिंकनु वॆन्नंटि तरुमुट

सीसमु—
तनु बट्ट नॊय्यन बॆनुकॊनि चनुदॆंचु निलऱॆनि तलपु दा दॆलिसि तॆलिसि,
चॆरुव मॆलगुचु बूरि मेयुचु डासि मॆल्लन यंतंत मॆलगि मॆलगि,
तन नीड गनुगॊनि तानॆ दिग्गन दाटि भयमुन बरुवॆत्ति पऱचि पऱचि,
यॆडरैन बोवक यॆलयिंचि कनुगॊन्न दरुवुल नॊय्यन नॊरसि यॊरसि,

तेटगीति— चॆंवुलु निक्किचि चूचुचु, जॆलगि चॆलगि
पोव, रामुंडु दव्वुगा बोयि पोयि,
यॆलमि माया मृगंबनि यॆऱिगि मदिनि,
दीनि जंपुदुगा कनि तॆगुव चेसि ।। ३१ ।।

कन्द— एचिन किनुकनु बलु ना-
राचमु संधिंचि डासि राघवुडा मा-
रीचुनि दैत्याधमु गुल-
नीचुनि गूलंग नेसॆ निर्जरु ललरन् ।। ३२ ।।

सारी देह सोने की है, सभी धब्बे (तिल) रत्नों के समूह के समान चमकदार हैं, समस्त सुन्दर गतियों के साथ विचरते हुए, उसके समस्त मृदुगमन-विलास रेखाओं की कलाओं से विराजमान हुए ।। २७ ।।

इस प्रकार (मारीच के) स्वर्ण-मृग के आकार को धारणकर, पर्णशाला के समीप जाकर, विचरण करते समय, ।। २८ ।।

कनक मृग को देखा नहीं, सुना नहीं। जानते नहीं। (ऐसा) कहते हुए, कौतूहल के जगने पर (उसे) देखते हुए, मृग अद्‌भुत है, यह तो स्वर्ण मृग है। देखें आगे यह क्या करेगा ? ।। २९ ।।

ऐसा कहते हुए उसे देखने वाले मुनिजन मन में व्याकुल हुए। मृगनेत्री धात्री-सुता (सीता) ने मृग को देख, उस पर अभिलाषा व्यक्त की। उस संकेत को जानकर सौमित्र (लक्ष्मण) को भूमिजा (सीता) की रक्षा हेतु छोड़कर, श्रीराम ने उसका पीछा किया। उस अवसर पर, ।। ३० ।।

### राम के कनकमृग का पीछा करना

अपने को पकड़ने के लिए तीव्र-गति से आगे बढ़नेवाले राजा (राम) के मन को जानकर, (वह मृग) समीप में ही विचरण करते हुए, घास चरते हुए निकट आकर, धीरे से विचरण करते हुए, अपनी छाया को देखकर स्वयं झट से पार कर, भय से दौड़-दौड़कर, सामना होने पर (दूर) न जाकर, ध्यान से देखने पर, पेड़ों की आड़ में झट छिप-छिपकर, कान खड़े कर, देखते हुए, उल्लसित होते हुए, (राम को सताता रहा)। राम दूर तक जा-जाकर, उचित रूप से मन में (उसे) मायामृग जानकर, उसका वध करने का निश्चय कर, ।। ३१ ।।

अत्यधिक क्रोध से राघव ने बल से युक्त शर का संधानकर, उस मारीच, दैत्याधम, कुल में नीच (मारीच) को मार गिराया। इससे देवता प्रसन्न हुए ।। ३२ ।।

वचनमु— वाडुनुंगूलु नव्वेळ "हा ! लक्ष्मणा !" यनु रवंबुंजेसिन ना ध्वनि विनि जनक नंदन मनंबुन नुलिकि लक्ष्मणुं बिलिचि 'मी यन्न केमि कीडु वाटिल्लेनो कानि निन्नु दलंचें, नीवुनुंबोयि मीयन्न कुशल स्थितिं देलिसि कोनि र' म्मनिन नतंडु तलंकक नामेतो निट्लनियें ।। ३३ ।।

उत्पलमाल–

एमिटि किंत भीति मदि ? नीवग तोचुट येमि नीकु ? नो
भामिनि ! रामुनंदु नीक भारमु चेंददु, चेंदेनेनियुन्
भूमि वडंकदे ? नभमु बोरन व्रोयदे ? वार्धु लिंकवे ?
तामरसाप्त बिंबमु सुधाकर बिंबमु नेल डुल्लवे ? ।। ३४ ।।

उत्प०– अंत पनय्येनेनि, दनुजांतकु, नंतकु, मन्मथांतकुन्
बंतमु मीरगा गलचि, पन्नग मर्त्य सुरेंद्र लोकमुल्
बंतुलु गट्टि यूड्चि, रिपुभंजनु रामुनि गंदकुंड न-
पिंतुनु नीकु देंच्चि, मदि भीतिनि बोंदकु मम्म जानकी ! ।।३५।।

वचनमु— अनि लक्ष्मणुंडु पलिकिन विनि, जनकराज-नंदन किनिसि, विनरानि माटलं दूलनाडिन, मनंबुनं गंदि कुंदुचु, श्रीरामचंद्रुंडेगिन मार्गंबुनन चनियें; नंत निक्कड, ।। ३६ ।।

रावणुडु सन्न्यासि वेषमुन सीत नपहरिंचुट

कन्द— सन्न्यासि वेष मलरग
नन्यायमु तलचुकोनुचु नसुरेंद्रुडु दा
गन्या रत्नमु गनि सौ-
जन्यमुनन दीवन लिडॆ शांतमु दोपन् ।। ३७ ।।

कन्द— दीविंचुडु, मुनिये यनि
भाविंपुचु जेर वच्चु भामिनि, नपु डा
रावणुडु रथमु मीदिकि
वे वेगम तिगिचि गगन वीथिनि जनियॆन् ।। ३८ ।।

वचनमु— अय्यवसरंबुन ।। ३९ ।।

उसने भी धराशायी होते समय "हा लक्ष्मण !" कहकर जोर से पुकारा। इस ध्वनि को सुनकर जनक-नन्दना ने मन में भय विह्वल हो लक्ष्मण को बुलाकर कहा, "पता नहीं, तुम्हारे अग्रज को क्या हानि हुई है, उन्होंने तुम्हारा स्मरण किया। तुम भी जाकर अपने अग्रज की कुशल-स्थिति जानकर आ जाओ।" (सीता के ऐसा) कहने पर, उसने विचलित न होकर, उससे यों कहा— ॥ ३३ ॥

"मन में इतना भय क्यों ? तुम्हें ऐसी चिन्ता क्यों होनी चाहिए ? हे भामिनी ! राम को कोई (काम) भारी नहीं पड़ता। यदि ऐसा हो तो धरती कम्पित नहीं होगी ? आकाश भयंकर रूप से मुखरित नहीं होगा ? सागर सूखेंगे नहीं ? तामरसाप्त-बिम्ब (सूर्य) (तथा) सुधाकर-बिम्ब (चन्द्र) धरती पर गिर नहीं पड़ेंगे ? ॥ ३४ ॥

यदि उतना काम हो भी जाये तो मैं विष्णु-ब्रह्मा या शिव भी क्यों न हों, प्रतिज्ञा पूर्वक लड़कर, नाग (लोक), मर्त्य (लोक), सुरेन्द्र लोकों को गेंद की तरह उड़ाकर, शत्रु-भंजन राम को अम्लान ही लाकर तुम्हें समर्पित करूँगा। माँ ! जानकी ! मन में भय मत रखो" ॥ ३५ ॥

ऐसा लक्ष्मण के बोलने पर सुनकर, जनक-राजनन्दना ने क्रोधित हो, ऐसी बातों से निन्दा की जिन्हें सुना नहीं जा सकता। मन में दुखी होते हुए, (लक्ष्मण) उस मार्ग पर चल पड़े जिस पर श्रीरामचन्द्र गए। तब यहां, ॥ ३६ ॥

### संन्यासी वेष में रावण का सीतापहरण

संन्यासी वेष का, ढंग से धारणकर, अन्याय (अत्याचार करने की) सोचते हुए, असुरेन्द्र (रावण) ने कन्यारत्न (सीता) को देख, सौजन्य से, (तथा) शान्तभाव के प्रकट होने पर आशीष दी ॥ ३७ ॥

आशीष देने पर, (उसे) मुनि ही समझकर, समीप आनेवाली भामिनी को तब रावण ने शीघ्रातिशीघ्र रथ पर चढ़ाया और गगन-वीथी में चल दिया ॥ ३८ ॥

उस समय— ॥ ३९ ॥

आट०— असुर गोंचु बोव नवनी - तनूभव
वेंड्रचि पलिके दिशलु विनग नंत
"सीत नादु पेरु, श्रीरामु भार्यनु
नन्नु गावरय्य मिन्न किपुडु" ।। ४० ।।

वचनमु— अनि मऱियुनु, ।। ४१ ।।

आट०— "देव गणमुलार ! दिक्पाल वरुलार !
वृक्ष जातुलार ! पक्षुलार !
कुटिल दानवुंडु गोंपोवुचुन्नाडु
करुण तोड़ नन्नु गावरय्य !" ।। ४२ ।।

रावणुनि निरोधिंचिन जटायुवु

आट०— अनुचु बलुकुचुन्न ना यार्त नादंबु
विनि जटायुवनेंडि विहग नाथु
डरुगुदेंचि, कलहमत्युग्रमुग जेय
रावणुंडु बक्षि राजु दार्के ।। ४३ ।।

चम्प०— असुर विभुंडु वैचु निशितास्त्र मुखंबुल नोंच्चि, पक्षियुन्
गोंसरक दैत्य नायकुनि गुंडेनु नोंव्वग दन्न, नंतलो
गसरि निशाचरुंडु कर खड्गमु द्रिप्पुचु बक्ष युग्ममुन्
वसुध बडंग द्रुंचि, कडु वेळम लंककु नेगु नत्तरिन् ।। ४४ ।।

कन्द— वनचरु लोंक गिरि चेरुव
वनमुन जरियिंप जूचि वसुधासुतयुन्
दन चीरकोंगु तुनुकनु
दन सोम्मुलु मूटगट्टि धरपै वैचेन् ।। ४५ ।।

कन्द— अंतट दैत्युडु लंककु
बंतमुतो नेगि शिंशुपा तरु क्रिंदन्
संतसमुन निडि, दानव
कांतल नवनिजकु दोडु कावलि युंचेन् ।। ४६ ।।

उत्प०— अत्तरि राघवुंडु तनु नासल बेंट्टुचु गोंचु बोवगा
जित्तमु नोंच्चि, या मृगमु शीघ्रमुन बडवेसि, दानि मै-
तित्तिग दीसि विंटि कोंन देंच्चेंडि वेळ, बयोजमित्र वं-
शोत्तमु डुल्क, गानवडे नोक्कंड लक्ष्मणुडन्न दृष्टिकिन् ।। ४७ ।।

असुर के ले जाते समय अवनीसुता भय से इस प्रकार पुकार उठी जिसे दिशाएँ सुनें। (उसने पुकारा कि) "मेरा नाम सीता है। मैं श्रीराम की पत्नी हूँ। चुप न रहकर, अब मेरी रक्षा करें" ॥ ४० ॥

और फिर, ॥ ४१ ॥

"हे देवगण! हे दिक्पतिवर! हे वृक्ष जातियो! हे पक्षियो! कुटिल दानव (मुझे) ले जा रहा है। करुणा से मेरी रक्षा कीजिए" ॥ ४२ ॥

### रावण का निरोध करने वाला जटायु

इस प्रकार के उसके आर्त्तनाद को सुनकर, जटायु नामक विहगनाथ ने आकर, अति उग्ररूप से कलह किया, तो रावण ने पक्षिराज का सामना किया ॥ ४३ ॥

असुरराज को तीक्ष्ण बाणों से पीड़ित करते हुए, पक्षिराज ने कोई कसर न रखते हुए, दैत्यनायक के हृदय को चीरते हुए, लात मारी। इतने में निशाचर क्रोध से खड्ग घुमाते हुए, दोनों पंखों को काट (उसे) धरा पर गिराकर, अतिशीघ्र लंका की ओर चल पड़ा। उस समय— ॥ ४४ ॥

एक गिरि के पास वन में विचरण करनेवाले वनचरों को देख, सीता ने साड़ी के टुकड़े में अपने गहने बाँधकर, धरा पर गिरा दिया ॥ ४५ ॥

तब दैत्य ने ज़िद्दकर, सीता को लंका ले जाकर, शिशुपा (अशोक) वृक्ष के नीचे आनन्द से रख, दानव-कान्ताओं को अवनिजा (सीता) के पहरे के लिए तैनात किया ॥ ४६ ॥

उस अवसर पर राघव ने अपने (मन में) आशाएँ जगाते हुए, दूर ले जाने पर, मन में बुरा लगने पर, शीघ्र ही उस मृग को (मार) गिराया और उसके शरीर के चर्म को निकालकर धनुष के कोने से लगाकर, वापस आ रहा था। उस समय एक जगह लक्ष्मण अग्रज की दृष्टि में आया ॥ ४७ ॥

चम्प०— पोंडगनि गुंडे झल्लुमन बुद्धि गलंगुचु रामचंद्रुड-
ग्यॆड गड्डु नुग्गुडै पलिकॆ "नी विट्टुनाकडकेल वच्चि ? त-
क्कॊंड निनु बर्णशाल कड गावलि युंचिन चोट, नोंटि मै
बडतुक डिंचि रा दगुनॆ वन्यमृगोत्कर मध्य सीमकुन् ।। ४८ ।।

आट०— अनुचु बलुकुचुन्न यन्नकु ब्रणमिल्लि
विनय वाक्य फणिति विन्नविंचॆ,
जनक तनय पलुकु चंदंबु मोंदलेत्ति
लवमु दप्प कुंड लक्ष्मणुंडु ।। ४९ ।।

वचनमु— चॆप्पिन माटलु विनि, विन्नदनंबुन जिन्नबोवुचु दुर्निमित्तं-
बुलं गनुचु दत्तरंबुन नाश्रमंबुनकु जनि यक्कड, ।। ५० ।।

सीतनु गाननि श्रीरामचंद्रुनि विरहातिशयमु

आट०— पर्णशाललोन बरिकिंचि परिकिंचि
सीत कान बडमि जिन्नवोयि,
चित्तमंत गलगि, श्रीरामचंद्रुंडु
पलुवरिंप जोंच्चॆ ब्रमसि ब्रमसि ।। ५१ ।।

सी०— नी दृग्विलासंबु नेरि नभ्यसिचॆंडु गुरुकुच गानवे हरिण-विभुड ?
नी मंजुलालाप निचयंबु गैकॊन्न सुकुमारि गानवे पिक-कुलेंद्र ?
नी निंडु सत्कांति नेम्मोमु गलयट्टि रुचिरांगि गानवे रोहिणीश ?
नी पक्ष विस्फूर्ति नेनयु धम्मिल्लंबु गल यिंति गानवे यळि-कुलेश ?

तेटगीति— स्तन भरंबुन नी पोलिक दनरिनट्टि
यतिव गानवे चक्रवाकाधिनाथ ?
नेऱय निनु बोलु नॆन्नड नेर्चिनट्टि
रमणि गानवे नीवु मराल राज ? ।। ५२ ।।

सी०— घनसार भूजंब ! कानवे नी मंचि गंदंबु गल मेनि करटियान ?
गदळिका तरुराज ! कानवे नीयट्टि मेऱुगु बेंदोंडल मा मीन नेत्र ?
विलसिल्लु चंपक वृक्षंब ! कानवे ललि नीदु पुष्प विलास नास ?
गमनीय लत ! नीवु कानवे नीयट्टि करमुलु शोभिल्लु कंबुकंठि ?

तेटगीति— ग्रमुक धरणीरुहाधीश ! कानवय्य
नी फल स्फूर्ति कंठंबु नीलवेणि ?
गळिकलनु मिंचु नवकुंद ! कानवम्म
नीदु कोरक निभदंत नीरजास्य ? ।। ५३ ।।

(उसे) देखकर हृदय के सिहर उठने पर, बुद्धि के व्याकुल होने पर, अत्यधिक उग्र होकर, रामचन्द्र ने कहा—"तुम इस प्रकार मेरे पास क्यों आ गये हो ? वहाँ तुम्हें पर्णशाला के यहाँ रक्षार्थ रखा था। अकेली उसे (सीता को) छोड़कर, इस वन्य मृगों से आवृत्त मध्य प्रान्त में आ जाना कहाँ समुचित है ?" ॥ ४८ ॥

ऐसे कहनेवाले अग्रज को प्रणामकर, लक्ष्मण ने विनयपूर्ण वाक्यों में जनक-तनया के वचनों के विधान को, लेशमात्र न छोड़कर, (यथातथ्य रूप में) कह सुनाया ॥ ४९ ॥

लक्ष्मण की कही बातें सुनकर, चिन्ता से विवर्ण होते हुए, अपशकुन देखते हुए, राम घबराते हुए आश्रम पहुँचा, वहाँ, ॥ ५० ॥

### सीता को न देख श्रीराम के विरह की अतिशयता

पर्णशाला में ढूँढ़-ढूँढ़कर सीता को न पाकर चिन्तित हुए। (उसका) चित्त व्याकुल हुआ। श्रीरामचन्द्र भ्रमित हो बड़बड़ाता रहा ॥ ५१ ॥

"हे हरिणराज ! तुम्हारे दृग्विलास को पूर्णरूपेण अभ्यास करनेवाली गुरुकुचांगी को कहीं देखा है ? ऐ पिक-कुलेन्द्र ! तुम्हारे मंजुल-आलाप (वचन)-निचय (समूह) को जिसने ले लिया है, उस सुकुमारी को कहीं देखा है क्या ? हे रोहिणीश (चन्द्र)! तुम्हारे पूर्ण सत्कांति से युक्त सुन्दर मुखवाली रुचिरांगी को कहीं देखा है क्या ? हे अलिकुलेश ! तेरे पंखों के सौन्दर्य से विलसित धम्मिल्ल (जूड़े) वाली सुन्दरी को कहीं देखा तो नहीं ? हे चक्रवाकाधिनाथ ! स्तनभार से तुम्हारे सदृश रूपवाली भामा को देखा है क्या ? हे मरालराज ! रमणीयता से तुम्हारे सदृश गमन को सीखी हुई रमणी को देखा है क्या ? ॥ ५२ ॥

हे घनसार-तरु ! तुम्हारी सुगंध से शोभित गजगमना को कहीं देखा है ? हे कदली-तरु-राज ! तुम्हारे जैसी बड़ी चमकदार जांघोंवाली हमारी मीननेत्री को देखा है क्या ? हे विलसित चम्पकवृक्ष ! तुम्हारे पुष्पविलास के समान नासिका से सुशोभित ललितांगी को कहीं देखा है ? हे कमनीय-लता ! तुम्हारे समान (कोमल) करों से शोभित कम्बु-(शंख)-कण्ठी को देखा है क्या ? हे क्रमुक (सुपारी)-धरणीरुहाधीश (वृक्ष-राज) ! तुम्हारे फल का स्मरण दिलानेवाले कण्ठवाली नीलवेणी को देखा है क्या ? कान्तियों में अधिक बने हे नव-कुन्द ! तुम्हारे कोरक (मुकुल) समान दन्तवाली पद्मानना को देखा है क्या ? ॥ ५३ ॥

सी०-वनजास्य! निनुगूडि वर्तिंचु नति घोर वनमुलु श्रृंगार वनमु लगुनुं,
पडति ! नीतोगूडि पर्वळिंचु कर्कश शय्यलु पूवुल शय्य लगुनु,
गलकंठि ! नी चेति कंदमूलादि भोजनमुलु मधुर भोजनमुलगुनु,
हरिमध्य ! निनुगूडि चरियिंचु नटुवंटि तपमुलु सत्पुण्य तपमुलगुनु,

तेटगीति– इंति ! नी तोड गूडि भोगिंचुनट्टि
भोगमंतयु देवेंद्र भोगमगुनु,
सुदति ! पौंडकट्ट गदे नाकु जूडवलयु
गन्नुलकु गानबड वेमि कमल नयन ! ।। ५४ ।।

वचनमु— अनिमरियुनु, ।। ५५ ।।

सी०-ए मृगंबुनु गन्न नेणाक्षि गानवे ? यनि पेंक्कु भंगुल नडिगि यडिगि,
ये पक्षि गनुगोंन्न नेलनाग गानवे? यनि पेंक्कु भंगुल नडिगि यडिगि,
ये म्रानु बोंडगन्न वामाक्षि गानवे? यनि पेंक्कु भंगुल नडिगि यडिगि,
ये गट्टु बोंडगन्न निभयान गानवे? यनि पक्कु भंगुल नडिगि यडिगि,

आट०— कलगु, भीतिनोंदु, दलकु जित्तमु लोन,
सोंलयु, मूर्छ बोवु, वलयु, नलगु,
सीत गान बडमि श्रीरामचंद्रुंडु
विरहताप वह्नि वेगि वेगि, ।। ५६ ।।

वचनमु— इट्लु सीतावियोगंबुनकु बलवरिंचुचुन्न यन्नं गनि सौमित्रि,
यिट्लनियें : ।। ५७ ।।

श्रीरामुनिकि लक्ष्मणुनि सान्त्वनमु

कन्द— दीनुनि कैवडि नूरक
मानमु सेंडि वगवनेल मनुजेश्वर ! यी
कानन भूमुल वेंदकग
गाननि मीदटनु वगवगादगु मनकुन् ।। ५८ ।।

वचनमु— अनि प्रतापिंचि, कोपमापुकोजालक कन्नुलु जेगुरिंप नन्नतो
निट्लनियें : ।। ५९ ।।

उत्प०— व्रच्चेंद नाक लोकमुन वारल गुंडेलु, नागलोकमुन्
ग्रोंच्चि यहींद्र वर्गमुनु गूल्चेंद, गव्वपु गोंड कैवडिन्
द्रच्चेंद मर्त्यलोकमु, नुदारत ने गतिनैन ग्रम्मरं
देंच्चेंद सीत, नीक्षणम देवर चित्तमु मेंच्चुनट्लुगन् ।। ६० ।।

हे वनजास्या ! तुम्हारे साथ मिलकर विचरण करने पर अतिघोर वन भी श्रृंगार (युक्त) बन जाते ! हे कोमलांगी ! तुम्हारे साथ मिलकर शयन करने से कठोर शय्याएँ भी फूलों की सेजें हो जातीं। हे कलकण्ठी ! तुम्हारे हाथ के कन्द-मूलादि भोजन भी मधुर भोजन बन जाते। हे सिंहमध्या ! तुम्हारे साथ रहकर किये जानेवाले तप सत्पुण्य-तप बन जाते। हे रमणी ! तुम्हारे साथ भोगा जानेवाला समस्त भोग इन्द्रभोग हो जाता। हे सुभगे ! ऐसे तुम्हारे रूप के दर्शन करने हैं। हे कमल नयने ! आँखों को दिखाई क्यों नहीं देती हो ? ।। ५४ ।।

और फिर; ।। ५५ ।।

किसी भी मृग को देखकर, अनेक प्रकार से पूछ-पूछकर कि तूने हरिणाक्षी को देखा है क्या ? किसी भी पक्षी को देखकर, अनेक रीतियों से पूछ-पूछकर कि तूने नवेली को देखा तो नहीं ? किसी भी वृक्ष को देखकर, अनेक ढंग से पूछ-पूछकर कि तूने वामाक्षी को देखा है क्या ? किसी भी चट्टान को देखकर पूछ-पूछकर कि तूने गजगमना को देखा है ? (अन्त में) सीता के न दिखाई पड़ने पर, श्रीरामचन्द्र विरह ताप की अग्नि में तड़प-तड़पकर व्याकुल होते, भयभीत होते, मन में विचलित होते, श्रान्त होते, मूर्छित होते, चाहते (तथा) पीड़ित होते रहे ।। ५६ ।।

इस प्रकार सीता-वियोग के कारण बड़बड़ानेवाले अग्रज को देख सौमित्र ने यों कहा— ।। ५७ ।।

### श्रीराम को लक्ष्मण का सान्त्वना देना

हे मनुजेश्वर ! दीन की भाँति व्यर्थ ही सम्मान खोकर, (तुम्हें) ऐसा क्यों दुखी होना चाहिए ? इन कानन की भूमियों (प्रान्तों) में ढूँढने पर यदि (भाभी) न दीखे तब दुखी होना उचित होगा ।। ५८ ।।

(ऐसा) कह प्रताप के कारण, क्रोध को रोक न सक, आँखों के लाल होने पर, अग्रज से (लक्ष्मण ने) इस प्रकार कहा— ।। ५९ ।।

स्वर्गलोक के लोगों के हृदय को फाड़ दूँगा। नागलोक को खोदकर अहीन्द्र-वर्ग का सर्वनाश कर दूँगा। मन्दर-गिरि के समान मर्त्यलोक का मंथन कर दूँगा। उदारता से, किसी भी उपाय से सीता को इसी क्षण लौटा लाऊँगा जिससे देव का चित्त प्रसन्न हो जाये ।। ६० ।।

वचनमु— अनि यिट्लु पलिकि मरियुनु, ।। ६१ ।।

उत्प०— चिंचेद दैत्य संघमुल जिदरु वंदरु जेसि, ब्रह्म बा-
धिंचेद, लोक पालकुल द्रेळ्ळग नेसेद, भूतलम्मु ग्र-
स्किंचेद, शैलजालमुल गीटडगिंचेद, भूमिनंदनन्
गांचेद, दल्ल डिल्लकुमु कंजहितान्वय वार्धि चंद्रमा! ।। ६२ ।।

कन्द— भूतलमुनु, नाकसमुनु,
बाताळमु वेदकियैन, बाधिंचैनन्,
सीतनु देच्चिचन पिम्मट
नी तम्मुड ननुचु मेच्चु निखिलोर्वीशा ! ।। ६३ ।।

वचनमु— अनि पलुकुचुन्न तम्मुनि शौर्य धैर्यादि गुणंबुलकु संतोषिं-
चुचु, जनस्थानंबु वेडलि, जनक - नंदन नन्वेषिंचुचु
दक्षिणाभिमुखुलै चनुचु मुंदट; ।। ६४ ।।

जटायुवु रामुनकु रावणुनि दुश्चेष्टनु देलुपुट

कन्द— पक्षमुलु गाळ्ळु द्रुनिगिन
पक्षींद्रुनि जूचि रामभद्रुडु मदिलो
राक्षस माययो ? यनुचुनु
शिक्षिप दलंचु नंत शीघ्रमे पलिकेन् ।। ६५ ।।

कन्द—नी तंड्रिकि नति मित्रुड
नो तंड्री ! नन्नु नेय नुचितमे नीकुन् ?
ना तगु पेरु जटायुवु
सीताधिप ! नन्नु नेरुगु चित्तमु लोनन् ।। ६६ ।।

वचनमु— अनि चेप्पि वेंडियु ना जटायु विट्लनियें : ।। ६७ ।।

मत्ते०— विनु मो राघव ! पंक्ति कंधरुडु दोर्वीर्यंबु संधिल्लगा
जनकक्ष्मापति नंदनन् गोनुचु स्वेच्छा वृत्तितो नेगुचो,
वनिता रत्नमु दीनयै पलुकु तद्वाक्यंबु लेपाटुगा
विनि पोराडग ब्राप्तमय्ये मरि यी वेषंबु भूमीश्वरा ! ।। ६८ ।।

कन्द— अनि सीत तेरगु, दन पनि
जननायकुडैन रामचंद्रुनि तोडन्
विनिपिंचि, या जटायुवु
तनु वेरियग नंत गालधर्ममु नोंदेन् ।। ६९ ।।

ऐसा कहकर और, ।। ६१ ।।

दैत्यसंघों को चीरकर तितर-बितर कर दूंगा । ब्रह्मा को पीड़ित कर दूंगा । लोकपालों को खण्डित कर दूँगा । भूतल को उगलवा दूंगा । शैलजालों के गर्व का मर्दन कर दूंगा । भूमिनन्दना के दर्शन करूँगा । हे कंजहितान्वय (सूर्यवंश) रूपी सागर के चन्द्र (रामचन्द्र) ! व्याकुल मत होओ ।। ६२ ।।

हे अखिल-उर्वीश ! भूतल, आकाश या पाताल को ढूँढ़कर या पीड़ित कर ही सही सीता को लाने के बाद ही मुझे अपना अनुज मानकर प्रशंसा करो ।। ६३ ।।

ऐसा कहनेवाले अनुज के शौर्य धैर्यादि गुणों के कारण प्रसन्न होकर, (राम) जनस्थान से निकलकर, जनकनन्दना का अन्वेषण करते हुए, दक्षिण की ओर चल पड़ा । आगे— ।। ६४ ।।

### जटायु का राम को रावण की दुश्चेष्टा का निवेदन करना

पंख तथा पैर कटे हुए पक्षीन्द्र को देख रामभद्र ने मन में (उसे) राक्षसों की माया समझ, दण्डित करने को सोचा । तब उस पक्षी ने शीघ्र कहा— ।। ६५ ।।

हे तात ! तुम्हारे पिता का अति मित्र हूँ ! मुझे मारना तुम्हारे लिए समुचित है ? मेरा नाम जटायु है । हे सीताधिप ! चित्त में मुझे पहचान लो ।। ६६ ।।

ऐसा कहकर, जटायु ने आगे इस प्रकार कहा— ।। ६७ ।।

हे राघव ! सुनो ! पंक्तिकंधर (रावण) अपने बलपराक्रम को समेटकर, जनकसुता को ले स्वेच्छा-वृत्ति (स्वच्छन्दता) से जाते समय, वनितारत्न (सीता) ने दीन हो पुकारा । ढंग से उन वाक्यों को सुनकर, रावण से संघर्ष करने पर हे भूमीश्वर ! यह वेष (रूप) संप्राप्त हुआ है ।। ६८ ।।

इस प्रकार जननायक रामचन्द्र से सीता के विधान (और) अपना कार्य सुनाकर वह जटायु, शरीर के छटपटाने पर, कालधर्म को प्राप्त हुआ (मृत हुआ) ।। ६९ ।।

वचनमुं— इट्लु रामचंद्रुनकु सकल वृत्तांतमुनु नेंरिंगिंचि शरीरंबु
विडिचिन यप्पक्षिराजुनकु भक्ति पूर्वकंबुगा नग्नि
संस्कारादि विधुलु दीर्चि, दक्षिणाभिमुखुलै चनुचु
जिन्नरूपंबुन नुन्न कबंधुनि वधियिंचि, मुंदट; ।। ७० ।।

शबरि मधुर भक्ति

कन्द— चनि चनि, येंदुटनु रामुडु
गनु गौनियें महीजनोग्र कलुषाद्रि महा-
शनि रूपंबनदगु, ना
घन मुक्ति वधू विलास कबरिन्, शबरिन् ।। ७१ ।।

तेटगीति— कांचिननु श्रोंक्कि या भूमि कांतुनकुनु
मिंचि सद्भक्ति बूज गाविंचि नंत,
शबरि तोड्नु दम कार्य सरणि देंलिय
विनयमुन जेप्प ना कांत विन्नविंचें ।। ७२ ।।

तेटगीति— इन - कुलाधीश ! सुग्रीवु डनेंडुवाडु
कपिकुल श्रेष्ठु डत्यंत घनुडु तलप
नतनितो बौत्तु गाविंपु मन्नि पनुलु
जक्क नौटकु नातम निस्संशयंबु ।। ७३ ।।

वचनमु— अनि चेंप्पि वीड्कोंलिपिन नम्मनुजेंद्र-नंदनु लटमीद बंपा
तटंबुनकुं जनि, रनि चेंप्प नारदुनि वाल्मीकि मुनीश्वरुंडट
मीदि कथा विधानंबेंट्टि दनि यडुगुटयु, ।। ७४ ।।

आश्वासान्त पद्य गद्यमुलु

कन्द— जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !
जलजासन विनुतपाद जलजात ! सुधा
जलराशि भव्यमंदिर
जलजाकर चारुहंस ! जानकिनाथा ! ।। ७५ ।।

गद्यमु

इदि श्री गौरीश्वर वरप्रसाद लब्ध, गुरु जंगमार्चन विनोद, (नित्यशैवाचार संपन्न) सूरिजन विनुत, कविता चमत्कारातुकूरि केसन सेंट्टि तनय; मौल्ल नामधेय विरचितंबैन श्रीरामायण महाकाव्यंबुनंदारण्य कांडमु सर्वमु नेकाश्वासमु ।

इस प्रकार रामचन्द्र को सकल वृत्तान्त विदित कर (उसने) शरीर छोड़ा। उस पक्षिराज के लिये भक्तिपूर्वक अग्नि-संस्कार आदि विधियों को पूर्ण किया। (उसके बाद) दक्षिण की दिशा में चलते हुए, विचित्र रूप में स्थित कबन्ध का वध किया। आगे— ॥ ७० ॥

### शबरी की मधुर भक्ति

(बहुत दूर) जा-जाकर, भूलोकवासियों के उग्र कलुषरूपी पर्वतों को समाप्त कर देनेवाली अशनि (वज्र) कहने योग्य (तथा) महान् मुक्ति-वधू के जूड़े के समान विलसित शबरी को अपने सम्मुख राम ने देखा ॥ ७१ ॥

देखने पर, (शबरी ने) प्रणामकर, भूमिकान्त की अत्यधिक सद्भक्ति से शबरी ने पूजा की। तब राम ने विनय भाव से अपनी कार्य-सरणी का विवरण दिया, तो उस कान्ता (शबरी) ने (इस प्रकार) निवेदन किया ॥ ७२ ॥

हे इनकुलाधीश! सुग्रीव नामक कपिकुल श्रेष्ठ है, जो अत्यन्त महान् है। आत्मा में निस्संशय भाव से उसके साथ मैत्री करो ताकि सब कार्य ठीक हो जायें ॥ ७३ ॥

(शबरी ने) ऐसा कहकर बिदा करने पर, मनुजेन्द्र-नन्दन उसके बाद पम्पातट पर पहुँचे। इस प्रकार कहने पर वाल्मीकि मुनीश्वर के नारद से पूछने पर कि आगे की कथा का विधान क्या है? ॥ ७४ ॥

### आश्वासान्त पद्य (और) गद्य

हे जलजाक्ष! हे भक्तवत्सल! हे जलजासन (ब्रह्म) से विनुत-पादजलजात (चरण कमल) वाले! हे सुधा-जलराशि के भव्यमंदिर रूपी जलजाकर (सरोवर) में विहार करनेवाले सुंदर हंस। हे जानकीनाथ! (वन्दना करती हूँ) ॥ ७५ ॥

यह श्री गौरीश्वर के वर के प्रसाद को प्राप्त, गुरु जंगम के अर्चन के विनोदी, (नित्य शैवाचार सम्पन्न) सूरिजन (श्रेष्ठजन) से विनुत, कविता में चतुर, आतुकूरि केसन सेट्टि की तनूजा मोल्ल नामधारी से विरचित श्रीरामायण महाकाव्य में अरण्य काण्ड का यह एकाश्वास पूरा (हो गया) है।

# किष्किन्धा काण्डमु

कन्द— पक्षींद्रवाह ! गिरिजा-
त्र्यक्ष मनोब्जात गेह ! यपहृतमोहा !
राक्षसभीमा ! मुनिजन
साक्षात्कृत नैजधाम ! जानकि रामा ! ॥ १ ॥

वचनमु— श्रीनारद मुनीश्वरुंडु वाल्मीकि महा मुनीश्वरुन कॆट्लिंगि-
चिन तॆऱंगॊट्लिंगिचॆद नाकर्णिपुमु; ॥ २ ॥

सुग्रीवुनि पंपुन राम लक्ष्मणुल सन्निधिकि हनुमंतुनि राक

सी०-- पंपा तटम्मुन बाणास-नायुध पाणुलै युन्न भूपाल सुतुल
गनुगॊनि भीतिल्लि, कमलाप्त सूनुंडु वालिपंपुन वीरु वच्चि रनुचु
गलगि, ता ऋष्यमूकंबुन नुंडग वॆऱचि, मलयशैलविपिन सीम
दिरिगि, वारल राक तॆऱंगॆल्ल दॆलिसि रा बवनात्मजुनि वेग बंप,नतडु

तेटगीति— वच्चि रघुरामु श्रीपाद वारिजमुल-
कथि ब्रणमिल्लि, मीरॆव्वरय्य ? यिटकु
नेमि कतमुन वच्चिति ? रेदि नाम ?
मनुचु नडिगिन सौमित्रि यतनि कनिये ॥ ३ ॥

सी०— दशरथुंडनु राजु तनयुल, मातनि पंपुन दपमाचरिंप गोरि
वच्चि, कानन भूमि वर्तिचुचुंड, नी राजु देविनि दुष्ट रावणुंडु
कुटिल वृत्तिनि नत्तुकॊनि पोव, ना जाड वदलक दिक्कुलु वॆदकि वच्चि,
शबरिकि मा राक चंदंबु दॆलियंग जॆप्पिन, "नर्कंजु चेत गानि—

तेटगीति-- मीदु कार्यंबु नॆग्गदु मीर लरिगि
वेग सुग्रीवु चॆलिमि गाविपु," डनिन
वच्चिनारमु गनुगॊन वलसि यतनि,
नतडु रामुंडु, लक्ष्मणुंडऩु नन्नु ॥ ४ ॥

तेटगीति-- तलप नी राजुनकु नॆंदु धात्रिलोन
विनु मसाध्यंबु लेनट्टि पनुलु लेवु,
सूर्य वंशोत्तमुडु महा शूरुडितडु,
नीकु बेरेमि चॆप्पुमा माकु ननिन ॥ ५ ॥

# किष्किन्धा काण्ड

हे पक्षीन्द्र वाहन (वाले) ! पार्वती परमेश्वर के हृदय कमलवासी ! मोह के अपहर्त्ता ! राक्षस-भयंकर ! मुनिजन के लिए साक्षात्कृत-निज-धाम (वाले) ! हे जानकी-राम ! (नमः) ॥ १ ॥

श्रीनारद मुनीश्वर का वाल्मीकि महामुनीश्वर को विदित किये हुए कथाविधान को विदित करूँगा । सुनो ! ॥ २ ॥

### सुग्रीव की आज्ञा से राम-लक्ष्मण की सन्निधि में हनुमान का आगमन

पम्पातट पर बाणासन (धनुष) एवं आयुधधारी भूपाल-सुतों को देखकर भयभीत हो, कमलाप्तसून (सुग्रीव) ने यह सोच कि वालि की आज्ञा से ये आये हैं, व्याकुल हो, ऋष्यमूक पर्वत पर रहने में डरकर, मलयगिरि के वन प्रान्त में भ्रमण करते हुए, उनके (राम-लक्ष्मण) आगमन के समस्त विधान को स्पष्ट जानकर आने के लिए शीघ्र पवनसुत को भेजा। उसने आकर रघुराम के श्रीचरण-कमलों को प्रेम से प्रणामकर, पूछा कि "तात ! आप कौन हैं ? यहाँ किस कारण से आये हैं ? क्या नाम है ?" (ऐसा पूछने पर) सौमित्र ने (प्रत्युत्तर में) उससे कहा— ॥ ३ ॥

"(हम लोग) राजा दशरथ के पुत्र हैं । उनकी आज्ञा से तप करने की चाह से आकर, (यहाँ) कानन भूमि में विचरण करते समय, इस राजा (राम) की देवी को दुष्ट रावण कुटिलवृत्ति से उठाकर ले गया, उसके पदचिह्न (मार्ग) को न छोड़कर (अनेक) दिशाओं में ढूँढ़कर, शबरी को हमारे आगमन की रीति जताने पर, उसने कहा कि 'सुग्रीव की सहायता के बिना आपका कार्य सम्पन्न न होगा । आप लोग शीघ्र जाकर सुग्रीव से स्नेह कीजिए ।' (ऐसा) कहने पर, उस (सुग्रीव) का पता लगाने आये हैं । ये राम हैं (और) मुझे लक्ष्मण कहते हैं ॥ ४ ॥

सुनो, विचार करने पर इस राजा के लिए धरती पर असाध्य कार्य नहीं हैं । ये सूर्यवंशोत्तम (तथा) महाशूर हैं । (तुम) हमें अपना नाम बता दो ।" (ऐसा) कहने पर, ॥ ५ ॥

तेटगीति— वायु देवुनि ब्रार्थिंचि, वेयिगतुल
नंजनादेवि गांचिन यात्मजुंड,
नर्कजुनि मंत्रिनै युंदु ननुदिनंबु,
विनुडु ना पेरु हनुमंतु डनुदु रिलनु ॥ ६ ॥

वचनमु— अनि चेप्पि मरियु निट्लनि विन्नविंचे : ॥ ७ ॥

चम्प०-विनुडु महात्मुलार! यरविंद हितात्मजु दोडितेंच्चि,मि
म्मुनु बोडगानुपितु ननि म्रोक्कुचु नेगि, कपींद्रुजेरि,ता
जनिन तेरंगु, वारि गनु चंदमु नेर्पड जेप्पि, गोब्बुनन्
बनि गोनि वच्चि, रामु पदपंकजमुल् गनिपिंचे नंतटन् ॥ ८ ॥

श्रीरामु सुग्रीवुल मैत्रि

वचनमु— सुग्रीवुंडु श्रीरामचंद्रुनि पग तीर्प दा भारंबु वहिंचि, तनकु बगवाडैन वालिनि जंपिपं दलंचि, वानितो दनकु गलिगिन पूर्व वैरंबु तेरंगु श्रीरामुनकु देलिय विन्नविंचि, वालि महासत्त्वशालि, यतंडु रामुनि चेतं देगुट तेल्लंबुगा, दुंदुभि कळेबरंबुनु बदि योजनंबुल दूर मेगुर जिम्मुटयुनु, सप्त ताळंबु लोक्क बाणंबुन देग व्रेयुटयुनु जूचि, सुग्रीवुंडु भयकंपित हृदयुंडै, राघवेश्वरुल पादारविंदंबुलकु वंदनं-बाचरिंचि, जनकनंदन मुन्नु जारविडिचिन याभरणंबुल मूट देप्पिपचि, चूपिनं जूचि मूर्च्छिल्लिल, गोब्बुनं देलिसि, यर्क कुलेश्वरुंडैन श्रीरामचंद्रुं डर्कसंभवुंडैन सुग्रीवुनितो निट्लनियें : ॥ ९ ॥

कन्द— पग नी कोक्कडि दिकनु
नगचर ! नगभेदिसुतुनि ना यस्त्रमुनन्
देग नेयुदु नम्मु मनुचु
जगदीशुडु वलुक नतडु संतोषिंचेन् ॥ १० ॥

वचनमु— इट्लु प्रमाण वचनंबुल नय्यचल-चराग्रणि स्वांतंबुनु संतोषिप जेसिन, नतंडुनु श्रीरामचंद्रुनि कार्यंबुनकु सहायुंडै युंड नोडंबडि, यम्महानायकुनि यनुमतंबुन युद्ध सन्नद्धुंडै, किष्किधा नगरंबुनकुं जनि, तद्द्वारंबुन निलिचि सिंहनादंबु जेसिनं गनलि या देवेंद्र-तनूभवुंडु

(हनुमान ने कहा—) "वायुदेव की हजार रीतियों से प्रार्थनाकर अंजनादेवी को प्राप्त आत्मज हूँ। सर्वदा अर्कज (सुग्रीव) का मंत्री बना हूँ। मुझे संसार में हनुमान कहते हैं" ॥ ६ ॥

ऐसा कहकर और इस प्रकार निवेदन किया ॥ ७ ॥

"सुनिये महात्माओ! अरविंद-हितात्मज (सुग्रीव) को यहाँ (अपने) साथ ले आकर आपके दर्शन कराऊँगा।" ऐसा कह प्रणाम करते जाकर, अपने जाने का ढंग, उनके दर्शन करने का विधान समुचित ढंग से सुनाकर, शीघ्र (उसे) ले आकर राम के पदपंकजों के दर्शन कराये ॥ ८ ॥

### श्रीराम और सुग्रीव की मित्रता

सुग्रीव ने श्रीराम की शत्रुता से निपटने (बदला चुकाने) का भार वहन किया और अपने शत्रु वालि का अन्त करवाना चाहा। उससे संप्राप्त अपने पूर्व-वैर के विधान (के सम्बन्ध में) श्रीराम को अवगत करवाया। वालि महासत्त्वशाली है। उसका राम के हाथों मर जाना निश्चित है। दुंदुभी के कलेवर का दस योजन तक फेंका जाना और सप्त-ताल-वृक्षों को एक बाण से गिराना देखकर, सुग्रीव ने भयकम्पित हृदय से, राघवेश्वर के चरणारविन्दों की वन्दना की। पूर्व में जनकनन्दना के छोड़े हुए आभूषणों की गठरी मँगवाकर दिखाने पर, (उन्हें) देखते ही राम मूर्छित हुए। शीघ्र होश में आकर अर्क-कुलेश्वर (सूर्यवंशी राजा) श्रीरामचन्द्र ने अर्कसम्भव (सूर्यपुत्र) सुग्रीव से इस प्रकार कहा— ॥ ९ ॥

"हे नगचर (वानर = सुग्रीव)! अब तुम्हारे लिए शत्रुता (शत्रु) कहाँ है? नगभेदी-सुत (इन्द्रसुत = वालि) को अपने अस्त्र से मार डालूंगा। विश्वास करो।" जगदीश के वचन सुनकर वह संतुष्ट हुआ ॥ १० ॥

इस प्रकार प्रमाण वचनों (प्रतिज्ञा पूर्ण वचनों) से सुग्रीव के मन को संतुष्ट करने पर, वह श्रीरामचन्द्र के कार्य में सहायक हो रहने के लिए राजी होकर, उस महानायक की अनुमति से युद्ध के लिए सन्नद्ध हुआ, किष्किन्धा नगर जाकर, उसके द्वार पर खड़े होकर, सिंहनाद किया। देवेन्द्र-तनूभव वालि रुष्ट होकर आया। तब दोनों ने नियराकर

सनुदेंचें, नंत नय्यिरुवुरुं गदिसि, भुजंबु लप्पळिंचुचु
गर्वालापंबु लाडुचु नोंडोरु माकोंनि, ।। ११ ।।

### वालि सुग्रीवुल कय्यमु

शार्दू०— शैलंबुल् कडु वेग रुव्वुचु, महाझंकार हुंकारमुल्
चालं जेयुचु, भीकरोद्धतुलचे सालंबुलन् व्रेयुचुन्,
वालाग्रंबुल मोदुचुन्, वडिवडिन् वक्त्रंबुलन् रक्तमुल्
कूलन्, वालियु सूर्यसूतियु वडि गोपात्मुलै पोरगन् ।। १२ ।।

वचनमु— अट्टि समयंबुन, ।। १३ ।।

### रामुडोक्क कोलतो वालिनि गूलनेयुट

उत्प०— सालमु पोंत निल्चि रघुसत्तमु डम्मरि वोंसि, शब्द वि-
न्यूलमुगाग विल दिविचि, मुष्टियु दृष्टियु गूर्चि, गोत्र भृ-
त्कूलमु वज्रपातहति गूलु विधंबुन गूल नेसें न
व्वालि, व्रतापशालि, मृडवंदन शीलि, सुरालि मेंच्चगन् ।। १४ ।।

कन्द— ओलिमि बोंचियु रघुपति
पालित कपिराज्य शालि व्रस्फुट कीर्तिन्
शूलि पदभक्ति शीलिनि
वालिन्नोंक कोल नेल गूलग नेसेंन् ।। १५ ।।

वचनमु— तदनंतरंबुन, ।। १६ ।।

### सुग्रीवुनकु वानर राज्य पट्टाभिषेकमु

कन्द— तारा पति शिक्षिपुचु
दारा पति धवळकीर्ति दगु नर्कजुनिन्
दारादेविकि बुरि का
तारार्कमु गाग राज तनयुडु निल्पेंन् ।। १७ ।।

कन्द— निग्रहमु मानि नृपति शु-
भग्रह लग्नंबुनंदु बट्टमु गट्टेंन्
निग्रह राजोपग्रहु
सुग्रीवुनि, हेम दाम सुग्रीवु दगन् ।। १८ ।।

भुजास्फालन करते हुए, गर्वालाप करते हुए, एक दूसरे का सामना कर ।। ११ ।।

### वालि (और) सुग्रीव का संघर्ष

पर्वतों को अतिवेग से (एक दूसरे पर) फेंकते हुए, अतिशयता से महाझंकार और हुंकार करते हुए, भीकर औद्धत्य से, सालों (साल-वृक्षों) को फेंकते हुए, वालाग्रों से मार लेते हुए, तीव्रगति से मुखों से रक्त के झरने पर, वालि और सूर्यपुत्र झट कोपात्मावाले हो जूझ पड़े ।। १२ ।।

उस समय, ।। १३ ।।

### राम का एक बाण से वालि को गिराना

साल (वृक्ष) के निकट खड़े होकर, प्रत्यंचा को साधकर, धनुष (की नारी) को कान तक खींचकर, मुष्टि और दृष्टि का संधानकर, पहाड़ जिस प्रकार वज्रपात से टूटकर गिर जाता है, उसी प्रकार राम ने प्रतापशाली और शिवभक्त, वालि को गिरा दिया, जिसकी सुरों ने स्तुति की ।। १४ ।।

रहस्य-स्थान में, ताक में रहकर, रघुपति ने कपिराज्य के पालक, अधिक कीर्तिशाली, शूली (शिव) के पदभक्ति-शीली वालि को एक बाण से धरती पर गिरा दिया ।। १५ ।।

उसके पश्चात्, ।। १६ ।।

### सुग्रीव को वानर राज्य का पट्टाभिषेक

तारापति (वालि) को दण्डित कर, तारापति (चन्द्र) की धवलकीर्ति के समान सुग्रीव को तारादेवी (के साथ) उस पुरी में, शाश्वत रूप से, राजकुमार (रामचन्द्र) ने स्थापित किया ।। १७ ।।

निग्रह (युद्ध) को छोड़कर राजा ने शुभग्रह-लग्न पर सुग्रीव को निग्रह राजोपग्रह वाले, हेमदाम (स्वर्णमाला) से सुशोभित सु-ग्रीव (सुन्दर-कंठ) वाले सुग्रीव को पट्टाभिषिक्त किया ।। १८ ।।

वचनमु— इट्लु सुग्रीवुनि गपि-राज्य-पट्टभद्रुनिं जेसि, वालि तनू-
संभवुनि नंगद कुमारुनि युवराज पदंबुन निलिपॆ, नंत
वर्षाकालमु गडचुनंत दनुक श्रीरामुनि माल्यवंतंबुपै नुंड
निर्यमिचि वारु सनिरय्यवसरमुन ॥ १९ ॥

वर्षावेळ श्रीराम सीता वियोग परितापमु

सी०— ब्रह्माण्ड मगलंग बटपट ध्वनुलतो नुरुमु लंतंतकु नुरुमुचुंड,
गडु भयंकरमुगा वडि म्रोगु म्रोतल बिडुगु लाडाड गुभिल्लु मनग,
ग्रमुकंबु लंतेसि कणमुलतो गूड गरुडु गट्टिन वडगंड्लु राल,
गॊरवि दय्यंबुल मरपिचु तॆरगुन विद्युत्प्रकाशम्मु विस्तरिल्ल,

तेटगीति— मुसुगु वेसिन चंदान मॊगुलु गप्पि,
मीरि नलुपॆक्कि चीकट्लु कारुकॊनग,
मिंचि कडवल नुदकंबु मुंचि तॆच्चि
क्रुम्मरिंचिन गति वान कुरिसॆ नपुडु ॥ २० ॥

कन्द— एरुलु कालनड तप्पग
बारॆनु, सस्यमुलु पंडॆ, फल वृक्षमुलुन्
मीरि फलिंचॆनु, धर बा
लेरुलुगा सुरभुलॆल्ल नॆप्पुडु बितिकन् ॥ २१ ॥

वचनमु— अंत वर्षाकालांतंबु गाग नम्महीकांतुंडु प्रेयसी-वियोग
परितापानलंबुन बॊरलुचु नोर्वलेक विभ्रांत स्वांतुंडै
युंड; ॥ २२ ॥

सी०- पलुमारु नी हस्त पल्लवंबुल चेत नलिवेणि ! ना ताप मार्पवेल ?
नलिनाक्षि! परिरंभण क्रीड देल्चु नी मदि नॊप्पि ना नॊप्पि मान्पवेल?
चॆलिय ! योष्ठामृत सेवकै नीयल्कवडि दप्पि ना दप्पि गडपवेल ?
भाम ! तापानल परिताप मुडुप नी तनुवु ना तनुवुन बैनचवेल ?

आट०— यनुचु सीत बिलुचु, नंदंद परिकिंचु,
दिक्कु लालकिंचु, निक्कि चूचु,
दशरथात्मजुंडु तन्नु दा मरचुचु
बयलु कौगिलिंचु बलुवरिंचु ॥ २३ ॥

वचनमु— अनि मरियुनु, ॥ २४ ॥

इस प्रकार (राम ने) सुग्रीव को कपिराज्य का पट्टभद्र बनाकर, वालिपुत्र अंगद-कुमार को युवराज पद पर प्रतिष्ठित किया। तब वर्षाकाल बीत जाने तक श्रीराम को माल्यवंत पर रहने का नियम कर, वे चले गये। उस अवसर पर, ॥ १९ ॥

### वर्षाऋतु में श्रीराम का सीता के वियोग से परितप्त होना

ब्रह्माण्ड टूट पड़े, ऐसी फटफट ध्वनियों के साथ बिजलियाँ अधिकाधिक गर्जन करने लगीं। अति भयंकर घोष के साथ गर्जनाओं से यहाँ-वहाँ वज्र गिरने लगे। क्रमुककण (सुपारी के बीज) के समान सख्त ओले गिरने लगे। ज्वाला भूतों को भुला देने के समान विद्युत प्रकाश विस्तृत होने लगा। मानो (सारे आकाश ने) घूँघट डाल लिया हो, इस प्रकार आकाश को आच्छादित कर, मेघों के अधिक काले होकर, घिर आने पर अन्धकार व्याप्त हो गया। कलशों में जल भरकर, ला-लाकर उँडेल दिया जा रहा हो, इस प्रकार तीव्रगति से वर्षा हुई ॥ २० ॥

छोटी नदियाँ इस गति से बहने लगीं कि पादचारियों को उन्हें पार करना दुष्कर हो गया। फसलें अच्छी हुईं। फल-वृक्षों ने अधिक फल दिये। धरती पर गायों ने दूध की नदियाँ बहा दीं ॥ २१ ॥

तब वर्षाकाल का अन्त होने पर महीकान्त (श्रीराम) प्रेयसी के वियोग के परिताप की अग्नि में तप्त होते हुए, (विरह पीड़ा को) सहन न कर सक, लोटते हुए, विभ्रान्त मानसवाले होकर रहे। तब, ॥ २२ ॥

"हे अलिवेणी! बार-बार अपने कर-पल्लवों से मेरे ताप को बुझाती क्यों नहीं हो? हे नलिनाक्षी! अपने मनोनुकूल रूप से परिरम्भण-क्रीड़ा से मेरे मन की पीड़ा को हटाती क्यों नहीं हो? हे सखी! अपने क्रोध को दूरकर अधरामृत-सेवा से मेरी प्यास क्यों नहीं बुझाती हो? हे भामा! तापानल के परिताप को दूर करने के लिए अपनी देह को मेरी देह से लिपटा क्यों नहीं देती हो?" (ऐसा) कहता हुआ, सीता को पुकारता हुआ, इधर-उधर देखता हुआ, दशरथात्मज अपने आपको भूलकर, शून्य से आलिंगन करता हुआ बड़बड़ाता रहा ॥ २३ ॥

और फिर, ॥ २४ ॥

उत्प०– कूरलु नोटिकिन् रुचुलु गूड्ट दप्पेँनु, दुंपद्रुडुलुं
गारमु तोचेँ, जिह्वकुनु गम्मनि तेनेँलु चेदुलय्येँ, गं-
गारयेँ जित्तमंतयुनु, गंटिकि निद्ररहिंपदय्येँ श्टृं-
गार मेँलर्प सीत बोँड गानमि, रामनृपाल मौळिकिन् ।। २५ ।।

उत्प०– तालिमि तूलिपोयि परितापमुनं दिरुगाडु, नोँक्कचो-
गालुनु निल्व द्रोँक्क नधिकारमु चालक येँप्पुडुं गडुन्
जालिवहिंचु, जित्तमुन जंचलतं गनु, भूमिपुत्रि पैं
मेलिमि जेसि रामुडट मिन्नक वेदुरु गोँन्न कैवडिन् ।। २६ ।।

सुग्रीवुडु सीत नन्वेषिंप वानर वीरुलनु नलुदेँसलकु बंपुट

वचनमु— इट्लु विरह तापंबुन बोँरलुचुन्न समयंबुन गार्तिक मासंबु सनुदेँचिन, श्रीरामचंद्रुंडु बलंबुलं गूर्चुकोँनि रम्मनि सुग्रीवु पालिकि सौमित्रि ननुप नारामु तम्मुनि गूडि यिनजुंडु तारा-समेतुंडै चनुदेँचि राघवेश्वरुल चरणारविंदम्मुलकु नमस्करिंचि तन बलंबुल दोड्डु सूप दोँडगेँ नेँट्लनिन बदुलुनु नूरुलुनु वेलुनु बदिवेलुनु लक्षलुनु बदिलक्षलुनु गोट्लुनु शतकोट्लुनु नर्बुदंबुलुनु न्यर्बुदंबुलुनु खर्वंबुलुनु महाखर्वंबुलुनु बद्मंबुलुनु महापद्मंबुलुनु क्षोणुलुनु महा-क्षोणुलुनु शंखंबुलुनु महाशंखंबुलुनु क्षितुलुनु महाक्षितुलुनु क्षोभंबुलुनु महाक्षोभंबुलुनु निधुलुनु महानिधुलुनु सागरंबुलुनु महासागरंबुलुनु बरिमितंबुलुनु महापरिमितं-बुलुनु ननंतंबुलुनु महानंतंबुलुनु गडचि लेँक्ककु मिक्किलि येँक्कुवयै डेँब्बदिरेँडु वेँल्लुवलु गल कपिबलंबु तोड दोड्डु सूपिनं जूचि राघवेश्वरुंडु संतोषिंचि सवितृनंदनु गारविंचि कौगिलिंचुकोँनि सीतान्वेषणंबु जेयगल वानरोत्तमुल नधिक बलयुतुल नेर्परिंचि दिशलकुं बंपु मनवुड्डु दूर्पुनकु मैंदुंडुनु बश्चिमंबुनकु सुषेणुंडुनु नुत्तरंबुनकु शतबलियु ननुवारिनि नेर्परिंचि वारलकु दोड्डुगा वानर वीरुलनु लक्षलक्ष संख्याकुल नेर्परिंचि यिच्चि जानकि युन्न चोप्पुनु देँलिसि योँक्क नेँललो रम्मनि यनिपि हनुमंतुनिं बिलिचि नीवु दक्षिणम्मुनकु बोँम्मनि यनुपु

शृंगार को प्रकट करने वाली सीता के दर्शन के अभाव में राम नृपाल-मौली को शाक जीभ को रुचिकर नहीं लग रहे थे। कन्दमूल तिक्त लगते लगे। जीभ को मधुर-मधु कड़वा लगने लगा। चित्त भयभ्रान्त हुआ। आँखों से नींद उचट गई ।। २५ ।।

धैर्य को खोकर, परिताप के मारे घूमता हुआ, (राम) एक स्थान पर स्थिर खड़े रहने को अशक्त हुआ। दीनावस्था में चित्त में चंचलता का अनुभव करता रहा। (इस प्रकार) भूसुता (सीता) पर प्रेम की अधिकता के कारण राम मानो बौरा गया ।। २६ ।।

### सीतान्वेषण के लिए चारों दिशाओं में वानरवीरों को सुग्रीव का भेजना

इस प्रकार विरह-ताप में (श्रीराम के) व्याकुल होते समय, कार्तिक मास आ गया, तो श्रीरामचन्द्र ने सुग्रीव के पास सेनाएँ समेटकर आने के लिए (आज्ञा देकर) लक्ष्मण को भेजा। रामानुज के साथ इनज (सुग्रीव) ने तारा सहित आकर, राघवेश्वर के चरणारविन्दों को नमस्कार किया। (और) अपनी सेना को दिखाने लगा। वह इस प्रकार हैं : दसों, सैकड़ों, हजारों, दस हजारों, लाखों, दस लाखों, करोड़ों, सौ करोड़ों, अर्बुद, न्यर्बुद, खर्व, महाखर्व, पद्म, महापद्म, क्षोणि, महाक्षोणि, शंख, महाशंख, क्षिति, महाक्षिति, क्षोभ, महाक्षोभ, निधि, महानिधि, सागर, महासागर (आदि) अपरिमित और गणना करने के लिए अशक्य, अत्यधिक हो, बहत्तर महा-जल प्रवाहों से युक्त कपिसेनाओं को राम की सेवा में खड़ा करते देख, राघवेश्वर ने प्रसन्न हो सवितृनन्दन (सूर्यपुत्र = सुग्रीव) को आदर के साथ गले लगाया। सीतान्वेषण में समर्थ अधिक बलयुत वानरोत्तमों को नियोजित कर, दिशाओं में भेजने के लिए कहा तो पूरब में मैंद को, पश्चिम में सुषेण को, उत्तर में शतबली को नियोजित कर उनकी सहायता में लाख-लाख संख्या में वानर वीरों को देकर, जानकी के रहने की जगह का पता लगाकर, एक महीने के भीतर लौट आने को भेजा। (भेजकर) हनुमान को बुलाकर कहा—"तुम दक्षिण में जाओ।" तब श्रीराम भूपाल ने उसके

नपुडु श्रीराम भूपालुंडु वानि विश्वासादि गुणम्मुलकु मेच्चिनवाडै दग्गरगा बिलिचि नीवु शौर्यवंतुडवु हितुंडवुनु गावुन नीचेत मत्प्रयोजनं बीडेरुननि पलिकि तनचेति यंगुळीयकं बतनि चेतिकिच्चि यीमुद्रिक जनकराज़ नंदनकु समर्पिंचि या जानकी शिरोरत्नंबु माकानवालुगा दम्मनि यनुप नतंडिय्यकोनि श्रीविकन नातनिकि दोडुगा नंगदजांबवदादुलं गूर्चि यनिपें ननुटयु विनि नारदुनि वाल्मीकि महामुनीश्वरुंडटमीदि कथाविधानं बेट्टिदनि यडुगुटयुनु ॥ २७ ॥

आश्वासांत पद्य गद्यमुलु

कन्द— जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !<br>
जलजासन विनुत पादजलजात ! सुधा<br>
जलराशि भव्यमंदिर<br>
जलजाकर चारुहंस ! जानकिनाथा ! ॥ २८ ॥

गद्यमु

इदि श्री गौरीश्वर वरप्रसाद लब्ध, गुरु जंगमार्चन विनोद, (नित्यशैवाचार संपन्न) सूरिजन विनुत, कविता चमत्कारातुकूरि केसन सेट्टि तनय, मोल्ल नामधेय विरचितंबैन श्री रामायण महा काव्यंबुनं गिष्किधांकांडमु सर्वमु नेकाश्वासमु ।

विश्वासादिगुणों को सराहकर, समीप बुलाकर कहा कि "तुम शौर्यवान हो, हितैषी हो! अत: तुमसे मेरा प्रयोजन सिद्ध होगा।" (यह) कह अपने हाथ की अंगूठी उसे देकर, जनकराज-नन्दन को समर्पितकर, उस ज़ानकी के शिरोरत्न को अपनी पहचान के रूप में लाने के लिए कहकर भेजा। उसने स्वीकार कर प्रणाम किया। उसके साथ अंगद, जाम्बवान आदि को भेजा। यह सुनकर नारद से वाल्मीकि महामुनीश्वर ने आगे की कथा का विधान पूछा। तब! ।। २७ ।।

### आश्वासान्त पद्य (और) गद्य

हे जलजाक्ष! हे भक्तवत्सल! हे जलजासन (ब्रह्मा) से विनुत पादजलजात (चरण कमल) वाले! हे सुधा-जलरशि के भव्य-मंदिर रूपी-जलजाकर (सरोवर) में विहार करनेवाले सुंदर हंस! हे जानकीनाथ! (वन्दना करती हूँ) ।। २८ ।।

यह श्री गौरीश्वर के वर के प्रसाद को प्राप्त, गुरु जंगम के अर्चन के विनोदी, (नित्य शैवाचार सम्पन्न) सूरिजन (श्रेष्ठजन) से विनुत, कविता में चतुर, आतुकूरि केसन सेट्टि की तनूजा मोल्ल नामधारी से विरचित श्रीरामायण महाकाव्य में किष्किन्धाकाण्ड का यह एकाश्वास पूरा (हो गया) है।

# सुन्दर काण्डमु

कन्द— सूर्यकुलरत्नदीपा !
सूर्यसहस्रप्रताप ! सुंदररूपा !
आर्याराधितनामा !
शौर्याधिक सुगुणसीम ! जानकिरामा ! ॥ १ ॥

वचनमु— श्री नारदमहामुनि वाल्मीकि कॆरिंगिचिन तॆरंगु
विन्नर्विचॆद नवधरिपुमु : ॥ २ ॥

संपाति कपिवीरुलकु सीत युनिकिनि दॆलुपुट

तेटगीति— [1] रामुनकु , म्रॊक्कि यक्कपिराजु करुण
दत्क्षणंबुन वॆडलिरि दक्षिणंबु
वॆदकुवारगु वानर वीरवरुलु
पंतमुलतोड नॆंतयु संतसमुन ॥ ३ ॥

कन्द— मुनु तामेगिनदिक्कुलु
पनिवडि बॆदकंग जनिन बलिमुखुलॆल्लन्
जनकज गानक वच्चिरि
मनुजेशुनि कडकु चनिन मार्गंबुनने ॥ ४ ॥

वचनमु— अट्टि समयंबुन ॥ ५ ॥

कन्द— गिरुलुनु, नदुलुनु, वनमुलु
बरिकिंपुचु, बट्टणमुलु बहुविधगतुलं
दिरुगुचु वॆदकुचु, गानक
करुवलि कॊंडुकादियैन कपिवरु लॆंदुटन् ॥ ६ ॥

कन्द— आलो गांचिरि सत्कपि-
जालमु, गरिशरभसिंहशार्दूल मृगा-
भीलमु, बुण्यकदंब वि-
शालमु, नगु नम्महेन्द्रशैलमु लीलन् ॥ ७ ॥

वचनमु— इट्लु महेन्द्र पर्वतंबु गनुंगॊनि डायंजनि यच्चट, ॥ ८ ॥

---

१. राजुनकु

# सुन्दर काण्ड

हे सूर्यकुल के रत्नदीपक! हे सहस्रों सूर्यों के प्रताप से विलसित! सुन्दर रूपवाले! आर्यों से पूजित (आराधित) नामा (नामवाले)! अत्यधिक शौर्य (तथा) सुगुणों के निलय! हे जानकी-राम! (नमः)।। १ ।।

श्रीनारद महामुनि के द्वारा वाल्मीकि को विदित किया हुआ कथा-विधान का निवेदन करूँगी। अवधारण करो ।। २ ।।

### संपाति का कपिवरों को सीता का स्थान बताना

राम को नमस्कारकर, उस कपिराज (सुग्रीव) की करुणा पाकर, उसी क्षण दक्षिण (दिशा) में ढूँढ़नेवाले वानरों ने आनन्द के साथ प्रतिज्ञाएँ करते हुए, प्रस्थान किया ।। ३ ।।

अपने लिए निर्दिष्ट दिशाओं में प्रथमतः सप्रयत्न ढूँढ़ने के लिए गये समस्त बलिमुख (कपि) जनकसुता को (कहीं) न पाकर, मनुजेश (राम) के समीप जिस मार्ग से गये, उसी मार्ग से लौट आये ।। ४ ।।

वैसे समय में, ।। ५ ।।

पहाड़ों में, नदियों में, वनों में ढूँढ़ते हुए (कहीं सीता) को न पाकर, पवनसुत आदि कपिवरों ने अपने समक्ष, ।। ६ ।।

सत्कपि-समूह, गज, शरभ, सिंह, शार्दूल मृगों से भरा हुआ, पुण्य तरुओं से (पूर्ण) विशाल महेन्द्र शैल को लीला से देखा ।। ७ ।।

इस प्रकार महेन्द्र पर्वत को देखकर, समीप पहुँचकर, वहाँ पर, ।। ८ ।।

उत्प०— आतड़ि वानरप्रवरु लाधरणीसुत गानलेक दुः -
खातुरलै वगं बडग, नय्येंड दद्गिरिनुंडि वच्चि सं-
पाति यनं ब्रसिद्धुडगु पक्षिकुलेंद्रुडु, रावणुंडु दा-
सीतनु गोंचुबोवुगति जेप्पुचु देल्पेनु लंकत्रोवयुन् ।। ९ ।।

कन्द— आ पक्षींद्रुनिचेतनु
जापल शुभनेत्र रामचंद्रुनिदेविन्
बापात्मुडैन दैत्युडु
वे पट्टुक चनिनत्रोव विनि कपुलेल्लन् ।। १० ।।

वचनमु— महानंदंबु नोंदि यम्महेन्द्रपर्वतं बारोहिंचि पुरो-
भागंबुन, ।। ११ ।।

कन्द— आकपिवीरुलु गनुगोनि
राकाशनदी प्रचुंबितार्भटभंगा-
नीकमहाघनरवभय-
दाकारनटत्प्रकाशु ना जलधीशुन् ।। १२ ।।

वचनमु— अट्लु कनुंगोनि, ।। १३ ।।

कन्द— तम तम सत्त्व स्थितुलुनु
गमियिंचेड्डुनब्धि कोलदि गनुगोनि मदिलो
ब्रमयुचु बलिकेनु गपिसं-
घमु लेंतयु डेंदमंदु गळवळ पडुचुन् ।। १४ ।।

हनुमंतुनि सागर लंघनमु

कन्द— ई वार्धि दाट सत्त्वमु
मावलनं जालदिक मारुति ! विनुमा
पावनि वगुटं जेसियु
नीवलनं दक्क नोरुलु नेररु दाटन् ।। १५ ।।

वचनमु— अनि इट्लु प्रार्थिंचिन तोडने युब्बि वारि वचनंबुलकु
सम्मतिंचि वायुतनूजुं डिट्लनिये ।। १६ ।।

उत्प०— पावनमूर्त्ति रामनरपालकु पंपुन नब्धि दाटेदन्,
देवविरोधि दोंगिलिनदेविनि जूचेद, गान कुंडिनन्
लावुन गड्डतो बेरिकि लंकयु तेच्चेद, नट्लु गानिचो
रावणुबट्टि तेच्चेदनु, रामुनि सन्निधि केन्नि रीतुलन् ।। १७ ।।

उस अवसर पर, वानर-प्रवर (कपिश्रेष्ठ) उस धरणी-सुता (सीता) को न पाकर दुःखित तथा चिन्तित हुए। उस अवसर पर, उस पहाड़ पर से सम्पाति नामक एक प्रसिद्ध पक्षि-कुलेन्द्र ने रावण के सीता को ले जाने की रीति को बताकर, लंका का मार्ग दिखाया ॥ ९ ॥

उस पक्षीन्द्र के द्वारा चपल, (तथा) शुभनेत्रवाली, रामचन्द्र की देवी को पापात्मा राक्षस (रावण) के ले जाने के विधान को कपियों ने सुन लिया। ॥ १० ॥

अत्यधिक आनन्दित हो, उस महेन्द्र पर्वत पर चढ़कर पुरोभाग, (समक्ष) में ॥ ११ ॥

उन कपिवरों ने आकाशगंगा को स्पर्श करते हुए, महाकोलाहल तथा आर्भट (हलचल) से युक्त तरंगों के महारव तथा भयद आकार के नृत्य से विलसित, उस जलधीश (सागर) को देखा। ॥ १२ ॥

ऐसे (सागर को) देखकर— ॥ १३ ॥

अपने-अपने बल पराक्रम तथा सागर की जिसे पार करना है, सामर्थ्य को देखकर मन में श्रमित (विकल) हुए। सारा कपिवर्ग मन में व्याकुल होते हुए यों कहने लगा। ॥ १४ ॥

### हनुमान का सागर लाँघना

"इस सागर को पार करने की शक्ति हमारे पास नहीं है। हे मारुति! सुनो ! पावनी (पवनपुत्र) होने के कारण तुम्हें छोड़ अन्य कोई (इसे) पार नहीं कर सकता" ॥ १५ ॥

कहकर, इस प्रकार प्रार्थना करने पर, फूलकर उनके वचनों को मान कर, पवनसुत ने इस प्रकार कहा— ॥ १६ ॥

"पावनमूर्ति राम नरपाल की आज्ञा से सागर पार करूँगा। देव विरोधी (रावण) के हाथ पड़ी देवी (सीता) के दर्शन करूँगा। नहीं तो बल पराक्रम से मूल सहित लंका को उखाड़कर लाऊँगा। वैसा नहीं तो किसी भी रीति से रावण को राम के सम्मुख लाऊँगा" ॥ १७ ॥

**वचनमु**-- अनि वारिमनंबुलु संतसिल्लुनट्लुगा बिरुदुलु वक्काणिंचि, तनकु दंड्रियैन वायुदेवुनकुनु, द्रिमूर्त्यात्मकुंडैन लोकबांधवुनकुनु, निद्रुनकुनु, संद्रम्मुनकुनु नमस्करिंचि श्रीरामलक्ष्मणुल दनमनःपद्मंबु नंदिडिकोनि म्रोक्कि, बंधुमित्रुलं गौगिलिंचुकोनि, वारिचेत दीवनलंबोंदि, गमनोन्मुखुंडै; ।। १८ ।।

**चम्प०**– मोगमु बिगिंचि, पादमुलु मोत्तमुगा नटनूदि व्रोक्कि, नीटुग मोगमेत्ति, भीकर कठोररवंबुन नार्चि, बाहु लत्यगणितलीलनूचि, वलयंबुग वालमु द्रिप्पि, व्रेगुनन् नगमुसगम्मु गृ्ंग, गपिनाथुडु निगिकि दाटे रिव्वुनन् ।। १९ ।।

**वचनमु**-- इट्लु निंगि कैगिरिपोवुचुंडु समयंबुन बावनिकि नड्डंबुगा मानवरूपंबुन मैनाक पर्वतंबुनु, सुरस यनु नागजननियु, छायाग्राहिणियैन सिंहिकयुनुं, गनुपट्टिन नल्लर[1] नतिक्रमिंचि, सुवेलाचलंबुन करिगि, यक्कड नलयिक दीर नाक्कयिक्कुव निंचुक सेपु विश्रमिंचियुन्न समयंबुन, ।। २० ।।

लंका नगर संदर्शनमु

**उत्प०**- भेरिकि साटि यौ दनुज भीषण भाषलु, भद्रनागघींकारनिनादमुलु, हयनिकायपु हेषलु, काहल ध्वनुल् वीरमृदंगनादमुलु, विश्वभयंकरलील लंकलो बोरु कलंगगा, श्वसनपुत्रुडु चालग नालकिंचुचुन् ।। २१ ।।

**उत्प०**- कोटिकि गोट्लु परगुकुंजरवर्गमु, घोटकंबुलुन्, गोटिकि नेक्कुडै परगुगोत्र समानमुलौ रथंबुलुन्, गोटिकि हेच्चुलै परगु घोरनिशाचरकोटिकोट्लतो साटिकि नेक्कुनप्पुरमु साहसवंतुडु गांचे मुंदरन् ।। २२ ।।

**वचनमु**— इट्लालंकापुटभेदनंबुनन् वीक्षिंचि तनमनंबुन; ।। २३ ।।

**शार्दू०**– घोराकारुलु, कामरूपुलु, महाक्रूरात्मु, लत्युग्रुली शूरुल्, वीरलगन्नुब्रामि पुरिलो शोधिंचुलावेट्लोको?
ईरूपंबुन बोवगागनिन वारेग्गेमि गावितुरो ?
नारीरत्नमु सीत नंदुगनगा नाकेट्लु सिद्धिंचुनो? ।। २४ ।।

---

१. मेल्लन (धीरे से)

ऐसा कहकर उनके मन को आनन्दित (उत्साहित) करते हुए, (हनुमान ने) त्रिमूर्तियों के आत्मस्वरूपवाले लोक-बान्धव (सूर्य), इन्द्र तथा समुद्र (आदि) को नमस्कार किया। श्रीराम (तथा) लक्ष्मण को अपने मनः-पद्म में धारणकर, वन्दनाकर, बन्धु मित्रों का आलिंगनकर, उनकी आशीष पाकर, गमन (समुद्र-लंघन) के लिए वह उन्मुख हुआ ।। १८ ।।

(पूरे बल के साथ) मुँह फुलाकर, (साँस रोककर) चरणों को डटा कर, सीधा खड़ा हो गया। मुख ऊपर उठाकर, भयंकर (तथा) कठोर स्वर से गर्जन कर, बाहुओं को अत्यगणित रूप से हिलाकर, पूँछ को वृत्ताकार में घुमाकर, शुभोदय में उड़ान के वेग के मारे, नग (पर्वत) के आधा धँस जाने पर कपिनाथ झट से आकाश में उड़ चला ।। १९ ।।

इस प्रकार आकाश में उड़ जाते समय पावनी (हनुमान) के सामने मानव के आकार में मैनाक पर्वत, सुरसा नामक नाग-जननी, छायाग्राहिणी सिंहिका दिखाई पड़े। उन सबको पारकर, सुवेलाचल पहुँचकर, वहाँ थकान दूर करने के लिए थोड़ी देर विश्राम लेते समय, ।। २० ।।

### लंकानगर का संदर्शन

भेरी (-ध्वनि) के समान राक्षसों के भयंकर सम्भाषण, श्रेष्ठ हाथियों की चिंघाड़, अश्व-समूह की हिनहिनाहट, काहल (एक प्रकार का वाद्य) की ध्वनि, वीरों के मृदंग-निनाद, विश्व-भयंकर रीति से लंका में गूँज रहे थे। उन्हें श्वसन-पुत्र (हनुमान) ध्यान से सुनते हुए—।। २१ ।।

करोड़ों हाथी (और) घोड़े, कोटि से अधिक संख्या में विलसित पर्वत के समान रथ, कोटि से अधिक संख्या में विलसित भयंकर निशाचर (राक्षस)-कोटि के समूहों से असमान बने हुए, उस नगर को साहसी (हनुमान) ने अपने सामने देखा ।। २२ ।।

इस प्रकार उस लंका-पुट भेदन (नगरी) को देखकर अपने मन में, ।। २३ ।।

घोर (भयंकर) आकारवाले, कामरूपी, महाक्रूरात्मा, अति उग्र और शूर इन (राक्षसों) की आँखों में धूल झोंककर, इस नगरी में (सीता को) ढूँढना कैसे सम्भव होगा ? इस रूप में यदि जाऊँ तो (मुझे) देखकर पता नहीं वे कैसा अपकार करेंगे ? नारीरत्न सीता को वहाँ मैं कैसे देख पाऊँगा ? ।। २४ ।।

वचनमु— अनि तलंचुचुन्न यवसरम्मुन, ॥ २५ ॥

उत्प०- कुंकुंपयोजबांधवुडु, गूडलकु बक्षुलुसेरे नेल्लडन्,
बोंकमु तीसेंदामरलु, पूचेनु गल्वलु, तारकावळुल्
बिकमु जूपें गांति, नळिबृंदमु कूर्के, दमंबु बर्वे, ने-
वंकनु जार चोरकुलु व्रालि चरिंचिरि कौतुकंबुनन्, ॥ २६ ॥

वचनमु— इट्लु निशासमयमुनंदु दनमेटिगात्रं बणुमात्रंबुगा
गुदियिंचि, यग्गिरि डिग्गि चनुचु, नल्लनल्लन बुरद्वारंबु
नोद्दकु जेरि, वानर कुलपुंगवुंडु पुरप्रवेशंबुसेसि, ॥ २७ ॥

हनुमंतुडु लंकलो सीतकं कलय वेदुकुट

उत्प०- मेडलु, रच्चकोट्टमुलु, मिद्देलु, मंचेलु, नाटकूटमुल्,
माडुवुलंगळुल्, दनुजमंदिरमुल्, पुर गोपुरावळुल्,
वाडलु देवगेहमुलु, वप्रचयंबुलु, वेशवाटिकल्,
गोडलु, नादिगा गपिकुंजरु डप्पुडु चोच्चि चूचुचुन् ॥ २८ ॥

कन्द— मरुवुलु, संदुलु, गोंदुलु,
निरवुलु, जोररानिचोट्लु, नेकांतपु
देरुवुलु, नंत:पुरमुलु
वेरवुन गपिकुंजरुंडु वेदकं जोच्चेन् ॥ २९ ॥

आट०— गालिलील, शीतकरकांतिविख्याति,
धूमरेखरीति, दूरि चोच्चि
यसुरमंदिरमुल नक्कड निक्कड
गलयदिरिगि वेदकेंगपिवरुंडु, ॥ ३० ॥

वचनमु— इट्लु तिरिगि तिरिगि वेदकुचु दनमनंबुन, ॥ ३१ ॥

कन्द— मायावलुंडु राक्षस
नायकुडिट बट्टि तेच्चिनाडतनि महा
कायमु नुग्राकृतिगनि
तोयलि तनतनुवु नेचट दोरगेनो यकटा ! ॥ ३२ ॥

मत्ते०— अटुगा कीतडे यन्यदेशमुन नायब्जाक्षि बेट्टिचेनो ?
घटयंत्रस्थितिवार्धि मध्यमुन दाग्रौर्यंबुनन्दाचेनो ?
पटुबाहाबलशक्ति नाकभुवनप्राग्देशमंदुंचेनो ?
चटुलोग्राकृतिरामुबाणमुलकुन शंकिंचि येंदुचेनो? ॥ ३३ ॥

ऐसे सोचते अवसर पर, ।। २५ ।।

पयोज-बान्धव (सूर्य) का अस्त हुआ, सर्वत्र पक्षी नीड़ों में पहुँच गए, कमलों का विकास कम हो गया, उत्पल विकसित हुए, तारक-समूह कान्ति के साथ विकसित हुए, अलिवृन्द (भ्रमरसमूह) निद्रित हुआ, तम (अँधेरा) फैल गया, सर्वत्र जार (व्यभिचारी) (और) चोरों ने कौतुक से विचरण किया ।। २६ ।।

इस प्रकार के निशासमय में अपने श्रेष्ठ गात्र को अणुमात्र के रूप में संकुचित कर, उस गिरि से उतरकर जाते हुए, धीरे-धीरे द्वार के पास पहुँचकर वानर कुल-पुंगव (श्रेष्ठ) ने पुर-प्रवेश कर, ।। २७ ।।

### सीता के लिए हनुमान का लंका में खूब खोजना

भवन, राजसभा, अट्टालिकाएँ, मचान, रंगशालाएँ, बड़े मकान, बाज़ार, राक्षसों के मन्दिर, नगर के गोपुर समूह, वीथियाँ, देव मन्दिर, वप्र (दुर्ग) समूह, वेश्याओं के मुहल्ले, दीवार आदि-आदि (स्थानों) में तब कपिकुंजर (पवनसुत) घुसकर देखता हुआ, ।। २८ ।।

रहस्य स्थान, बाज़ार, गलियाँ, निवास स्थान, दुर्गम स्थान, एकान्त मार्ग (निर्जन मार्ग), अन्तःपुर (आदि में) उपाय से कपिकुंजर ढूँढ़ने लगा ।। २९ ।।

हवा के समान, शतीकर (चन्द्र) की किरणों के समान, धुँए की रेखा के समान, असुरों के मन्दिरों में घुसकर, प्रवेशकर, यहाँ-वहाँ (सर्वत्र) घूम-घूमकर, कपिवर ने छान डाला ।। ३० ।।

इस प्रकार घूम-घूमकर ढूँढ़ते हुए, अपने मन में सोचा— ।। ३१ ।।

"माया से बलशाली राक्षस-नायक (रावण) यहाँ (सीता को) पकड़ लाया। उसके महाशरीर तथा उग्ररूप को देखकर, हाय! कान्ता (सीता) ने कहीं अपने शरीर को त्याग तो नहीं दिया ? ।। ३२ ।।

यदि ऐसा न हुआ तो इसी (रावण) ने अन्य प्रदेश में उस अब्जाक्षी (कमलनेत्री = सीता) को कहीं रखवा तो नहीं दिया होगा ? क्रूरतावश घटयन्त्र की स्थिति में कहीं वारिधमध्य में छिपा तो नहीं दिया होगा ? अत्यधिक बाहुबल से प्राक्देश (पूर्व प्रान्त) के नाक-भुवन (स्वर्गलोक) में रखा तो नहीं ? अति उग्र आकारवाले राम के बाणों से शंकित हो (डरकर) पता नहीं कहाँ रखा होगा ? ।। ३३ ।।

वचनमु— अनि ईगति वितर्किंचि, ।। ३४ ।।

उत्प०- वृंतु विधातजंदेमुलु, धूर्जटि शैलमु व्रत्तु, विष्णु से-
वितु, ग्रहंबुलंदिरुग वेयुदु, बूर्णपयोधुलेडुगा-
रितु, नुडुव्रजंबुलबोरिन् गणियितुनु भूतलंबु ग्र-
क्कितुनहींद्रलोकमुनु गीड्पड जेयुदुसाहसंबुनन् ।। ३५ ।।

उत्प०- कोट्टुदु निंद्रु बावकुनि गुंडेलु व्रत्तु गृतांतु जेंडुदुन्
बट्टुदु दैत्युनिन् वरुणुमानमुगोंदुनु गालि द्रूलगा
दट्टुदु गिन्नरेश्वरुनि प्राणमु कलगुदु शूलि दोलुदुन्
जट्टलु द्रुंतु रावणुनि सारसलोचन जूपकुंडिनन् ।। ३६ ।।

कन्द— ईमाड्कि जेय देव
स्तोमम्मुलु चन्द्रवदन जूपेद रोंडेन्,
एमिटिकि गीडु तगदनि
रामुडु वलदनुचु मरलि रम्मनु नोंडेन् ।। ३७ ।।

वचनमु— अनि यनेक प्रकारंबुल नालोचिंचुचु नोक्क गोपुरं
बारोहिंचे ना समयंबुन, ।। ३८ ।।

कन्द— पावनि कनुगोनें - नप्पुडु
पावन विख्यात सुगुणभावोपेतन्,
सेवित दनुजव्रातन्,
भूवनिताजात नित्यपूतन्, सीतन् ।। ३९ ।।

वचनमु— आ रामं जूचि, श्रीरामचंद्रुनि देविनिगा दलंपुचु
नग्गोपुरंबुनुंडि डिग्गि, सूक्ष्मरूपंबुगैकोनि, शिशुपावृक्षं
बारोहिंचि यंदु, ।। ४० ।।

सीसमु—
पति बासिनट्टि यापदकंटे बलुमारु विविध मायलचेत वेगि वेगि,
वीरदानवकोटि विकृत वेषंबुलु कनुगोनि चित्तंबु क्रागि क्रागि,
तनदिक्कु लेमिकै तल्लडिल्लुचु नात्म लोपल मिक्किलि लोगि लोगि,
कर्णकठोरबुगा नाडुमाटल दोरगेडिकन्नीट दोगि तोगि,

आट०— रामु दलचुकोंचु रामुनि बेकोंचु,
राम ! राम ! यनुचु रमणि पलुक
गपिवरुंडु सूचि कामिनीरत्नंबु
सीत यनुचु बोंगे जित्तमंदु ।। ४१ ।।

कहते हुए इस प्रकार तर्क-वितर्क कर, ॥ ३४ ॥

(सोचने लगा कि) ब्रह्मा के यज्ञोपवीत को तोड़ डालूंगा। धूर्जटि के शैल (कैलासगिरि) को गिरा दूंगा। विष्णु की सेवा करूंगा। ग्रहों को उलट-पुलट कर दूंगा। सप्त-पूर्णसागरों को मथ डालूंगा। तारागणों को गिना दूंगा। भूतल को वमन करा दूंगा। अहीन्द्रलोक (नागलोक) को (अपने) साहस से व्याकुल कर दूंगा ॥ ३५ ॥

यदि सारस-लोचना (सीता) को न दिखाएँ तो इन्द्र को मारूंगा। अग्नि के हृदय को चीर डालूंगा। यमराज से युद्ध करूंगा। निऋति राक्षस को पकड़ूंगा। वरुण का मान हरण करूंगा। हवा को हिला दूंगा। किन्नरेश्वर (कुबेर) के प्राण हरण करूंगा। शूली को (शंकर) भगा दूंगा। रावण की जटाएँ काट फेंकूंगा ॥ ३६ ॥

ऐसा करने से देवतागण चन्द्रवदना (सीता) को दिखा देंगे। नहीं तो (इनको सताना) क्यों? यह अनुचित है, कहते हुए राम (मुझे) वापस बुला लेंगे" ॥ ३७ ॥

इस प्रकार अनेक प्रकार से सोचते हुए, एक गोपुर पर चढ़ा। उस समय में, ॥ ३८ ॥

तब पावनी (हनुमान) ने पावन, तथा विख्यात सुगुणों से विलसित (तथा) राक्षस समूह से सेवित, भूवनिता की पुत्री, नित्य-पुनीता सीता को देखा ॥ ३९ ॥

उस रामा (देवी) को देखकर श्रीरामचन्द्र की देवी समझकर, उस गोपुर से उतरकर, सूक्ष्मरूप को धारणकर, शिंशुपा वृक्ष पर चढ़ा। वहाँ (बैठकर देखा) ॥ ४० ॥

पति से बिछुड़ जाने के दुःख की अपेक्षा विविध (राक्षस) मायाओं से व्याकुल हो-होकर, वीर दानव-कोटि के विकृत वेषों को देखकर मन में दुखी हो-होकर, अपनी असहाय स्थिति के बारे में बार-बार सोचकर, मन ही मन तड़पकर, कानों के लिए अति कठोर उन (राक्षसों) के वचनों के कारण आंसुओं में ऊभचूभ होकर, राम का स्मरण करते हुए, राम का नाम लेते हुए, राम! राम! कहनेवाली रमणी को देखकर, कपिवर यह जानकर कि यह कामिनी-रत्न (निश्चित ही) सीता है, मन में उत्साहित हुआ ॥ ४१ ॥

वचनमु— अट्टि समयंबुन रावणासुरुंडु सीतापहृत हृदयुंडै पन्नीट मज्जनं बाडि, दिव्यांबरंबुलु गट्टुकोनि, कर्पूर सम्मिळितंबैन श्रीगंधंबु नेऽपूत पूसि, पारिजात पुष्पंबुलु मुडिचि, मव्वंपु दावि निव्वटिल्लेडु जव्वादि मेत्ति, दशशिरंबुलयंदुनु रत्नमकुटंबुलु धरिंचि, मणिमंडितंबु लगुकुंडलमुलु पूनि, भानुप्रभा विलसितंबुलगु पतकंबुलुनु मुक्ताहारंबुलुनु, भुजकीर्तुलुनु, बाहुपुरुलुनु, नंगुळीयंबुलुनु, नवरत्न स्थगितंबगु नोड्डाणंबुनु, नमरिंचि चन्द्रहास हस्तुंडै, कंदर्पविलास सुंदरुंडगुचु गिन्नरकिंपुरुषगंधर्वामरोरगसिद्धविद्याधरांगन लुभय पार्श्वंबुल नालवट्टंबुलु पट्टि, मौक्तिक छत्रंबुलुनु दालवृंतंबुलुनु विजामरंबुलुनु धरिंचिग, गोंदरु करदीपिका सहस्रंबुलु गैकोनि मुंदऽ बिरुद नेतेर, नशोकारामंबुनकु जनुदेंचे, नप्पुडु गंधवातूलंबुनंदूलु पुष्पलतयुनुंबोले वडवड वडंकुचु, दन सुंदरांगंबुलु, हस्तोरुवस्त्रकेशंबुल, माटियु, गप्पियु, नडंचियु, निवुरगप्पिननिप्पु चंदंबुन, धूळिधूसरंबगु रत्नंबुकैवडि, मेघच्छनंबगु चंद्रबिंबंबु डंबुन, नित्तडि पोदिगिन कुंदनंपु शलाक लागुन, मारुपडियुन्न-जानकिनि गदिसि, ।। ४२ ।।

रावणुडु मदनातुरुडै सीतनु प्रार्थिंचुट

कन्द— सीतनु गनुगोनि रावणु-
डातत नयवाक्यफणिति नति कुतकमुनन्
तेजोभव निशि तांबक-
पातंबुल जाल नोंच्चि पलुकग जोंच्चेन्, ।। ४३ ।।

लयग्राहि—
तोयजदळाक्षि ! वलरायडिट्टु लेचि पट्टु सायकमु लेर्चि इपुडेयग दोडगेन्
दोयदपथंबुन नमेयरुचितोड नुडु-रायडुनु मंचि वड गायग गडंगेन्,
गोयिललु गीरमुलु गूयग नळिव्रजमु लेयेडल जूचिननु ग्रोयुचु जेलंगेन्,
नायेड गृपारसमु सेयकविवेकमुन नीयेडल नुंडुटिदि न्यायमे लतांगी !
।। ४४ ।।

ऐसे समय में सहसा रावणासुर सीता से अपहृत हृदयवाला होकर, गुलाबजल से स्नानकर, दिव्याम्बर पहनकर, कर्पूर सम्मिलित श्रीगन्ध का अच्छी तरह लेपकर, पारिजात-पुष्पों से श्रृंगारकर, सुगन्ध को बिखेरनेवाले कोमल जवादि (संकुमद) को धारणकर, दस शिरों में रत्नकिरीट पहनकर, मणिमण्डित कुण्डलों को (कानों में) पहनकर, भानुप्रभा (सूर्यकान्ति) से विलसित पदक, मुक्ताहार, भुजकीर्तियाँ (बाजूबन्द), कंकण, केयूर, अंगूठे, नवरत्न खचित करधनी आदि को धारणकर, चन्द्रहास को हाथ में लेकर कन्दर्प (मन्मथ) विलास के समान सौन्दर्य से विलसित होकर, किन्नर, किंपुरुष, गन्धर्व, अमर, नाग, सिद्ध, विद्याधर (जातियों की) अंगनाओं के उभय पार्श्वों में (परिवेष्ठित होकर) पंखे, मौक्तिक छत्र, तालवृन्त, चमर (आदि) धारणकर आने पर, और कुछ के सहस्र कर-दीपिकाएं (मशालें) लेकर आगे और पीछे चलने पर, (रावण) अशोक वन में आया। तब गन्धपवन (के झोंके) से झूमनेवाली पुष्पलता के समान थर-थर क्राँपनेवाली, अपने सुन्दर अंगों को हाथों, प्रचुर वस्त्रों तथा केशों से बार-बार छिपानेवाली, दबानेवाली, भस्माच्छादित अग्नि के समान, धूलिधूसरित रत्न की भाँति, मेघाच्छादित चन्द्रबिम्ब की रीति, पीतल से विजड़ित सुवर्ण शलाका की रीति, रूप को खोई हुई जानकी के समीप पहुँचकर, ।। ४२ ।।

### मदनातुर हो रावण का सीता से प्रार्थना करना

सीता को देख, रावण अनेक अनुनय वाक्यों से, अत्यधिक कौतुक से, तेजोभव (सीता) को वचन-रूपी तीक्ष्ण बाणों के पात (आघात) से पीड़ित करते हुए, (यों) कहने लगा— ।। ४३ ।।

हे कमलदलाक्षी ! प्रेम का राजा (कामदेव) अब जाग्रत हो, तीक्ष्ण बाणों का सन्धानकर, अब (मुझपर) फेंकने लगा है। तोयद-पथ (आकाश) में अमेय (निर्मल) कान्ति से उडुपति (चन्द्र) धूप बरसाने लगा है। कोयल (तथा) शुक कूजने लगे। भ्रमरगण सब ओर झंकार करने लगे हैं। हे लतांगी ! मुझपर कृपारस न बरसाकर, अविवेक से, इस प्रकार रहना कहाँ तक न्याय है ? ।। ४४ ।।

वचनमु— अनि मऱियुनु, ।। ४५ ।।

सी०- अलकेश्वरुं डुपायनमुगा निच्चिन यंचितचीनि चीनांबरमुल,
दिविजाधिनाथुंडु दिनदिनंबुनु निच्चु पारिजातोल्लसत्प्रसवमुलुनु,
दक्षिणाधीशुंडु तग गान्कलंपिन सुरभिकर्पूरादिपरिमळमुलु,
बाताळमुननुंडि फणिसार्वभौमुंडु पुत्तेंचिनट्टुवंटि भूषणमुलु

तेटगीति– गलवु नायिंट नेप्रोद्दु गडम लेक,
देहपरितृप्ति गाविंचि मोहमलर
गामुकेळिसुखंबुल गलयु टोप्पु,
विडुवु मडियास रामभूविभुनि मीद ।। ४६ ।।

सी०- एव्वानिवीटिकि नेडु वारासुलु पेंट्टनि कोटलै पेंच्चु पेरुगु,
नेंव्वानि सेवितु रिंद्रादिदेवत लनुचरबलु लयि यनुदिनंबु,
नेंव्वानि चेंरसाल नेप्रोद्दु नुंदुरु गंधर्व सुर यक्ष गरुडकांत,
लेंव्वानिभंडार मिरवोंद विलसिल्लु नवनिधानंबुल विविधभंगि,

तेटगीति– सकल लोकंबुलुनु महोत्साहवृत्ति
नेंव्वनिकि जेंल्लु बुष्पकम्मेंक्कि तिरुग,
नाकें तक्कंग गलदें येनाटनैन ?
मद्‌भुजाशक्ति प्रतिपोल्प नद्‌भुतंबु ।। ४७ ।।

सी०- श्वसनुंडु लोगिलि सम्मार्जनम जेय, नब्धिनाथुडु कलयंपि सल्ल,
बावकुंडरुदेंचि पाकंबु लोंनरिंप, शमनुंडु वेंस बरिचर्य जेय,
बाकारि कल्पकप्रकरंबु लर्पिंप, दनुजेश्वरुंड कैदंड यिडग,
नरवाहनुंडु दा नगरि वेंच्चमु वेंट्ट, नीशानुडु विभूति नेंलमिनीय,

तेटगीति– गुरुडु पंचाग मोंप्पुडु सरवि जेंप्प,
नमर किन्नर गंधर्व यक्ष भुजग
सिद्ध किंपुरुषांगनल् चेरि कोंलुव
वैभवंबुन जेंलुवोंदुवाड दरुणि ! ।। ४८ ।।

उत्प०- ऐंत्तिति शंकराचल महीनबलंबुन बंतिलागुनन्,
मोंत्तिति सर्वदिक्पतुल मूगिनगर्वमु विच्चि पारगा,
नोंत्तिति शत्रुभूपतुल नुग्रणरंबुन भूमि द्रेंळ्ळगा,
मोंत्तिति भोगिकंठमु लमोघजवंबुन मेटिकीर्त्तुलन् ।। ४९ ।।

और फिर (वह कहने लगा)— ।। ४५ ।।

"अलकेश्वर (कुबेर) के भेंट-स्वरूप प्रदत्त रेशमी कपड़े, इन्द्र के द्वारा प्रतिदिन भेजे जानेवाले विकसित पारिजात-कुसुम, दक्षिणाधीश (यमराज) के द्वारा समुचित विधि से भेजे सुरभित कपूर आदि परिमल द्रव्य, पाताल से फणि-सार्वभौम (नागराज) के द्वारा सम्प्रेषित आभूषण मेरे घर में सम्प्राप्त हैं। प्रतिदिन किसी भी अभाव के बिना देह को परितृप्तकर, मोह के विलसित होने पर कामकेलि-सुखों में लगे रहना उचित है। (अब) भूपति राम पर दुराशा छोड़ दो ।। ४६ ।।

जिसके निवास-स्थान के लिए सात समुद्र अनिर्मित दुर्ग बनकर शोभा से बढ़ते रहते हैं; इन्द्रादि देवता लोग अपने अनुचरों के साथ प्रतिदिन जिसकी सेवा करते रहते हैं; जिसके क़ैदखाने में सदा गन्धर्व, सुर, यक्ष, गरुड़ (आदि की) कान्ताएँ रहती हैं; जिसका भण्डार नवविधियों से (भरकर), नाना रीतियों में स्थिर रूप से विलसित रहता है; सकल लोकों में महोत्साह वृत्ति (प्रबलता) से पुष्पक विमान पर चढ़कर, भ्रमण करने का समुचित आयोजन है, (यह सब) मेरे सिवा अन्य किसके लिए सम्भव है! मेरी भुजशक्ति अनुपम तथा अद्भुत है ।। ४७ ।।

वायु मेरे आँगन का सम्मार्जन करता (बुहारता) है; सागर-पति पानी छिड़क जाता है; अग्नि आकर रसोई (का काम) करता है। यमराज झट सेवाएँ करता है। इन्द्र के कल्पक आदि समर्पित करने पर, दनुजेश्वर के करावलम्ब देने पर, नरवाहन (कुबेर) के नगर (के लिए आवश्यक) सामग्री देते रहने पर, ईशान (ईश्वर) के आनन्द से विभूति (श्लेष से ऐश्वर्य) प्रदान करते रहने पर, गरुड़ के सदा क्रम से पंचांग बाँचने पर, (और) अमर, किन्नर, गन्धर्व, यक्ष, भुजग, सिद्ध, किंपुरुष की अंगनाओं के जुटकर (सदा) सेवा करने पर हे तरुणी! (सकल) वैभवों से मैं सुशोभित रहता हूँ ।। ४८ ।।

शंकराचल (कैलासगिरि) को अहीनबल से (मैंने) गेंद के समान उठाया है। सब दिक्पतियों के घनीभूत गर्व को बहाकर (गर्व मर्दनकर) दण्डित किया है। भयंकर युद्ध में, धरती काँपे इस प्रकार, शत्रु राजाओं को धराशायी कर दिया है। नागों के कण्ठों को अत्यधिक बल से (दबाकर) दण्डितकर कीर्तियाँ बढ़ा ली हैं ।। ४९ ।।

तेटगीति— जडलु धरियिंचि तपसुलचंदमुननु
दम्मुडुनु दानु घोर दुर्गम्मुलंदु
गूरगायलु कूडुगा गुडुचुनट्टि
रामुडेरीति लंककु रागलंडु ? ॥ ५० ॥

आट०— इंक जेय नेर, रीदंग नोपरु,
कट्टलेरु, चुट्टि पट्ट लेरु
जलधि दाट लावु चालदु नरुलकु,
वच्चु टेंट्टु चेंपुम वारिजाक्षि ? ॥ ५१ ॥

कन्द— दानवु लेंप्पुडु चूचिन
मानवुलनु गेलुव गलरु, मदि नूहिंपन्
मानवभक्षकुलै मनु
दानवुलनु गेलुव नरुल तरने जगतिन् ॥ ५२ ॥

कन्द— जगतीशुडु मानवुडट !
नगरे भुजशक्तिचेत नाकेंदु रन्नन् ?
नगधरुडो, नगधन्वुडो,
नगभेदियो, कोंत कोंत नातो बोरन् ? ॥ ५३ ॥

वचनमु— आ संगति यट्लुंड निम्मु, ॥ ५४ ॥

कन्द— नीकन्नुल सौभाग्यमु,
नीकुचमुल गलुगु मेलु, नी मुखकांतुल्,
नीकरमुल लावण्यमु,
नाकस्त्रीलंदु लेवु नाकुं जूडन् ॥ ५५ ॥

मत्ते०- सुरकांतल् सरिरारु, यक्षसतुलुन् सूटिपगा रारु, कि-
न्नर भामल् प्रतिरारु, सिद्धवनितल न्यायंबुगा बोल, रा-
गरुड स्त्रील समान लैंतोचवुकल् गंधर्वलोलाक्षुलुन्,
मरियेरी निनुजेंप्पि चेंप्प दरुणुल् मत्तेभकुंभस्तनी ! ॥ ५६ ॥

कन्द— व्रीड यलंकारमुगा
नाडुमु भय मुडिगि मधुरमैन मृदूक्तुल्,
बेडिसल नेलुकन्नुल
जूडुमु कनुरेप्प लेत्ति सुदती ! नन्नुन् ॥ ५७ ॥

वचनमु— अनि इट्लु नोरिकि वच्चिनमच्युन ब्रेलुचुन्न यानीचुनि
दुष्टभाषणंबुलकु रोसि तृणंबु चेपट्टि, जनकभूपालनंदन
इट्लनियें; ॥ ५८ ॥

जटाएँ धारणकर, तपस्वियों की भाँति स्वयं भाई को साथ ले, घोर दुर्गमों (वनों) में भटकनेवाला, भोजन के रूप में साग-सब्जी (कन्दमूल-फल) खानेवाला वह (राम) किस प्रकार लंका में आ सकेगा ॥ ५० ॥

(सागर को) सुखा नहीं सकते, तैर (कर पार) नहीं सकते! (सागर को) बाँध नहीं सकते! (लंका को) घेरकर वश में कर नहीं सकते! सागर को पार करने की सामर्थ्य नरों में नहीं है। हे वनजाक्षी! उनके आने का रास्ता (या उपाय) बताओ न? ॥ ५१ ॥

जब भी देखो, दानव मानवों को जीत सकते हैं। मन में सोचो कि मानव-भक्षणकर जीनेवाले दानवों को जीतना इस जगत में (कहीं) नरों के वश की बात है क्या? ॥ ५२ ॥

कहते हैं (वह) मानव जगदीश है। भुज-शक्ति में वह मेरा सामना करेगा? (यह सुनकर लोग) हँसेंगे नहीं क्या? क्या वह नगधर (विष्णु = कूर्मावतार तथा कृष्णावतार में) या नगधन्व (शिव) या नगभेदी (इन्द्र) है जो कुछ सीमा तक मेरे साथ संग्रामकर सके। (राम तो इनमें से किसी की समता नहीं कर सकता है न!) ॥ ५३ ॥

उस बात को वैसे रहने दो, ॥ ५४ ॥

तेरी आँखों का सौभाग्य, तेरे कुचों का सौन्दर्य, तेरे मुख की कान्तियाँ, तेरे हाथों का लावण्य, मेरे देखने में ये (सब) स्वर्गपुरी की सुन्दरियों में भी नहीं हैं ॥ ५५ ॥

सुर-कान्ताएँ तेरी तुलना में (गिनती में) नहीं आतीं। यक्ष-सतियाँ तेरे सामने टिकेंगी नहीं। किन्नर-भामिनियाँ तेरी समानता नहीं कर सकतीं। सिद्ध (जाति की) वनिताएँ सचमुच तेरी तुलना नहीं कर सकतीं। गरुड़ जाति की कमलाक्षियाँ तुम्हारे समान नहीं हैं। हे मत्तेभ-कुम्भ के समान स्तनवाली! अन्य कौन रमणियाँ हैं जिनके नाम तुम्हारे पश्चात् ले सकें। (अर्थात् कोई नहीं।) ॥ ५६ ॥

व्रीड़ा (लाज) ही (तुम्हारे लिए) अलंकार है। (तब भी) भय छोड़कर मधुर मृदुल भाषण (बातें) करो। मछलियों पर शासन करने वाली आँखों से पलकें उठाकर (खुलकर) हे सुन्दरी! (मेरी ओर) देखो न" ॥ ५७ ॥

इस प्रकार मनमाने बकनेवाले उस नीच के दुष्ट वचनों से घृणा प्रकटकर, तृण को हाथ में लेकर, जनक-भूपाल-नन्दना (सीता) ने इस प्रकार कहा— ॥ ५८ ॥

सीत रावणुनि दॆगडि श्रीरामुनि बॊगडुट

कन्द— पति दैवमुगा नॆप्पुडु
मति दलचुचु नुंडुनट्टि मगुवल जॆरुपन्
व्रतिन गलयट्टि नीतो
व्रतिवचनमु लाडुकंटॆ बापमु गलदॆ ? ॥ ५९ ॥

कन्द— परदारापेक्षकु लगु
पुरुषुल कायुवु नशिचु, बुण्यमु सॆडु, स-
त्पुरुषुलु दूषिपग दुदि
नरकंबुन बडुदु रनॆडिन्यायमु विनवे ? ॥ ६० ॥

वचनमु— अदियुनुंगाक, ॥ ६१ ॥

कन्द— तन साहसंबु ताने
कॊनियाडुनतंडु हीनगुणुडनि विनुचुन्
निनुनीव पॊगडुकॊंटिवि
विनगूडदु[1] धर्मशास्त्र विपरीतंबुल् ॥ ६२ ॥

शार्दू०- संगर रंगमंदु नतिशौर्यमुनन् रघुरामुतोड मा-
तंगतुरंगसद्भटशतांग बलंबुल गूडि नीवु पो-
रंगनु नोप, किप्पुडु विराधखरादुल पाटुजूचियुन्
दॊंगिलि नन्नुदॆच्चियतिवि,तुच्छपुबल्कुलुपल्क बाडियॆ? ॥ ६३ ॥

सी०- कूकटिमुडिकिनै कुरुलु गूडनिनाडॆ बॆदरक ताटक बीच मणचॆ,
गाधेयुडॊनरिंचुक्रतुवुनु रक्षिप बॆक्कंड्रु दैत्युल नुक्कणंचॆ,
नवनिपै विलसिल्लुनखिलराजन्युलु व्रेल जूपगलेनिविल्लु विरिचॆ,
घोराटवुललोन ग्रुम्मरुनप्पुडु खरदूषणादि राक्षसुल जंपॆ,

तेटगीति— बादरजमुन नॊकरायि बडति जेसॆ,
लील मायामृगंबुनु गूलनेसॆ,
राजमातुंडॆ मेदिनीरक्षकुंडु
रामभूपालु डादिनारायणुंडु ॥ ६४ ॥

तेटगीति— अट्टि रामुन कीयब्दि[2] यनग नॆंत ?
लंकयन नॆंत ? दनुजुल पॊंक मॆंत ?
नी वनग नॆंत ? नी लावु चेव यॆंत ?
चॆप्प नेटिकि नीवॆ चूचॆदवु गाक ? ॥ ६५ ॥

---

१. विनगूडदु नीदुनीतिविरहितभाषल् (पाठभेद) (तेरे अनैतिक वचन नहीं सुनना चाहिए) २. कीयदि—यह (पाठभेद)।

### सीता का रावण की निन्दा कर, श्रीराम की प्रशंसा करना

पति को मन में सदा देवता माननेवाली सतियों के साथ बलात्कार करने की प्रतिज्ञा से युक्त तुमसे प्रतिवचन करने (उत्तर देने) से बढ़कर पाप ही क्या है ? ।। ५९ ।।

परदाराओं से रति की कामना करनेवाले पुरुषों की आयु नष्ट होती है। (उनके) पुण्य का नाश होता है। सत्पुरुषों का दूषण करने से वे अन्त में नरक को प्राप्त करते हैं। इस न्याय (नीति-वाक्य) को नहीं सुना है ? ।। ६० ।।

इतना ही नहीं, ।। ६१ ।।

अपने साहस की स्तुति स्वयं कर लेनेवाले हीन गुणवाले कहलाते हैं। इसे सुनते हुए भी तुमने अपनी प्रस्तुति कर ली है। धर्म शास्त्र के विपरीत (बातें) सुननी नहीं चाहिए ।। ६२ ।।

रणक्षेत्र में रघुराम के साथ अतिशौर्य से हाथी, घोड़े, सद्भट आदि से युक्त, शतांग-बल (सेनाओं) के साथ तुम संग्राम न कर सके। अब विराध, (और) खर (खरदूषण आदि) की जो दुर्गति हुई है, (उसे) देखकर भी मुझे चुरा ले आये हो। तुच्छ वचन कहना क्या न्यायसंगत है ? (नहीं है) ।। ६३ ।।

केशजाल अभी शिखाबन्धन के लिए भी (पर्याप्त रूप में) बढ़े नहीं थे कि उन्हीं दिनों में बिना डरे ताड़का का अन्त कर दिया था। विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा में अनेकों राक्षसों को समाप्त कर डाला था। धरती के सकल राजकुमार जिस पर उंगली भी न रख सके (छू न सके), ऐसे (शिव)-चाप को तोड़ डाला। भयंकर वनों में घूमते समय खर-दूषण आदि राक्षसों का वध किया। चरणरज से एक पत्थर को स्त्री बना दिया। मायामृग को सरलता से ही धराशायी कर दिया। वह मेदिनी-रक्षक क्या साधारण राजा है ? राम-भूपाल (स्वयं) आदि-नारायण हैं ।। ६४ ।।

ऐसे राम के लिए यह सागर क्या (चीज़) है ? यह लंका क्या है ? राक्षसों का गर्व क्या है ? तुम क्या हो ? (तुम्हारी हस्ती ही क्या है ?) तुम्हारी शक्ति और बिसात ही क्या है ? कहना क्यों ? तुम स्वयं देख लोगे ।। ६५ ।।

शार्दू०- वीरालापमु लाडनेल विनुमी, विश्वप्रकाशंबुगा
बारावारमु गट्टि, राघवुडु कोपस्फूर्त्ति दीपिंपगा
घोराजिन् निनुडासि,लावुकलिमिन् गोटीरयुक्तंबुगा
ग्रूरास्त्रंबुल मस्तमुल् दुनिमि,भुक्तुल् पॆट्टु भूताळिकिन् ॥६६॥

शार्दू०- आरुढ प्रतिमानविक्रमकळाहंकार तेजोनिधिन्
श्रीरामुन्,सुगुणाभिरामु दॆगडन् जेकॊन्न निन्नाजिलो
दारन् दॊंगिलितंचु निष्ठुरगतिन् दण्डिचि खण्डिपमु-
न्नीरॆट्लैननु दाटिवच्चु नलुकन् नेडॆल्लि शांतिपुमा ॥ ६७ ॥

वचनमु— अनि तन्नु जीरिकिं गॊनक वीरालापंबुलाड नारावणुं-
डॊडुपुदप्पिनकालाहिचंदंबुन नुग्रुंडै मंडिपडि इट्लनियॆ; ॥६८॥

रावणुडु कुपितुडै सीतकु व्यवधि नॊसगुट

कन्द— आटदि गा यनि कूरिमि
पाटिंचिनकॊलदि नन्नु बलुकग जॊच्चॆन्,
माटाडकुंड नालुक
तूटुलुगा जेयकुन्न दोसमुगादे ॥ ६९ ॥

कन्द— कुय्याडक[1] नामुंदर
गय्यमुनकु गालुदुव्व गडगॊनु दीनिन्
दय्यालकु बलि वॆट्टॆद
व्रय्यलुगा नड्रिकि यॆल्लवारुनु जूडन् ॥ ७० ॥

कन्द— काकुन्न दीनि बलिमिनि
बैकॊनि नाकांक्ष दीर भावजकेळिन्
जेकॊनक विडिचिपॆट्टिन
गैकॊनुने नव्वुगाक गर्वमु पेमिन् ॥ ७१ ॥

शार्दू०- भीमाटोपभुज प्रतापमहिमन् भीमाचलं बॆत्ति, सु-
त्रामाद्यष्टदिगीशसैन्यमुल संग्रामंबुलो नोर्चि, यु-
द्दामप्रौढि जॆलंगुचुंडॆडु कळाधामुंड, नामुंदटन्
रामुन् गीमुनि जॆप्प गिप्प नगरा राकेंदुबिंबानना ! ॥ ७२ ॥

---

१. पय्याडक—उल्टा उत्तर न देते हुए (पाठभेद)

वीरता की बातें क्यों कहते हो? सुनो! विश्वविख्यात रूप से वारिधि को बाँधकर, राघव क्रोध-स्फूर्ति के दीप्त होने पर, भयंकर युद्ध में निकट आकर, आक्रमणकर, सामर्थ्य-सम्पत्ति से मुकुटों के साथ शिरों को क्रूर अस्त्रों से खण्डितकर, भूतावली (भूत-समूह) को खिला देगा ॥ ६६ ॥

अप्रतिमान पराक्रम की कला की पटुता से सम्पन्न तेजोनिधि श्रीरामचन्द्र की, सुगुणों से अभिराम (श्रीराम) की निन्दा करनेवाले तुम्हें, रणरंग में यह कहते हुए कि (मेरी) पत्नी को चुरा लाया है न, निष्ठुर गति से, तेरा खण्डनकर, दण्डित करने के लिए सागर को किसी भी प्रकार से पारकर, सक्रोध वह (राम) आयेगा। आजकल (सम्प्रति) शान्ति धारण करो" ॥ ६७ ॥

इस प्रकार अपनी (रावण की) परवाह न कर, वीरालाप करने पर, पकड़ से छूट निकले कालसर्प के समान उग्र हो, आग बबूला होकर, रावण ने कहा— ॥ ६८ ॥

### रावण का कुपित हो सीता को अवधि देना

"स्त्री समझकर प्रेमभाव (स्नेह) दिखाने पर, वह मुझसे प्रतिवचन कहने लगी! बात न करे, इस प्रकार (इसकी) जीभ में छिद्र करने पर भी दोष नहीं होगा! ॥ ६९ ॥

मेरे सम्मुख चुपचाप पड़ा रहना चाहिए था, यह तो झगड़ा करने पर उतारू हो गई। इसे टुकड़े-टुकड़े कर, सबके देखते-देखते, भूतों की बलि चढ़ा दूंगा ॥ ७० ॥

नहीं तो इसे बलपूर्वक वश में कर, भावजकेली (कामकेली) में आकांक्षा की पूर्ति (अनुभव) यदि न करूँ, यों ही छोड़ दूँ, तो मेरा बलगर्व हँसी का पात्र हो जायेगा ॥ ७१ ॥

भयंकर भुज-प्रताप से भीमाचल (कैलासगिरि) को उठाकर, इन्द्रादि अष्ट-दिक्पतियों की सेनाओं का, संग्राम में सामनाकर (हराकर), तीव्रतर बलशक्ति से विलसित होनेवाला, कला निलय हूं मैं। ऐसे मेरे सामने हे राकेन्दु-बिम्बानने (चन्द्रमुखी)! राम अथवा गीम की प्रशंसा सुनकर लोग हँसेंगे नहीं क्या? ॥ ७२ ॥

सीसमु—
अखिललोकमुल नायाज्ञ निलिपति, नेक हेलनु बुष्पकं बॆक्कि तिरिगि,
वेलपुमूकलचेत वेट्टि सेयिंचिति, दितिवंशवल्लभुल् नुतुलु सेय,
गणमुलतोगूड कैलास मॆत्तिति बट्टुवैन पूवुलबंति पगिदि,
वनजगर्भुनि चेत वरमुलु गैकॊंटि दंडिगा नत्युग्रतपमुसलिपि,
तेटगीति— चॆऱलु पट्टिति गंधर्वसिद्धसाध्य
भुजग सुर यक्ष किन्नर मुख्यसतुल,
निट्टिसामर्थ्यं मॆवरि केनाडु गलदु
महिनि नाकॊक्कनिकॆ काक मंजुवाणि ! ॥ ७३ ॥
तेटगीति— नाकु नॆदिरिप नॊकपेदनरुनि नॊड्डि
वॆऱव कीरीति दुर्भाष लऱचु दीनि
जिह्व मॊदलंट बट्टि ई शितकुठार-
धार दुनुमाडि दारुणि बाऱवैतु ॥ ७४ ॥
वचनमु— अनि चंद्रहासंबु जंकिंचि लेव नुंकिचुतऱि गॊंदरु प्रियसुंदरु लड्डंबु सॊच्चि, ॥ ७५ ॥
चम्प०- सुरवरुडो? धनंजयुडॊ? सूर्यतन्जुडॊ? यातुधानुडो?
शरधि विभुंडॊ? गाड्पॊ? पुरशासनमित्रुडॊ? भोगिभूषुडो?
गुरुभुजशक्ति गैकॊनुचु गोपमु सूपग नीकु नॆंतयि-
त्तरुणिपायिंब्रतापमुन दारुण कृत्यमु सेयगूडुनॆ ? ॥ ७६ ॥
कन्द— एटिकि मीरिटु किनियग
गाटपुं जंकॆनयॆ चालु, गरवालुन की-
याटदि यर्हमॆ ? ममु नी-
माटिक मन्निंचि कावुमा इक जालुन् ॥ ७७ ॥
वचनमु— अनि शांतवचनंबुल ब्रियंबु सॆप्पिन नप्पंकरुहाक्षुल विन्नपंबुलु मन्निंचि, याराक्षस चक्रवर्त्ति वैदेहिकि गावलियुन्न येकजटा द्विजटा त्रिजटा दुर्मुखी वायुमुखी शूर्पणखलादिगा गल दैत्यकामिनुल वंक गनुगॊनि, ॥७८॥
कन्द— गड्डुविच्चिचति निरुमासमु
लॊंडबरुपुडु नॆंचिनट्टु, लॊंडबड कुन्नन्
गडिकंडलुगा गोसुक
पडतुलु भक्षिपुडितिपललं बंतन् ॥ ७९ ॥

एक हेला (विलास) से पुष्पक पर जाकर, अखिल लोकों को अपनी आज्ञा पर चलाया। मैंने देवतागण से बेगार करवायी, जिसकी स्तुति राक्षस राजाओं ने की। महान् कैलासगिरि को (प्रमथ-) गणों सहित फूलों की गेंद के समान उठाया। अत्यधिक उग्र तपस्यकर ब्रह्मा से वर पाये। गन्धर्व, सिद्ध, साध्य, भुजग, सुर, यक्ष, किन्नर, आदि की सतियों को क़ैद में रखा। ऐसी सामर्थ्य किसमें (और) कब रही? हे मंजुवाणी! इस धरती पर मेरे अतिरिक्त और किसी में (कभी) न रही ॥ ७३ ॥

मेरा सामना करने के लिए एक निर्बल मानव को रखकर (दिखाकर), निडर हो इस प्रकार दुर्भाषाएँ (दुर्वचन) कहनेवाली, इस (नारी) की जिह्वा को, इस तेज कुठार से समूल काटकर धरती पर फेंक दूंगा" ॥ ७४ ॥

(इस प्रकार कठोर वचन) कह, चन्द्रहास हिलाकर उठते समय कतिपय प्रिय-सुन्दरियों ने उसे रोक कर कहा ॥ ७५ ॥

"यह (सीता) कोई सुरवर (इन्द्र) है? धनंजय (अग्नि) है? सूर्यपुत्र (यम) है? यातुधान (निऋृत राक्षस) है? शरधि-विभु (वरुण) है? वायु (वायुदेव) है? पुरशासन-मित्र (विष्णु) है, भोगिभूषण (शिव) है? (जो तुम इस पर तलवार उठाओ ऐसा तो नहीं है) अपनी गुरुतर भुजशक्ति लेकर अपना क्रोध दिखाने के लिए यह कितनी है? (इसकी हस्ती ही क्या है?) इस तरुणी पर प्रताप से दारुण कृत्य (अत्याचार) करना कहाँ तक समुचित है? ॥ ७६ ॥

इस प्रकार आपका क्रोधित होना क्यों? धमकी देना ही पर्याप्त है। यह स्त्री तलवार के योग्य है क्या? हमें इस बार क्षमा करो और रक्षा करो! अब यह पर्याप्त है" ॥ ७७ ॥

इस प्रकार शान्त वचनों से प्रिय (-भाव) कहने पर, कमलाक्षियों के निवेदनों को मानकर, उस राक्षस-चक्रवर्ति ने वैदेही (सीता) की रखवाली में स्थित एकजटा, द्विजटा, त्रिजटा, दुर्मुखी, वायुमुखी, शूर्पणखा आदि दैत्यकामिनियों की ओर देखकर (कहा) ॥ ७८ ॥

"दो महीने की अवधि दी है। अपनी सीख के अनुसार उसे मेरे वश होने के लिए राजी करो। यदि वह राजी नहीं होगी तो तुम लोग उसके (शरीर के) समस्त माँस को टुकड़े-टुकड़ेकर, काटकर खा जाओ" ॥ ७९ ॥

वचनमु— अनि रोषारुणित - नेत्रुंडै यति - भीषणाकारंबुदाल्चि
पलिकिन, ॥ ८० ॥

जानकि संतापमु

कन्द— तन पति निंदिचुटकुनु
दन प्रियमुलु चॆप्प विनक तक्किन मीदन्
दनु जंपु डन्न माटकु
निनकुल - वल्लभुनिदेवि येड्चॆन् बॆलुचन् ॥ ८१ ॥

सी०- जानकि शोकिंप साध्यकिन्नर यक्ष गरुडोरगामर कांत लॆल्ल
वॆंटने शोकिंप, विनि गंधवहुपुत्रु डातमलो जिंतिचि, याग्रहमुन
नीदुष्टदैत्युपै निप्पुडे लंघिचि चॆंडाड नाचेत जिक्कॆ नेनि
कार्यंबु लॆस्सगु, गाक सत्त्वनु तूलि बलुविडि वीनिचे बडितिनेनि,

तेटगीति— सीत गानंग लेक कृशिंचि राम
भद्रुडडगिन, सीतयु ब्राण मॆडलु,
लक्ष्मणुंडुनु जूड नालस्य मुडिगि
तॆगुनु, नट्लैन गार्यंबु तॆऱगु दप्पु ॥ ८२ ॥

चम्प०- अनि पवनात्मजुंडु दिजारिपयिं दॆग वेळ गादु, भू-
तनयकु नादु राक, वसुधावरु मेलु नॆरुंगजॆप्पि, मी-
दनु मऱि चूत मंचुनुचितस्थिति नूरकयुंडॆ, नप्पुडा
दनुजविभुंडु वोयॆ निजधाममु जेर सतीसमेतुडै ॥ ८३ ॥

वचनमु— अप्पुडु यामिनीचर - कामिनुलु रावणानुमतंबुन ननेक
विधंबुलगु मधुरालापंबुल मिथिलादीशुकुमारिं गुऱिंचि
बोधिंचि कार्यंबु साधिंपनोपक, यलसि युंटंजेसि योक्किकतसेपु
निद्रिंचुचुंड, येलकनि त्रिजटयनु निशाचरि इट्लनियॆ, ॥८४॥

त्रिजटा स्वप्न वृत्तान्तमु

मत्ते०- कलगंटिन् विनुडितुलार! मनलंकाद्वीप मीयब्धि लो-
पल ग्रालन्, मन रावणेश्वरुनि शुंभद्रत्नकोटीरमुल्
कलनन् गूल रघूद्वहुंडॆलमितो गंधद्विपं बॆक्कि, यु-
ज्ज्वलकांतिन् विलसिल्लु सीत गॊनिपोवन् मिन्नकेनिप्पुडे, ॥८५॥

इस प्रकार रोष के कारण लाल-लाल आँखों से भयंकर-आकार धारणकर (रावण के) कहने पर, ।। ८० ।।

### जानकी का सन्ताप

अपने पति की निन्दाकर (तथा) अपने प्रियवचनों (हितवचन) को अनसुना कर, तिस पर अपना वध करने को कहने पर, इनकुल-वल्लभ (राम) की देवी उच्चस्वर से रो उठी ।। ८१ ।।

जानकी के शोक करने पर साध्य, किन्नर, यक्ष, गरुड़, उरग (नाग), अमर-कान्ताएँ झट रोदन करने लगीं। इसे सुनकर गन्धवह (पवन)-सुत ने मन में सोचा, क्रोध से इस दुष्ट राक्षस पर लांघकर मार डालूं। यदि वह मेरे हाथों में आ गया तो कार्य सफल हो जायेगा। नहीं तो मेरा सत्त्व बस न होकर, उसके हाथों में मैं मारा जाऊँ तो सीता को न देखकर, कृशगात्र हो राजा (राम) समाप्त हो जायेगा। सीता भी प्राण छोड़ देगी। लक्ष्मण भी इसे देखकर तुरत प्राण-त्याग करेगा। ऐसा हुआ तो मेरा कार्य का विधान बिगड़ जायेगा ।। ८२ ।।

इस प्रकार पवनात्मज ने सोचा कि दिविजारि (देवताओं का शत्रु-रावण) पर आक्रमण करने का यह अवसर नहीं है। भू-तनया (सीता) को मेरा आगमन (और) वसुधावर (रामचन्द्र) की कुशल-वार्त्ता को विदित करने के बाद देखा जायेगा। (यह सोचकर) उचितरूप से (वह) चुप रह गया। तब वह दनुज-विभु (रावण) अपनी पत्नियों के साथ निजधाम (महल) में चला गया ।। ८३ ।।

तब, यामिनीचर-कामिनियाँ (राक्षस-वनिताएँ) रावण की आज्ञा से अनेक मधुरालाप करते हुए, मिथिलाधीश-कुमारी (सीता) को समझा-बुझाकर कार्य सिद्ध करने में असमर्थ हो, थके रहने के कारण, थोड़ी देर के लिए सोने लगीं। त्रिजटा नामक निशाचरी (राक्षसी) ने जगकर इस प्रकार कहा ।। ८४ ।।

### त्रिजटा का स्वप्न वृत्तान्त

"हे वनिताओ ! सुनो ! मैंने सपना देखा है। अपने लंका-द्वीप का इस सागर में डूब जाना, अपने रावणेश्वर के गजरत्न जड़े किरीटों का युद्ध में गिर जाना, रघुराम का आनन्द के साथ गन्धेभ (मद गज) पर आरूढ़ हो, उज्ज्वल क्रान्ति से विलसित होते हुए सीता को ले जाना, (ये सब) अभी देखा है ।। ८५ ।।

कन्द— शुद्धात्मुडैन रामुडु
शुद्धांतपुदेवि गान शुभसूचकमुल्
सिद्ध मयि तोचुचुन्नवि
सिद्धं बीमाट वेद सिद्धांतमुगान् ॥ ८६ ॥

कन्द— कावुन निक्कोँमलियॆड
गावलि युन्नट्टिमीरु कठिनोक्तुलु गा-
नेवियु नाडकु डिक नी-
देवियु रक्षिप मनकु दिक्कगु मीदन् ॥ ८७ ॥

वचनमु— अनि चॆप्पि मऱियुनु, ॥ ८८ ॥

कन्द— अम्मा ! वॆऱवकु मदिलो,
निम्मुग मऱि वेड्क नुंडु मिक, नीमगडुन्
नॆम्मिग निनुगोँनिपोवुनु,
मम्मंदऱ मनुपु मम्म ! मऱवक करुणन् ॥ ८९ ॥

आट०— अनुचु दनुजकांतलंतंत नॆडबासि
निदुर वोयि, रंत नदरि सीत
तनकु दिक्कु लेमि दलपोसि दुःखिप
बवनसुतुडु मनुजभाष बलिकॆ ॥ ९० ॥

हनुमंतुडु रामुनि कुशलवार्तनु सीतकु विन्नविंचुट

कन्द— उन्नाडुलॆस्स राघवु,
डुन्नाडिदॆ कपुल गूडि, युरुगति रानॆ
युन्नाडु, निन्नु गोँनिपो
नुन्ना, डिदि निजमु नम्मु मुर्वी - तनया ! ॥ ९१ ॥

सी०- आमाट लालिंचि भूमिज तनलोन वॆऱगंदि, शिशुपावृक्ष मरसि
चूडंग, नप्पुडु सूक्ष्म रूपंबुन नोँडिकमौ शाखलनडुम नुन्न
कपिकुमारुनिरूप मपुरूपमुग जेसि स्वांतंबुलोन हर्षंबु नोँदि,
दनुजमायलचेत दऱचु वेगुट जेसि माऱाड नेरक यूरकुन्न

तेटगीति— भावमूहिंचि, तन्नु नादेवि यात्म
नम्मकुंडुट दॆलिसि, याकोँम्ममीदि
नुंडि क्रिंदकु लंघिंचि, निंडु भक्ति
म्रोँक्कि निलुचुंडि करमुलु मोड्चि पलिकॆ ॥ ९२ ॥

शुद्धात्मावाले राम (और) सीता (शुद्धान्ता पावनी सीता) देवी हैं। अतः शुभसूचक (चिह्न) सिद्धरूप से दीख पड़ रहे हैं। यह बात वेद सिद्धान्त की तरह सत्य है ॥ ८६ ॥

इसलिए इस कोमलांगी के पास रक्षा में स्थित तुम लोग, (इनके प्रति) कठोर वचन कहना मत ! आगे यह देवी ही हमारी रक्षा की एक-मात्र आश्रयदात्री होगी" ॥ ८७ ॥

इस प्रकार कहकर और (सीता के प्रति कहा) ॥ ८८ ॥

"हे माँ ! मन में डरो मत। अब आनन्द के साथ उत्साह से रहो। (क्योंकि) अब तुम्हारा पति आनन्द से तुम्हें ले जायेगा। हे माँ ! हम पर कृपाकर, हमें न भूलकर (हमारी) रक्षा करो" ॥ ८९ ॥

इस प्रकार कहकर दनुज-कान्ताएँ (राक्षस वनिताएँ) धीरे-धीरे अलग हो थोड़ी दूर पर सो गईं। सहसा सीता भयभीत हुई। अपना कोई सहारा न पाकर विलाप करने लगी। (तब) पवनसुत ने मनुष्य की भाषा में कहा ॥ ९० ॥

### हनुमान का सीता को राम की कुशलवार्त्ता का निवेदन करना

"हे उर्वीतनये (सीते) ! राम सकुशल हैं। यही कपियों को साथ ले उरुगति से आनेवाले हैं। तुम्हें ले जानेवाले हैं। यह सच है ! विश्वास करो !" ॥ ९१ ॥

उन वचनों को सुनकर, भूमिजा (सीता) अपने मन में चकित हुईं। अशोक वृक्ष की ओर ध्यान से (सीता ने) देखा। तब सूक्ष्मरूप में शाखाओं के बीच में स्थित विचित्र कपिकुमार को देखा। मन ही मन हर्षित होकर भी, दनुज की मायाओं से यदाकदा सताये जाने का स्मरण कर, कोई बात न कर, चुप रह गईं। सीता के मन की भावना को भाँपकर, उस देवी का मन से विश्वास न करते जानकर, शाखा से नीचे कूदकर, भक्ति से प्रणामकर, खड़ा हो गया और हाथ जोड़कर कहने लगा ॥ ९२ ॥

उत्प०- तम्मुनिगूडि पुण्यगुणधामुडु, रामुडुवच्चिच माल्यवं-
तम्मुन सैन्यसंघमु मुदंबुन गोल्वगनुंडि, भूमिपै
मिम्मुल जूचिरंडनुचु मेटिकपींद्रुलबुच्चिच, यंदु मों-
त्तम्मुग मम्मु गोंदरनु दक्षिण भागमुचूड बंपुचुन्, ॥ ९३ ॥

श्रीराम मुद्रिका प्रदानमु

कन्द— अंगन बोंडगन नी वि-
य्यंगनु गडु जालुवाड वंचुनु, नाचे-
नुंगर मंपेनु श्रीरघु-
पुंगवु, डिदे कोंम्मटंचु भूमिज किच्चेंन् ॥ ९४ ॥

उत्प०- इच्चिचन जूचि, रामधरणीश्वरु मुद्रिकगा नेरिंगि, ता-
निच्चनु[1] मेंच्चि मेंच्चि, तरुणीमणि यात्म गतंबुनंदु नी-
वच्चिनदानि भावमुनु, वल्लभु चंदमु नेर्पडंग, ने-
जोंच्चेर नंतयुं देलिय जेंप्पुम नम्मिक पुट्टुनट्लुगन् ॥ ९५ ॥

वचनमु— अनि विचारिंचि इट्लनियें : ॥ ९६ ॥

कन्द— निनु विश्वसिपजालनु,
विनुपिंपुमु नीतेरंगु, विभुनि[2] तेरंगु-
न्ननवुडु बावनि तेलियग
विनयंबुन विन्नविंचें विस्फुट फणितिन् ॥ ९७ ॥

उत्प०- रामुनि डागुरिंचि, निनु रावणु डेत्तुक वच्चु वेळ, नी-
हेम विभूषणावळुल नेर्पड ऋश्य महाद्रि वैचिनन्
मे मवि तीसि दाचितिमि, मी पति यच्चटि केगुदेरगा
दामरसाप्त नंदनुडु तानवि सूपिन जूचि मेंच्युचुन् ॥ ९८ ॥

सी०- अर्कसंभवुनकु नभयंबु दयचेसि, दुंदुभि कायम्मु दूलदन्नि,
येडु ताडुल सर्व मेकम्मुगा द्रुंचि, वालि नद्भुत शक्ति गूल नेसि,
सुग्रीवुनकु दार सुदतिगानिप्पिचि, यंगदु युवराजनंग निलिपि,
वारलतोडनु वानर सैन्यंबु लेन्नेनि गोलुवंग नेगुदेंचि,

---

१. निच्चनु मेंचिच याकुवलयेक्षण यात्मगतंबुनंदु नी ।

२. विभुनि विधमु ना कनवुडु बावनि तेलियग ।

"पुण्य गुणधाम राम, भाई लक्ष्मण के साथ आकर माल्यवन्त (पर्वत) पर, सेनाओं के आनन्द से सेवाएँ करने पर, विराजमान हैं। धरती पर (कहीं भी क्यों न हों) आपको देखकर आने के लिए श्रेष्ठ कपिवरों को भेजकर, (मन में विचारकर) हम कुछ लोगों को इकट्ठे दक्षिण दिशा में भेजा है ॥ ९३ ॥

**श्रीराम का मुद्रिका प्रदान करना**

अँगना (सीता) को देखने तथा इसे देने में तुम समर्थ हो, (ऐसा कहते हुए) मेरे हाथ श्रीराम ने अँगूठी भेज दी। यह लीजिये" (कहते हुए) भूमिजा (सीता) को (हनुमान ने) अँगूठी दी ॥ ९४ ॥

देने पर (उसने) देखा (और) धरणीश्वर (रामचन्द्र) की मुद्रिका (अँगूठी) जानकर मन ही मन आनन्दित हुई। तरुणी-मणि (सीता) ने मन में कहा कि "पहले अपने आगमन के भाव (प्रयोजन) (और) वल्लभ (राम) का कुशल समाचार शीघ्र विदित करो; ताकि मैं विश्वास करूँ" ॥ ९५ ॥

इस प्रकार विचार कर (सीता ने) यों कहा, ॥ ९६ ॥

"मैं तुम पर भरोसा नहीं कर सकती। अपनी रीति सुना (परिचय) दो। राम के बारे में सुनाओ।" पूछने पर पावनी ने विनय के साथ विशद रूप से (सारी कथा का) निवेदन किया ॥ ९७ ॥

"राम को धोखा देकर आपको रावण के ले आते समय, आपकी (फेंकी हुई) हेम-भूषणावली (सोने के गहने) के ऋष्य-महाद्रि (ऋष्यमूक पर्वत) पर गिरने पर, हम लोगों ने उनको लेकर सुरक्षित रख लिया। आपके पति के आने पर तामरसाप्त-नन्दन (सूर्यसुत-सुग्रीव) के उनको दिखाने पर, राम ने उन्हें देखकर शाबाशी दी (और) (आनन्दित हुए) ॥ ९८ ॥

अर्क-सम्भव (सुग्रीव) को अभयदान देकर, दुन्दुभि के शरीर को दूर फेंककर, सप्तताल वृक्षों को एक साथ गिराकर, अद्भुत शक्ति से वालि को धराशायी कर सुग्रीव को, पत्नी के रूप में तारा को दिलाकर, अंगद को युवराज के पद पर प्रतिष्ठित कर, उनके साथ अनेक वानर सेनाओं की सेवाएँ करते रहने पर, आकर, माल्यवन्त पर विराजमान हुए।

तेटगीति– मालयवंतंबुनंदुंडि, मनुजविभुडु
निन्नु वेंदकंग नंदर नन्निदिशल
बनुचुनप्पुडु, दक्षिण भाग मरय-
नंगदुनि तोड गोंदर मरुगुदेर ।। ९९ ।।

तेटगीति– वारि पंपुन नवलील वार्धि दाटि
वच्चि सकलंबु जूचि ई वंक गंटि
रावणुडु वच्चि निन्नु नुग्रंबुगाग
बलुकुनप्पुडु नुन्नाड बादपमुन ।।१००।।

हनुमंतुडु श्रीरामुनि शोभन गुणमुलनु वर्णिंचुट

वचनमु— इव्विधंबुन बलुकुचुंडिननु नम्मक यतनिं गनुंगोनि रामुडेरीतिवाडो यतनि चंदंबेरिंगिपु मनवुडा वायुनंदनुंडु, रघुनंदनुनकु वंदनं बाचरिंचि, भूमिनंदन किट्लनि चेप्पुचुन्नाडु : ।। १०१ ।।

सी०- नीलमेघच्छाय बोलु देहमु वाडु, धवळब्जपत्र नेत्रमुलवाडु
कंबुसन्निभमैन कंठंबु गलवाडु, चक्कनि पनीवक्षंबु वाडु
तिन्ननै कनुपट्टु दीर्घबाहुलवाडु, घनमैन दुंदुभि स्वनमुवाडु
पद्मरेखलु गल्गु पद युगंबुलवाडु, बागैन यट्टि गुल्फमुलवाडु

तेटगीति– कपट मेरुगनि सत्यवाक्यमुलवाडु
रमणि ! रामुंडु शुभलक्षणमुलवाडु
इन्नि गुणमुल रूपिप नेसगुवाडु
वरुस सौमित्रि बंगारु वन्नेवाडु ।।१०२।।

तेटगीति– उरुतराटविलोन महोग्रतपमु
वायुदेवुनि गुर्रियिंचि वरुस जेसि
यंजनादेवि गनियें नन्नर्थितोड
नर्कजुनिमंत्रि, हनुमंतुडंड्र नन्नु ।।१०३।।

वचनमु— अनिइट्लु तात्पर्यंबु पुट्टुनट्लुगा विन्नविंचि देवी ! नी देवुंडयिन श्रीरामुंडु नाचेति किच्चि यंपिन नूत्न रत्नांगुळीयकंबु नीकु समर्पिंचिति, निंक रिक्त हस्तंबुलतो जनुट दूतल कुचितमैन कार्यंबु गादु, कावुन निन्नु दर्शिंचि नंदुलकु श्रीरामुनकुनु नम्मिक पुट्टुनट्लुगा नी शिरोरत्नंबु नाकु दयचेयवलयु ननुटयु ना कुशेशय नयन इट्लनियें: ।।१०४।।

मनुज-विभु (राम) के आपको ढूँढ़ने के लिए सब लोगों को सब दिशाओं में भेजते समय, हम कतिपय लोग अंगद के साथ दक्षिण दिशा की ओर रवाना हुए ॥ ९९ ॥

उनके भेजने पर, मैंने अतिसरल रीति से सागर को लाँघकर यहाँ की सारी चीज़ें देखकर, (और) यहाँ आपको देखा। रावण के आकर आप पर कुपित हो परुषवचन कहते समय मैं पादप(वृक्ष)पर था" ॥१००॥

### हनुमान का श्रीराम के सुशोभित गुणों का वर्णन करना

इस प्रकार कहने पर भी विश्वास न करते हुए (सीता ने) कहा— "राम किस प्रकार का है? उनकी रीति क्या है? विदित करो।" वायुनन्दन ने रघुनन्दन की वन्दना कर भूमि-नन्दना (सीता) से इस प्रकार कहा— ॥ १०१ ॥

"(राम) नील मेघ की छाया सदृश देहवाला है। धवल कमल-पत्र के समान नेत्रोंवाला है। शंख के समान कण्ठवाला है। पीन (विशाल) वक्षस्थल वाला है। सीधी दिखाई देनेवाली दीर्घ बाहुओं वाला है। घनतर दुंदुभि का स्वर वाला है। पद्मरेखाओं से विराजित चरण-युगल वाला है। सुदृढ़ गुल्फों (एड़ी के ऊपर की गाँठों) वाला है। कपट को न जानने वाले सत्य वचन वाला है। हे रमणी! राम शुभ लक्षण-वाला है। इतने सारे गुणों से सुशोभित है वह। भाई सौमित्र (लक्ष्मण) सुवर्ण कान्तिवाला है ॥ १०२ ॥

अंजना देवी ने घने जंगल में वायुदेव के प्रति महोग्र तपकर, प्रार्थना कर, मुझे बड़ी इच्छा से जन्म दिया है। (मैं) अर्कज (सुग्रीव) का मंत्री हूँ। मुझे हनुमान कहते हैं" ॥ १०३ ॥

इस प्रकार अपने अभिप्राय को विदित कर कहा— "देवी! आपके देव श्रीराम के द्वारा मेरे हाथों भेजी गई यह रत्नों की नई अंगूठी मैंने आपको समर्पित की। अब खाली हाथों जाना दूतों के लिए उचित कार्य नहीं। 'आपके दर्शन किये हैं।' इसका विश्वास जताने के लिए आपका शिरोरत्न दीजिये।" इस पर कुशेशय-नयना (कमल नयना-सीता) ने इस प्रकार कहा— ॥ १०४ ॥

सीत तन चूडामणि नानवालुग हनुमंतुनकु निच्चुट

कन्द— ना नाथु क्षेममंतयु
धीनिधि ! नीचेत विंटि देलियग, नैनन्
नी निजरूपमु चूडक
ने नारत्नंबु नम्मि नीकीय जुमी ! ॥१०५॥

वचनमु— अनुटयु ना हनुमंतुंडु, ॥ १०६ ॥

आकसमंट बेंचिन हनुम रूपमु

कन्द— चुक्कलु तलपूवुलुगा[1]
नक्कजमुग मेनुवेंचि यंबर वीथिन्
वेक्कसमै चूपट्टिन
नक्कोमलि मुदमु नोंदे नात्मस्थितिकिन् ॥१०७॥

वचनमु— इट्लु तन महोन्नत रूपंबु चूपि येप्पटियट्ल मरल सूक्ष्म-
रूपंबु गैकोनि नमस्करिंचिन, ना हनुमंतुनकु नद्देवि तन
शिरोरत्नंबु ननुग्रहिंचि इट्लनिये : ॥ १०८ ॥

श्रीरामुनकु सीता संदेशमु

चम्प०-रविकुल वार्धि-चंद्रुडगु रामुनि सेममु चाल विंटि, ना
विविधमु लैनपाट्लु पृथिवीपतिकि दग जेप्पगलगे ने-
डविरळ भंगि नी वलन, नच्चुग ने नुपकार मेमियु
दविलि योनर्पलेनु, वसुधास्थलि वर्धिलु ब्रह्मकल्पमुल् ॥१०९॥

वचनमु— इट्लु दीविंचि मरियुनु, ॥ ११० ॥

कन्द— ए येड जूचिन धरणी-
नायकु श्रीपाद - युगमु ना चित्तमुलो
बायदनि विन्नविपुमु
वायुतनूभवुड ! पुण्यवंतुड ! तेलियन् ॥१११॥

तेटगीति— इपुडु रावणुडेतेंचि कपट बुद्धि,
गर्वमुनजेसि नन्नेन्नि कारुलाडे,
नन्नियुनु नीवु चेवुलार विन्न तेरगु
पतिकि दय पुट्टगा विन्नपंबुसेयु ॥११२॥

---

१. मौल पूसलुगा ।

### सीता का अपनी चूड़ामणि पहचान के रूप में हनुमान को देना

"धीनिधि ! मेरे नाथ का क्षेम (कुशल-समाचार) तुम्हारे द्वारा सुन लिया। फिर भी तुम्हारे निजरूप को देखे बिना मैं अपने रत्न को नहीं दूंगी" ॥ १०५ ॥

कहने पर हनुमान ने, ॥ १०६ ॥

### आकाश को छूता हुआ हनुमान का रूप

तारे सिर के फूल बनें, ऐसा विचित्र रीति से शरीर को आकाश वीथी में अति विस्तृत रूप से बढ़ाकर दिखाया। (देखकर) मन ही मन वह कोमली (सीता) आनन्दित हुई। (आश्वस्त हुई।) ॥ १०७ ॥

इस प्रकार अपने महोन्नत रूप को दिखाकर यथावत् फिर सूक्ष्मरूप को धारणकर हनुमान ने नमस्कार किया। उस देवी ने अपना शिरोरत्न (सीसफूल) देते हुए, उस हनुमान से इस प्रकार कहा— ॥ १०८ ॥

### श्रीराम को सीता का सन्देश

"रविकुल सागर के चन्द्र राम के कुशल (समाचार) (मैं) खूब सुन सकी हूँ और अपनी विविध दुखभरी यातनाएँ पृथ्वीपति को आज अविरल गति से तुम्हारे द्वारा विशद रूप से प्रेषित कर सकी। मैं ठीक ढंग से कुछ उपकार कर नहीं सकती। (आशीष के अतिरिक्त कुछ दे नहीं सकती। अतः) वसुधा स्थल पर ब्रह्म-कल्पों तक प्रवृद्ध (चिरंजीव) होकर रहो" ॥ १०९ ॥

इस प्रकार आशीष देकर, फिर, (कहा)— ॥ ११० ॥

"यह निवेदन करो कि मेरे हृदय में जिधर देखो उधर (जिस किसी भी प्रकार से देखें) धरणी-नायक (श्रीराम) के श्रीचरण-युगल बिछुड़े बिना (बसे हुए) हैं। हे वायुतनूभव ! पुण्यवान ! यह समझाकर कहो ! ॥ १११ ॥

अभी रावण ने आकर कपट बुद्धि से और गर्व के साथ मुझे जो-जो परुष वचन सुनाये हैं, (उन सबको) तुमने जिस प्रकार से सुना है, (मेरे) पति के मन में कृपा उत्पन्न हो, इस प्रकार निवेदन करो ॥ ११२ ॥

सीसमु—
निड्डुद पॆन्नॆरि वेणि जडलुगा सवरिंचि, मलिन जीर्णांबरंबॊलिय गट्टि,
भूमिरजंबु विभूति पूतग बूसि, तन पति मूर्ति जित्तमुन निलिप,
निरशन स्थिति तोड निलिचि भूशय्यनु बवळिंचि निदुर येपॆडग
विडिचि, तारक ब्रह्म मंत्रंबु बठिंपुचु कठिन राक्षस दुर्मृगमुललोन,

तेटगीति— नहितलंका महाद्वीप गहन सीम
दपमु सेयुचुनुन्नानु तन्नु गूर्चि,
नाकु व्रत्यक्षमगु मनि नाथुनकुनु
विन्नविंपुमु सत्त्वसंपन्न ! नीवु ॥११३॥

वचनमु— अनि चॆप्पि मरियुनु, ॥ ११४ ॥

चम्प०- जनकुनि भंगि रामनृपचंद्रुनि, नन्नुनु दलिमारुगा
गनि, कॊलुवंग नेर्चु गुणगण्युनि, लक्ष्मणु नीति पारगुन्
विन गन रानि पल्कु लविवेकमुचेतनु बल्किनट्टि या
विनुत महाफलं बनुभविंचिति नंचुनु जाटि चॆप्पुमा ॥११५॥

कन्द— आमाटलु मदि नुंचक
ना मानमु गावु मनुचु नय विनय गुणो-
द्दामुडु, रामुनि तम्मुडु,
सौमित्रिकि जॆप्पवय्य साहसिवर्या ! ॥११६॥

वचनमु— अनि इट्लु जनकराज-तनय पलिकिन पलुकु लालकिंचि
हनुमंतुं डाजननितो निट्लनियॆ : ॥ ११७ ॥

कन्द— इनु डुदयिंपक मुन्ने
वननिधि लंघिंचि, मनुज वल्लभुकडकुन्
निनु गॊनिपोयॆद, वीपुन
जननी ! विच्चेयुमनिन, संतोषमुनन् ॥११८॥

कन्द— नी वंतवाड वगुदुवु,
नी वॆंटनॆ वत्तुनेनि नॆगडवु कीर्त्तुल्
रावणुकंटॆनु मिक्किलि
भूवरुडे दॊंग यंडु बुधनुत चरिता ! ॥११९॥

वचनमु— अदियुनुं गाक रामचंद्रुनि दप्प नितरुल नंटुदानंगानु,
गावुन नीतो रादगदु मरियुनु, ॥ १२० ॥

लम्बी-चौड़ी, पूर्ण वेणी को जटा के रूप में सँवारकर, मलिन जीर्णाम्बरों को पहनकर, भूमिरज (धूलि) का विभूति के रूप में लेपन कर, अपने पति के रूप को चित्त में धारणकर, अनशन (उपवास) -स्थिति में भूमि रूपी शय्या पर लेटकर, निद्रा को त्यागकर, तारक-ब्रह्म-मंत्र का पाठ करते हुए, घोर राक्षस रूपी दुष्ट मृगों के बीच में, अहितकारी लंका महाद्वीप रूपी गहन (कानन)-सीमा में उन (राम) के लिए तप कर रही हूँ। हे सत्त्व-सम्पन्न ! तुम नाथ से निवेदन करो कि (वे शीघ्र) मेरे समक्ष प्रत्यक्ष हो जायें" ।। ११३ ।।

इस प्रकार कहकर, फिर, ।। ११४ ।।

राम नृप चन्द्र को जनक (पिता) के समान (और) मुझे माता के समान (मानकर) सेवा करने वाले गुणगण्य (एवं) नीति पारंगत लक्ष्मण को अविवेक से मैंने कठोर वचन कहे थे। यह घोषणा करके कहो कि उसका (उस बुराई का) विनुत महाफल भोग चुकी हूँ ।। ११५ ।।

"हे साहसवर ! नय-विनय के गुणोद्दाम, राम के अनुज, सौमित्र (लक्ष्मण) से कहो कि (मेरे) उन वचनों को मन में न रखकर, मेरे मान की रक्षा करे" ।। ११६ ।।

इस प्रकार जनकराज-तनया (सीता) के वचन सुनकर हनुमान ने उस माता से यों कहा— ।। ११७ ।।

"सूर्योदय से पहले सागर को लाँघकर, मनुज-वल्लभ (राम) के पास, पीठ पर बिठाकर आपको पहुँचा दूँगा। माँ, चलो ! आनन्द से" (हनुमान के इस प्रकार कहने पर,) ।। ११८ ।।

"हे बुध-नुत-चरित्र (वाले) ! तुम उतने ही समर्थ हो ! (किन्तु) तुम्हारे साथ (निकलकर) चली आ जाऊँ तो कीर्तियाँ नहीं रहेंगी। लोग कहेंगे कि रावण की अपेक्षा भूवर (राम) ही अधिक चोर है ।। ११९ ।।

यही नहीं, राम को छोड़कर अन्यों का स्पर्श करनेवाली नहीं हूँ। इसलिए तुम्हारे साथ आना नहीं चाहिए। और, ।। १२० ।।

कन्द— दोंगिलि तेंच्चिन दैत्युनि
संगडु लगु वानि वारि साहस मोंप्पन्
संगर मुखमुन जंपक
दोंगिलि कोंनिपोव दगुने दोरलकु नेंदुन् ॥१२१॥

वचनमु— मरियु रामचंद्रुंडु त्रिजगदेक वीरुंडनु, गोदंड दीक्षागुरुंडुनु, राक्षस कुलांतकुंडुनु नगुटंजेसि राणिवास-द्रोहि यगु रावणुनि संगरंबुन ब्रख्यातंबुगा जंपि कोंनिपोवुट धर्मंबु; नीवु रामचंद्रुनकु बरम भृत्युंडवुनु, बुत्र समुंडवुनु नगुटं जेसि, नी वेंट नरुगुदेंचुट तप्पु गाकबोयिननु, बग तीर्पक वच्चु टुचितंबु गादु, कावुन राघवेश्वरुल किन्नियुं देलिय विन्नपंबु सेसि तडयक तोड्कोंनि रम्मनिन नद्देविकि नमस्करिंचि हनुमंतु डिट्लनिये : ॥ १२२ ॥

उत्प०— नी विभु डब्धि दाटि,धरणीतल नाथुलु सन्नुतिप सु-
ग्रीव सुषेण मुख्य बल बृंदमुतो नरुदेंचि, नीचुनिन्
रावणु नाजिलो दुनिमि,राजस मोंप्पग निन्नु गोंचु,से-
नावाळितोड नी पुरिकि नारय नेगु निजंबु नम्मुमा ॥१२३॥

वचनमु— अनि विन्नविंचि नम्रुंडै यद्देविचेत दीवेनलु पोंदि, मरलि चनुचुन्नवाडै तनराक रावणुन केरुंग जेयवलयु ननि तलंचि, ॥ १२४ ॥

## हनुमंतुनि विक्रम विहारमु

सी०- मेदिनि सममुगा मेडलु गार्विचि, केळीगृहंबुल नेल गलिपि,
कमलाकरंबुलु कलचि गारलु वेंट्टि, वृक्षजातंबुल विरुग दन्नि,
पुष्पगुच्छंबुलु पुणिकि पारगवैचि, तेनेलु रालिच पूदेने लुडिपि,
पोंदरिड्ल पोंडवुलु चदियगा नुग्गाडि, चप्परंबुल नेल चदुनुजेसि,
तेटगीति— वनमु गाचेंडि राक्षस वर्गमुलनु
वीर वरुलनु, नेनिमिदि वेल जंप,
सीत गाचेंडि राक्षस स्त्रीलु बेंदरि
पारिपोयिरि रावणु पालि कंत ॥१२५॥

वचनमु— इट्लु रावणुं जेरि वारु, ॥ १२६ ॥

चोरी से (मुझे) लाये उस राक्षस को, उसके साथियों सहित (बन्धु-वर्ग सहित) साहस के साथ संग्राम में वध किये बिना (फिर) चोरी से ले जाना कहीं राजाओं (गौरवशालियों) को समुचित है क्या? ॥ १२१ ॥

और भी, रामचन्द्र तीनों जगत में एक ही वीर है, कोदण्ड-दीक्षा-गुरु है। राक्षस-कुल का अन्तक है। (इसलिए) रनिवास का द्रोही रावण को संग्राम में प्रकट रूप से (प्रख्यात रूप से) वधकर (मुझे) ले जाना धर्म है। तुम रामचन्द्र के परम भृत्य (सेवक) हो, पुत्र के समान हो। तुम्हारे साथ निकल चलने में कोई दोष नहीं है। फिर भी बदला लिये बिना (प्रतिशोध लिये बिना) चलना ठीक नहीं। इसलिए राघवेश्वर को इन सबका निवेदनकर अवश्य ले आओ।" ऐसा कहने पर उस देवी को नमस्कार कर हनुमान ने इस प्रकार कहा— ॥ १२२ ॥

"आपके विभु सागर पारकर, धरणीतल के राजा-समूह प्रस्तुति करे, इस प्रकार, सुग्रीव, सुषेण आदि मुख्य बल-वृन्द के साथ आकर, संग्राम में, नीच रावण का, युद्ध में वधकर, राजस (ठाठ-बाठ, धूमधाम) के साथ, आपको साथ लेते हुए, सेनावली के साथ, अपनी पुरी को अवश्य जायेंगे। यह सच है। विश्वास करो" ॥ १२३ ॥

इस प्रकार निवेदन कर, नम्र हो, उस देवी से आशीष पाकर, वापस चलते हुए अपने आगमन के बारे में रावण को विदित करने की इच्छा कर, ॥ १२४ ॥

### हनुमान का विक्रम-विहार

(हनुमान ने) महलों को मेदिनी (धरती) के समान (धराशायी कर), केली-गृहों को मिट्टी में मिलाकर, कमलाकरों (सरोवरों) को विलोड़ित कर, वृक्षों के समूहों को लात मारकर, तोड़ गिराकर, पुष्प गुच्छों को चुन-चुनकर उखाड़ फेंक, (शहद के) छत्तों को पीसकर, मधु लुढ़काकर, निकुंजों को चकनाचूर कर, छप्परों को मटियामेट कर, वन के रक्षक राक्षसवर्गों को एवं आठ हज़ार वीर-वरों को मार डाला। तब सीता की रक्षा करने वाली राक्षस-स्त्रियाँ भयभीत हो, रावण के यहाँ भाग गईं ॥ १२५ ॥

इस प्रकार रावण के समीप जाकर उन्होंने, (कहा)— ॥ १२६ ॥

कन्द— देवा ! नेडोंक मर्कटु
डे विधमुन वच्चिनाडो येरुगमु, सीता
देवि गनि . माटलाडियु
बोवुचु वनमेल्ल बेंरिकि प्रोविडि कडकन् ॥१२७॥

तेटगीति— वनमु गाचेंडि राक्षस वर्गमुलनु
दंडि नोंकनिन विडिवोव कुंड बट्टि,
मेंटि भुजशक्ति नंदरु गीटडिंचि,
वालियुन्नाडु साहसवंतुडगुचु ॥१२८॥

कपिवीरुडु राक्षसवीरुलनु गसिमसंगुट

वचनमु— अनि विन्नविंचिनंतने क्रोधरक्तांत लोचनुंडगुचु, नव्विंशति-लोचनुंडु विचारिंचि, वाडु रामुनिपंपुन वच्चिन दूत काबोलु; वानि जंपुंडनि पदिवेल राक्षसुलं बंपिन ॥१२९॥

कन्द— उग्राकारुंडगुचु द-
शग्रीवुं डनुप, दनुज संघंबुलु दा-
माग्रहमुन जनुचु बलो-
दग्र क्रोधात्मु लगुचु दाकिरि कडिमिन् ॥१३०॥

उत्प०— ताकिन यंत, वायुजुडु ता नदलिंचि कठोर रेखतो
वीक नेंदिर्चि पेर्चि,रणवीथि निशाचर सैन्यमेल्ल नों-
क्कूकुन वेंट नंटि समदोग्रबलंबुन बारु बारुगा
दोकनु जुट्टि मोदे, बलु दुर्दमुलं दुनुमाडे नंदरिन् ॥१३१॥

कन्द— अंदुन जावक मिगिलिन
कोंदरु परतेंचि, यसुर कोल्वुन मोरो
यंदरु म्रिगेनु, दानवु
लंदरकुनु वीडु दारुणांतकु डगुचुन् ॥१३२॥

वचनमु— अनि विन्नविंचिन राक्षसेश्वरुंडगु रावणुंडु मंडिपडि, पिंगळाक्षुनि, दीर्घजिह्वुनि, नश्मवक्षुनि, शार्दूलमुखुनि, वक्रनासुनि बनिचिन, वारुनु दम तम बलंबुलं गूडिकोनि, रथारूढुलै वच्चि, यार्चुचुं दाकि, शस्त्रास्त्रंबु लर्डरिंचिन नवियेल्ल लेक्कगोनक, यक्करुवलि-कोडुकु दर्पंबुनं बेर्चि, वालमल्लार्चि, येदिर्चिन बलंबुनु बलुविडिगा दोलि;

"हे देव ! आज एक बन्दर पता नहीं कैसे आया है, (आकर) सीता देवी से बातकर (वापस) जाते समय सारे वन को साहस के साथ सत्यानाश कर दिया ।। १२७ ।।

वन की रक्षा करनेवाले राक्षसवर्ग में से एक को भी न छोड़कर, पकड़कर, अतुल भुज-शक्ति से सबको मारकर, साहसी बन, डटा हुआ है" ।। १२८ ।।

### कपिवीर का रोष के साथ राक्षसवीरों का नाश करना

इस प्रकार निवेदन करते ही क्रोध-रक्ताँत-लोचनवाला होता हुआ, उस बीसों आँखोंवाले (रावण) ने विचार किया कि सम्भवत: वह राम की आज्ञा से आया हुआ दूत होगा। उसका वध करने के लिए दस हज़ार राक्षसों को भेजा ।। १२९ ।।

उग्ररूप धारणकर दशग्रीव (रावण) के भेजने पर दनुज-संघ (-समूह) क्रोध से निकल पड़ा। बल (तथा) उदग्र-क्रोध से भरी आत्मा वाले हो, साहस से हनुमान का सामना किया ।। १३० ।।

(उनके) सामना करने पर वायुज (पवनसुत) ने धमकाकर, कठोर रेखा से, गर्व के साथ सामनाकर, सिंहनादकर, रणरंग में निशाचर सेना को एक झोंके में पीछाकर, उग्र बलशक्ति से उनको भगा-भगाकर, पूँछ से बाँधकर मारा, (और) बहुत सारे भयंकर राक्षसों को मार डाला ।। १३१ ।।

उनमें मरने से बचे हुए कुछ (लोगों) ने भागकर, असुर सभा में (पहुँचकर) कहा कि "हाय ! इसने सबको निगल डाला है। समस्त दानवों के लिए यह भयंकर अन्तक सा बन गया है" ।। १३२ ।।

इस प्रकार निवेदन करने पर राक्षसेश्वर ने आग बबूला होकर पिंगलाक्ष, दीर्घ जिह्व, अश्म वक्ष, शार्दूलमुख, (तथा) वक्रनास को भेजा। वे भी अपनी-अपनी सेनाओं के साथ जुड़कर रथारूढ़ हो आये। सिंहनाद करते हुए सामनाकर, शस्त्रास्त्रों को फेंका तो उन सबकी परवाह न कर पवनसुत ने बड़े गर्व के साथ, क्रम से पूँछ को हिलाकर, समक्ष आई सेनाओं को बरज़ोरी भगाया, पिंगलाक्ष का वध किया।

पिंगळाक्षुनि द्रुंचि, दीर्घजिह्वुनि दीर्घ-निद्र पुच्चि,
वक्रनासुनि बराक्रमंबुनं जूर्णबु सेसि, यशमवक्षुनि
भस्मंबुजेसि, शार्दूलमुखुनि मर्दिंचि, निर्विक्रपराक्रमंबुन
गर्विंचि, मरलि मकर तोरणंबु नारोहिंचि, यार्चुचुन्न
समयंबुन, ।। १३३ ।।

कन्द— चावक मिगिलिन दैत्युलु
रावणु कडकेगि वेग राहुत्तुल पा-
ट्ला वायुजु साहसमुनु
वे विधमुल जेप्प नतडु विस्मयपडुचुन ।।१३४।।

मत्ते०- कुटिल भ्रूकुटि दुर्निरीक्षणमुलं ग्रोधानल ज्वाल लु-
त्कटमै पर्वग, मंत्रि सूनुल, महा गर्वांधुलन्, ग्रूरुलन्
बटु बाहाबलु रार्वुरं बनिचे, शुंभद्विक्रमाटोप म-
र्कट पारींद्रमु मीद नुद्दविडि संग्रामंबु गाविंपगन् ।।१३५।।

वचनमु— इट्ळु पनिचिन ना यार्वुरुनु, ।। १३६ ।।

सी०- शतकोटि विक्रम प्रतिमानु डैनट्टि शतजिह्वु डत्यंत साहसुंडु,
रोषानलाभील शेषाहि यैनट्टि रुधिराक्षु डत्युग्र रूपयुतुडु,
पर-सैन्य कानन-पावकु डैनट्टि रक्तरोमुंडु महा रण बलुंडु,
कठिन-शात्रवलोक गज-सिंहु डैनट्टि शूरदंष्ट्रुडु लयकालहरुडु,

तेटगीति— व्याघ्र - कबळुंडु पृथुतराहव जयुंडु,
स्तनित - हस्तुंडु साहसोदार बलुंडु,
वीर लार्वुरु नत्युग्र वेषमुलनु
रूढि वेंडलिरि घन रथारूढु लगुचु ।।१३७।।

कन्द— तम तम बिरुदुलु नेऱपुचु
दमकंबुन वेंडलि रधिक दळमुलु गोलुवन्
घुमघुम भेरी रव सं-
भ्रममुलतो मंत्रि सुतुलु पावनि मीदन् ।।१३८।।

वचनमु— इट्लु कदिसि सिंहनादंबु लंबरंबुनं जेलंग, गज
तुरंग शतांग सुभट निकरंबु गूडि शस्त्रास्त्रंबुलं
बोंदिविन ।।१३९।।

दीर्घ जिह्व को दीर्घ निद्रा के वश कर दिया। वक्रनास के पराक्रम को चूर्ण कर दिया। अश्मवक्ष को भस्मीभूत किया। शार्दूलमुख का मर्दन किया। (तदनन्तर) निर्वक्र पराक्रम से गर्वित हो, मकर तोरण पर आरूढ़ होकर सिंहनाद करते समय ॥ १३३ ॥

मरने से बचे राक्षसों ने रावण के यहाँ जाकर झट से, घुड़सवारों पर आई विपत्तियों (एवं) वायुज (पवनसुत) के साहस का हज़ारों रीतियों से वर्णन किया। (करने पर) वह (रावण) आश्चर्यचकित हुआ ॥ १३४ ॥

कुटिल भृकुटि तथा भयंकर दृष्टियों से क्रोधानल की ज्वालाओं के अधिक हो प्रसारित होने पर, महागर्वान्ध, क्रूर, अतुल बलशाली, छ: मंत्रिकुमारों को शुम्भत्-विक्रम-आरोप से युक्त कपिसिंह पर संग्राम करने भेजा ॥ १३५ ॥

इस प्रकार भेजने पर उन छ: लोगों में ॥ १३६ ॥

शतकोटि पराक्रमशाली वीरों के समान अत्यन्त साहसी है शत जिह्व। रोषानल में भयंकर शेषनाग बना उग्ररूपवाला है रुधिराक्ष। शत्रुसेना रूपी वन के लिए अग्नि के समान महारण-बलशाली है रक्तरोम। घोर शत्रुलोक रूपी गज के लिए सिंह (तथा) प्रलयकाल के रुद्र के समान है शूरदंष्ट्र। पृथुतर-आहव (भयंकर युद्ध) में विजयी है, व्याघ्र-कवल। साहसी तथा अत्यन्त बलशाली है स्तनित हस्त। ये छ: (वीर मंत्रिकुमार) अति उग्रवेष में, दृढ़ निश्चय के साथ, रथों पर आरूढ़ होकर, निकले ॥ १३७ ॥

अपनी-अपनी बिरुदावलियों के अनुरूप शीघ्रगति से, औत्सुक्य के साथ, अत्यधिक सेनाओं की सेवाएँ करते रहने पर, भेरी-निनाद करते हुए, ससम्भ्रम (रीति से) मंत्रिकुमार पावनि (हनुमान) पर आक्रमण करने के लिए चल पड़े ॥ १३८ ॥

इस प्रकार नियराकर, आकाश में सिंहनादों के फैलते रहने पर, गज, तुरग, रथ, सुभट समूह के साथ शस्त्रास्त्रों से घेर लेने पर ॥ १३९ ॥

तेटगीति— वाल मल्लार्चि, ब्रह्मांड गोळमॅल्ल
पगुल नार्चुचु, भुज युगं बप्पळिंचि,
रणमु चेयंग मकरतोरणमु डिग्गि
मंतु कॅक्किन या हनुमंतु डंत ॥१४०॥

सीसमु—
ऑक्कॉक्क रथमुतो नॉक्कॉक्क रथमुनु विटताटनंबुगा विरुग गॉट्टि,
यॉक्कॉक्क गजमुतो नॉक्कॉक्क गजमुनु जापचुट्टग बट्टि चाव गॉट्टि,
यॉक्कॉक्क हयमुतो नॉक्कॉक्क हयमुनु वालमुखंबुन गूलगॉट्टि,
यॉक्कॉक्क भटुनितो नॉक्कॉक्क सुभटुनि वडिद्रिप्पि चॅक्कलु वाड़ गॉट्टि,

तेटगीति— बाहुबल गर्वमुन बेॅर्चि, प्रथन सीम
मंत्रि - सूनुल नार्वुर मडिय गॉट्टि,
मकर तोरणमुन विक्रमम्मु मॅड़य
भीकराकारुडै युंडॆ बॆच्चुपॅरिगि ॥१४१॥

कन्द— आ रण वीथिनि निलुवक
पाड़िन हतशेषुलॅल्ल बर्विडि, राज-
द्वारमुन बॉब्ब लिडि, रा-
घोराजिनि मंत्रि सुतुलु कूलि रटंचुन् ॥१४२॥

वचनमु— वारि पाटु विनि रावणासुरुं डदिरिपडि, याज्याहुतिं
ब्रज्वरिल्लु हुताशनुं बोलि मंडिपडि प्रहस्त तनूजुंडगु
जंबुमालिं गनि, नी वा वानराधमुनि वधिंचि शीघ्रम्मु
रम्मनि यनिपिन, ॥ १४३ ॥

हनुमंतुडु जंबुमालिनि रूपमापुट

उत्प०— अप्पुडु जंबुमालि भयदाकृति, वीर रसाप्ति गन्नुलन्
निप्पुलु राल, बेरलुक निंडग, नूर्पुलु पर्व, जित्रमै
यॉप्पुग रॉप्पुचुन्, रप्प महोत्सुकुडै गजवाजि बृंदमुल्
विप्पुग वॅंटराग, गपिवीरु नॆदुकॉनि विक्रमंबुनन्, ॥१४४॥

कन्द— अदलिंचि, वायुनंदनु
ब्रदरंबुल नेय, नंत बवनजु डलुकन्
गॉदगॉनि बलमुल नन्निटि
जदियंगा मोदॆ नॉक्क सालमु चेतन् ॥१४५॥

पूँछ घुमाकर ब्रह्माण्ड गोल फट जाये ऐसा सिंहनाद करते हुए, भुज युगल का आस्फालनकर, सुप्रसिद्ध हनुमान रण करने के लिए मकर तोरण से उतर कर, ॥ १४० ॥

एक रथ से दूसरे रथ को विपरीत रूप से मारकर तोड़ दिया। एक-एक हाथी से दूसरे हाथी को चपटा बनाकर, उठाकर, पटककर मार डाला। एक-एक घोड़े से दूसरे घोड़े की पूँछ द्वारा मार गिराया। एक-एक सिपाही से दूसरे सिपाही को पकड़ झट घुमाकर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। बाहुबल के गर्व से छः मंत्रिकुमारों को युद्ध भूमि में समाप्त कर, विक्रम के प्रकाशित होने पर, भीकर आकार से और अधिक बढ़कर (पुनः) मकर तोरण पर बैठ गया ॥ १४१ ॥

उस रणवीथी में टिक न सक, भागे हुए हत शेष (मरने से बचे) समस्त जन राजद्वार पर यह कह रोने-चिल्लाने लगे कि घोर युद्ध में मंत्रिसुत मारे गये ॥ १४२ ॥

उनकी दुर्दशा सुनकर रावणासुर चौंककर, भीत हो, आज्याहुति (घी की आहुति) से प्रज्वलित होनेवाले हुताशन (अग्नि) के समान क्रोधित हो, प्रहस्त (नामक राक्षस) के पुत्र जम्बुमाली को देख कहा कि 'तुम उस वानराधम का वधकर शीघ्र आओ'। ऐसा कह भेजने पर, ॥ १४३ ॥

### हनुमान का जम्बुमाली का वध करना

तब जम्बुमाली ने भयानक आकृति में वीर रसाप्ति से, आँखों से चिनगारियों के ढुलकने पर, अधिक क्रोध से, उसाँसें छोड़ते हुए, विचित्र रीति से हाँफते हुए, रण की महान् उत्सुकता से हाथियों, घोड़ों के समूहों के शोभा से साथ आने पर; विक्रम के साथ कपिवीर का सामना किया ॥ १४४ ॥

वायुनन्दन को धमकाकर बाण छोड़ने पर, तब पवनज ने क्रोध से एक सालवृक्ष को लेकर अतिशयता से समस्त सेना को मारकर धराशायी कर दिया ॥ १४५ ॥

आट०— रथमु नुग्गु नेसि, रथसारथिनि जंपि
रथ तुरंगममुल बृथुल शक्ति
बट्टि, वालमुननु बडगॊट्टि चंपिन,
जंबुमालि किनिसि साहसमुन ॥१४६॥
कन्द— अडिदंबुनु गदयुनु गॊनि,
पुडमिकि लंघिंचि, वायु पुत्नुनिनिटलं-
बॆडपक व्रेसिन, धरणिं
बडिमूर्छ मुनिंगि, तॆलिसि बलयुतुडगुचुन् ॥१४७॥
कन्द— आलंबुन नातनि कर-
वालंबुनु द्रुंचिवैचि, वर भुज शक्तिन्
नेलं गूल्चॆनु, विक्रम
शालिन्, वडि जंबुमालि, साहस शीलिन् ॥१४८॥
आट०— अंत जंबुमालि, यत्यंत बलशालि,
गर्व मॆल्ल दूलि, कलन व्रालि,
पॊलिसॆ ननुट दैत्यपुंगवु डालिंचि,
यात्म संचलिंप नाग्रहिंचि ॥१४९॥
कन्द— साहसमु वॆलय समरो-
त्साहंबुन दुष्ट कपिनि जंपु मटंचुन्
बाहु बलाढ्युनि, नरि - निक-
राहव संहारु, वीरु, नक्षकुमारुन् ॥१५०॥
वचनमु— अंपिन नतंडु, ॥ १५१ ॥

अक्षकुमार पवनकुमारुल भीकर समरमु

सी०- चित्र माणिक्य रंजित वेत्र विभवंबु, भानु कोटि प्रभा भासितंबु,
भीकर ध्वज दंड बिरुदालवालंबु, शस्त्रास्त्र परिकर संयुतंबु,
बंधु राधिक जव बहु हयोपेतंबु, कुटिल दिक्पाल दृग्गोचरंबु,
घन नभो मार्ग विख्यातैक गमनंबु, वर तपो लब्धातिवैभवंबु,
तेटगीति— नैन[1] रथ मॆक्कि, मदवारणाश्वसुभट
वीरहुंकार झंकारवार मुलिय
गदलॆ हनुमंतु पैकि नाग्रह मॊसंग
मदमु दैवार नक्षकुमारु डलुक ॥१५२॥

---

१. नैनरथ मॆक्कि मदवारणौघसुभट ।

रथ को चूर्णकर, रथ के सारथि का वधकर, अत्यधिक शक्ति से रथों को, (और) घोड़ों को पकड़कर पूँछ से गिराकर मार डालने पर जम्बुमाली ने क्रुद्ध हो साहस के साथ, ॥ १४६ ॥

खड्ग और गदा लेकर, धरती पर कूदकर, वायुपुत्र के फाल भाग पर अविलम्ब मार दिया। हनुमान धरती पर गिरकर मूर्छित हुए, (थोड़ी देर के बाद) होश में आकर, बलयुत होते हुए ॥ १४७ ॥

युद्ध में उसके खड्ग के टुकड़ेकर, श्रेष्ठ भुजशक्ति से, उस विक्रमशाली, साहसशीली, जम्बुमाली को धरा पर गिरा दिया। (मार डाला) ॥१४८॥

अत्यन्त बलशाली, जम्बुमाली के गर्व के चूर होकर, रण क्षेत्र में गिर कर, मरने (की बात) को सुनकर दैत्य पुंगव (रावण) मन में व्याकुल हो क्रुद्ध हुआ ॥ १४९ ॥

साहस प्रकट करते हुए, समर के उत्साह से, दुष्ट कपि का वध करो, यह कहते बाहु बलाढ्य (तथा) युद्ध-भूमि में शत्रु समूह का संहारक, (एवं) वीर अक्षकुमार को (रावण के) ॥ १५० ॥

भेजने पर वह, ॥ १५१ ॥

### अक्षकुमार तथा पवनसुत का भीषण संग्राम

चित्रमाणिक्य-कान्ति से रंजित वेत्र (दंड) के वैभव से युक्त, भानु-कोटि की प्रभा से भासित, विरुदावलियों का आलवाल बने भयंकर ध्वज-दण्ड से युक्त, शस्त्रास्त्र परिकर से संयुत, अधिक वेगवाले अनेक घोड़ों से युक्त, कुटिल दिक्पालकों को (भयानक रूप से) दिखाई देनेवाले, घन (महत्तर) -नभोमार्ग में सुविख्यात रूप से गमन करनेवाले, श्रेष्ठ तपस्या से प्राप्त वैभव युक्त रथ पर चढ़कर मदमत्त गज, अश्व, सुभट वीरों के हुंकार (तथा) झंकार के मुखरित होने पर, क्रोध (तथा) अत्यधिक मद के लसित होने पर अक्षकुमार हनुमान पर आक्रमण करने निकला ॥ १५२ ॥

कन्द— अटुचनि पावनि गनि दि-
क्तटमुलु सेंदरंग नार्चि, दंददि भूमृ-
त्तटमुपयि गुरियु वर्षो-
त्कट धारल रीति, नंप धारलु गुरिसेन् ॥१५३॥

उत्प०- वायुजुडप्पु डंपगमि वालमुखंबुन द्रुंचे, द्रुंचिनन्
वायुजुमीद ग्रम्मर नवार्य बलंबुन नेसे, नेसिनन्
वायुजुडुग्रुडै तुनिमे वानि शरावळि नेल्ल बिम्मटन्,
वायुजु नाट नेसेंगडु वाडि शरंबुल नक्षुडुद्धतिन् ॥१५४॥

वचनमु— इट्लेसिन, ॥ १५५ ॥

उत्प०- ताल महीजराजिनि रथंबुनु गूलग मोदे, मोदिनन्
नेल बदातियै निलिचि नेर्पुन वाडु शराळि मारुतिन्
फालमु नोंचे, नोंचिननु बावनि मूर्छिलि तेरि, दानवुन्
दूलग मुष्टिचे बोंडिचे दोर्बल शक्ति रणांगणंबुनन् ॥१५६॥

## अक्षकुमारादुल संहारमु

सी०- पोंडिचिन मूर्छिल्लि, वडि देरि, दैत्युंडु गद गोनि वैचे वक्षंबु पगुल;
वैचिन मारुति वडि वानि गदबुच्चु कोनि वानि देहंबु गुदिय नेसे
नेसिन दन वीक नोसरिंपक वाडु गगनंबु केगसे नाक्षणमुनंदे
वायुतनूजुंडु वदलक तनवेंट नेगसिन गदगोनि येसे नतनि

तेटगीति— नतडु गद द्रुंप, खड्गान नतुल शक्ति
वाडु मारुति तोंडलु नोव्वंग नडचे;
नंत मूर्छिल्लि हनुमंतुडंत देलिसि
पट्टुकोनि वानि धात्रिपै गोट्टि चंपे ॥१५७॥

तेटगीति— अंत हतशेषु लगुवारलरुगुदेंचि,
संभ्रमंबुन दानव चक्रवर्त्ति
गांचि, कोलुवेल्ल संददि गाग, नपुडु
बहु विधंबुल हनुमंतु ब्रस्तुतिंचि ॥१५८॥

सी०- अक्षुंडु तेगे, नशमवक्षुंडु तेगटारे, रक्तरोमुडु नील्गे रणमुलोन,
स्तनितहस्तुडु म्रग्गे, शार्दूलमुखु डील्गे, गिंकर वर्गंबु गीटडंगे,
शार्दूलकबळुंडु सच्चे, दर्जयु डेगे, शतमायुडोरिगेनृ, समसे वक्र-
नासुंडु, मरि रक्तनासुंडु गडतेरे, शूलदंष्ट्रुडु नेल गूलिपोये,

वहाँ चलकर पावनी (हनुमान) को देखकर दिशाएँ उलट जाएँ, ऐसा सिंहनाद करते हुये, बहुलता से पर्वत पर भयंकर वर्षा की उत्कट धाराओं के समान बाणों की वर्षा की ।। १५३ ।।

वायुनन्दन ने तब बाण समूह को वालाग्र से तोड़ दिया। तोड़ने पर वायुज पर अवार्य (दुर्निवार) बल से फिर (बाण) फेंके। फेंकने पर, उनको भी उग्र होकर उसके समस्त शर समूह को तोड़ डाला। उसके पश्चात् उद्धत हो, अक्ष ने वायुज (के शरीर में) गड़ जाएँ, इस तरह, तीक्ष्ण बाण डाले ।। १५४ ।।

ऐसा डालने पर, ।। १५५ ।।

ताल वृक्षों के समूह से मारकर, रथ को गिरा दिया। गिरा देने पर उसने धरती पर पैदल खड़े होकर, चतुरता से शराली (शर समूह) से मारुति के फाल भाग को पीड़ित किया। पावनी मूर्छित हो, होश में आकर, दोर्बल (बाहुबल) शक्ति से, रणांगण में मुष्टिघात किया जिससे दानव काँप उठा ।। १५६ ।।

## अक्षकुमार आदि का संहार

(मुष्टि से) चुभोने पर मूर्छित हो, शीघ्र होश में आकर, दैत्य ने गदा ले ऐसा फेंका जिससे छाती टूटे। फेंकने पर मारुति ने उसकी गदा को लेकर ऐसा मारा जिससे उसकी देह सिकुड़ जाये। मारने पर बेपरवाही से उससे बचकर उसी क्षण आकाश (की ओर) उड़ गया। वायुतनूज के न छोड़ अपने पीछे उड़ने पर उसे गदा से मारा। गदा को उसने तोड़ डाला। उसने (अक्ष ने) खड्ग लेकर अतुल शक्ति से मारुति के जाँघों को पीड़ा पहुँचे, ऐसा मारा। तब हनुमान मूर्छित हो, तब (थोड़ी देर बाद) होश में आकर, उसे पकड़कर, धरती पर पटककर, उसका वध किया ।। १५७ ।।

तब हतशेष (मरने से बचे हुए) लोग आकर, ससंभ्रम (जल्दबाजी से) दानव-चक्रवर्ति को देख, अनेक प्रकार से हनुमान की प्रस्तुति की जिससे सारी सभा में कोलाहल मच गया ।। १५८ ।।

अक्ष कट गया। अश्मवक्ष मर गया। रक्तरोम रण में समाप्त हुआ। स्तनितहस्त मारा गया। शार्दूलमुख समाप्त हुआ। किंकर-वर्ग का नाश हुआ। शार्दूलकवल खत्म हुआ। दुर्जय चला गया।

तेटगीति— मडिसॆ यूपाक्षु, डल जंबुमालि तुनिगॆ,
बिगळाक्षुनि पेरंत बिलमु सोच्चॆ,
वनमु कावलि राक्षस वर्ग मडगॆ,
दीर्घजिह्वुंडु नेटितो दीऱिपोयॆ ॥१५९॥

वचनमु— अनि वेऱु - वेऱ विन्नविंचिन नसुरेंद्रुडु विनि तन मनंबुन, ॥ १६० ॥

मत्त०- वीनि वानरु डंचु नात्मनु [1] विश्वसिंपग जॆल्ल, दी
दानवावळि स्त्रिग बुट्टिन दय्यमो यट्टु गाक वै
श्वानरुंडिट्टुवंटि रूपुन वच्चि निल्चॆनॊ ? काक ई
मेनु गैकॊनि विष्णु डीडकु मेटियै चनुदॆंचॆनो ? ॥१६१॥

मत्त०- काक ये वरमैन ना कऱकंठुडिच्चिन नुब्बि या
नाकवल्लभु डॆल्लकालमु नाकु नोडिन भीतिमै
लोकभीकर मैन राक्षस लोक मॆल्ल नडंपगा
नीकराळपु रूपु निप्पुडु यीड कंपग वच्चॆनो ? ॥१६२॥

मत्त०- काक तक्किनवार लव्वरु गर्व संपद मीरगा
नाकु डीकॊनि ढाकतोड रणंबु सेयग, नोपरु-
न्लोकमंदिट्टु क्रोतु लॆक्कड नॊंचॆ दानव वीरुलन्
जोक वीनिकि गल्गॆनेनियु जूऱ पुच्चडॆ सर्वमुन् ॥१६३॥

वचनमु— अनि इट्लनेक प्रकारंबुल जिंतिंचि यक्षकुमारुलं दलंचि पलु दॆऱंगुल बलविंचुचुन्न तंड्रि गांचि मेघनादुं-डिट्लनियॆ : ॥ १६४ ॥

इन्द्रजित्तु हनुमंतुनिपै नॆत्तिवच्चुट

कन्द— देवतलतोड गूडनु
देवेंद्रुनि गॆलिचिनट्टि देवर ! मीकु
न्नीविधमु नॊंद नेटिकि
देवा ! चित्तंबुलोन दीनुनि भंगिन् ? ॥१६५॥

कन्द— वानरुनि गॊंडचेसुक
पूनिक जिंतिंप नेल ? भुजबल शक्तिन्
वानिं जंपेद नॊंडॆनु
दीनुनि गाविंचि पट्टि तॆच्चॆद नॊंडॆन् ॥१६६॥

---

१. निक्कमु (सच) ।

शतमायु गिर गया। शूलदंष्ट्र धरा पर गिर गया। यूपाक्ष मरा। जम्बुमाली कटा। पिंगलाक्ष का नाम बिल में गया (मर गया)। वन के रक्षक राक्षस वर्ग का नाश हुआ। दीर्घजिह्व आज से समाप्त हुआ ॥ १५९ ॥

इस प्रकार अलग-अलग (नाम लेकर) निवेदन करने पर, सुनकर, असुरेन्द्र ने अपने मन में, ॥ १६० ॥

इसे वानर समझकर मन में भरोसा नहीं किया जा सकता। पता नहीं, यह इस दानवावली को निगलने के लिए उत्पन्न कोई भूत तो नहीं है? यदि ऐसा न हो तो क्या वैश्वानर (अग्नि) (स्वयं) इस रूप में आ खड़ा तो नहीं हुआ? यदि ऐसा न हो तो क्या इस शरीर को लेकर बलशाली विष्णु ही यहाँ श्रेष्ठता से आया है ॥ १६१ ॥

नहीं तो करकण्ठ (शिव) के द्वारा दिए गए वर से फूलकर, उस नाकपति के सदा मुझसे विजित होने के डर से, लोक भीकर समस्त राक्षस-वर्ग को समाप्त करने के लिए, इस भयंकर रूपवाले को (इन्द्र के) भेजने पर तो यह यहाँ नहीं आया? ॥ १६२ ॥

नहीं तो अन्य कोई अपनी गर्व-सम्पदा की उत्कृष्टता से, मुझसे टकरा कर, युद्ध नहीं कर सकता। लोक में इस प्रकार बन्दर ने कहीं दानव वीरों को जीता क्या? ऐसी शक्ति यदि इसे प्राप्त है तो क्या यह सबको समाप्त नहीं कर डालेगा? ॥ १६३ ॥

(ऐसा) कह अनेक प्रकार से विचार कर अक्षकुमार का स्मरणकर, अनेक प्रकार से विलाप करनेवाले पिता को देखकर, मेघनाद ने इस प्रकार कहा— ॥ १६४ ॥

### इन्द्रजित का हनुमान पर आक्रमण

देवताओं सहित देवेन्द्र को जीतनेवाले हे देव! आपको इस प्रकार दीन की तरह (चिन्तित) होने की क्या ज़रूरत है? ॥ १६५ ॥

वानर को पर्वत (असाध्य) मानकर चिन्ता क्यों करें? भुजबलशक्ति से या तो उसका वध कर दूँगा या उसे दीन बना पकड़ लाऊँगा ॥ १६६ ॥

वचनमु— नावुडु राक्षसेश्वरुं डतनि माटलकु मनंबुन नलरि, नीवु विरिंचि दत्त वर प्रताप हुताशनुंडवु, चाप विद्या प्रवीणुंडवु, तपोबल समर्थुडंवु, देवेंद्र गर्व विमर्दनुंडवु, मत्समान शौर्य चातुर्य धुर्यु ंडवु गावुन नी कसाध्यं बगु कार्यं बेद्दियुनु लेदु नी विपुड पोयि वानि साधिंचि रम्मनि पंचिन, ॥ १६७ ॥

सी०- माणिक्य तपनीयमय विमानमुतोड गेंबट्टु बिरुदुटेक्कंबुतोड
सरि चेप्पगा रानि शस्त्रास्त्रमुल तोड बलमैन दिव्यचापंबुतोड
नाहव कोविदुंडैन सारथि तोड घन सत्त्व जव तुरंगमुलतोड
गनुपट्टु दिक्कुल गगन यानमुतोड बाल सूर्योदय प्रभल तोड

तेटगीति– गरमु विलसिल्लु रथमेक्कि, गंधनाग
तुरग रथ भट वंदि संदोह पटह
शंख काहल दुंदुभि स्वनमु लोलय,
मेघ नादुंडु हनुमंतु मीद वेडले ॥१६८॥

लयग्राहि– पेक्कुलगु गुर्रमुलु, जोक्कपु रथंबुलुनु,
नेक्कुवगु नेनुगुलु, ग्रिक्किरिसि रागा
रक्कसुलु सेरि इरु प्रक्कलुनु गोल्व, गड्डु
नुक्कुननु मीरि चल मेक्कुडुग नंतन्
ग्रक्कदल भूतलमु, चुक्क लोगि राल, शिल
लुक्कसिलि, नादमुलु पिक्कटिलि म्रोयन्
डेक्केमुल मिंचि, जव मेक्कुडुग जूपुदळ
मक्कजमुगा नडुव दिक्कुलु वडंकन् ॥१६९॥

वचनमु— इट्लु भयंकराकारंबुन वेडलि, कंठ हुंकृतुलुनु, भेरी भांकृतुलुनु, नंबरंबुन जेलंग, ·बोंगि चनुदेंचुचुन्न राक्षस सैन्यंबु गनुंगोनि हनुमंतुडु तोरणस्तंभंबुपैनुंडि, बधिरीभूत दिगंतरंबुगा भीकर गति नार्चिन, ॥१७०॥

## मेघनादुनि भयंकर समरमु

कन्द— कलगिनवि देवगणमुलु
जलधुलु घूर्णिल्ले, गिरुलु चलनं बोंदेन्,
जलजाप्तचंद्रु लोंदिगिरि,
जलधरमुलु पर्रिय लगुचु जदलंबर्वेन् ॥१७१॥

ऐसा कहने पर, उसके वचनों के लिए राक्षसेश्वर (रावण) ने मन में संतुष्ट हो, (कहा)— "तुम विरिंचि (ब्रह्मा) के प्रदत्त-वरों के कारण प्रताप में अग्नि-सम, चापविद्या (धनुर्विद्या) में प्रवीण होकर, तपोबल के कारण समर्थ बनकर, देवेन्द्र के गर्व को विमर्दित करनेवाले हो। मेरे समान शौर्य (तथा) चातुर्य में धुरीण हो। अतः तुम्हारे लिए कोई कार्य असाध्य नहीं है। तुम अभी जाकर उसे हरा कर आओ।" ॥ १६७ ॥

माणिक्य और स्वर्ण से खचित विमान के साथ, विरुदावलियों सहित रक्तवर्ण कौशेय ध्वज के साथ, अतुल शस्त्रास्त्रों के साथ, बलयुत (दृढ़) चाप के साथ, आहव (युद्ध) कोविद सारथि के साथ, घन-सत्त्व-वेग-युक्त तुरंगों के साथ, सभी दिशाओं में गमन करनेवाले यान (रथ) के साथ, बाल-सूर्योदय की कान्तियों के साथ, अति विलसित रथ पर आरूढ़ हो, श्रेष्ठगज, अश्व, रथ, भट, वन्दि (मागधों) के समूह के साथ, पटह, शंख-काहल-दुंदुभि की ध्वनियों के मुखरित होने पर मेघनाद ने हनुमान पर अभियान किया ॥ १६८ ॥

अनेक घोड़ों, श्रेष्ठ रथों, अनेकों हाथियों के झुण्ड के झुण्ड आने पर, दोनों पार्श्वों में, राक्षसों के सेवाएँ करते चलने पर, अतिशौर्य के साथ, अति हठ से, भूमि के कम्पित होने पर, ताराओं के क्रम से गिरने पर, उल्काओं के टूट पड़ने पर, निनादों के घनतर रूप से मुखरित होनेपर, झण्डों के साथ, अत्यधिक बल प्रदर्शन करते हुए, सेनाओं के आश्चर्यप्रद रूप से चलने पर, दिशाएँ कम्पित हुईं ॥ १६९ ॥

इस प्रकार भयंकर रूप से निकलकर, कण्ठों के हुंकारों, (तथा) भेरियों के भांकारों के अम्बर में प्रतिध्वनित होने पर, उत्साह के साथ आनेवाले राक्षस-सेनाओं को देख, तोरण स्तम्भ पर स्थित हनुमान ने भीकर गति से (ऐसा) सिंहनाद किया जिससे दिगन्त बहरे हो गए ॥ १७० ॥

### मेघनाद का भयंकर समर

देवगण व्याकुल हुए, सागर मथित हो गए। गिरिवर संचलित हुए, जलजाप्त (सूर्य) (और) चन्द्र (एक ओर) हट गए। जलधर (मेघ) टुकड़े-टुकड़े हो आकाश में फैल गए ॥ १७१ ॥

कन्द— अप्पुडु दानव वीरुलु
निप्पुलु वर्षिचुनट्टि निशितास्त्रमुलन्
गप्पिरि, केंदोंग वानल
गप्पिन शैलंबु बोल गपिवरु मीदन् ।।१७२।।

तेटगीति— अंप वर्षंबु तनमीद जोंपमुलुग
लील गुरियंग, नवि यॆल्ल लॆक्क गोनक
भुविकि लंघिचि, यप्पुडद्भुतमुगाग
वाल मल्लार्चि यॊक महासाल मॆत्ति, ।।१७३।।

तेटगीति— तेरु लन्नियु गूराटि तेरुलुगनु,
गुर्र्मुल नॆल्ल गावेरि गुर्र्मुलुग,
नेनुगुल नॆल्ल वॆंडरूपु टेनुगुलुग,
दळमुलन्नियु मर्दि हरिदळमु गाग, ।।१७४।।

वचनमु— इट्लु समयिपं जूचि बलंबु पै कुड्रिकि, । १७५ ।।

सी०- करि यूथमुल मीद गदिसि मावंतुल तोड गूडग बट्टि तुनिय गॊट्टि,
गुर्रंपु बौजुलकुनु दाटि रौतुल गलयंग बट्टि चॆक्कलु गॊट्टि,
रथमुलपैकि नुग्रंबुगा लंघिचि रथिकुलतो गूड ब्रुथिवि गॊट्टि,
बलमुलमीद निब्बरमुगा गुप्पिचि बालमुखंबुन दूल गॊट्टि,

तेटगीति— पटह निस्साण काहळ पटिमलुरिय
द्रोंक्कि शस्त्रास्त्र निचयमुल् तुमुरु चेसि
छत्रमुल द्रुंचि पडगल सत्त्व मणचि
पवनसूनुंडु साहस पौढि मॆरसॆ ।।१७६।।

वचनमु— अट्टि समयंबुन, ।। १७७ ।।

चम्प०- अनलमु रीति मंडि दिविजारि तनूजुडु तेरुदोलि, य-
य्यनिल तनूजु नेसॆ विविधायुध पंक्तुल, वानि नॆल्ल द्रु-
त्तुनियलु सेसॆ वायुजुड्, दोर्बल शक्तिनि दैत्युडेय दो-
कनु दुनुमाडॆ वानि विशिखंबुल नन्निटि वायु सूनुडुन् ।।१७८।।

कन्द— गिरुलनु[1] बावनि रुव्वुचु
दरुवुल नेयंग, गिनिसि दानवुडंतन्
दुरमुन नडुमनॆ तुंचॆनु
शर जालमु चेत नॊक्क क्षणमुन वानिन् ।।१७९।।

---

१. गिरुलनु वंदलकोलदिग (सैकड़ों पहाड़ों को)

तब रक्तोत्पलों की वर्षाधाराओं से आच्छादित पहाड़ के समान, दानव वीरों ने आग बरसानेवाले तीक्ष्ण अस्त्रों से कपिवर को ढक दिया ।। १७२ ।।

(अपने पर) बाणों के वर्षा-समूह के रूप में बरसने पर, उसकी परवाह न कर, धरती पर कूदकर अद्भुत रूप से पूँछ को हिलाकर, एक महा साल (वृक्ष) को उठाकर, ।। १७३ ।।

समस्त रथों को पानी के घड़ों की पंक्तियाँ बनाकर, सभी घोड़ों को पानी के घोड़े (वर्षाकाल में झुण्ड के झुण्ड निकलनेवाले रेंगनेवाले कीड़े) बनाकर, सभी हाथियों को कुरूप हाथी बनाकर, सभी दलों (सेनाओं) को हरे पत्ते बनाकर ।। १७४ ।।

इस प्रकार वध करने की सोच, सेनाओं पर आक्रमण कर, ।। १७५ ।।

गज समूह के निकट जाकर, महावतों के साथ पकड़कर (उन्हें) टुकड़े कर डाला । अश्व-सेनाओं को पारकर अश्वारोहियों के साथ अच्छी तरह पकड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया । उग्र हो रथों पर कूदकर रथियों के साथ (उन्हें) पृथ्वी पर पटक दिया । धैर्य के साथ सेनाओं पर कूदकर पूँछ से मारकर गिराया । पटह, निस्साण, काहल (आदि वाद्यों) को बड़ी शक्ति के साथ पैरोंतले कुचलकर, शस्त्रास्त्र समूहों को चूरकर, छत्रों को तोड़कर, झण्डों के स्वत्त्व को दबाकर, पवनसुत साहस की प्रौढ़ता से प्रकाशित हुआ ।। १७६ ।।

ऐसे समय में, ।। १७७ ।।

अग्नि के समान जलकर (क्रुद्ध हो), दिविजारि-तनूज (इन्द्रजित) ने रथ चलाकर अनिल-तनूज (हनुमान) पर विविध आयुध पंक्तियाँ चलाईं । उन सबको वायुज (पवनसुत) ने टुकड़े-टुकड़े कर दिये । दोर्बल (बाहुबल) से राक्षस के बाणों को वायुपुत्र ने पूँछ से नष्ट कर दिया ।। १७८ ।।

पावनी ने पहाड़ों को फेंका, (और) वृक्षों से मारा । क्रुद्ध हो दानव ने तब युद्ध में उन सबको बीच में ही शरजाल से एक क्षण में तोड़ दिया ।। १७९ ।।

तेटगीति— गंधवहुपुत्तु डप्पडाग्रहमु तोड
रथमु गूलंग दन्नि सारथिनि ' जदिपि,
गुर्रमुल जंपि, केतुवु गूल नडव,
मेघनादुंडु किनिसि समीर सुतुनि ॥१८०॥

वचनमु— अहंकारंबुन ब्रतिघटिंचि, ॥ १८१ ॥

कन्द— वायुव्यास्त्रमु नंतट
वायुजु मीदिकि नतंडु वडि नेसिन, ना
वायुव्यास्त्रमु दूलॆनु
वायुजुनिं जंप नोडि वारनि करुणन् ॥१८२॥

वचनमु— अदि वृथयगुटं गनि मर्रियुनु, ॥ १८३ ॥

कन्द— रौद्रं बडरग नेसॆनु
रुद्रास्त्रं बतनि मीद रूढिग, नतडा
रुद्रुनि यंशं बगुटनु,
रौद्रास्त्रमु देलिपोयॆ रभसं बॊप्पन् ॥१८४॥

वचनमु— अम्महास्त्रंबु गूड दप्पिपोवुट काश्चर्यंबु नॊंदि इंद्रजित्तु
मर्रियुनु, ॥ १८५ ॥

ब्रह्मास्त्रमुनकु गट्टुवडिन हनुमंतुडु

कन्द— सुर खचर यक्ष किन्नर
गरुडोरगामर सिद्धसाध्यगंधर्व गणं
बरुदंदि चूडगा नि-
र्भर मुष्ठिं दॊंडिगि येसॆ ब्रह्मास्त्रंबुन् ॥१८६॥

वचनमु— अट्टि यवसरमुन ॥ १८७ ॥

कन्द— सप्तांभोधुलु कलगॆनु,
सप्त द्वीपमुलु वणकॆ, शैलमु लदरॆन्
सप्तानिलमुलु दलकॆनु
सप्ताश्वुडु म्रानुपडियॆ जगमुलु गदलॆन् ॥१८८॥

वचनमु— इट्लनेक प्रकारंबुल गालाग्नि तॆरंगुन वॆडलि, मिडुंगुरुलु
चॆंदरि पडग, ब्रह्मांड मंडलंबुलं बट्टुकॊनुनट्टि पॆनु-
मंटलुप्परं बॆगय, नेतॆंचु ब्रह्मास्त्रमुं गनि हनुमंतुडु तन
¹मनंबुन, ॥ १८९ ॥

---

१. दुनिमि (मारकर)

गन्धवह-पुत्र (हनुमान) ने क्रोध के साथ लात मारकर रथ को गिराकर, सारथि का वध किया और घोड़ों को समाप्त किया। केतु को गिराया। मेघनाद ने क्रुद्ध हो समीरसुत (हनुमान) का, ॥ १८० ॥

अहंकार के साथ सामना किया ॥ १८१ ॥

तब उसके वायुज पर अतिवेग से वायव्यास्त्र फेंकने पर, वह (वायव्यास्त्र) वायुज को मारना न चाहकर करुणा से अलग हट गया ॥ १८२ ॥

उसके वृथा होते देखकर फिर, ॥ १८३ ॥

रौद्र से रुद्रास्त्र को अतिबल से निश्चित रूप से उस पर फेंका। उसके (हनुमान) रुद्र के अंश होने के कारण रौद्रास्त्र भी वेग से निकल गया ॥ १८४ ॥

उस महास्त्र के भी चूक जाने पर चकित हो इन्द्रजित ने (फिर) ॥ १८५ ॥

### ब्रह्मास्त्र के वशीभूत हनुमान

सुर, खेचर, यक्ष, किन्नर, गरुड़, उरग, सिद्ध, साध्य, गन्धर्व गणों के आश्चर्य से देखते समय, दृढ़ मुष्ठि से खींचकर ब्रह्मास्त्र को फेंका ॥ १८६ ॥

उस समय, ॥ १८७ ॥

सप्त-सागर व्याकुल हुए। सप्त-द्वीप कम्पित हुए। शैल (पर्वत) काँप उठे। सप्तनिल आकुल हुए। सप्ताश्व (सूर्य) स्तम्भित हो गये। जगत् हिल उठे ॥ १८८ ॥

ऐसे नाना प्रकार से, कालाग्नि की भाँति निकलकर, आग उगलते हुए, ब्रह्माण्ड मण्डलों को स्पर्श करते हुए, अग्नि ज्वालाओं से (युक्त) आनेवाले ब्रह्मास्त्र को देख हनुमान ने अपने मन में, (सोच कि) ॥ १८९ ॥

आट०— तनकु जिन्ननाडु दयचेसिनट्टुवंटि
वनज भवुनि चेति वरमु दलचि,
ब्रह्ममंत्रमंत पठियिंप, नदि चंप
कतनि गट्टिटवैचे नवनि मीद ॥१९०॥

वचनमु— इट्लु कट्टुपडिन करुवलि पट्टिटनि जूचि, रावणासुरुनि
पट्टिट तनलो निट्टु लनुकोनियें : ॥ १९१ ॥

कन्द— ई ब्रह्मास्त्रमु ताकुन
के बलियुडु ब्रदुक नोप, डितडु घनुंडौ,
नी बाहुबलुनि गट्टुट
ना बलिमिकि दोंडव कादे नाकुलु मेंच्चन् ॥१९२॥

कन्द— पेक्कंड्र दनुज वीरुल
जक्काडिन वीनि बट्टि, साहसमुग मा-
रक्कसुल ड्रेनि योंद्दकु
जक्कग गोनिपोवु टदिय चंपुट गादे ! ॥१९३॥

चम्प०- अनि तन सत्त्वसंपद रयंबुन बोंगुचु मेघनादुड-
य्यनिलजु गोंचु नेगे दिविजारि सभास्थलि कद्भुतंबुगा,
घनरथदंतिघोटक निकाय भटावळि शस्त्र दीप्त के-
तन वर शंखकाहल वितान रवबुलु मिन्नु मुट्टगन् ॥१९४॥

वचनमु— इट्लु कोनिपोयि राक्षसेश्वरुंडयिन रावणासुरु सम्मुखम्मुनं
बेट्टिटनंतने गाडुपु-पट्टिट गनि, ॥ १९५ ॥

### हनुमंतुनिचे रावणुनि यधिक्षेपमु

कन्द— कुटिल भ्रूकुटि नटन
स्फुट धूम विलास पवन फूत्कृति जनितो-
द्भट रोषानल कीलो
त्कट नेत्रुंडगुचु बलिके गटमु लदुरगन् ॥१९६॥

उत्प०- एव्वड वोरि ? नीकु ब्रभुवेंव्वड्ड चेप्पुमु? नीविटोंटिमै
निव्वनराशि दाटि इट केगति वच्चिति ? नाम मेमि ? नी
वेंव्वनि प्रापुनं बेड्रिकि तीवनमंतयु शंक लेक ? यि-
कोंव्वनि प्रापुनं दुनिमिती सुरवैरुलनेल्ल नुग्रतन् ॥१९७॥

अपने बचपन में वनज-भव (ब्रह्मा) के द्वारा प्रदत्तवर का स्मरणकर ब्रह्ममंत्र का पठन करने पर, उसने (ब्रह्मास्त्र ने) उसे न मारकर, बाँधकर धरती पर रखा ॥ १९० ॥

इस प्रकार बन्धित पवनसुत को देख, रावणासुर के पुत्र ने अपने मन में इस प्रकार सोचा ॥ १९१ ॥

"इस ब्रह्मास्त्र के आघात से कोई भी बलशाली जीवित नहीं रह सकता। सचमुच यह महान् है। इस बाहुबली को बाँध रखना मेरे बल के लिए अलंकार है न! स्वर्गवासी (इस कार्य की) प्रशंसा करेंगे ॥ १९२ ॥

अनेकों राक्षसवीरों का वध करनेवाले इसे बाँधकर, साहस के साथ, अपने राक्षस-राजा के यहाँ ठीक ढंग से ले जाना ही तो इसे मार डालना है न!"— ॥ १९३ ॥

(ऐसा) कहते हुए अपनी सत्त्व-सम्पदा के कारण शीघ्र उत्साहित होते हुए, अनिलज को लेकर, महान रथ, गज, अश्व, समूह एवं भटावली के शस्त्रों की कान्ति के साथ (तथा) केतन (तथा) श्रेष्ठ शंख, काहल, वितान (समूह) की ध्वनियों के आकाश में गूँजते समय, दिविजारि की सभास्थली में अद्‌भुत रीति से गया ॥ १९४ ॥

इस प्रकार ले जाकर, राक्षसेश्वर (रावण) के सम्मुख रखते ही पवनसुत को देख, ॥ १९५ ॥

### हनुमान से रावण की निन्दा

कुटिल भृकुटि के अभिनय से प्रस्फुटित होनेवाले धूम-विलास एवं पवन के फूत्कार से उत्पन्न अत्यधिक रोष की अग्नि की ज्वालाओं से भरे नेत्रों से, (तथा) गालों के कम्पित होने पर (रावण ने) कहा— ॥ १९६ ॥

"कौन है रे तू? बता तेरा प्रभु कौन है? तू अकेले इस वनराशि (सागर) को लाँघकर यहाँ कैसे आ गया? (तेरा) नाम क्या है? तूने किसके आश्रय के कारण इस सारे वन को निस्सन्देह (निडर हो) उखाड़ फेंका है और किसकी आज्ञा से इन सब सुर-वैरियों (राक्षसों) को उग्रता (क्रोध) से मार डाला है? ॥ १९७ ॥

सी०- अमरवल्लभु भोग मंतयु गैकॊनि वीतिहोत्रुनिसिरि नीट मुंचि
जमुनिंकिकरुलनु संहार मॊनरिंचि राक्षसाधीश्वरु शिक्ष सेसि
यंबोधि नाथुनि गांभीर्य मणगिंचि, दोर्बलंबुन गालि दूल पॆट्टि
वित्तनाथुनि महाविभवंबु गॊल्लाडि, शूलहस्तुनि नॊक्कमूल कदिमि,

तेटगीति– यमर गंधर्व किन्नर यक्ष भुजग
गरुडगुह्यक मुनिसिद्ध वरुल नॆल्ल
बट्टि मुनु वॆट्टि सेयिंचुनट्टि नन्नु
विन्नयंतन गुंडॆलु व्रील वॆट्लु ? ॥१९८॥

चम्प०- शरनिधि दाटि वच्चुटय चालक नापुरिजॊच्चि, चॊच्चियुन्
वॆरवक दंटवै[१] वनमुव्रेळ्ळकु द्रुंचिति, त्रुंचि क्रम्मरन्
बिरुदवुपोलॆ राक्षसुल बॊक्कुर जंपिति, चंपि नॆम्मदिन्
गरकरितोड नायॆदुर गर्वमुतोडुत निल्चितद्दिरा ! ॥१९९॥

कन्द– खंडिचॆद नीचेतुलु,
तुंडिचॆद नडुमु रॆंडुतुनकलु गागन्,
जॆंडिचॆद[२] गत्तुलतो,
वंडिचॆद नूनॆलोन वारक निन्नुन् ॥२००॥

वचनमु– इट्लु पट्टरानि कोपंबुन नाटोपंबुगा बलुकुचुन्न रावणासुरुं जीरिकिं गॊनक हनुमंतुं डिट्लनियॆ : ॥२०१॥

### हनुमंतुनिचे श्रीरामचंद्रुनि गुणकीर्त्तनमु

कन्द– इनतनयुनि वरमंत्रिनि,
जनपति यैनट्टि रामचंद्रुनि दूतन्,
घनुडगु वायु कुमारुड,
हनुमंतुंडड्[३] नन्नु नार्युलु दिशलन् ॥२०२॥

कन्द– रामुनि पंपुन वच्चिति,
रामुनि[४] सेमंबु नीपुरंबुन नुन्ना
रामुनि सति कॆरिगिंचिति,
रामुनि कड केगुचुंडि राजसवृत्तिन् ॥२०३॥

---

१. बंटवै (शूर हो) २. बॊंडिचि नीदुकंडलु (तेरे मांस को काटकर)
३. विनुमी हनुमंतुडनग वॆलसिनवाडन् ४. रामुनि सेमंबु निंदु रंजिल्लॆडि

अमर वल्लभ के समस्त भोग को लेकर, अग्नि की श्री को पानी में डुबोकर (नष्टकर,) यम के किंकरों का संहारकर, राक्षसाधीश्वर (नैऋति दिशाधिपति) को दण्डितकर, अम्बोधिनाथ (वरुण) के गाम्भीर्य का दमन कर, दोर्बल (बाहुवल) से वायु को हिलाकर, वित्तनाथ (कुवेर) के महा-वैभव को लूटकर, शूलहस्त (शिव) को एक कोने में दबाकर, अमर, गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, भुजग, गरुड़, गुह्यक, मुनि, सिद्ध, आदि सब श्रेष्ठ लोगों को पकड़कर, चिरकाल से बेगार में सेवाएँ लेनेवाले, मेरे बारे में सुनते, हृदय (भय से) फट क्यों नहीं जाएगा ? (अवश्य फट जाएगा ।)॥१९८॥

सागर को लांघकर आना ही नहीं, मेरी नगरी में प्रवेश किया। प्रवेशकर, न डरकर, डीठ होकर वन को जड़ सहित उखाड़ डाला। नष्ट कर गर्व एवं शौर्य के साथ, वीर के समान राक्षसों का वध किया। वध-कर, शान्तभाव से बड़ी ही स्पर्धा के साथ, मेरे सामने आ खड़ा हो गया। वाह रे ! ॥ १९९ ॥

तेरे हाथों को खण्डित करूँगा। तेरी कमर को दो टुकड़ों में काट दूंगा। खड्गों से कटवा डालूँगा। तेल में तुझे अवश्य पकवाऊँगा" ॥२००॥

इस प्रकार अबाध क्रोध से, आटोप (जल्दबाजी) से बोलनेवाले रावण की बातों की परवाह न कर, हनुमान ने इस प्रकार कहा ॥ २०१ ॥

### हनुमान के द्वारा श्रीराम का गुण कीर्तन

"इनतनय (सुग्रीव) का श्रेष्ठ मंत्री हूँ। जनपति रामचन्द्र का दूत हूँ। महात्मा वायु का पुत्र हूँ। सुनो ! हनुमान के नाम से विख्यात हूँ ॥ २०२ ॥

राम की आज्ञा से आया हूँ। राम का क्षेम-समाचार तुम्हारे पुर में स्थित राम की सती (सीता) को विदित किया है। (और) राजस-वृत्ति से राम के पास जाते हुए ॥ २०३ ॥

कन्द— नाराक मीकु दॆलियग
बीरंबुन वनमु गलयबॆरिकिति शक्तिन्,
घोराजि नाकु नॆदिरिन
वारल जंपितिनि यमुनिपट्नमु चूडन् ।।२०४।।

कन्द— निनु जूचि तिरिगिपायॆडु
मनमुन मरि कट्टबडिति मनुजाशन ! नी
यनुवॆल्ल गंटि, निंकनु
विनुमा नाबुद्धि तॆलिय विवरमुतोडन् ।।२०५।।

चम्प०- घनुडवु, नीतिमंतुडवु, कार्यमॆरुंगुदु, साहसंबुनन्
निनु नॆदिरिंचि पोरुटकु निर्जर वल्लभु डोपलेडु, नी-
वनिन जगत्रयं बळ्कु, नद्भुतरूपमु सॆप्परादु, नी-
यनुपमभोगसंपदल कारडि तॆच्चिति विप्डु रावणा ! ।।२०६।।

कन्द— कडलेनि बलमु, धर नॆ-
क्कडलेनि महाधनंबु करितुरगंबुल्,
कड गानरानि संपद,
चॆंडकुंडग नीकु बुद्धि चॆप्पॆद विनुमा ! ।।२०७।।

सी०- कुदिर्यिंचि सिंहंबुकोरलु पॆरुकंग, शेषाहिदौडलु चील्चिवेय,
बीडिंचि दंभोळि बिडिकिट बट्टंग, कठिन काकोलंबु कडिगॊनंग,
जॆलगि ब्रह्मांडमु चिप्पलूडग दन्न, हंकारमुन बडबाग्नि नुरुक,
नंभोनिदानंबु लरचेत नडपंग, गिरिवर्गमुल दलक्रिंदुचेय

तेटगीति— गल महाभाहुसत्त्वविख्याति विपुल
चंडभुजदंड साहसोद्दंड विजय
कालरुद्रावतार संग्रामभीम
मूर्त्तिमंतुलु कपुलु, सत्कीर्त्तियुतुलु ।।२०८।।

वचनमु— अदियुनुंगाक दशरथराजनंदनुंडुनु, गौसल्यागर्भ संभवुंडुनु, दाटकाप्राणापहरुंडुनु, विश्वामित्रयाग संरक्षकुंडुनु, नहल्याशाप मोक्षदीक्षागुरुंडुनु, हरकोदंडखंडनुंडुनु, जामदग्निबाहुबल भंगुंडुनु, विराधनिरोधुडुनु, खरदूषण-त्रिशिरश्छेधनुंडुनु, मायामृग संचारि मारीच संहारकुंडुनु, गबंधांतकुंडुनु वालि प्राण निबर्हणुंडुनु, सुग्रीवराज्य-संस्थापनपरमाचार्युंडुनु, धनुर्विद्याप्रवीणुंडुनु, नमोघबाणुं-डुनु, राक्षस कुलांतकुंडुनु, गाकुत्स्थान्वयांभोनिधि

तुम्हें मेरा आगमन विदित हो जाय, इसलिए वीरता से, सारा वन शक्ति के साथ उखाड़ डाला। घोर युद्ध में मेरा सामना करनेवालों को यमपुरी देखने के लिए भेज दिया, ।। २०४ ।।

हे मनुजासन (राक्षस)! तुम्हें देखकर जाने का विचारकर, फिर बन्धित हो गया। तुम्हारे समस्त निवासस्थान को जान गया। अब मैं अपनी बुद्धि से, विवरण के लिए, कुछ बातें कहता हूँ। सुनो! ।। २०५ ।।

तुम महान् हो! नीतिमान् हो! कार्य को जानते हो! साहस के साथ तुम्हारा सामना कर युद्ध करने के लिए निर्जरवल्लभ (देवेन्द्र) भी समर्थ नहीं है। तुम्हारा नाम सुनते ही जगत्रय चौंक पड़ता है। तुम्हारे अद्भुत रूप का वर्णन नहीं हो सकता। हे रावण! तुमने अपनी अनुपम भोग-सम्पदाओं को तो अब विपत्ति में डाल दिया ।। २०६ ।।

अनन्त बल, धरती पर कहीं न हो इतना महाधन, हाथी, घोड़े, अनन्त सम्पदा का किंचित् भी नाश न हो, ऐसी सीख तुम्हें बताता हूँ। सुनो! ।। २०७ ।।

सिंहों को दबाकर दाँत उखाड़नेवाले, शेषादि (आदि शेष) के जबड़े चीर डालनेवाले, (इन्द्र को) पीड़ितकर, वज्रायुध को मुट्ठी में लेनेवाले, कठिन काकोल (विष) को एक घूंट में निगलनेवाले, ब्रह्माण्ड को लात मार कर टुकड़े-टुकड़े कर डालनेवाले, हुंकार करते हुए बड़वाग्नि में दौड़नेवाले, अम्बोनिधान (सागर) को हथेली से दबा सकनेवाले, गिरिवर्गों को उलट-पुलट कर सकने वाले, महाबाहुओं के सत्त्व से विख्यात, विपुल चंड-भुजदंड से साहसोद्दण्ड एवं विजयी, कालरुद्रावतार के सम, (तथा) संग्राम में भीम (भयंकर) मूर्तिमान है कपिवर्ग जो सत्कीर्ति से युक्त है ।। २०८ ।।

इतना ही नहीं, दशरथ राजनन्दन, कौसल्या-गर्भ-सम्भव, ताड़का का प्राणापहार करनेवाले, विश्वामित्र के यज्ञ संरक्षक, अहल्या का शाप विमोचन के दीक्षागुरु, हर के कोदण्ड का खण्डन करनेवाले, जमदग्नि (परशुराम) के बाहुबल का भंजन करनेवाले, विराध का निरोध करनेवाले, खरदूषण, त्रिशिर का (शिर)-छेद करमेवाले, मायामृग रूप में संचार करनेवाले मारीच का संहार करनेवाले, कबन्ध के अन्तक, वालि के प्राणों के समापक, सुग्रीव के राज्य के संस्थापन के परम आचार्य, धनुर्विद्या में प्रवीण, अमोघ बाणों से विलसित, राक्षसकुलान्तक, काकुत्स्थ वंश-सागर

चंद्रुंडुनु, गरुणासिंधुडुनु, नगु श्रीरामचंद्रुंडु करुणालंकारुंडु
गावुन, ॥ २०९ ॥

उत्प०- वारक सीत निच्चि, रघुवल्लभुनिन् शरणंबु जॊच्चिनन्,
नेरमु लॆंचि चंपमिकि नीयॆड कॊप्पुडु नेनु बूटगा
भारपडंग जालुदु, शुभस्थिति नम्मुमु, नम्मकूरके
पोरग जूचितेनि, बॊरिपुच्चक मानडु रावणा ! ॥२१०॥

उत्प०- नावुडु मंडि, दैत्यकुलनायकु डुग्रविलोकनंबुलं
बावक विस्फुलिंगमुलु पैकॊनि पारग, वीरघोरदै-
त्यावळि जूचि, मीरलु महाविशिखंबुल वीनिजंपुडी
यावलरामुडुल्कुचु भयाकुलुडै चॆंडिपोवुनट्टुगन् ॥२११॥

वचनमु— अनिन विभीषणुंडिट्लनियॆ : ॥ २१२ ॥

दूतनु जंपुट दोसमनि रावणुनकु विभीषणुनि हितवु

कन्द— दूतपनि बूनि वच्चिन
दूतलु तमनोरि केमि तोचिन नट्लु
नेतल नाडुदु, राडिन
दूतल जंपंग दगदु दॊरलकु नॆंदुन्, ॥२१३॥

कन्द— काकुंडिन मीचित्तमु
लो कोपमु दीरुनट्लु लोकमु बॆदरन्
ढाकनदल्चुट चालुन्
वीकन्दंडिंचि पोव विडुचुट चालुन् ॥२१४॥

वचनमु— अनि विन्नविंचिन, ॥ २१५ ॥

आट०— नीतिवाक्य सरणिनॆरयंग विनि राव-
णासुरुंडु कोप मडरि पलिकॆ
वीनि दोक गाल्चि, वॆडलंग द्रोयुडी
प्रॊद्दॆ यटकु दिरिगि पोवु गाक ॥२१६॥

वचनमु— अनि इट्लानतिच्चिन विनि, रात्रिचरु लतनिनि सभा
मध्यंबुनुंडि बयटिकि गॊनिपोयि यॊक्कचोट, ॥ २१७ ॥

के चन्द्र (तथा) करुणासिंधु रामचन्द्र करुणालंकार (जिसके लिए करुणा ही अलंकार है) हैं। इसलिए ॥ २०९ ॥

सीता को सौंप देकर सदा रघुवल्लभ की शरण में जाओगे तो अपराध की गिनती न कर तुम्हारा वध नहीं करेंगे। सदा इसकी मैं जिम्मेदारी ले सकता हूँ। शुभ स्थिति पर विश्वास करो। विश्वास न कर यों ही युद्ध करना चाहोगे तो रावण ! तुम्हारा वध किये बिना (राम) नहीं रहेगा" ॥ २१० ॥

ऐसा कहने पर जलता हुआ, दैत्यकुल-नायक, उग्र दृष्टियों से अग्नि की चिनगारियों को प्रसारित करता हुआ, वीर (तथा) घोर-दैत्यावली को देखकर (उनसे कहा) "वहाँ राम व्याकुल हो, भयाकुल हो, नष्ट हो जाये, इस प्रकार तुम लोग महान् विशिखों (बाणों) से इसका वध करो" ॥ २११ ॥

(रावण के) कहने पर विभीषण ने यों कहा ॥ २१२ ॥

**रावण को विभीषण के हितवचन कि दूत को मारना दोष है**

"दूतकार्य के लिए आये हुए दूत लोग नेताओं से (नायकों) मनमानी बातें करते हैं। (ऐसा) कहनेवाले दूतों को मारना राजाओं को नहीं चाहिए ॥ २१३ ॥

ऐसा नहीं तो आपके मन का क्रोध शान्त हो, लोगों में डर पैदा हो, इस प्रकार धौंस बताकर डाँटना बस है। गर्व से दण्डित कर छोड़ देना पर्याप्त है।" ॥ २१४ ॥

इस प्रकार निवेदन करने पर, ॥ २१५ ॥

नीति वाक्यों की सरणि (विधान) को, ढंग से सुनकर, रावण ने क्रोध के अधिक होने पर कहा कि "इसकी पूंछ जलाकर निकाल ढकेल दो ताकि आज ही वहाँ लौट जाये" ॥ २१६ ॥

(ऐसा) कहकर, आज्ञा देने पर सुनकर, रात्रिचर (राक्षस) उसे सभा के बीच से बाहर ले जाकर एक जगह, ॥ २१७ ॥

वालाग्र ज्वाललतो वायुसुतुड्डु लंकनु दगुल बॆट्टुट

उत्प०- वालमु निंड गोकलु जवंबुन गट्टिग जुट्टि, वानिपै
दैलमु चक्कजल्लि, पिरुदं जनि पौरुलु सूड, बावक-
ज्वाल दगिलिचि,बॊब्बलिडि,वाडल वाडल द्रिप्पुचुंड,वा
तूलभवुंडु दानिकिनि दूलक वह्निजपंबु सेयगन् ॥२१८॥

आट०— अग्निदेवुडप्पु डातमलो जिंतिंचि
'हितुडु नाकु, लोकहितुडु पवनु,
डतनि पुत्रुडैन हनुमंतुनकु नेनु
चलुव कूर्तु' ननुचु जल्लनय्यॆ ॥२१९॥

वचनमु— अप्पुडच्चटि वृत्तांतं बंतयु, दनकु गावलियुन्न राक्षस
कांतल वलन विनि, चिंताभराक्रांतयै, जनकराजनंदन करंबु
शोकिंचि, करंबुलु मुकुळिंचि, जगद्धित कार्यधुर्युंडुनु,
राघवप्रियानुचरुंडुनु, मत्प्राणबंधुंडुनु, जगत्प्राणनंदनुंडुनुनैन
हनुमानुनकु शीतलुंडवु कम्मनि यग्निदेवुनकु नमस्करिंचि,
यग्निमंत्रंबुनु, ब्रह्ममंत्रंबुनु नुच्चरिंचिन, नद्दानिवलन
वानिकि वैश्वानरभगवानुंडु सल्लनय्यॆ, ब्रह्मास्त्रबंधंबुनु
नूडॆनट्टि समयंबुन ॥ २२० ॥

सी०- कॊलुवु कूटमुलकु गुप्पिचि,गजवाजि शालल मीदिकि जौकळिंचि,
भंडार गृहमुल पैकिनि लंघिचि, मॆरुगारु मेडल मीदि कुरिकि,
चप्परंबुल मीदि कुप्परंबुन दाटि, यंतःपुरमुनकु गंतुवैचि,
चविकल मीदनु साहसंबुन व्रालि, गरिडिकूटंबुल सॊरिदि नॆक्कि

तेटगीति— वाडवाडल वीथुल वन्नॆ मॆरसि
हरुडु त्रिपुरंबु गाल्चिन[1] यट्टि लील,
नॊक्क गृहमैन लॆक्ककु दक्क नीक,
दानवेश्वर पुरंबु दग्धंबु चेसॆ ॥२२१॥

शार्दू०- अंभोराशिनि वालवह्नि नति शैत्यं बॊप्पगार्चिचि[2];य-
य्यंभोजानन सीतगांचि तन वृत्तांतंबु तॆल्लंबुगा
गंभीर ध्वनि विन्नविंपुचु नमस्कारंबु गाविंचि सं-
रंभं बॊप्पग वेड्कतो गदलॆ धीरप्रौढि हन्मंतुडुन्[3] ॥२२२॥

---

१. वेल्चिन (जलाना) २. नति शौर्यं बॊप्प जल्लार्चि (शीतल कर)
३. दीपिंपगन् (विख्यात हुए)

वालाग्रज्वालाओं से वायुसुत का लंका जलाना

समग्र पूंछ को बल के साथ साड़ियों से, दृढ़ता से लपेट-लपेटकर, उसपर अच्छी तरह तेल डालकर, पीछे चलकर लोगों के देखते समय, अग्नि की ज्वाला लगाकर, सिंहनाद करते हुए, हर मुहल्ले में घुमाते रहने पर, वातूल-भव (हनुमान) ने उसके लिए व्याकुल न होकर, अग्निजप किया ।। २१८ ।।

अग्निदेव तब अपने मन में यह सोचकर कि 'पवन मेरा हितैषी (तथा) लोक हितकारी है। उसके पुत्र हनुमान को मैं शीतलता प्रदान करूंगा।' शीतल हो गया ।। २१९ ।।

तब वहाँ का सारा वृत्तान्त अपनी रखवाली करनेवाली राक्षस कान्ताओं से सुनकर, चिन्ताभार से आक्रान्त हो, जनकराज-नन्दना ने अत्यधिक शोककर, हाथ जोड़कर, 'जगद्धित कार्य में धुरीण, राघव का प्रिय अनुचर, मेरा प्राण-बन्धु, जगत के प्राण (वायु) के नन्दन हनुमान के लिए (अग्नि) शीतल हो जाये' (ऐसा) कह अग्निदेव को नमस्कार किया। अग्निमंत्र एवं ब्रह्ममंत्र के उच्चारण करने से उनके (प्रभाव से) उसके लिए (हनुमान के लिए) वैश्वानर भगवान् (अग्निदेव) शीतल बन गये। ब्रह्मास्त्र का बन्धन छूट गया। ऐसे समय में,— ।। २२० ।।

सभा-मन्दिरों पर छलाँग भरकर, गज-शालाओं, अश्व-शालाओं पर उछल कूदकर, भण्डार-गृहों पर लांघकर, सुन्दर-भवनों पर दौड़ लगाकर, छप्परों को शीघ्र पारकर, अन्तःपुर में छलाँग मारकर, मण्डपों पर साहस के साथ उतरकर, व्यायामशालाओं में क्रम से चढ़कर, सभी मुहल्लों की वीथियों में विलासकर, जिस प्रकार हर ने त्रिपुर को जलाया था, उसी प्रकार गिनने के लिए एक घर को भी न छोड़ते हुए, दानवेश्वर-पुर (लंका) को (हनुमान ने) दग्ध किया ।। २२१ ।।

अंभोराशि (सागर) में पूँछ की आग को अति शीतल बना लेकर (बुझाकर), उस अम्भोजानना (कमलमुखी) सीता को देख, अपने वृत्तान्त का स्पष्टरूप से, गम्भीर ध्वनि से निवेदनकर, नमस्कारकर, उत्साह एवं आनन्द के साथ, धीरों में प्रौढ़ हनुमान (वापस) चल पड़ा ।। २२२ ।।

मारुति पिडिकिटिपोटुतो यमपुरि करिगिन लंकिणि

कन्द— पोयेंडु वायुजु नेक्कड
बोयेंदु नाचेत ननुचु बोनीक वडिन्
डायग वच्चिन लंकिणि
कायमु वगुलंग बोंडिचें गडु वडि गिनुकन् ।।२२३।।

वचनमु— इट्लु लंकिणि जंपि, सुवेलाचलंबेक्कि, सिंहनादंबु सेयुचु, ।। २२४ ।।

कन्द— पुडमी- धर शृंगंबुन
नडुगुलु वडिनूदि त्रोक्कि, यद्भुत शक्तिन्
जलराशि दाटें बावनि
मिडिविंटं बसिडि युंड मीटिनरीतिन् ।।२२५।।

वचनमु— इट्लु कुप्पिचि, युप्परं बेंगसि, वायुवेगंबुनं जनुचु नय्यब्धि-मध्यंबुन नुन्न सुनाभंबनु शैलंबुन दनदेहंबु दाहंबु दीर्चि-कोंनि, समुद्रंबुनु दाटि, यव्वलिकि जनियें नप्पुडु, ।।२२६।।

दधिवनमुन वानर वीरुल युत्साहक्रीड

उत्प०- वच्चिन पावनिं गनि, जवंबुन नंगदु डादियौ कपुल्
ग्रच्चर भक्तितो नेंदुरुगा जन, नंदर गौगिलिंचि वा
रच्चटि कार्यमंतयु न्रियंबुनदन्नडुगंग, बोयि वे-
वच्चिन चंद मेर्पडग वारिकि जेप्पेंनु दप्पकुंडगन् ।।२२७।।

कन्द— रघुवरु डिच्चिन मुद्रिक
रघुवल्लभुदेवि किच्चि, रभसंबुन ना
रघुवरुन कानवालुग
रघुवल्लभुदेवि चेतिरत्नमु गोंटिन् ।।२२८।।

मत्ते०— अनिचेप्पन् विनि, यंगदादुलु महाह्लादंबुनन् बोंगि पा-
वनि बाहाबलसत्त्वमुल् वोगडुचुन्, वर्णिपुचुन्, वे पुनः
पुनरालिंगन मार्चरिपुचु,वडिन् भूषिंचुचुन्, म्रोक्कुचुन्
घनतं बाडुचु नाडुचुन्, बलुविडिन् गर्वंबुनन् दाटुचुन् ।।२२९।।

शार्दू०—नेने चालुदु रावणासुरु तलल् नेलं बडंगोट्टगा,
नेने चालुदु वानिपट्टणमु मुन्नीटं बडं द्रोयगा,
नेने चालुदु दुष्टदानवततिन् निर्भीति दंडिपगा,
नेने चालुदु नंचु बंतमुलु पून्किबल्कुचुन् द्रुळ्ळुचुन् ।।२३०।।

### मारुति के मुष्टिघात से यमपुर गई लंकिणी

(वापस) जानेवाला वायुज मेरे हाथों से कैसे (बचकर) जाएगा। ऐसा कहते हुए जाने न देकर शीघ्रगति से निकट आई लंकिणी के शरीर पर अतिशीघ्रता तथा क्रोध से मुष्टिघात किया जिससे उसका शरीर फूट गया ।। २२३ ।।

इस प्रकार लंकिणी को मारकर, सुवेलाचल पर चढ़कर, सिंहनाद करते हुए, ।। २२४ ।।

पर्वत शिखर पर बल से पैर दबाकर, अद्भुत शक्ति से हनुमान ने आकाश में सोने की गेंद के उड़ने के समान, सागर को पार किया ।। २२५ ।।

इस प्रकार उछलकर, आकाश में उड़कर, वायुवेग से चलते हुए, सागर मध्य में स्थित सुनाभ नामक पहाड़ पर (उतरकर) अपनी देह की प्यास बुझाकर, सागर को पारकर उस तट पर पहुँच गया। तब ।। २२६ ।।

### दधिवन में वानर वीरों की उत्साह-क्रीड़ा

आये हुए पावनी को देखकर अंगदादि कपिगण शीघ्र ही भक्ति से अगवानी करने गए। हनुमान ने सबसे आलिंगन किया। वहाँ के कार्य के बारे में उन लोगों के प्रिय वचनों से पूछने पर, (अपने) जाकर आने का सारा विधान क्रम से कह सुनाया ।। २२७ ।।

रघुवीर की दी हुई अंगूठी रघुवल्लभ की देवी को देकर, आनन्द के साथ रघुवर की पहचान के लिए रघुवल्लभ की देवी से रत्न को प्राप्त किया ।। २२८ ।।

(इस प्रकार) कहने पर सुनकर, अंगद आदि अत्यधिक आह्लाद से फूलकर, पावनी के बाहुबल तथा सत्त्व की प्रशंसा करते हुए, वर्णन करते हुए, पुनः पुनः आलिंगन करते हुए, शीघ्र स्तुति करते हुए, प्रणाम करते हुए, घन (महान्) रीति से गाते हुए, नाचते हुए, गर्व से उछल-कूद करने लगे ।। २२९ ।।

रावणासुर के सिरों को धरा पर गिराने के लिए मैं ही (अकेला) बस हूँ। उसकी नगरी को सागर में डुबोने के लिए मैं ही बस हूँ। दुष्ट दानव के समूहों को निडर हो दण्डित करने के लिए मैं ही बस हूँ। मैं ही बस हूँ, (ऐसा) कहते हुए प्रतिज्ञाएं करते हुए, गर्वीले वचन (वानर) कहने लगे ।। २३० ।।

कन्द— आरात्रि कीशुलंदरु
मारुतितो गूडि निलिचि, मरुनाडचटन्
धीरत दुर्धर शैलमु
चेरंजनि, निद्रचेसि चित्तमु ललरन् ॥२३१॥

वचनमु— अम्मरुनाडुदयंबुन मधुवनंबुलो ब्रवेशिंप नुद्योगिंचि यंदरुकन्ननु बेद्दवाडगु जांबवंतुनिं बिलिचि, नीवु श्रीरामुनकु हितुंडवु, सुग्रीवुनकु मंत्रिवि, कावुन माकु नोक बुद्धि याननतिम्मु, ई कपुलु क्षुद्भादवशंबुनं बोरलि, महाश्रमंबुनु बोंदियुन्नवारु, गावुनि सुग्रीवुनि मधुवनंबुन नुंडेडु फलंबुलं बरितृप्तुलमै, रामुनि सन्निधानंबुन केगुट लेस्सयनि यंगदहनूमंतुलुवल्क जांबवंतुंडुनु नत्युत्साहंबुन नंगीकरिंचि, कपुलं बुरस्करिंचु कोनि मधुवनंबुलो ब्रवेशिचिनंत ॥२३२॥

सीसमु—
ओक्क डाकोनि कोम्म नूचिन बंड्लेल्ल जेकोनि तेर भक्षिचु नोकडु,
ओक्क डाकोनि रेपु चुन्नट्टि तेनियल् तडयक कोल्लाडि त्रागु नोकडु,
ओक्क डाकोनि कोयुचुन्नट्टि कायलु मिन्नक यूटाडि म्रिगु नोकडु,
ओक्क डाकोनि गोळ्ळ नोलिचिनट्टि चिवुळ्ळ बुक्किळ्ळ कोलदिग,
बोक्कु नोकडु,

तेटगीति— तरुवुपै नुंडि तरुवुपै दाटु नोकडु,
पंड्ल केट्टुवंटि म्राकेन ब्राकु नोकडु,
दिगुव गूर्चुंडि तरुवुन केगुरु नोकडु,
पेद्दपोडवुन नुंडि कुप्पिचु नोकडु ॥२३३॥

उत्प०- कायलब्रेट्टुलाडुचुनु, गंतुलु वैचुचु, बूवुदीवलं
दूयललूगुचुन्, दरुवुलूपुचु, बंड्लनु बोट्ट निंडगा
मेयुचु, वेक्किरिंपुचुनु, मिन्नक दाटुचुलू, दोकलेत्तुचुं
गूयुचु, नेलदूकुचुनु, गुंपुलुगूडि कपींद्रु लैंतयुन् ॥२३४॥

कन्द— वनमेल्ल[1] गासि चेयग
वनपालकु लेगुदेंचि, वडि गोपमुतो-
डनु नर्दलिचिन, वारल
हनुमंतुडु मोदलुगाक नगचरु लेल्लन् ॥२३५॥

---

१. वनमंत गासि चेयग

उस रात में सभी वानर मारुति के साथ रहकर (बिताकर), दूसरे दिन धैर्य के साथ दुर्धर नामक पहाड़ पर पहुँचकर, सोकर आनन्दित हुए ।। २३१ ।।

दूसरे दिन प्रातःकाल मधुवन में प्रविष्ट होने का प्रयत्न कर, सब में बड़े जाम्बवान को बुलाकर कहा कि "तुम श्रीराम के हितू हो, सुग्रीव के मंत्री हो । इसलिए विवेक के अनुकूल एक आज्ञा दो । ये वानर भूख से अतिश्रान्त हुए हैं । इसलिए सुग्रीव के मधुवन के फलों से परितृप्त होकर, राम की सन्निधि में चलना ठीक होगा ।" (इस प्रकार) अंगद एवं हनुमान के कहने पर जाम्बवान ने अति उत्साह से अंगीकार कर, कपियों को आगे लेकर मधुवन में प्रवेश किया, तब ।। २३२ ।।

किसी एक के भूखा होकर, शाखा को हिलाने पर, सारे फलों को दूसरा खूब खा लेता । एक के भूखा होकर (छत्ते को) उड़ाने पर, दूसरा शीघ्र ही शहद को पी लेता । एक के फल तोड़ने पर दूसरा उन्हें पकड़कर निगल जाता । एक के नाखूनों से कोपलें तोड़ने पर दूसरा मुँह भर भर कर खा लेता । कोई वृक्ष से वृक्ष पर लांघता । कोई फलों के लिए किसी भी प्रकार के महावृक्ष पर भी रेंग चढ़ता । कोई नीचे बैठकर (एकदम) वृक्ष पर उछलकर चढ़ता । कोई बहुत दूर तक छलाँग भरता ।। २३३ ।।

फलों को फेंकते हुए, खेलते हुए, उछल-कूद करते हुए, पुष्पलताओं में झूलते हुए, वृक्षों को हिलाते हुए, पेट भर फल खाते हुए, हँसी-मजाक करते हुए, लांघते हुए, पूँछ उठाकर विचित्र-ध्वनियाँ करते हुए, ऊपर से जमीन पर कूदते हुए, झुण्ड के झुण्ड कपिवर्ग कोलाहल करने लगे ।। २३४ ।।

समस्त वन का सर्वनाश करने पर, वनपालक आकर, झट-अति-क्रोध से धमकाने लगे तो उन्हें हनुमान आदि नगचरों (वानरों) ने, ।। २३५ ।।

कन्द— मॆंडबट्टि वनमुलोपल
वॆंडलग नट्टु पारद्रोब्बि, वॆंडलुं डन्नन्
दडयक दधिमुखुडनु तम
यॊडयनि कड कॆगि वारलुग्रमुगागन् ॥२३६॥

वचनमु— विन्नविंचिन यंतने, ॥ २३७ ॥

अंगदादुलचे दधिमुख पराभवमु

चम्प०- दधिमुखु डलिग मंडिपडि,तादनवारल गूडि वच्चि, बल्-
विधमुल संचरिंचु कपिवीरुल गोपमु तोड जूचि, यी-
मधुवनमॆल्ल गॊल्लगॊन, मर्कटवल्लभुनाज्ञ द्रोय म-
म्मधमुल जेय नॆंतघनुलंचुनु बारग वारि नुद्धतिन्। ॥२३८॥

वचनमु— इट्लु दंडिंपुचुन्न दधिमुखुपै नंगदादि वनचरुलु गदिसि याग्रहंबुन, ॥ २३९ ॥

कन्द— कॊंदर गरचियु बॊंडिचियि,
गॊंदरु दलपट्टि यीड्चि कॊट्टियु, गोळ्ळन्
गॊंदरु व्रच्चियु दन्नियु,
नंदरु नॊप्पिप वारलाग्रहवृत्तिन् ॥२४०॥

कन्द— व्रय्यलु वारग व्रच्चिन
ग्रय्यग रक्तमुलु ग्रम्मगा वडितोडन्
गुय्यो ! मॊर्रो ! यनि वा-
रय्यॆड सुग्रीवु कडकु नरिगिरि भीतिन् ॥२४१॥

वचनमु— अरिगि, रामलक्ष्मणुलं गूडियुन्न मिहिर-नंदनुं गनुंगॊनि, नमस्करिंचि, मधुवनंबुनंदु जरिगिन वृत्तांतं बंतयु विन्नविंचिन, वारल नादरिंचि सुग्रीवुंडिट्लनियॆ : ॥ २४२ ॥

सुग्रीवाज्ञचे गिष्किंधकु वानर वीरुल पुनरागमनमु

कन्द— देवरपंपुन जनि, वा-
रे वॆरवुन सीत गनिरॊ; यिट्टु गाकुन्नन्
नावनमु पाडुसेयरु
पावनि मॊदलैनवारु भयविरहितुलै ॥२४३॥

वचनमु— अनि रामभूपालुंडु विन सुग्रीवुंडु वारल नूरार्चि; वारि दुंडगंबुलु वारिकॆ युंडुगानि वारलंदोड्कॊनि यतिवेगमु

गर्दन पकड़कर (उप) वन से बाहर ढकेल कर कहा "भाग चलो !" कहने पर उसने अविलम्ब दधिमुख नामक अपने स्वामी के पास जाकर उग्रता से, ।। २३६ ।।

निवेदन किया । करते ही, ।। २३७ ।।

## अंगदादि से दधिमुख का पराभव

दधिमुख ने क्रोध से आगबबूला होते हुए, अपने लोगों के साथ आकर, अनेक प्रकार से (उच्छृंखल) संचार करनेवाले कपिवीरों को क्रोध से देखते हुए कहा—"इस समस्त मधुवन को लूटने का, (और) मर्कट-वल्लभ सुग्रीव की आज्ञा का उल्लंघन करने का, (तथा) हम लोगों को अधम निरूपित करने का आप लोग कौन घन (महापुरुष) हैं ?" उन्हें उद्धत भाव से भगाने लगा ।। २३८ ।।

इस प्रकार दण्डित करनेवाले दधिमुख के पास अंगदादि वनचर जाकर क्रोध से, ।। २३९ ।।

कुछ (लोगों) को काट खा, मुट्ठियों से मारकर, कुछ लोगों को सिर पकड़ खींच-खाँचकर, मारकर, कुछ (लोगों) को नाखूनों से नोचकर, लातों से मारकर, सबको पीड़ित करने पर (दधिमुख) क्रुद्ध भाव से,।। २४० ।।

शरीर फट जाए, ऐसा नोचने पर (और) प्रवाह के समान खून के बहने पर शीघ्र ही हाय-हाय करते हुए, भयभीत हो, सुग्रीव के पास गया ।। २४१ ।।

चलकर, राम-लक्ष्मण के साथ स्थित मिहिर-नन्दन (सुग्रीव) को देखकर नमस्कार कर, मधुवन में घटित सारे वृत्तान्त का निवेदन किया, तो सुग्रीव ने उनका समादर कर, इस प्रकार कहा, ।। २४२ ।।

## सुग्रीव की आज्ञा से वानर वीरों का किष्किधा में पुनरागमन

"देव (राम) की आज्ञा से जाकर, पता नहीं वे किस विधान से सीता को देख पाए हैं । यदि ऐसा न हुआ तो पावनी आदि लोग भय-विरहित होकर मेरे वन को नष्ट नहीं करेंगे" ।। २४३ ।।

राम भूपाल सुनें, ऐसा कह सुग्रीव ने उनको सान्त्वना देकर कहा कि 'उनके नटखट कार्य, उनके साथ ही रहेंगे । उनको लिवा लाओ ।' कहकर

रंडनि यनपिनं जनि, यंगद हनुमंतुलंगनि, यवनीश्वरुंडी क्षणंबुनमिम्मंदऱ नच्चटकि रंडनि यानतिच्चें गावुन जेच्चेर बदुंडनि, तोड्कोनिपोवु नप्पुडु, वारल कॅदुरुगा वानर वीरुल गोंदऱ ननिपिन, वारलंगूडि चनुदेंचि, श्रीरामचंद्रुनि पादारविंदम्मुलकु साष्टांग दंड प्रणामम्मु लाचरिंचि, सौमित्रिकिनि वंदनम्मु लोनरिंचि, सुग्रीवुनकु नमस्करिंचि, तनचेत मेलुवार्त्त विन नुत्सहिंपुचुन्न रघुकुलेश्वरुलतलंपेंड्रिगि हनुमंतुडिट्लनियें : ।। २४४ ।।

हनुमंतुनिचे श्रीरामुनकु सीत कुशल वार्त्ता निवेदनमु

शार्दू०- कंटिन् जानकि, बूर्णचंद्रवदनन्, गल्याणि नालंकलो,
गंटिन् मीपदपंकजंबुलनु ने गौतूहलं बोप्पगा,
गंटिन् मीकरुणावलोकनमु विख्यातंबुगा, गीर्त्तुलं
गंटिन् माकपिवीर बृंदमुललो गांभीर्यवारान्नधी ! ।।२४५।।

सी०- कट्टिन वस्त्रंबु कट्टुकोंगे तक्क जीर्णिंचिपोयिन चीरतोड,
तुडुगनिवगलचे नोरंत प्रोंद्दुनु जेक्किट जेर्चिन चेयितोड,
बुडमिपै बोरलाडुनोंडलु बूडिदब्रुंगि निरतंबु दोरगु कन्नीटि तोड,
निडुदपेन्नेंऱिवेणि सर्दलिंचि जडलतो निरतनिराहारनियतितोड,

तेटगीति- गिनुक जंकिंचु दैत्यकामिनुलनडुम
दपमु जेयुचु दनुजबाधलकु नोंचि,
वनित प्राणंबु दक्क सर्वस्वमु द्यजिंचि,
नित्यमुनु मिम्मु मदिलोन निलिपयुंडु, ।।२४६।।

कन्द- जानकि बोंडगनियुनु, मी-
रानति नाकिच्चि पंपिनट्टि विधंबुनु,
नेनायम कॅऱिंगिंचियु
जानकिरत्नंबु गोंचु जनुदे गंटिन् ।।२४७।।

सीता शिरोरत्नमुनु गांचि श्रीरामुडु दुरपिल्लुट

वचनमु- इव्विधंबुन सीत चिह्नंबुलु रामचंद्रुनकुं जेप्पि, दंडप्रणामंबु लाचरिंचि, तनकु सीता महादेवि दयचेसिन शिरोरत्नंबु श्रीरामचंद्रुनकु समर्पिंचिनं जूचि, यदि यक्कुनं जेर्चि, यानंद बाष्पंबुलु ग्रम्मुदेर मूर्छिल्लि, तेप्पिरिल्लि, हा !

भेजने पर जाकर अंगद (तथा) हनुमान को देखकर, कहा—"अवनीश्वर ने इसी क्षण तुम सब लोगों को वहाँ आने की आज्ञा दी है। अतः शीघ्र चलो।" (ऐसा) कह उन्हें साथ ले जाते समय, उनकी अगवानी करने के लिए कतिपय वानर वीरों को भेजने पर, उनके साथ मिलकर सबने आकर, श्रीरामचन्द्र के पादारविन्दों को साष्टांग दण्ड प्रणाम किया। सौमित्र की वन्दना कर, सुग्रीव को नमस्कार कर, अपनी ओर से शुभ समाचार सुनने के लिए उत्सुक रघुकुलेश्वर की भावना जानकर हनुमान ने इस प्रकार कहा। — ॥ २४४ ॥

### हनुमान के द्वारा श्रीराम को सीता के कुशल समाचार का निवेदन

हे गाम्भीर्य वारान्निधि (गम्भीरता के सागर)! देखा है मैंने जानकी को, पूर्णचन्द्र-वदना को, लंका में उस कल्याणी को (देखा है)। (और यहाँ आकर) आपके चरण-कमलों को, मन में कौतूहल के विलसित होने पर, देखा है। आपकी करुणा के अवलोकन (चितवन) को विख्यातरूप से देखा है। अपने कपिवीर-समूहों में कीर्तियों को प्राप्त किया है।। २४५ ॥

पहने हुए वस्त्र की पहली परत को छोड़, (शेष) जीर्ण-शीर्ण बनी साड़ी के साथ, दुर्निवार पीड़ाओं से (चिन्ताग्रस्त हो) दिन भर गालों पर हाथ रखे हुए, धरती पर लोटने से शरीर पर मिट्टी के लग जाने पर, निरन्तर बहती अश्रुधारा से युक्त, लम्बी सुन्दर वेणी में जटाएँ बढ़ाकर, निरन्तर निराहार के नियम का पालन करते हुए, क्रोध से डरानेवाली दैत्य-कामिनियों के बीच में, तपस्या करते हुए, दनुजों की दी हुई यातनाएँ सहते हुए, प्राणों के अतिरिक्त सर्वस्व को त्यागकर, वनिता (स्त्री) सदा आपको मन में प्रतिष्ठित रखे हुए है ॥ २४६ ॥

जानकी को देखकर, आज्ञा देकर, मुझे भेजने के विधान के अनुसार उन्हें (सीता को) बताकर, जानकी के रत्न को लेकर, (यहाँ आपकी कृपा से) आ सका हूँ ॥ २४७ ॥

### सीता के शिरोरत्न को देख राम का दुखी होना

इस प्रकार सीता की पहचान (की बातें) राम को विदित कर, दण्ड प्रणाम कर, सीता महादेवी द्वारा प्रदत्त शिरोरत्न (सीसफूल) श्रीराम को समर्पित किया। उसे देख, उसे हृदय से लगाकर, आनन्द के आँसुओं के घिर आने पर मूर्छित हो, होश में आकर, 'हा! वामलोचने! हा!

वामलोचन ! हा ! पद्मगंधि ! हा ! सीत ! हा ! सीता ! यनुचु शोकिंचि सुग्रीवुंजूचि, मनमु लंका प्रयाणमु जेयबोवुदमु, गान निक सेनलं गूर्चु मनि यानतिच्चिन वानरेश्वरुंडु महाप्रसादं बनि यंगदहनुमज्जांबवत्सुषेण पनसनलनील गजगवाक्ष गोमुखादुलगु- सेनानायकुल नरुवदिकोट्ल नियोगिंच्चिन, वारुनु नॊक्कॊक्करु नूरेसिकोट्लबलंबुलतोड रामचंद्रुनि किरुवंकल नाडुचु बाडुचु माल्यवंतंबु वॆंडलिरनि विनि नारदुनि वाल्मीकिमहामुनीश्वरुंडट मीदि वृत्तांतं बॆट्टिदनि यडुगुटयुनु, ॥ २४८ ॥

आश्वासांत पद्य गद्यमुलु

कन्द– जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !  
जलजासन विनुत पाद जलजात ! सुधा  
जलराशि भव्यमंदिर  
जलजाकर चारु हंस ! जानकिनाथा ! ॥२४९॥

गद्यमु

इदि श्री गौरीश्वर वरप्रसादलब्ध गुरुजंगमार्चन विनोद (नित्यशैवाचार संपन्न) सूरिजनावनुत कविताचमत्कारातुकूरि केसनसॆट्टि तनय मॊल्लनामधेय विरचितंबैन श्री रामायण महाकाव्यंबुनंदु सुंदरकांडमु सर्वमु नेकाश्वासमु ।

पद्मगन्धी ! हा ! सीते ! हा ! सीते !' कहते हुए शोककर, सुग्रीव को देखकर (कहा) कि 'हम लंका के लिए प्रयाण करेंगे। इसलिए अब सेनाओं को इकट्ठा करो !' इस प्रकार आज्ञा देने पर, वानरेश्वर ने 'महाप्रसाद' कहकर, अंगद, हनुमान, जाम्बवान्, सुषेण, पनस, नल, नील, गज, गवाक्ष, गोमुखादि साठ करोड़ सेनानायकों को नियोजित किया। तब उन्होंने एक-एक ने सौ-सौ करोड़ की सेनाओं के साथ, रामचन्द्र के दोनों पार्श्वों में नाचते-गाते हुए, माल्यवन्त से प्रस्थान किया। यह सुन-कर नारद से वाल्मीकि महामुनीश्वर ने पूछा—आगे की कथा का वृत्तान्त क्या है ? ।। २४८ ।।

### आश्वासान्त पद्य (और) गद्य

हे जलजाक्ष ! हे भक्तवत्सल ! हे जलजासन (ब्रह्मा) से विनुत पादजलजात (चरणकमल) वाले ! सुधा-जलराशि के भव्य मन्दिर-रूपी जलजाकर (सागर) में विहार करनेवाले सुन्दर हंस ! हे जानकी नाथ ! (नमः) ।। २४९ ।।

यह श्रीगौरीश्वर के वर के प्रसाद को सम्प्राप्त, गुरु जंगम के अर्चन के विनोदी (नित्य शैव सेवाचार सम्पन्न), सूरिजन (श्रेष्ठजन) से विनुत, कविता में चतुर, आतुकूरि केसन श्रेष्ठि की तनूजा मोल्ल नामधारी से विरचित श्रीरामायण महाकाव्य में सुन्दरकाण्ड का यह पूरा एकाश्वास (समाप्त) है।

# युद्ध काण्डमु

प्रथमाश्वासमु

कन्द— कामारिविनुतनामा !
सामीरिकृतप्रणाम ! संहृतरक्षो-
ग्रामा ! वर्षामेघ-
श्यामा ! संग्रामभीम ! जानकिरामा ! ॥ १ ॥

श्रीरामुडु वानरसेनतो लंकपै दाडि वेडलुट

वचनमु— श्री नारदमुनीश्वरुंडु वाल्मीकि मुनीश्वरुनकॆरिंगिंचिन तॆरंगु विनिपिंचॆद सावधान चित्तंबुतो नाकर्णिंचुमु अट्लु श्रीरामचंद्रुडु वानरसैन्यमुतो वॆडलि नडुचुचुंड, हनुमंतुंडंतकुमुंदु तानु लंक करिगि मगिडिवच्चिच, यच्चटि वृत्तांतमंतयु श्रीरामचंद्रुनि कॆरिंगिंचियु, द्रोवलो नुबुसुपोककुगामरल रावणुंडुडु चंदंबुनु, राक्षसस्त्रील संवादंबुनु, निंद्रजित्ततिकायादि कुमारवर्गंबु तॆरंगुनु, गुंभकर्णविभीषणादि सोदरुल युनिकियुनु, लंकिणिपोंकंबणंचुटयु, लंकलोपलकु बोयिन चंदंबुनु, लंकापुरीदहनंबुनु, समुद्रलंघनंबुनु, नदि यिदि यननेल ता जेसिवच्चिन कार्यंबु नॆल्लनॆव्वरेदेदि यडिगिन वारिकावृत्तांतंबु नॆरिंगिंचुचुंड, मिगिलिनकपुलु विनुचु, दमजाति चेष्टलु सूपुचु, जनुचुन्न चंदंबु सुग्रीवुंडु रामचंद्रुनकु जूपुचु नडुचुचुन्न समयंबुन ॥२॥

उत्प०-कॊंदरु मंतनम्मुलनुगॊंचुनु, गॊंदरु दॊम्मुलाडुचुं,
गॊंदरु रामलक्ष्मणुलकुं बि्रयमौगति नाटलाडुचुं,
गॊंदरु गंतुलेयुचुनु, गॊंदरु पंडि्लगिलिचि चूपु चि,
ट्लंदरु बोवुचुंडिरि दयानिधिरामुडु संतसिल्लगन् ॥ ३ ॥

सी०-पादघट्टनलचे बरगिन पॆंधूळि याकसम्मुन मेघमट्लु पर्व,
वीकतो दाकिनवृक्षजातंबॆल्ल व्रेलिमिडि गॊम्मलु विडि्गि पडग,
बलुविडितो बोवु पक्षिजातम्मुलु भयमुचे नंदंद पारुचुंड,
जूपिचि रावणासुरुनिसैन्यंबिट्लु मनवारिचेतनु म्रंद गलदु,

# युद्ध काण्ड

**प्रथमाश्वास**

हे कामारि (शिव) से स्तुत्य नामवाले! सामीरि (समीरसुत) से सदा वन्दित होनेवाले! संहृत-राक्षस-समूहवाले! वर्षा के मेघ के समान श्यामवर्णवाले! संग्राम में भीम (भयंकर)! हे जानकीनाथ! ॥१॥

**श्रीराम का वानर सेना के साथ लंका पर अभियान**

श्री नारद मुनीश्वर के वाल्मीकि मुनीश्वर को विदित किया हुआ (कथा-) विधान सुनाऊँगी। सावधान चित्त से सुनो। उस प्रकार वानरसेना के साथ निकलकर श्रीराम के चलते समय हनुमान, पहले अपने लंका जाकर, वापस लौट आने का वहाँ का समस्त वृत्तान्त सुनाकर भी मार्गमध्य में समय काटने के लिए दुबारा रावण के रहने की रीति, राक्षसस्त्रियों का संवाद, इन्द्रजित, अतिकाय आदि कुमार वर्गों की पद्धति (रहन-सहन), कुम्भकर्ण विभीषणादि भाइयों की स्थिति, लंकिणी की सुघड़ाई का (गर्व) हरण, लंका में प्रवेश का विधान, लंकापुरी का दहन, समुद्र लंघन, यह और वह क्या, अपने किए समस्त कार्य को (कुतूहलवश) जिस-जिसने जो-जो पूछा उन-उनको उन वृत्तान्तों को (विशद रूप से) विदित करते हुए, शेष कपिवरों को सुनाते हुए, अपनी जाति की चेष्टाएँ (कर) दिखाते हुए चलते रहे। सुग्रीव का राम को रास्ता दिखाते चलते समय,— ॥ २ ॥

कुछ लोग सलाह-मशविरा करते हुए, कुछ लोग ठेला-ठेली करते हुए, कुछ लोग राम-लक्ष्मण को प्रिय लगें, ऐसे खेल खेलते हुए, कुछ लोग उछल-कूद करते हुए, कुछ लोग दाँत खींसकर दिखाते हुए (हँसते हुए), (जिसे देख दयानिधि राम प्रसन्न हों) इस प्रकार सब लोग जा रहे थे ॥ ३ ॥

पदचाप के कारण व्याप्त अत्यधिक धूल आकाश में मेघ की भाँति छा गयी। लापरवाही से वृक्ष समूह को लगने पर (धक्के देने पर) शाखाएँ चुटकी भर में टूट पड़ीं। अत्यधिक वेग से जानेवाले पक्षिगण भयभीत हो इधर-उधर उड़ जाने लगे। उनको दिखाकर अर्कतनय (सुग्रीव) ने राम से कहा कि इसी प्रकार रावणासुर की सेना हमारे लोगों

तेटगीति— अनुचु श्रीरामुनकु नर्कतनयुडिट्लु
संतसमुपुट्टजेप्पुचु सागि सागि,
क्रममुगा नंदरुनु गोंतकालमुनकु
दिन्नगा जेरिरि समुद्रतीरमुनकु ॥ ४ ॥

वचनमु— इट्लंदरुनु समुद्रतीरमुन विडिसियुन्न समयंबुन हनुमंतुंडु बुद्धिमद्वरिष्ठुंडु गावुन, श्रीरामचंद्रुनकु नमस्करिंचि रावणुंडु, राज्यंबुनं बट्टभद्रुंडैयुन्नवाडु; वानि जंपि सीतामहादेवि देप्पिचुपनिकै वेग मन मंदरमुनु सिद्धुलमै युंडवलयु, ननवुडु रामचंद्रुंडु तम्मुनितो ॥ ५ ॥

कन्द— ई वानरुलनु दोड्कोनि
प्रावीण्यमुतोड वृक्षपर्वततुलन्
वेवेगमे तेप्पिपुमु
पोवुद मटमीद वैरिपुरमुं जेरन् ॥ ६ ॥

वचनमु— अनि इट्लानतिच्चि समुद्र-तरणोपायंबालोचिंचुचुंडे नंत ॥ ७ ॥

राक्षस वीरुलतो रावणुनि मंतनमु

सी०- अक्कड रावणुंडखिल मंत्रुल वेग राविंचि तगग वारलकु ननियें:
मंत्रिसत्तमुलार ! मर्कटुंडोकडेगुदेंचि मनंदरं गोंचेपरचि,
राक्षस वीरुल रणभूमि बोलियिंचि,वनमंत बेंकलिंचि, वार्धि दाटि
पोयेनु, बोरानि पोकल बोवुचु वाडु श्रीरामुनिवद्दकेगि,

तेटगीति— एमि चेप्पुनो ? यामीद ना मनुष्यु
लिद्दरुनु वानरुलगूडि येपुमीर
वच्चि, लंकापुरमुलोनिवारिनेल्ल
नेमि चेयुनो ? यिपुडु नाकेमिदारि ? ॥ ८ ॥

वचनमु— अनि यिट्लु रावणुंडु निडुपेरोलगंबुन गूर्चुंडि, डोलायमानमानसुंडै विचारिंचुचुंड, नासमयंबुन विभीषणुंडु सायंसंध्याविधि दीर्चिकोनि, तन मंत्रुलुं दानुनु गोल्वुकूटंबुन केतेंचि, पेद्द गद्दियपै गोलुवुन्न यन्नकु साष्टांगदंडप्रणामंबु लाचरिंचिन, नतंडुनु संतोषिंचि यनुजुनकु नर्हपीठंबु जूपिन, नासीनुंडै यन्न किट्लनियें : ॥ ९ ॥

के हाथ से नष्ट हो जाएगी। (ऐसे वचनों से) श्रीराम को प्रसन्न करते हुए, जा-जाकर, क्रम से सब लोग कुछ समय में सीधे समुद्रतट पर पहुंचे ॥ ४ ॥

इस प्रकार सभी लोगों ने समुद्रतट पर डेरा डाला। ऐसे समय में बुद्धि में वरिष्ठ होने के कारण हनुमान ने श्रीराम को नमस्कार कर कहा "रावण (लंका) राज्य पर सुप्रतिष्ठित है, उसका वधकर सीतादेवी को शीघ्र लाने के कार्य में हम सबको तैयार हो रहना चाहिए।" कहने पर रामचन्द्र ने भाई से (कहा—) ॥ ५ ॥

"इन वानरों को साथ ले जाकर वृक्ष, पर्वत समूहों को चतुराई से शीघ्र ही मँगाओ, इसके पश्चात् वैरिपुर को चलेंगे।" ॥ ६ ॥

इस प्रकार आज्ञा देकर समुद्र को पार करने का उपाय सोचते रहे। तब— ॥ ७ ॥

### राक्षस वीरों के साथ रावण की मन्त्रणा

वहाँ रावण ने सब मन्त्रियों को शीघ्र बुलाकर उनसे समुचित रीति से कहा "मन्त्रि-श्रेष्ठो ! एक बन्दर आकर हम सबका अपमानकर, राक्षस वीरों को युद्धभूमि में मारकर, सारे वन को उखाड़कर, सागर को पार कर चला गया। विचित्र रीति में विचरण कर श्रीराम के यहाँ जाकर पता नहीं, क्या कहेगा ? उस पर वे दोनों मनुष्य वानरों के साथ मिलकर, विकास की अतिशयता से आकर, समस्त लंकापुरवासियों को क्या करेंगे ? अब मेरे लिए क्या मार्ग (उपाय) है ?" ॥ ८ ॥

इस प्रकार रावण भरी सभा में बैठकर आन्दोलित मन से चिन्तित होता रहा। उस समय में विभीषण ने सायं-संध्या-विधि से निवृत्त होकर, अपने मन्त्रियों के साथ स्वयं सभा में आकर, ऊँची वेदिका पर उपविष्ट अग्रज को साष्टांग दण्ड प्रणाम किया। उसने भी सन्तुष्ट हो अनुज को समुचित आसन दिखाया। (तब) उपविष्ट होकर अग्रज से (विभीषण ने इस प्रकार) कहा— ॥ ९ ॥

रावणुनकु विभीषणुनि हितोपदेशमु

तेटगीति– अवधरिंपुमु देव ! महानुभाव !
मनपुरम्मुन नकृतमु चनुतेंङगु
विन्नविंचेद नुन्नदि युन्नयट्लु,
कोंचें मवधानमुग नालकिंचुमय्य ! ।। १० ।।

सी०-अन्नंबु नीरुनु नक्कर लेकुंड भट्टुलंदरुनु दुःखपडुदुरय्य,
कंबाल गट्टिन गजबृंदमेल्लनु जवसत्त्वमुलु दूलि जडिसेनय्य,
हर्षंबु तोडुत हयजातमंतयु मेंडलेत्तुकोनि वेड्क मेलगोनय्य,
प्रज्वलिंचुचुनुन्न प्रतिहोमकुंडंबु बोगलु ग्रम्मुचु नारिपोवुनय्य,

तेटगीति– इट्टि यपशकुनमुल गन्पेट्टुमय्य,
सकलशास्त्रंबु लेंङिगिन जाणवय्य,
यिंपुगा जेप्पुचुंटि नालिंपुमय्य,
वेग रामुनि सति निच्चिवेयुमय्य ! ।। ११ ।।

कन्द– सीतनु देंच्चुट मोदलुग
नीतो नयवाक्यमुलनु ने जेप्पिति, नी
चेतमुन बेट्टवैतिवि,
ख्यातिग निकनैन सीत नातनिकिम्मा ! ।। १२ ।।

वचनमु– अदियुनुं गाक मोन्नराितिरि सीतयोद्द गावलियुन्न राक्षस-कांतलंदरुनु निद्रिंचुचुन्न-समयंबुन, त्रिजट दिग्गन मेल्कांचि, निदुरिंचुचुन्न स्त्रीलनु लेपि, चेप्पिन दुस्स्वप्नंबु विन्नविंचेद नाकर्णिंपुमु : रामचंद्रुंडु मनलंकपै दंडु विडिसिनट्लुनु, नीवुनु कुंभकर्णुंडुनु दक्षिणाभिमुखुलै गार्धभंबुलपै नेक्कि पितृभूमि करुगुचुन्नट्लुनु, निंद्रजिदादि-कुमारवर्गंबुनु, सैन्यंबुनु, मूलबलंबुनु, सर्वंबुनु नशिंचि पोवुचुन्नट्लुनु, सीतं जेकोनि श्रीरामचंद्रुंडयोध्यकु बोवुचुन्नट्लुनु, गलगन्नदट । त्रिजट कल निक्कंबै तोचेंडिनि । रामुंडु वानरसैन्यंबु तो गूडि समुद्रतीरंबुनकु वच्चियुन्नाडनि चारुलु विन्नविंचिरि । आ रामुनि दूतलु मरल निच्चटकु राकमुनुपे श्रीरामचंद्रुनकु सबहुमानंबुगा सीतनु समर्पिंचुटयलेस्स कार्यमु । इंतजेप्पनेल ?

## रावण को विभीषण का हितोपदेश

"हे देव ! सावधान होकर सुनिये ! हे महानुभाव ! अपने पुर में सम्प्रति बीतनेवाली बातें (घटनाएं) जैसे-के-वैसे सुनाऊँगा। किंचित् कान लगाकर सुनिए ।। १० ।।

अन्नजल की आवश्यकता न होकर सभी भट दुखी हो रहे हैं। खम्भों से बँधा समस्त गजवृन्द बलसत्त्व को खोकर भयभीत हो गया। आनन्द के साथ सभी घोड़े गर्दन (ऊपर) उठाकर विचित्र रीति में घूमने लगे। प्रज्वलित होनेवाले सभी होम-कुण्ड धुँआ उगलते हुए, बुझ जा रहे हैं। ऐसे अपशकुन दिखाई पड़ रहे हैं। सकल शास्त्रों को आप जानते हैं। मीठी बातों से कह रहा हूँ। सुनिये ! तुरत राम की सती को (उन्हें) दे देजिए ।। ११ ।।

सीता को जब से लाए, तब से मैंने आपसे नय (नीति)-वाक्यों में कहा। आपने (उन्हें) चित्त में नहीं रखा (अनसुना किया)। अब प्रकट रूप से सीता को उनके यहाँ (पहुँचा) दीजिए ।। १२ ।।

इसके अलावा परसों रात सीता के यहाँ रखवाली करनेवाली सब राक्षस-कान्ताओं के सोते समय त्रिजटा ने झट जागकर, सोती स्त्रियों को जगाकर, जिस दुस्वप्न के बारे में बताया था, (उसका) निवेदन करूँगा। सुनिए। (उसने) रामचन्द्र के हमारी लंका पर अभियान करना, आपका और कुम्भकर्ण का दक्षिणाभिमुखी हो, गधों पर बैठकर पितृभूमि की ओर जाना, इन्द्रजित आदि (राज-) कुमार वर्ग का, सेना का, मूलबल का (और) सर्वस्व का नाश होना, सीता को लेकर श्रीरामचन्द्र का अयोध्या जाना (आदि का) सपना देखा है। त्रिजटा का स्वप्न सच लगता है। राम का वानर सेना के साथ समुद्रतट पर आ जाने का (समाचार) चरों ने निवेदन किया है। उस राम के दूतों के फिर से यहाँ आने से पहले ही श्रीरामचन्द्र की (सेवा में) आदर के साथ सीता का समर्पण करना उत्तम कार्य है। इतना कहना क्यों ? परसों एक दूत वानर वेष में आकर

मौन्न नौक्कदूत वानर वेषंबुन वच्चि तन पराक्रमंबु नीकुनु
बरिवारमुनकुनु नैरिंगिचिपोयें, -नदि गुरुतुंचुकौम्मु ।"
अनि यिट्लु नीतिचेंप्पु तम्मुनिपै गोपिंचि, दिग्गन
कौलुवुकूटंबु विडिचि यंतःपुरंबुनकु बोयें, ना समयंबुन
नासभलोनि वारंदरुनु दमतम मंदिरंबुल करिगिरि ।।१३।।

कन्द— मरुनाडेप्पटियट्लनें
सुरुचिरमुग गौलुवु सेय जोद्यंबुग नि-
द्दुर बोवु कुंभकर्णुडु
सरिगा मेलुकौनि वच्चें सरभसलीलन् ।। १४ ।।

वचनमु— इट्लु वच्चि, गृहप्रवेशंबु जेसि, स्नानादिक्रियलु निर्वर्तिंचु-
कौनि, भुजियिंचि, मंतुलतो नन्न कौलुवुनकु जनुचुंडु
कुंभकर्णुनितो, मरल विभीषणुंडुनु मंत्रिसहितुंडै वच्चेंनु ।
अनुजु लिद्दरुनु वच्चि नमस्करिंचिन, दीविंचि, सेमं-
बडिगि, युचितासनंबुलं गूर्चुंड नियोगिंचिन, गुंभकर्णुं-
डत्यंतमुनु नासन्नुंडै कूर्चुंडेंनु । कौंचेमु दूरमुलो गूर्चुंडि-
युन्न विभीषणुंडु मरल नन्नतो निट्लनियें ।। १५ ।।

सी०- दशरथरामुंडु तनपत्नि गोल्पोयि वानरावळि गूडि वच्चि यिप्पु-
डदें चूडुमंभोधि यावलि यौड्डुन गपिबलंबुलतोड गलसि युंडें,
रामुनि सत्त्वंबु रमणिचे मुन्विटि मातनितम्मुंडु नट्टिडंट
सौरिदि वारिकि व्रापु सुग्रीवुडुन्नाडु वार्धि निन् मुंचिनवानितम्मु,

तेटगीति— डातडिट वच्चि निन्नु नुग्गाडि कानि
सीत देननि पंतंबु चेसेंनंट,
वलदु वैरम्मु, सीत नीवलयु वेग
नतनि ननि गेल्वगा जालरमरवरुलु ।। १६ ।।

तेटगीति— रामु गेलुवंग वच्चुने राजसमुन ?
सीतनर्पिंचि, तत्पदाब्जातमुलकु
नर्थि व्रणमिल्लि, शरणन्न नतडे काचु,
सत्यसंधुंडु सत्कृपासांद्रुडतडु ।। १७ ।।

तुम्हें (और) तुम्हारे परिवार को अपने पराक्रम से परिचित कर गया। उसे स्मरण रखो।" कहते हुए नीति (की बातें) कहनेवाले भाई पर कुपित होकर, (रावण) झट सभास्थल को छोड़कर, अन्तःपुर में गया। उस समय सभी सभासद् अपने-अपने मन्दिरों (गृहों) में गये ।। १३ ।।

दूसरे दिन सदा की तरह सुरुचिर रीति में सभा का आयोजन होने पर, विचित्र रीति से सोनेवाला कुम्भकर्ण ठीक जागकर बड़े उत्साह के साथ आ गया ।। १४ ।।

ऐसा आकर, घर में प्रवेशकर, स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त हो, भोजनकर मन्त्रियों के साथ अग्रज के दरबार में जानेवाले कुम्भकर्ण के साथ फिर विभीषण भी मन्त्रियों सहित आ गया। दोनों अनुजों के नमस्कार करने पर, आशीष देकर, कुशल वार्त्ता पूछकर, समुचित आसनों पर बैठने का आदेश देने पर, कुम्भकर्ण अत्यन्त समीप हो बैठ गया। कुछ दूर पर बैठे हुए विभीषण ने फिर से भाई से कहा— ।। १५ ।।

"दशरथ-राम अपनी पत्नी को खोकर वानरावलि के साथ आकर अब वही देखो, सागर के उस तट पर कपि सेनाओं के साथ जुट गया है। राम के सत्त्व के बारे में पहले ही रमणी से सुन चुका हूँ। उसका अनुज शक्तिशाली है। क्रम से उनकी सहायता के लिए सुग्रीव (उपस्थित) है। जिसने तुम्हें सागर में डुबोया था, उसका (वालि का) वह अनुज है। सुना है कि उसने यहाँ आकर तुम्हें चूर-चूरकर ही सीता को ले जाने की प्रतिज्ञा की है! वैर भाव छोड़ो। शीघ्र सीता को दे देना चाहिए। उसे (राम को) अमरवर (देवेन्द्र) भी जीत नहीं सकते ।। १६ ।।

क्या राम को राजस (पौरुष) के साथ जीता जा सकता है? सीता को समर्पित कर, उनके चरण-कमलों में चाहकर, प्रणामकर, शरण जाने पर ही, वह रक्षा करेगा। सत्यवान तथा सत्कृपावान है वह ।। १७ ।।

आट०— चंप वच्चिनट्टि शत्रुवु नैननु
शरणु जॊच्चिनंत सदयुडगुचु
नभयमिच्चि काचुटातनि बिरुदंट,
सीत निच्चि रामुजेरि ब्रतुकु ॥ १८ ॥

वचनमु-- अनिन विनि यारावणुंडु कटकटंबडि विभीषणुनितो
रोषभीषणंबुगा निट्लनियॆ ॥ १९ ॥

रावणुडु विभीषणुनि दूषिंचुट

तेटगीति— नीवु नादायतो गूडि नीचबुद्धि !
बुद्धि सॆप्पॆदु नाकु दम्मुडवॆ नीवु ?
कडगि नीमंत्रुलुनु नीवु गंटिलोन
नॆरसु सरविगनुन्नारु निश्चयमुग ॥ २० ॥

तेटगीति— नाकु दम्मुडवटयु ननार्यमुगनु
नादु शत्रुल बॊगडुचु, नाकु बुद्धि
सॆप्पवच्चिचति वौरौर ? सिग्गुलेक
यिच्चवर्तिपुचुंडुटिदेमि पनिर ॥ २१ ॥

वचनमु-- अनिन विभीषणुंडन्नकिट्लनियॆ : ॥ २२ ॥

तेटगीति— निन्नु जंपग दलपोसि, नीदु मंत्रि
वरुलु गाचुचुनुन्नारु, वालदु गोत्र
कलह, मी चॆडुबुद्धि येकरणि नब्बॆ ?
नन्न ! यिकॊक्क कॊनमाट यालकिंचु ॥ २३ ॥

वचनमु-- रामचंद्रुंडादिनारायणुंडु, सीत यादिलक्ष्मि, वानरबलंबु
बृंदारकसंदोहंबु, गावुन नीवारामचंद्रुन कॆदिरि जयंबु
गॊनुट कडिदि कार्यंबु, ने जॆप्पिन बुद्धि विनि वेगनारामुनि
शरणु चॊरुमु। सुखंबुग मनुमु। अनि विन्नविंचिन
हितवचनंबुलु रोगिकि बथ्याहारंबु रुचिपनि पोलिकनु
वीनुल कसह्यंबुलैयुंड रावणुंडु मंडिपडि यिट्लनियॆ।।२४।।

सी०- पटु विषंबॊलिकिंचु पामुलतोनैन जॆलगि यिपुग जॆलिमि सेयवच्चु
गानि, शत्रुल नॆप्डु गैवारमुलु सेयु वानिनि दनप्राणबंधुनैन
जेर दीसिनयेनि जेटु वाटिल्लुनु, गावुन वीनि बलगर्वमणतु,
विनु कुंभकर्ण ! नीवुनु राकमुनुपु नी चॆडुगु नाकुनु बुद्धि चॆप्पबूनॆ

सुना है, (अपने को) मारने के लिए आये शत्रु के भी शरण में आते ही, सदय हो, अभय दान कर रक्षा करना उसका बिरुद है। (अतः) सीता को देकर राम की शरण जाकर, जीवित रहो।" ॥ १८ ॥

(ऐसा विभीषण के) कहने पर सुनकर, विकल हो, (रावण ने) विभीषण से रोष-भीषणता से इस प्रकार कहा— ॥ १९ ॥

**रावण का विभीषण-दूषण**

"तुम मेरे शत्रु से मिलकर, नीच बुद्धि से मुझे हित सिखाते हो? (तब) तुम मेरे अनुज कैसे हो? निश्चय ही तुम और तुम्हारे मन्त्री मेरी आँख की किरकिरी के समान हैं। ॥ २० ॥

मेरे अनुज होकर भी अनार्य की भाँति मेरे शत्रुओं की प्रशंसा करते हुए मुझे हित सिखाने चले आए! अरे! बेशर्म हो तुम अपनी इच्छा के अनुसार मनमानी करते हो? यह कैसा (अनुचित) कार्य है?" ॥ २१ ॥

(रावण के) कहने पर विभीषण ने अग्रज से इस प्रकार कहा— ॥ २२ ॥

"तुम्हारे वध की सोचकर तुम्हारे मन्त्रिवर ताक में बैठे हुए हैं। गोत्र-कलह (वंश में झगड़ा) नहीं चाहिए। ऐसी दुर्बुद्धि कैसे उत्पन्न हुई? हे अग्रज! और एक आखिरी बात सुनो। ॥ २३ ॥

रामचन्द्र आदिनारायण हैं। सीता आदिलक्ष्मी हैं। वानर सेना देवगण हैं, इसलिए तुम्हारा उस रामचन्द्र का सामनाकर विजयी होना असाध्य कार्य है। मेरे हितवचन सुनकर शीघ्र राम की शरण में जाओ। सुखी जीवन बिताओ।" ऐसा निवेदन करने पर, रोगी को जिस प्रकार पथ्याहार अरुचिकर लगता है, उसी प्रकार हितवचन कानों के लिए असह्य होने पर रावण ने कुपित होकर इस प्रकार कहा— ॥ २४ ॥

"पटु-विष उगलनेवाले साँपों के साथ भी खुलकर रुचिरता से स्नेह कर सकते हैं, किन्तु शत्रुओं की सदा स्तुति करनेवाले को, वह अपना प्राण बन्धु ही क्यों न हो, (उसे) पास रखने में अहित होगा। इसलिए इसके बल तथा गर्व का दमन करूँगा। हे कुम्भकर्ण! सुनो! तुम्हारे आने से

आट०— ननुचु हुंकरिंचि यव्विभीषणु बट्टि
वेगगत्तिबूनि व्रेयबोव
नटप्रहस्तुडप्पुडड्डम्मुगा वच्चि
देव ! नीकु दगुनॆ यीविधंबु ? ॥ २५ ॥

रावणुनिकि व्रहस्तुनि शांत वचनमुलु

कन्द— नीकेल यित कोपमु ?
नीकु हितमु जॆप्पुचुन्न नीतम्मुनि नी-
वे कत्तिव्रेसि चंपिन
लोकुलु निनु मॆत्तुरय्य लोकस्तुत्या ! ॥ २६ ॥

तेटगीति– गुणयुतुंडैन मन विभीषणुडु लेनि
लंक येटिकि ? सैन्यंबुलिकनेल ?
वैभवं बेल ? यामीद ब्राणमेल ?
शांतमवधारु देव ! नी स्वांतमंदु ॥ २७ ॥

वचनमु— अनि प्रहस्तुंडु रावणुकोपंबुनु गॊंत शांतपरिचॆ, नप्पुडन्न कोपंबुनकु दम्मुंडु कुंभकर्णुंडु वडवड वडकि यन्न कॆदुराड नोपक, तम्मुनि गादनलेक, गद्दियमीद गूर्चुंडियुन्न यन्नकु म्रॊक्कि, निदुर गृहंबुनकुं जनियॆ। नट रावणुंडु विभीषणुं जूचि, योरी ! नीवु विश्वासघातुकुंडवु, स्वामिद्रोहिवि, गावुन नीवु नाकॊक्क पेदनरुनि बॆट्टजेसि चॆप्पॆद, वातडे पौरुषशालियेनि नीवातनिं जेरि सुखंबुन ब्रतुकु मनिननतंडिट्लनियॆ ॥ २८ ॥

सी०-विनु राक्षसेश्वर ! विष्णु सन्निभुडु रामुंडु हा ! पेदनरुंडे नीकु ?
ननिसत्यस्थिति, यतनि पराक्रमंबिपुडु नी कॆरुंगंग नॆट्टु लगुनु ?
अवनीशुबाणंबु लतिरयंबुन वच्चि दंडिचुनपुडैन दलचु नन्नु,
बर्वत शिखरमुल् पडिनट्टु नीतललिल गूलुनपुडैन दलचु नन्नु,

तेटगीति– नीकु दम्मुंड नौटने नीवु ब्रतुकु
कौरकु जॆप्पिन नी कितकोपमेल ?
विनुमु नामाट, सीत नर्पिंचि यतनि
शरणु वेडुमु, वलदु नीसाहसम्मु ॥ २९ ॥

पहले यह दुष्ट मुझे सीख देने लगा था।" (ऐसा) कहते हुए हुंकार भरकर, उस विभीषण को पकड़कर, शीघ्र खड्ग लेकर (उसका) वध करने गया तो प्रहस्त ने तब रोककर कहा 'देव ! ऐसा करना तुम्हारे लिए ठीक है क्या ? ॥ २५ ॥

### रावण को प्रहस्त के शांतवचन

तुम्हें इतना क्रोध क्यों ? हे लोकस्तुत्य ! हितवचन कहनेवाले अपने अनुज को तुम्हीं खड्ग लेकर वध करोगे तो क्या लोग तुम्हारी प्रशंसा करेंगे ? ॥ २६ ॥

गुणवान विभीषण से रहित लंका किसलिए ? अब सेनाएँ किसलिए ? (यह सारा) वैभव क्यों ? इसके बाद प्राण क्यों ? (सब निरर्थक हैं।) हे देव ! अपने मन में शान्ति को धारण करो।" ॥ २७ ॥

कहकर प्रहस्त ने रावण के कोप को कुछ शान्त कर दिया। तब भाई के क्रोध को देख अनुज कुम्भकर्ण थर-थर कम्पित होकर, उसके विपरीत बात न कर सक, अनुज को नकार न सक, सिंहासन पर बैठे हुए भाई को प्रणामकर, निद्रागृह को चला गया। तब रावण ने विभीषण को देखकर कहा 'अरे ! तू विश्वासघातक है। स्वामि-द्रोही है। इसीलिए तू एक गरीब इन्सान को बढ़ा-चढ़ाकर कहता (प्रशंसा करता) है। यदि वही पौरुषवान् है तो तुम उसकी शरण में जाकर सुखी जीवन बिता !" (ऐसा) कहने पर उसने (विभीषण ने) इस प्रकार कहा— ॥ २८ ॥

"सुनो हे राक्षसेश्वर ! राम विष्णु-सन्निभ है। हाय, वह तुम्हारे लिए कमज़ोर नर (लग रहा) है ? उसकी सत्य स्थिति का, उसके पराक्रम का पता अभी तुम्हें कैसे लग सकेगा ? अवनीश (राम) के बाणों के अतिवेग से आकर तुम्हें दण्डित करते समय ही सही, मेरा स्मरण करो। पर्वत शिखरों के गिरने के समान तुम्हारे सिरों के धरा पर गिरते समय ही सही, मेरी याद करो। मैं तुम्हारा अनुज हूँ। अतः मेरे तुम्हारे जीवन (सुरक्षा) के लिए कहने पर, तुम्हें इतना क्रोध क्यों ? मेरी बात सुनो ! सीता को समर्पित कर उसकी शरण जाओ। (दुः) साहस छोड़ दो।" ॥ २९ ॥

वचनमु— अनि चॆप्पिन हितवचनंबुलकु मरिंत कोपोद्दीपितमानसुंडै याज्याहुतिं ब्रज्वरिल्लिन हुताशनु गतिन्मंडिपडि, पॆळपॆळनार्चि, गद्दियमीदं गूर्चुन्न विभीषणुनि वक्षंबु पगुलं दन्निन, नतंडु तनकन्नुल नुंडि तॊरगु जलकणंबुलु हस्तंबुलं दुडिचिकॊनुचु, नाक्षणंबुन मंत्रुलुंदानुनु दनतल्लियैन कैकसियॊद्दकुं जनि, साष्टांगदंडप्रणामंबाचरिंचि; यन्न चेसिन दुर्णयंबॆरिंगिंचि, शरणागतवत्सलुंडैन श्रीरामचंद्रुनि सन्निधानंबुनकु बोवुचुन्नाडननि चॆप्पि, यायम्म यनुमतंबु वडसि, दीवनलु गैकॊनि, चनि समुद्रतीरंबुन विचारग्रस्तुंडै युन्न श्रीरामचंद्रुनिगनि विभीषणुंडु ॥ ३० ॥

विभीषण शरणागति

सी०- भानुकुलोत्तंस ! वंदितामरलोक ! जानकीनायक ! शरणु ! शरणु
ताटकाप्राणविदारण! रघुराम! सकललोकाधार! शरणु! शरणु!
दिक्कुनीवनि वच्चिचति दीनमंदार! परमपूरुष! राम! शरणु! शरणु!
मातृपित्रादुलमाडि्क संरक्षिचु सर्वलोकस्तुत्य ! शरणु ! शरणु !

आट०— रानु वॆरचिनाड रक्षिचु रक्षिचु
मिपुडु नाकु नभयमिम्मु इम्मु
चूडु चूडु शरणु चॊच्चिचति जॊच्चिचति
गावु कावु नन्नु गरुणतोड ॥ ३१ ॥

वचनमु— अनि यिव्विधंबुन रामचंद्रुनि स्तुतिसेयुचु जेरवच्चु तरिनि, सुग्रीवुंडु श्रीरामचंद्रुनि गनि विश्वासंबु सूपुवाडै "देवा ! वीडु रावणुनि तम्मुंडु, विभीषणुंडनुवाडु, राक्षसुलु मायलु सेयुदुरु, गान वीनि वधियिप नाज्ञयॊसंगु मनिन रामचंद्रुंडंदुलकु सम्मतिपक यितंडॆव्वंडैन नेमि, शरणन्न रावणुनि तम्मुने कादु, रावणुनैननु गाचॆद । शरणनि वच्चिन वानि प्राणंबुलु गापाडुट राजुलकु बरमधर्मंबु । तॊलिलि शिबि चक्रवर्ति राज्यंबु सेयुचुंड नॊक्क खगंबेतॆंचि, शरणु चॊच्चिन नभयंबिच्चि, तन देहमुं गोसि, दानि दरुमुकॊनि वच्चिन डेग किच्चॆनट । कावुन नातनि

ऐसा कहे हितवचनों पर अधिक कोपोद्दीपित मनवाला हो, घी की आहुति देने पर प्रज्वलित होनेवाली अग्नि के समान बलकर, भयंकर सिंहनाद कर, (रावण ने) सिंहासन पर उपविष्ठ विभीषण के वक्ष-स्थल पर (वक्ष) फट जाए ऐसा लात मारने पर, आँखों से झरते हुए जलकणों को हाथों से पोंछते हुए, उसी क्षण मन्त्रियों के साथ स्वयं अपनी माँ कैकसी के पास जाकर साष्टांग दण्डप्रणामकर, अग्रज के अत्याचार को बताकर, (कहा कि) शरणागतवत्सल श्रीरामचन्द्र की सन्निधि में जा रहा हूँ। उस माता की अनुमति प्राप्तकर, आशीष पाकर, जाकर, सागरतट पर चिन्ताग्रस्त बने हुए श्रीरामचन्द्र को देख विभीषण (ने कहा—) ।। ३० ।।

### विभीषण की शरणागति

"हे भानुकुल-श्रेष्ठ ! हे अमरलोक से वन्दित ! हे जानकी-नायक ! शरण (माँगता हूँ)। हे ताड़का के प्राण-विदारक ! रघुराम ! सकल लोकाधार ! शरण (माँगता हूँ)। हे दीन-मन्दार ! यह सोच कि तुम्हीं आश्रय हो, आ गया हूँ। हे परमपुरुष ! राम ! शरण (माँगता हूँ)। माता-पिता की भाँति रक्षा करनेवाले हे सर्वलोकों से स्तुत्य ! शरण माँगता हूँ ! (शरण) आने में भयभीत रहा। (अब) रक्षा करो ! अब मुझे अभयदान करो, करो ! देखो, देखो, अब शरण में आ गया हूँ। करुणा से मेरी रक्षा करो, करो" ।। ३१ ।।

इस प्रकार रामचन्द्र की स्तुति करते हुए, विभीषण के समीप आते समय सुग्रीव ने श्रीरामचन्द्र को देख विश्वास जतानेवाला होता हुआ कहा—"हे देव ! यह रावण का अनुज है। विभीषण नामवाला है। राक्षस लोग माया करते रहते हैं। इसलिए इसका वध करने की आज्ञा दो।" (ऐसा) कहने पर रामचन्द्र ने उसके लिए सम्मत (राज़ी) न होकर (कहा)—"यह कोई भी क्यों न हो। शरण में आने पर रावण के अनुज की ही नहीं, रावण की भी रक्षा करूंगा। शरण में आये हुए व्यक्ति के प्राणों की रक्षा करना राजाओं का परम धर्म है। पूर्व में शिबि चक्रवर्ती के राज्य करते समय एक पक्षी ने आकर शरण ली। शरण में आये (पक्षी को) अभय प्रदान कर, (कहते हैं उसने) अपनी देह काटकर उसका पीछा करते आये चील को दिया। इसलिए उसे मेरे

नायोद्दकु गोनि रम्मनवुडु, सुग्रीवुडु विभीषणुनि दोड्कोनितेंच्चि, श्रीरामचंद्रुनि ---पादारविंदमुलपै बडवैचिन, नतंडु विभीषणु नेत्ति, यालिंगनंबु चेसि, यभयप्रदानंबोसगि, नेडु मोदलु नीवु माकु हितुंडवु, बंधुंडवुनयितिवि, गावुन निन्नु मातम्मुललो नोकनिगा जूचुकोनियेद ननि नम्मबलिकि, विभीषणा ! यिक वैरि प्रभावंबु चेप्पु मनिन, दशरथ नंदनुनकु वंदनं बाचरिंचि करंबुलु शिरंबुन धरिंचि यतंडिट्लनिये, ।। ३२ ।।

विभीषणुडु रामुनिकि रावणुनि बलसंपदनु देलुपुट

कन्द— रावणुनि बलसत्त्वस्थिति
या वीरुनि शौर्य महिम, यभिनुति सेयन्
ना वशमुगा, दतंडल
देवेंद्रुनि वेंट्टि गोनुनु दिनमु नरेंद्रा ! ।। ३३ ।।

कन्द— ओक्कोक्क गवनि वाकिट
नोक्कोक्कयेनूरुकोट्लुंदुरु दैत्युल्
पेक्कुर गावलि युंचुनु
दक्कक मरि येल्लकडल दानुनु दिरुगुन् ।। ३४ ।।

वचनमु— तन कुमारवर्गंबु लक्षयुं बदिवेलु, वारलकोक्कोक्करिकि लक्षमंदि बंट्ल नेर्पऱचि युंचिन, वारु लंकवीथुललो गोंदरुनु, नगरु चुट्टुनु गोंदरुनु, मरिकोन्निचोट्ल मरि-कोंदरुनु, गुंपुगूडि तिरुगुचुंदुरु । अयिननु ब्रह्मादुलकैननु साधिंप वलनुपडनि लंकापट्टणमु मीचेत साधिंप बडगलदु । कावुन मीरु वेवेग समुद्रुनि ब्रार्थिंचि, समुद्रबंधनंबु सेयवलयु, ननिन नंत महेंद्रपर्वतंबु डिग्गि, समुद्रप्रातंबुन विडिसि, जांबवदंगदसुषेणनील मैंदादि वनचर वीरुलचेत नलुदिक्कुलयंदुं गल पर्वतंबुलनु वृक्षंबुलनु बाषाणंबुलनु देप्पिंचि कडलि कट्टंगडंगिन ।।३५।।

पर्वतमुलु रुव्वि वारिधिपै वारधि तीरुप वानर वीरुल समुत्साहमु

शार्दू०— कूपारुंडुनु संतसिल्लि, जलजाक्षुं जूचि मिन्नंदि, स-
ल्लापंबुद्धति बोंग जूचि, विरसोल्लासंबुनन् राघव-

पास लिवा लाओ।" सुग्रीव ने विभीषण को साथ लाकर श्रीरामचन्द्र के चरणारविन्दों में डाल दिया। उसने (राम ने) विभीषण को उठाकर आलिंगनकर, अभय प्रदान कर "आज से तुम हमारे हितैषी एवं बन्धु बन गये हो। इसलिए तुम्हें अपने अनुजों में से एक समझूँगा।" कहकर विश्वास पैदाकर पूछा "विभीषण! अब वैरि का प्रभाव (शक्ति) बता दो!" (ऐसा) कहने पर दशरथ-नन्दन की वन्दनाकर, हाथों को सिर पर रख, उसने (विभीषण ने) इस प्रकार कहा ॥ ३२ ॥

**विभीषण का राम को रावण की बलसम्पदा का परिचय देना**

"हे नरेंद्र! रावण का बल एवं सत्त्वस्थिति की, उस वीर के शौर्य की महिमा की प्रशंसा करना मेरे वश की बात नहीं है। वह देवेंद्र से रोज़ बेगार करवाता है ॥ ३३ ॥

प्रत्येक दुर्गद्वार के पास पाँच-पाँच सौ करोड़ राक्षस लोग रहते हैं। अनेकों को रक्षा में (पहरे में) रखता है। उस पर वह सदा यहाँ-वहाँ घूमता रहता है ॥ ३४ ॥

उसका कुमारवर्ग एक लाख दस हजार है। उनमें प्रत्येक के लिए लाख-लाख भटों (सेवकों) की व्यवस्था की है। उनमें कुछ लोग लंका की गलियों में, नगर के चारों तरफ़ कुछ लोग, अन्य स्थानों में और कुछ लोग झुण्ड बाँधकर घूमते रहते हैं। फिर भी ब्रह्मादि से भी असाध्य लंकापुरी आपके द्वारा साध्य होगी। इसलिए आपको तुरंत समुद्र की प्रार्थनाकर, समुद्र-बन्धन करना चाहिए।" (ऐसा) कहने पर महेन्द्र पर्वत से उतरकर, समुद्र प्रान्त में पड़ाव डालकर, जाम्बवान, अंगद, सुषेण, नील, मैंद आदि बनचर-वीरों के द्वारा चारों दिशाओं में स्थित पर्वतों एवं पाषाणों को मँगवाकर सागर को बाँधने को उद्यत होने पर ॥ ३५ ॥

**पर्वत फेंककर वारिधि (समुद्र) पर वारधि (सेतु) के निर्माण में वानरवीरों का समुत्साह**

सागर के प्रसन्नता के साथ जलजाक्ष (राम) को देखकर वार्तालाप करने के लिए आकाश को छूने के समान फूलते देख विरस तथा क्रोध से

क्ष्मापालुंडुनु गोपमुं गदुर, नीगर्वंबु नाचेत व-
म्मैपोनिप्पुडटंचु लक्ष्मणुडु विल्लंदिय्य, बेन्वीकतोन ।। ३६ ।।

मत्ते०— परुषोद्यत्कुटिलाकृतिन् बोमलुचूपट्टंग, शोण प्रभो-
त्कररेखल्गनुगोल्कुलन्निगुड, गोदंडंबु चेदालिच, भू-
वरवंशाग्रणि रामुडद्भुतमुगा वाराशि मीदन् वडिन्.
शरजालंबुलु पेर्चि व्रेयुटयु,निच्चन् व्राणभीतिन् वडिन्।। ३७ ।।

कन्द— रामुनियेंदुट समुद्रुडु
ता मानवुरूपुदालिच, दैन्यमु दोपन्
रामुनकु म्रोक्कि, यपुडा-
धीमंतुन कनियें निलिचि तेजंबेसगन् ।। ३८ ।।

आट०— इंक नेल तडय निनकुलाधीश्वर !
कपुल बंपि वेग गट्टुमय्य !
कट्ट गट्टि दाटु कमलाप्तकुलचंद्र !
नीदु कीर्तिलतकु नेलवु गाक ।। ३९ ।।

वचनमु— मिम्मुनु दर्सिचुटकु मिन्नंट बोंगिति, निंतियकानि कपटोपायंबुन बोंगिन वाडनु गाननिन, रामभद्रुंडु करुणा-समुद्रुंडु गावुन समुद्रनेप्पटि यट्ल युंड नियमिंचि वानरुलं बनचिन, ।। ४० ।।

कन्द— रामुनि पंपुन ब्लवग-
स्तोमं बट्लरिगियरिगि, दोंड्डगु कोंडल्
क्षेममुन देंच्चि जलनिधि
रामाज्ञनु वैचिरधिकरभसंबोप्पन् ।। ४१ ।।

समुद्रमुन बर्वतमुलनु म्रिगिवेयु महामत्स्यमुलु

वचनमु— अट्लु वानरवीरुलु पर्वतपाषाणवृक्षजातंबुलु लक्षोप-लक्षलुगा देंच्चि, वाराशि बडवैचि, तद्गुभगुभ ध्वानंबुल कुप्पोंगुचु, ब्रह्मांड भांडबु ब्रद्दलगु नट्लुगा नार्चुचु, नट्टहासंबुलु सेयुचु, गंतुलु पेट्टुचु, वेक्किरिंपुचु, बरुवु लेत्तुचु, मुन्नु देंच्चिवैचिन पर्वतादुलनेल्ल, दिमि तिमिंगल-मुलु म्रिंग नासमयंबुन, ।। ४२ ।।

राघव ने कहा कि तेरा गर्व अब मेरे हाथों समाप्त हो जायेगा। लक्ष्मण के उत्साह से धनुष देने पर, अति उत्साह से ।। ३६ ।।

परुष भाव से उद्यत कुटिल आकृति से भौंहों के दीखने पर, रक्त की अरुण रेखाएँ आँखों के कोरों में दीखने पर, कोदण्ड को हाथ में धारण कर, भूवर (राजाओं) के वंशाग्रणि राम के अद्भुत रीति से सागर पर अतिवेग से शरजाल को क्रम से फेंकने पर, मन में प्राणभीति के कारण शीघ्र ।। ३७ ।।

राम के सामने समुद्र ने मानव के रूप को धारणकर, दैन्यभाव प्रकट करते हुए प्रणाम किया, तब अपने तेज को प्रतिष्ठित करते हुए उस धीमान् (श्रीराम) से कहा, ।। ३८ ।।

"अब देर क्यों ? हे इनकुलाधीश्वर (रामचन्द्र) ! कपियों को भेजकर शीघ्र बँधाओ। वारधि बाँधकर पार करो। हे कमलाप्त-कुल के चन्द्र। (यह कार्य) आपकी कीर्तिलता को सुस्थिर करेगा ।। ३९ ।।

आपके दर्शन के लिए आकाश को छूते हुए उत्साहित हुआ। बस इतना ही है, कपट उपाय के कारण उच्छलित नहीं हुआ।" (ऐसा समुद्र के) कहने पर रामभद्र करुणा-समुद्र होने के कारण समुद्र को यथावत् रहने को नियमित कर, वानरों को भेजा ।। ४० ।।

राम के आदेश पर प्लवंग-स्तोम (समूह) ने चल-चलकर, बड़े-बड़े पहाड़ों को कुशलता से लाकर रामाज्ञा से जलधि में उत्साह से डाल दिया।। ४१ ।।

### समुद्र में पर्वतों को निगलने वाले महामत्स्य

इस प्रकार वानर वीरों के पर्वत-पाषाण तथा वृक्ष-समूहों को लाख-लाख की संख्या में लाकर सागर में डालने पर, उन भयंकर ध्वनियों के कारण उत्साहित होते हुए, ब्रह्माण्ड-भाण्ड फट जाये ऐसा चीख-पुकार करते हुए, अट्टहास करते हुए, उछलकूद मचाते हुए, हँसी-मज़ाक करते हुए, भाग-दौड़ करते हुए (वानरों से) लाकर डाले गये सभी पर्वतादियों को तिमिंगल निगलने लगे। उस समय में ।। ४२ ।।

आट०— तिरुग देंच्चिच वैव देलि राकुंडुट
नात्मलोन संशयंबु नोंदि,
राजसिंहुडपुडु रत्नाकरुनि जूचि
यड्डुगुटयुनु वेग नातडनियें : ।। ४३ ।।

नलुनिचे सेतु निर्माणमु

सी०- रावणु पंपुन रालेंल्ल जेपलु म्रिगुचुंडै गदय्य मेदिनीश !
तिमितिमिंगलमुलु दिरुगुचु नायंदु नुंडि रावणुपंपु नोंनर जेयु
नलुडु गट्टिन गानि निलुवनेरदु कट्ट नलुनि बंपगदय्य नळिननेत्र!
यनि सरित्पति सेंप्पि यव्वेळ नरिगिन वीरुलिच्चट महावीर्यमुननु
तेटगीति— पर्वतंबुलु तेरगा, भानुकुलुनि
पंपुचेतनु वारिधि बरग वेग
नलुडु नाप्रोंद्दे पदि योजनमुलु गट्टे,
नंतलो सूर्युडस्त्वादि करुगुचुंडे ।। ४४ ।।

कपिसेनतो श्रीरामचंद्रुनि लंकाप्रवेशमु

वचनमु— अंत सूर्यास्तमयंबगुटयु वानरेंद्रुलु तम बलंबुलं गूडि वेगु नंदाक सेतु बंधनंबुनकु गापुंडिरंत, सूर्योदयंबयिन वेंटने महाबलशाली यगु हनूमंतुंडु सुवेलद्रि करिगि, या नगंबु पोंत नुन्न हेमकूटंबुनु, नागपर्वतंबुनु, सिंहाचलंबुनु ननु मूडुकोंडलु वालपाशंबुनं बेंकलिंचि, निम्मपंड्ल माड्कि, बूलबंतुल वंतुन नेंगुरवैचुचु नेतेंचि नलुनकंदिच्चिन नापर्वतंबुलु मूडुनु दोंबदि योजनंबुलु निडुपुगलिग, निव्वि-धंबुन शतयोजनमुलु निडुपुनु, दशयोजंबुलु वेंडल्पुनुगा नीरधिनि बंधिचि, नलुंडावार्त्त रामुन कोंरिंगिचिनतोडने यतंडु लंक लग्गलु वट्ट नुद्योगिंचि, पनसुनुत्तरपुगवनु, जांबवंतु बडमटिगवनु, गवयु दक्षिणपुगवनु, हनुमंतु दूरुपुगवनु, बट्टनियमिंचिन वारलुनु लंकापुरंबु लग्गलकुं-जोच्चि, राक्षसुल नुग्गुनूचंबु गाविंचुचुंड, हतशेषुलु पुरुगेत्ति, यावितयंतयु रावणून कोंरिंगिचिन नतंडु चिंताक्रांतुडै, देवांतक नरांतकातिकाय त्रिशिरोमहोदर-महापार्श्वादुल, रामलक्ष्मणुलं जंपि वारिशिरंबुलु गोंनि

. पुनः पुनः लाकर डालने पर उनके (पहाड़ों के) तैरते न देख, मन में संदेहकर, राजसिंह (राम) के रत्नाकर को देख पूछने पर, उसने तुरत कहा ॥ ४३ ॥

**नल के द्वारा सेतु का निर्माण**

"हे मेदिनीश ! रावण की आज्ञा से सभी पत्थरों को मछलियाँ निगलती जा रही हैं। रावण के आदेश को शोभित करते, तिमि और तिमिंगल मुझमें विचर रहे हैं। हे नलिननेत्र (श्रीराम) ! नल के द्वारा नहीं बांधा जायेगा तो बाँध नहीं टिकेगा। (इसलिए) नल को भेज दीजिये।" (ऐसा) कह सरित्पति (समुद्र) के उस समय चले जाने पर, वहाँ वीरों के महावीर्य के साथ पर्वतों के लाने पर, राम के आदेश से नल ने झट उसी दिन दस योजन तक वारधि का निर्माण किया। इतने में सूर्य अस्ताद्रि को जा रहा था (सूर्यास्त हुआ।) ॥ ४४ ॥

**कपि सेना के साथ श्रीरामचन्द्र का लंका में प्रवेश**

इतने में सूर्यास्त होने पर, वानरेन्द्रों ने अपनी सेनाओं के साथ प्रातः होने तक सेतुबन्धन की रक्षा की। तब सूर्योदय होते ही महाबलशाली हनुमान ने सुवेलाद्रि जाकर, उस पर्वत के समीप स्थित हेमकूट, नागपर्वत, सिंहाचल नामक तीन पहाड़ों को वालपाश से उखाड़कर, निम्बफल के सदृश, फूलों की गेंदों के समान उछालते हुए, आकर नल को (हाथों में) दिया। तीन पहाड़ कुल मिलाकर नव्वद योजनों की लम्बाई से युक्त थे। इस प्रकार शतयोजनों की लम्बाई (तथा) दस योजनों की चौड़ाई से युक्त रूप में नीरधि (सागर) को बाँधकर, नल ने वह समाचार राम को विदित किया। उसने भी लंका के दुर्ग पर आरोहण करने को उद्यत होकर, पनस को उत्तर के द्वार पर, जाम्बवान को पश्चिम के द्वार पर, हनुमान् को पूर्व के द्वार पर आक्रमण करने का नियामन किया। वे भी लंकापुर के दुर्गों में प्रवेशकर, राक्षसों को मटियामेट करने लगे। तो मरने से बचे हुए लोग दौड़कर, उस समस्त अद्भुत (समाचार) को रावण को विदित करने पर वह चिन्ताक्रान्त हुआ। (चिन्तित होकर) देवान्तक, नरान्तक, अतिकाय, त्रिशिर, महोदर, महापार्श्व आदि को रामलक्ष्मण

रंडनि पनुप, वाररुगुदेंचि घोराहवंबुनं दमशिरंबुलें रामलक्ष्मणुल बाणंबुल कर्पिंचिन, वारिलो जावक मिगिलिन यतिकायुंडरुगुदेंचि तंड्रि यगु रावणुनकिट्टु-लनियें ।। ४५ ।।

अतिकायुडु वानरुल दुंडगमुलनु रावणुनकु मनविसेयुट

शार्दू०- देवा ! भानुकुलावतंसुडु महाधीरुंडु, रामुंडु बा-
हाविर्भूतमहा प्रतापमुन दैत्यव्रातमुन् भूरि वी-
रावेशंबुनद्रुंचें बो, मनमुनंदाश्चर्यमुन् भीतियुन्
द्रोवन् वेड्र वंचिपनेल, यिक दद्घोर प्रतापोन्नतुल् ।। ४६ ।।

वचनमु— अनि यतिकायुडु विन्नविंचिन नुल्किपडि कुंभकर्णुनि मेल्कौलुप बनिचिन, नतंडुनु लेचि यावुलिपुचु, बंड्लुगीटुचु लयकालमृत्युवुं बोलें नेतेंचिन, नट्टियनुजुं जूचि दशमुखुं-डिट्टुलनियें : ।। ४७ ।।

कुंभकर्णुनि समर वीरमु

कन्द— अनिलो नीवारामुनि,
ननुपमबलशालियैन यनिलतनूजुन्,
घनुडगु लक्ष्मणु गूलिचि
विनु, वारलतललु गोंचु वेगम रम्मी ! ।। ४८ ।।

वचनमु— अनि यनिपिन, ।। ४९ ।।

सीसमु—
भेरीमृदंगादि भीमवाद्यध्वानमुलकु समुद्रमुल् पोंगि पोरल,
गपुलपालिकि लयकालुडो यनुचुनु, विनुवीथि दिविजुलु वेरचि तोलग,
नतिकायुडुनु महाहंकारमुन वेग, वेनुवेंट रोषप्रवृत्ति जनग,
गुंभकर्णुंडु काकुत्स्थुपै बोयिन दक्षिणोत्तर समुद्रमुलरीति

तेटगीति— गदिसि यिरुवुरु बोराड गडगुटयुनु,
गपुलु वेवेग वच्चिरि, विपुलशक्ति,
साध्यगंधर्वपतुलेल्ल सरभसमुन
जूचुचुंडग बोरिरि सुरुचिरमुग, ।। ५० ।।

का वधकर, उनके शिर (काट) लाने के लिए भेजा। उन्होंने भी (रणभूमि में) आकर, घोर युद्ध में अपने ही शिर रामलक्ष्मणों के बाणों को समर्पित किया। उनमें मरने से बचकर अतिकाय ने आकर, पिता रावण से इस प्रकार कहा ॥ ४५ ॥

### अतिकाय का वानरों के अत्याचारों का रावण से निवेदन करना

"हे देव! भानुकुल प्रदीपक (और) महावीर, राम ने (अपनी) बाहुओं से आविर्भूत महाप्रताप से दैत्यसमूह का अत्यधिक वीरावेश से वध किया। और क्या कहूं? उनके भयंकर प्रताप की गरिमा के बारे में सुनें तो मन में आश्चर्य तथा भय होता है।" ॥ ४६ ॥

इस प्रकार अतिकाय का निवेदन करने पर, चौंककर, कुम्भकर्ण को जगाने के लिए भेजा। वह भी जागकर, जम्भाई लेता हुआ, दांत किटकिटाता हुआ, प्रलयकाल की मृत्यु के समान आ गया। ऐसे अनुज को देख दशमुख (रावण) ने इस प्रकार कहा ॥ ४७ ॥

### कुम्भकर्ण की समर वीरता

"सुनो, तुम युद्ध में उस राम को, अनुपम बलशाली अनिल तनूज को, घन शक्तिशाली लक्ष्मण को गिराकर उनके सिर लेकर शीघ्र लौट आओ" ॥ ४८ ॥

(ऐसा) कहकर भेजने पर, ॥ ४९ ॥

भेरी मृदंग आदि भयंकर वाद्य के घोष के कारण सभी समुद्रों के उमड़ उठने पर, "संभवत: कपियों के लिए प्रलय का कालपुरुष है" (ऐसा) कहते हुए आकाशवीथी में सुरगणों के डरकर हट जाने पर, अतिकाय के महत् अहंकार एवं अत्यधिक रोष के साथ झट उसके पीछे चलने पर, कुम्भकर्ण ने राम पर आक्रमण किया। दोनों दक्षिण और उत्तर के सागरों की भाँति नियरा (टकरा) कर संग्राम करने लगे। कपि विपुल शक्ति से अतिशीघ्र (वहाँ) आये। इस (दृश्य के) साध्य एवं गन्धर्व पतियों के उत्साह के साथ देखते समय, सुरुचिर गति से संग्राम किया॥ ५० ॥

अतिकाय कुंभकर्णु ल संहरणमु

वचनमु— इट्लु पॆद्दयुं ब्रॊद्दु वीरावेशंबुन बोरुचुंड, गुंभकर्णुंडु विजृंभिचि बलंबुल कुद्रिकि, दिग्गजकर्णपुटस्फाटितंबुगा नार्चुचु, वानरवीरुल नसंख्यंबुगा म्रिगुटकुंगडंगिन, रघुवीरुंडलिगि ब्रह्मास्त्वंबु प्रयोगिचि वानि शिरंबुनु दुनुमाडॆ, नंत नतिकायुंडु तन पिनतंड्रि पाटुन कलिगि, राघवेंद्रुनिकभिमुखंबुगा निलिचि दिव्यास्त्वंबुलु प्रयोगिचुचुंड लक्ष्मणुंडड्डु सॊच्चि, नानास्त्वंबुलु प्रयोगिचि, घोरंबुगा युद्धंबु सेसि कडपट वारुणास्त्वंबु विटसंधिचि विडिचिन, यदि यतिकायुनि शिरंबु द्रुंचॆ, नंत हतशेषुलैन राक्षसुलु कांदिशीकुलयि रावणुंजेरि, ।। ५१ ।।

तेटगीति— देव ! देवांतकुडु सच्चॆ दीनवृत्ति,
गुंभकर्णुंडु समसॆनु . घोरलील,
दॆगुव नतिकायुडुनु म्रग्गॆ, दीनि किक
बूनि प्रतिकार मॊनरिपु भूरितेज ! ।। ५२ ।।

वचनमु— अनि विन्नविंचिन मंडिपडि रावणुंडिंद्रजित्तुं बंपिन नतंडाग्रहंबुन ।। ५३ ।।

इंद्रजित्तु ब्रह्मास्त्रमुचे वानर सैन्यमुनु हतमार्चुट

कन्द— परवीरुलपै वैश्वा-
नरुचे गॊन्नट्टि चाप नाराचमुलुं
बरिघयु, ब्रह्मास्त्वमु गॊनि
दुरमॊनरिपंग वच्चॆ दोर्बल शक्तिन् ।। ५४ ।।

वचनमु— तदनंतरंबुन ।। ५५ ।।

कन्द— तंडोपतंडमुलुगा
जंडाशुगसमिति बऱपि, शैलशराळिन्
गांडमयंबुग जेयुचु,
भंडन मॊनरिचॆ दैत्यपति - पुत्रुंडुन् ।। ५६ ।।

सी०- मित्रक रामसौमित्रुल मीदनु, ब्लवगसेनल मीद बाहु शक्ति,
ब्रह्मास्त्र मर्डरिप, वट्टुनिनादंबुन बरतॆंचि वानरप्रततिमीद
ब्रह्ममंत्रज्ञानुपरुलैनवारि निर्बंधंबुगा जुट्टि पट्टि कट्टि,
तक्किन वारल नुक्कडगिंचिन गनुगॊनि यमरेंद्रकंटकुंडु

### अतिकाय (तथा) कुम्भकर्ण का संहार

इस प्रकार अधिक समय तक वीरावेश में संग्राम करते समय, कुम्भकर्ण विजृंभण कर सेनाओं पर दौड़कर, दिग्गज के कान फटें, ऐसा भयंकर सिंहनाद करते हुए, असंख्य वानर वीरों को निगलने को उद्यत हुआ तो रघुवीर ने क्रोधित हो ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर उसका सिर काट दिया। तब अतिकाय अपने चाचा की मृत्यु पर कुपित हो, राघवेन्द्र के सम्मुख खड़ा होकर, दिव्यास्त्रों का प्रयोग करने लगा। लक्ष्मण ने बीच में आकर नाना अस्त्रों का प्रयोगकर, घोर युद्धकर, अन्त में वारुणास्त्र को धनुष पर सन्धानकर छोड़ दिया, (और उसने) अतिकाय का सिर काट दिया। तब हतशेष राक्षस भगोड़े होकर (भागकर) रावण के पास पहुँचकर बोले ।। ५१ ।।

"हे देव ! दीनवृत्ति से देवान्तक मर गया। भयंकर रीति से कुम्भकर्ण समाप्त हुआ। साहसकर अतिकाय हत हुआ। हे भूरि तेजवाले ! अब इसका सप्रयत्न प्रतिकार्य कीजिये।" ।। ५२ ।।

इस प्रकार निवेदन करने पर रावण ने आगबबूला हो, इन्द्रजित को भेजा। वह भी क्रोध से ।। ५३ ।।

### इन्द्रजित का ब्रह्मास्त्र से वानर सेना को निहत करना

शत्रुवीरों पर वैश्वानर से गृहति (प्राप्त) धनुष, लोहे के बाण, परिघाएँ तथा ब्रह्मास्त्र लेकर भुज बलशक्ति से युद्ध करने (इन्द्रजित) आया ।। ५४ ।।

उसके पश्चात् ।। ५५ ।।

झुण्ड के झुण्ड वानर सेना पर चंडांशु सम बाणसमूहों तथा पर्वत सम बाणसमूहों से (प्रलय) काण्ड मचाता हुआ दैत्यपति के पुत्र ने भण्डन (युद्ध) किया ।। ५६ ।।

चुप न रहकर, राम तथा सौमित्र पर तथा वानर सेनाओं पर अत्यधिक बाहुबल से ब्रह्मास्त्र को फेंका। (वह भी) भयंकर निनाद करते हुए, वानर समूह पर आकर (ब्रह्मास्त्र ने) ब्रह्ममंत्र के ज्ञाताओं को अनिवार्यतः घेरकर, पकड़ बाँधकर, दूसरों के बल को समाप्त कर दिया। (यह सब) देखकर अमरेन्द्र-कंटक (इन्द्रजित) 'सारी शत्रुता

तेटगीति— वैरमॅल्लनु नेटितो दीरॅ ननुचु
मिंचि कॅरलुचु विल्लॅक्कुडिंचि पॉदलि
शांततनु बॉदि, राक्षसचक्रवर्ति
कडकु नेगॅनु वडि मुद्दु गॉड्डुकुगुरं ॥ ५७ ॥

कन्द— मुनिनायक ! विनु मंतट
दनमनमुलपाटु दॅलिसि तनलो दाने
कनुगॉन जालक पोयनो
यनगनु नपराब्धिलोन नर्कुंडु ग्रुंकॅन् ॥ ५८ ॥

कन्द— अरविंदभवुनि करुणनु
वरमंदिनवायुसुतुडु, वसुमति मीदन्
मरि ब्रह्ममंत्र जपमुन्
बिरुदैयुन्नट्टि यलविभीषणुडॉकडुन् ॥ ५९ ॥

वचनमु— तक्क दक्किन वारॅल्लरुनु मूर्छागतुलै चच्चिन यट्लु
पडियुन्न समयंबुन, वायुसुतुंडु विभीषणुंडुनु दमलो नॅव्वरु
सच्चिरो ? नॉच्चिन वारॅव्वरो ? विचारिंपदगुननि
महोग्रांधकारंबु नडुम निंगलपु गॉरवुलु पट्टुकॉनि
रणरंगंबु गलय शोधिंपुचु वच्चि शरतल्पंबुन नुन्न
जांबवंतुनि गनि विभीषणुंडिट्लनियॅ ॥ ६० ॥

कन्द— भल्लूकेश्वर ! वानरु-
लॅल्लनु नृपवरुलतोड निलमीदनु मू-
र्छिल्लियु जच्चियु नुन्ना-
रॉल्लंबोवुचुनु दीनि कुपमयॅटन्ननन् ॥ ६१ ॥

आट०— अपुडु जांबवंतुडसुरेश ! नीवंक
गन्नु विच्चि चूड गानरादु,
वायुसुतुनि मेलुवार्त नाकिप्पुडु
चॅवुलुसोकुनट्लु चॅप्पुमय्य ! ॥ ६२ ॥

वचनमु— अनिन विनि हनुमंतुंडु, ॥ ६३ ॥

चम्पकमाल—
पदमुल जेरि म्रॊक्कुचुनु बाणियुगंबुनु मोड्चि, नी कृपन्
ब्रदिकिनवाड नन्न, नतिप्रीतिनि जेरग दीसि, नी विटन्
ब्रदिकिति गान नीकतन बार्थिवमुख्युनि सेनलन्नियुन्
ब्रदुकु निजंबुगा निपुडु पावनि ! यंचु ब्रियंबु सेयुचुन् ॥ ६४ ॥

आज से चुक गईं' कहते हुए, अधिक उल्लसित हो धनुष को ढीली कर, उत्साहित होकर, शान्त हो गया (और) राक्षस-चक्रवर्ति के समीप (वह) लाडला बेटा झट गया ।। ५७ ।।

"हे मुनिनायक ! सुनो । तब अपने पौत्रों की दुःस्थिति जानकर, अर्क (सूर्य) अपराब्धि में डूब गया मानो उसे (उस दुःस्थिति को) स्वयं देख न सक रहा हो ।। ५८ ।।

अरविन्द-भव (ब्रह्मा) की करुणा से वर-प्राप्त वायुसुत (और) धरती पर ब्रह्ममंत्र के जप करने का बिरुद (प्रसिद्धि) रखनेवाला विभीषण ।। ५९ ।।

(इन दोनों को) छोड़कर शेष सब मूर्च्छित हो, निर्जीव-से पड़े हुए थे । उस समय वायुसुत तथा विभीषण ने अपने (पक्ष) में कौन मर गया (और) कौन घायल हुआ (आदि का) विचार करना चाहिए, (ऐसा) सोच, महान्-उग्र-अन्धकार के बीच मुराड़े (लुकाठी) पकड़कर (हाथ में लेकर) रणरंग में ढूँढते हुए, आकर, शरशय्या पर स्थित जाम्बवान् को देख विभीषण ने इस प्रकार कहा ।। ६० ।।

"हे भल्लूकेश्वर ! सभी वानर नृपवरों के साथ धरती पर, मूर्च्छित तथा मृत पड़े हुए हैं । इसका कोई उपाय है क्या ?" पूछने पर ।। ६१ ।।
तब जाम्बवान् ने कहा— "हे असुरेश ! तुम्हारी ओर आँख खोलकर देख नहीं सक रहा हूँ । वायुसुत की कुशल वार्त्ता अब मेरे कानों को सुना दो ।" ।। ६२ ।।

(ऐसा) कहते सुनकर हनुमान ।। ६३ ।।

चरणों में जा प्रणामकर, हाथ जोड़कर (बोला)— 'आपकी कृपा से जीवित रह गया हूँ' । (ऐसा) कहने पर अति प्रीति से नजदीक लेकर 'हे पावनी ! तुम यहाँ जीवित रह गये । इसलिए तुम्हारे कारण राज-श्रेष्ठ राम की सभी सेनाएँ अब सचमुच जी जायेंगी ।' (ऐसा) कहते, लाड़ करते हुए, (जाम्बवान ने) कहा ।। ६४ ।।

हनुमंतुडु तेच्चिन संजीविनिचे वानर वीरुल पुनरुज्जीवनमु

वचनमु— विनुमु वायुनंदना ! यालवणसमुद्रंबुनु दाटि, हिमवंतंबुनु, निषधाचलंबुनु गडचि मेरुशैलंबुनु वेंडिकोंडयुनु श्वेतपर्वतंबुनु नतिक्रमिंचि, घृतसागरंबु लंघिंचि, द्रोणगिरि मध्यंबुनंदुन्न यौषध-शिखरंबुनं गल संजीविन्यादि दिव्यौषधंबुलु गोनिवच्चि, राघव प्रीतिगा सैन्यंबुल प्राणंबुलु निलिपि कीर्ति वडयुमनि प्रार्थिंचिन, निय्यकोनि वायुनंदनुंडु वायुवेग मनोवेगंबुनं जनि, जांबवंतुंडु चेप्पिन दिव्यौषधाचलंबुनें कोनिवच्चि, सकल सैन्यंबुल प्राणंबुलु गाचि, निमेषमात्रंबुन नक्कोंड तोल्लिटि युनिकि पट्टुननें नेलकोल्पि वच्चेनपुडु ।। ६५ ।।

कन्द— इनुडुदयपर्वतंबुन
गनुपट्टिन, देल्लवारु, गपि सैन्यमुलुन्
जननाथु गांचि म्रोक्किरि,
जनपतियुनु वायुसुतुनि संश्लाघिंचेन् ।। ६६ ।।

कुंभनिकुंभादि राक्षस वीरुल निहति

वचनमु— अंत निंद्रजित्तु पराक्रमंबुनकु संतोषिंचि, निजंबुनु गल्लयुनु देलियुटकु रावणुंडनुप जारुलेतेंचि, युत्साहंबुतो युद्धसन्नद्धुलै केरलुचुन्न वानरबलंबुलं गनुंगोनि मरलि चनुदेंचि, रामचंद्रुनि बलंबुन्न तेरंगेरिंगिंचिरि । अदि विनि कलंगियु गलं गनिन भंगि नाश्चर्यंबु नोंदि, रामलक्ष्मणुलपैकि गुंभनिकुंभ गवाक्ष प्रजंघ शोणिताक्षुलं बंपिन, वारुन दमतम बलंबुलतोड गरि तुरग रथारूढुलै वेंडलि, सिंहनादंबुलु सेयुचु, नावानरसैन्यंबुपै गविसि, शरवर्षंबुलु गुरियुचु, बरिघलं जक्कुसेयुचु, नडिदंबुलु व्रेयुचु, मुद्गरंबुलं जेंडुचु, मुसलंबुल मोदुचु, गरुलचे मट्टिंपुचु, दुरंगमुलचे द्रोक्किपुचु, रथंबुलं दोलि वेंपरलाडुचु, महाहवंबु सेयुसमयंबुन गपिबलंबु लडरि, गिरिवर्गंबुलु, दरुवर्गंबुलुनु ननर्गळंबुग गैकोनि प्रतिघटिंचि पोराडुनप्पुडु ।। ६७ ।।

### हनुमान के लाये संजीवनी से वानरवीरों का पुनरुज्जीवन

"सुनो हे वायुनन्दन ! उस लवण समुद्र को पारकर, हिमाचल (तथा) निषधाचल को पारकर, मेरुशैल, रजताद्रि, श्वेतपर्वत का अतिक्रमणकर, धृतसागर को लाँघकर, द्रोणगिरि के मध्य में स्थित औषध-शिखर पर स्थित सँजीवनी आदि दिव्य औषधियों को लाकर, राघव प्रसन्न हों, इस प्रकार सेनाओं के प्राण बचाकर, नाम कमाओ ।" (ऐसा) प्रार्थना करने पर, मानकर, वायुनन्दन वायुवेग (और) मनोवेग से जाकर जाम्बवान से निर्दिष्ट दिव्य-औषध-अचल (-पर्वत) को ही उठा लाकर, सकल सेनाओं के प्राणों की रक्षाकर, निमेष (पल) मात्र में उस पहाड़ को पूर्व के स्थान पर ही प्रस्थापित कर आ गया । तब, ॥ ६५ ॥

सूर्य उदयाचल पर दिखाई पड़े । सबेरा होने पर, कपिसेनाओं ने जननाथ (राम) को देख, प्रणाम किया । जनपति (राम) ने भी वायुसुत की प्रशंसा की ॥ ६६ ॥

### कुम्भ (एवं) निकुम्भ आदि राक्षसों की निहति (मृत्यु)

तब इन्द्रजित के पराक्रम पर प्रसन्न हो, सच और झूठ को जानने के लिए (रावण के) भेजने पर, चर आकर, उत्साह से युद्ध की तैयारी में किलकारी भरनेवाले वानर सेनाओं को देखकर, वापस आ रामचन्द्र की सेनाओं का विधान बता दिया । यह सुनकर, व्याकुल होकर, स्वप्न देखने के समान चकित होकर, रामलक्ष्मण पर कुम्भ, निकुम्भ, गवाक्ष, प्रजंघ, शोणिताक्ष को भेजने पर, वे लोग भी अपनी-अपनी सेनाओं के साथ गज, अश्व, रथों पर आरूढ़ हो, निकलकर, सिंहनाद करते हुए, वानर सेनाओं पर शर परम्परा को बरसाते हुए, परिघाओं से मारते हुए, तलवारों से मारते हुए, मुद्गरों से पीटते हुए, मूसलों से मारते हुए, हाथियों से कुचलवाते हुए, घोड़ों से कुचलवाते हुए, रथों को दौड़ाकर सताते हुए, महायुद्ध करने पर (उस समय) कपि सेना विजृंभण कर पहाड़ों के समूहों तथा तरुओं के समूहों को ले निरंतर सामना करते हुए संघर्ष करती रही । उस समय ॥ ६७ ॥

कन्द— तेंपुन वालिकुमारु, ड-
कंपतुडनु वाडैदुर्प, गनि कोपमुनं
गंपिप बट्टिट वानिनि
जंपेनु वक्षंबु पोडिच्चि साहसवृत्तिन् ॥ ६८ ॥

वचनमु— अप्पुडु ॥ ६९ ॥

चम्प०- कनुगोनि शोणिताक्षुडु, नकंपनु प्राणमुगोन्न वालिनं-
दनुपयि गडुं गिनिसि, ताकोंनि, ताकि, रथंबु दोलिनं
गनलुचु नंगदुंडु तुरगंबुलतोन रथंबु नुग्गुगा
दनुजुनि मीद दानुरिकि तन्निन वाडुनुगूले नेलपैन् ॥ ७० ॥

आट०— अतडु नेलगूल ना प्रजंघुंडुनु
घनुडु यूपनेत्वुडैनसि, वालि-
कोडुकुमीद राग, गोपिंचि मैंदुंडु
द्विविदुडंतलोने तेंपु मिगिलि ॥ ७१ ॥

कन्द— दनुजुल द्रोल ब्रजंघुडु
गनुगोनि यव्वालिसुतुनि कटमुलु पोडुवन्
गनलि निशाचरु शिरमुनु
घनतर दृढमुष्टि बोडिचि कडपेन् धरकुन् ॥ ७२ ॥

सी०- घनुडु प्रजंघुंडु कदनंबुलो बड्डु नक्षयबलुडु, यूपाक्षुडंत
गदगोनि व्रेसिन घनततो गुप्पिचि भुजशक्ति नातनि बोदिवि पट्टि
कोनिपोवु नप्पुडु कोपिंचि यन्नकै शोणिताक्षुडु वच्चि शूरुडगुचु
विडिपिचुकोन जूड, वडिग मैंदुंडु डासि कलनयूपाक्षुनि गदिसि पोरि

तेटगीति— साहसंबुन नोरलंग जंपुटयुनु,
शोणिताक्षुंडु द्विविदुनि जूचि पोडव
नतडु मूर्छिलिल तेंप्पिरि यसुर बट्टिट
शिरमु कूलंग नडिदंबु चेत व्रेसे ॥ ७३ ॥

तेटगीति— शोणिताक्षुंडु पोरिलो जूर्णमयिन
गुंभुडप्पुडु कोपिचुकोनुचु वच्चि
द्विविदु नेंदुरोम्मु नाटग दीव्र शरमु-
लेसि वडि जंपे नाजिलो नेमि चेप्प! ॥ ७४ ॥

साहस के साथ वालिपुत्र ने अकम्पन का सामनाकर, क्रोध से कम्पित होते हुए, साहस के साथ उसे पकड़कर वक्षपर मुष्टिघात कर मार डाला ।। ६८ ।।

तब, ।। ६९ ।।

उसे देखकर, शोणिताक्ष ने अकम्पन के प्राण लेनेवाले वालिनन्दन पर अधिक कुपित होकर, (उसका) सामनाकर, टकराकर, रथ को दौड़ाया। अंगद कुपित हो, घोड़ों के साथ रथ के टुकडे-टुकड़े कर, राक्षस पर दौड़कर, लात मारने पर, वह धराशायी हो गया ।। ७० ।।

उसके धरती पर गिर जाने पर, प्रजंघ (और) महान् (शक्तिशाली) यूपनेत्र के वालिपुत्र पर आने पर, (उसे देख) कुपित हो मैंद (और) द्विविद ने साहस के द्विगुणित होने पर, ।। ७१ ।।

राक्षसों को भगा दिया। प्रजंघ ने यह देख वालिसुत के गंडस्थल पर मारा। तब क्रुद्ध हो, निशाचर के सिरपर घनतर दृढ़ मुष्टिघात कर, उसे धरा पर गिराया ।। ७२ ।।

घन शक्तिशाली प्रजंघ के युद्धभूमि में गिरने पर, अक्षय-बलशाली यूपाक्ष के तब गदा ले प्रहार करने पर, महानता से लाँघकर (अंगद) अपनी भुजशक्ति से उसे जकड़-पकड़कर ले जाता रहा। (उसपर) कुपित हो, महाशूर होकर, शोणिताक्ष के (अपने) अग्रज को छुड़ा ले जाने का प्रयत्न करने पर तुरत मैंद ने आकर यूपाक्ष के निकट आकर, युद्ध में सामना कर, लड़कर, साहस से उसका वध कर दिया। शोणिताक्ष ने द्विविद को देख प्रहार किया तो वह मूर्च्छित हुआ। होश में आकर असुर को पकड़कर, खड्ग चलाया जिससे (उस असुर का) सिर कट गया ।। ७३ ।।

शोणिताक्ष के संग्राम में चूर्ण होने पर कुम्भ ने तब कुपित होते हुए आकर, तीक्ष्ण शर द्विविद की छाती पर चलाकर, क्या कहूँ, युद्ध (भूमि) में उसे झट मार डाला ।। ७४ ।।

कन्द— तम्मुनि पाटु गनुंगोनि,
हुम्मनि मैंदुंडु कुंभु नुरुतर मुष्टिन्
ग्रोम्मुन बोडिचिन, नतडो-
क्कम्मुन गूलंग नेसें नमरुलु दलकन् ।। ७५ ।।

उत्प०-अंगदुडंत गुंभुनि शतांगमुपै नोक पर्वतंबु भू-
मिं गलयंग वेयुटयु, मेदिनिकिन् वडि दाटि वालि पु-
त्रुंगनि दैत्युडाग्रहमुतो मुसलंबुन व्रेय, नोच्चिच तो-
कंगोनि वज्रिपौत्रुडु सगर्वमुनन् दगमोदेनार्चुचुन् ।। ७६ ।।

कन्द— कालांतक रुद्रुलतो
बोलुप दगु कुंभुडपुडु भुजबल शक्तिन्
वालिकुमारुनि धरपै
गूलग वडि नेसें नैदुकोलल चेतन् ।। ७७ ।।

वचनमु— इट्लु वालिकुमारुंडु कुंभुनिचेत बाणपीडितुंडै पडुट येरिंगि, रामचंद्रुडु वानिपै सुग्रीवजांबवद्धनुमदादुलं बंपिन, ।। ७८ ।।

कन्द— वारंद रुधिपुनाज्ञनु
भूरुहमुलु, गिरुलु, गोनुचु, भुवनमुलदरन्
भोरुन नार्चुचु गुंभुनि
दारसमै व्रेसिरंत दर्पोद्धतुलै ।। ७९ ।।

कन्द— वारलु वेसिनतरुगिरु-
लारय दनु दाककुंड नवि तुनियलुगा
ग्रूरास्त्रंबुल दुनुमुचु
नारसमुल वारि वारि नाटग नेसेंन् ।। ८० ।।

कन्द— एसिन, गुंभुनि रविजुं-
डासमयमुनंदु नेसें नदरंटंगा
नेसिन, ग्रम्मर रविजुनि
गासिल वक्षंबु पोंडुवगा निलबडियेन् ।। ८१ ।।

तेटगीति— मूर्छतेरि यारविजुडमोघमुष्टि
पूनि दैत्युनि ग्रोम्मुपै बोडुव नंत
शरधिमथियिंचु मंदराचलमु माड्कि
धीरत यडंगि दिर्दिर दिरिगि पडियें ।। ८२ ।।

अनुज की दुर्गति देखकर, हुंकार भरते हुए, मैंद ने कुम्भ की छाती पर तीक्ष्ण मुष्टिघात किया तो उसने एक बाण से उसे गिरा दिया जिसे देख अमर व्याकुल हुए ॥ ७५ ॥

तब अंगद ने कुम्भ के शरीर पर एक पर्वत फेंका जिससे भूमि निकंपित हो उठी। वह राक्षस बचकर वालिपुत्र को देख क्रोध के साथ मूसल से मारा तो कुपित हो वज्रि (इन्द्र)-पौत्र (अंगद) ने गर्व के साथ सिंहनाद करते हुए, उसे पूँछ से खूब मारा ॥ ७६ ॥

कालान्तक रुद्रों से तुलना करने योग्य कुम्भ ने तब भुजबल-शक्ति के साथ झट पाँच बाण चलाए जिससे वालिपुत्र धरा पर गिर गया ॥ ७७ ॥

इस प्रकार वालिपुत्र का कुम्भ के बाणों से पीड़ित हो गिरना जान-कर, रामचन्द्र ने उस पर (आक्रमण करने के लिए) सुग्रीव, जाम्बवान्, हनुमान् आदि को भेजा ॥ ७८ ॥

(तब) उन सब ने अधिप (राम) की आज्ञा से वृक्षों को, पहाड़ों को लेकर, भुवन भयकम्पित हों, इस प्रकार भयंकर नाद करते हुए, कुम्भ से टकराकर दर्प से उद्धत हो, उस पर फेंका ॥ ७९ ॥

उनके फेंके गये तरु-गिरि अपने को न लगें, ऐसा उन्हें क्रूर अस्त्रों से टुकडे-टुकड़े कर, लोहे के बाणों से उन सब को मारा ॥ ८० ॥

बाण चलाने पर सुग्रीव ने शीघ्र कुम्भ को मर्मांतक रूप से मारा। (फिर) कुम्भ के सुग्रीव के वक्षस्थल पर मारने पर वह धरती पर गिर पड़ा ॥ ८१ ॥

मूर्च्छा से जागकर सुग्रीव ने अमोघ मुष्टि बाँधकर दैत्य की छाती में दे मारा। तब धैर्य खोकर सागर का मन्थन करनेवाले मन्दराचल के समान (कुम्भ) चक्कर खाकर (घम-घमकर) गिर गया ॥ ८२ ॥

उत्प०-कुंभुडु गूलिनंगनि, निकुंभुडु दाबरिघायुधंबु सं-
रंभमेलर्प द्रिप्पि, दिनराजतनूजुनिपैकि राग, बल्
संभ्रममोप्प वायुजुडु शौर्यमु गन्पड नड्डुमैन दि-
क्कुंभिगमुल् कलंगगनु गोब्बुन वक्षमुवैचे नार्चुचुन् ॥ ८३ ॥

कन्द— वेसिन परिघायुधमदि
वीसमु नाटंगलेक विरिगिन, मिगुलन्
गासिलि दैत्युडु पवनजु
नासमयमुनंदु नेसे नडिदमु चेतन ॥ ८४ ॥

तेटगीति— अंत हनुमंतुडुग्रुडै यसुरगळमु
नंदु वालंबु दगिलिचि याकसमुन
द्रिप्पि धरणीतलंबुन द्रेळ्ळगोट्टि
सिंहनादंबु जेसे नच्चेरुवु गाग ॥ ८५ ॥

वचनमु— अट्टि समयंबुन ॥ ८६ ॥

कन्द— हतशेबुलु घटकर्णुनि
सुतुलाहवभूमि देगिनसुद्दुलु लंका
पति केरिगिंचिन दुःखो-
न्नतुडै योक्कित तडवुनकु निट्लनियेन् ॥ ८७ ॥

तेटगीति— मनकु गलयट्टि बांधवगणमु, सुतुलु,
दोरलु, बरिवारमुनु, गंधकरुलु, हरुलु,
गुटिल कपियूधमुलबारि गोरियलगुचु
देगिरि मुनुमुट्ट नेटितो दीव्रगतिनि ॥ ८८ ॥

वचनमु— अनि चिंतिपुचु गोंतवडिकि धैर्यंबुगोनि ॥ ८९ ॥

श्रीरामुडु मकराक्षुनि रूपुमापुट

कन्द— दैतेय वल्लभुडु कडु
प्रीतिन् मकराक्षु जूचि पृथुतरशक्तिन्
मीतंड्रि खरुनि जंपिन
यातनिपै सूडु वीगु मरुगुमटन्नन् ॥ ९० ॥

कुम्भ के गिरते देख, निकुम्भ ने स्वयं परिघा-आयुध को लेकर, संरंभ (जल्दबाजी) से घुमाकर, दिनराज-तनूज (सुग्रीव) पर आक्रमण किया। (इसे देख) हनुमान ने अधिक संरंभ से शौर्य दिखाते हुए, अवरोध उत्पन्न करनेवाले दिग्गज-समूह व्याकुल हों, ऐसा हुंकार कर, (निकुम्भ की) छाती पर मारा ।। ८३ ।।

फेंका गया परिघायुध के १/१६ भर भी न चुभकर टूट जाने पर, राक्षस ने अधिक पीड़ित हो पवनज को खड्ग से मारा ।। ८४ ।।

तब हनुमान ने उग्र होकर असुर के गले को पूँछ से लपेटकर, आकाश में घुमाकर, आश्चर्यप्रद रूप से धरती पर दे मारकर सिंहनाद किया ।। ८५ ।।

ऐसे समय में, ।। ८६ ।।

घटकर्ण के सुतों के युद्ध की भूमि में मरने की बातें लंकापति को हतशेष (राक्षसों) ने विदित किया। तब दुखी हो थोड़ी देर बाद इस प्रकार कहा ।। ८७ ।।

'अपने बन्धु (संबंधी) गण, सुत, उमराव, परिवार, गन्ध-करिगण (मत्त गज), घोड़े (सब) कुटिल कपि-समूह के हाथों में तीव्रगति हो, निर्मूल हो मर गए' ।। ८८ ।।

इस प्रकार चिन्तित होकर, कुछ समय के बाद धैर्य धारणकर, ।।८९।।

### श्रीराम का मकराक्ष का वध करना

रावण ने अतिप्रेम से मकराक्ष को देखकर कहा 'अधिक शक्ति से तुम्हारे पिता खर का वध करनेवाले (श्रीराम) पर शत्रुभाव से आक्रमण करो,' जाओ, ।। ९० ।।

सी०- सिंधुर रथ भटसैंधवंबुलतोड दऱचैनपट्टुछत्रमुलतोड
बटह् भेरी मुख्यवाद्यमुलतोड दट्टपु नानायुधमुल तोड
वंदिमागधसूतबृंदस्तुतुलतोड गॆरलाडुबिरुदुटेक्कंबुलतोड
बहुळकाहल शंख भांकारमुलतोड राजिल्लुनवचामरमुलतोड
तेटगीति– नडिचॆ दिग्दंति भूधारनागकूर्म
कुलनगेंद्रयुतमुग भूतलमु गदल
बदरजःपाळि संछन्नभानुडगुचु
दक्षुडैनट्टि मकराक्षुडाक्षणंब, ॥ ९१ ॥
वचनमु— इट्लु भयंकराकारंबुगा गदलि, वानरवीरुल तोडं दलपडि
पोराडुनॆड, वानरबलंबुलु तलचॆडि पारुटगनि,
राजपुंगवुडोहो ! वेऱवकुडनि, तन मरुवुनकुन् मरलिचि,
मकराक्षुंदेऱि चूचि, चंडकांडमुल तंडबुलु खंडिचि, हरुल
शरंबुल पालुचेसि, रथंबुलनु सारथुलतोडं गूड बृथ्विं
गलिपि बलंबुल जलंबुनं दरिमि, सिंहनादंबु चेसिनं,
गिनिसि मकराक्षुंडिट्लनियॆ ॥ ९२ ॥
कन्द— मातंड्रि खरुनि जंपिन
नीतो युद्धंबु सेय नेडिदॆ कलिगॆन्,
नातीव्रनिशित सायक
पातंबुल पालॊनर्तु बगदीर निनुन् ॥ ९३ ॥
मत्ते०— अनि गर्वोक्तुलु पलकुचुं गॆरलि, तीव्रास्त्रंबुला रामुपै
दनबाहाबल शक्ति नेयगनि, कोदंडबुनं दप्पुचुन्
वनजाप्तान्वयुडेसॆ वानि नटगीर्वाणुल् प्रशंसिपगा,
दनुजुंडेसॆनु रामभूविभुनिपै दद्बाणजालंबुलन् ॥ ९४ ॥
कन्द— आ शरमु लुडिपि, मड्रियॊक
याशुगमुन वानिचापमपुडु दुनिमि, या
दाशरथि रथमु पॊडिगा
गौशलमुन नेय, वाडु क्ष्मास्थलि कुड्रिकॆन् ॥ ९५ ॥
आट०— धरकु नुड्रिकि दुष्टदैत्युडु गद द्रिप्पि
भानुकुलुनि नेय, दानिनॊक्क
विशिखमुनन तुनिमि, वेगंबॆ विभुडग्नि
शरमु दॊडिगि वानि शिरमु द्रुंचॆ ॥ ९६ ॥

गज, रथ, भट, (तथा) अश्वों के साथ, रेशम के कई छत्रों के साथ, पटह, भेरी (आदि) बहु वाद्यों के साथ, नाना प्रकार के घने (शक्तिशाली) आयुधों के साथ, वन्दि मागध, सूत वृन्दों की स्तुतियों के साथ, फहराते हुए सुन्दर झण्डों के साथ, बहुल काहल, शंख के झंकारों के साथ, विलसित नव चामरों के साथ, मकराक्ष उसी क्षण युद्धभूमि को चल पड़ा, जिससे दिग्गज, भूसती, नाग (आदिशेष), कूर्म (कच्छप), कुल पर्वत के साथ भूतल संचलित हुआ (और) पदरज-पालि से भानु ढक गया ।। ९१ ।।

इस प्रकार भयंकर आकार से निकलकर, (उस राक्षस के) वानर वीरों से टक्कर लेकर संग्राम करते समय वानर सेना के टूटकर, भागते देख राजपुंगव (राम) ने 'ओहो ! मत डरो' कहकर और अपनी तरफ घुमाकर, मकराक्ष को निहारकर प्रचण्ड बाणों के समूहों को खण्डितकर, अश्वों को बाणों से निहतकर, रथों को सारथियों सहित मिट्टी में मिलाकर, सेनाओं को हठ से भगाकर, सिंहनाद करने पर, कुपित हो मकराक्ष ने इस प्रकार कहा ।। ९२ ।।

'मेरे पिता खर का वध करनेवाले तुमसे युद्ध करने का आज यही (मौका) मिला । अपने तीव्र एवं तीक्ष्ण बाणों के पात से तुम्हें मारकर, बदला लूँगा' ।। ९३ ।।

(ऐसा) कह, उत्साह से गर्वोक्तियाँ कहते हुए, तीव्र अस्त्रों को अपने बाहुबल शक्ति से राम पर फेंका । (उसे) देख वनजाप्त-अन्वय (सूर्यवंश) वाले ने कोदण्ड को साधकर, उसे मारा, जिसकी प्रशंसा देवताओं ने की । दनुज ने राम-भूविभु पर शरजाल बरसाया ।। ९४ ।।

उन शरों को तोड़कर, (और) एक बाण से उसके धनुष को तोड़कर दाशरथि ने कुशलता से उसके रथ को चूर्ण कर दिया । (तब) वह धरती पर कूद पड़ा ।। ९५ ।।

धरती पर कूदकर, दुष्ट दैत्य ने गदा घुमाकर सूर्यवंशी (राम) पर फेंका । एक बाण से ही उसे तोड़कर, शीघ्र ही राम ने अग्निबाण से उसका सिर काटा ।। ९६ ।।

कन्द— आयॆड, मकराक्षुडु रिपु
सायकमुलु दूर नाटि चच्चुट विनि, दै-
तेयुडु गुंडॆलु वगुलग
बायनिदुंखंबुपालुपडि चिंतिल्लॆन् ।। ९७ ।।

वचनमु— इट्लु चिंताक्रांतुंडै कौंततडवूरकुंडि मेघनादुनि गनुंगॊनियॆ ।। ९८ ।।

कन्द— अक्कट ! नीवुनु, नेनुनु
दक्कग मरि तक्किनट्टिदळमुलु दॆगगा
नॊक्क कपियैन गानी
यक्कड रिपुलंदु नॊच्चिरनगा विंटे ? ।। ९९ ।।

वचनमु— अदियुनुं गाक ।। १०० ।।

वानरुल बीरमुनु विनिन रावणुनि बॆगडुपाटु

सी०-नागपाशंबुन नाडाजिलो बड्डु प्लवगु लीरीतिनि ब्रतुकुटॆट्लु ?
ब्रह्मास्त्रमुन गूल्पबडि धात्रि यॆडबासि पोयिन कपुलॆल्ल बुट्टुटॆट्लु?
कुंभकर्णुडु सावगॊट्टिन वानरुल् चॆच्चॆर जीविंचि वच्चुटॆट्लु ?
अतिकायुडडगिंचिनट्टि कीशबलंबु क्रम्मर दानॆल्ल गलुगुटॆट्लु ?
तेटगीति— रामुडॆन्नंग नादिरायणुंडॆ
वनचरावळुलॆल्ल देवतल, मुन्नॆ
कान लेनैति, नीरीति गदनमुननु
वारि गॆलुवंग नॆव्वारि वशमु चॆपुम ? ।।१०१।।

इंद्रजित्तु मायासमरमु

वचनमु— अनि दीनालापंबुलाडुचुन्न तंड्रिकि नमस्करिंचि मेघनादुंडु मेघगंभीर वाक्यंबुल दुःखोपशमनंबु चेसि, नेटितोड बग साधितुननि प्रागल्भ्यंबुग बलिकि, यनिपिंचुकॊनि, गज-वाजि शतांगादुलगु चतुरंगबलंबुलु गूर्चुकॊनि, छत्रचामरं-बुलु पिक्कटिल्ल, नट्टहासंबु सेयुचु, लंकापुरंबु वॆडलि, संग्रामंबुनकुंजनि[1], तन बलंबुल जक्राकारंबुगा निलिपि, तन्मध्यंबुन रथावतरणंबु चेसि, रक्तांबरगंधमाल्यंबुलु

१. संग्रामरंगंबुनकुंजनि ।

उस अवसर पर शत्रु के बाण लगकर मकराक्ष के मर जाने की वार्त्ता सुनकर, दैतेय (रावण) अनारत दुःख से चिन्तित हुआ जिससे उसका दिल ही फट गया ।। ९७ ।।

इस प्रकार चिन्ताक्रांत होकर, कुछ समय तक चुप रह मेघनाद को देखा (और कहा) ।। ९८ ।।

'हाय ! तुम्हें और मुझे छोड़कर, हमारा सारा दल (सेना) समाप्त हुआ। किन्तु क्या यह कहीं सुना है कि वहाँ शत्रुसेना में एक भी कपि को पीड़ा हुई ? (ऐसा सुना भी नहीं) ।। ९९ ।।

यही नहीं, ।। १०० ।।

### वानरों की वीरता सुनकर रावण का भय खाना

नागपाश से उस दिन युद्ध में निहत बानर इस प्रकार जीवित कैसे हुए ? ब्रह्मास्त्र के द्वारा गिराये जाकर, धरती को छोड़े (मरे) कपिवर्ग का फिर उत्पन्न होना कैसे ? कुम्भकर्ण के द्वारा मारे गये वानरों का शीघ्र जीवित हो आना कैसे (संभव हुआ) ? अतिकाय के द्वारा समाप्त की गई वानर सेना का पुनः अस्तित्व में आना कैसे (संभव हुआ) ? क्या राम आदिनारायण ही है ! क्या समस्त वनचरावलि (कपिवर्ग) देवता हैं ? हाय, पहले ही इसे जान न पाया। कहो, इस प्रकार के रण में उन्हें जीतना किसके वश की बात है ?' ।। १०१ ।।

### इन्द्रजित का माया समर

इस प्रकार दीनालाप करनेवाले पिता को प्रणामकर, मेघनाद ने मेघ-गम्भीर वाक्यों से दुःख को शान्तकर, प्रगल्भता से कहा—'आज मैं बदला लेकर ही रहूँगा।' कहकर, आज्ञा पाकर, गज वाजि शतांग (रथ) आदि चतुरंग सेनाओं को समेटकर, छत्र चामरों के विलसित होने पर, अट्टहास करते हुए लंकापुर से निकलकर, संग्राम-रंग में जाकर, अपनी सेनाओं को चक्राकार में स्थितकर, उसके बीच में रथ से उतरकर, रक्तांबर

धरियिंचि, लोहपात्रंबुन गृष्णसर्परक्तंबु निंचि, तर्पणंबु चेयुचु, दद्विधियुक्तंबैन होमंबुलु सेयुचुंडुनॆड, नीकक्त्ति प्रत्यक्षंबै निलिचि, 'मॆच्चिचति वरंबिच्चॆद वेडु' मनिन, नतंडु तानाकसंबुन नुंडि भंडनंबु सेयुनॆड, गपुलकुं गानरा-कुंड नंधकारंबु गाविंचिन, नेनु वारिनि जयिंतुननि प्रार्थिंचिन निय्यकॊनियॆ, नंत मेघनादुंडु नभंबुन कॆगसि, महांधकारंबाणंबु नेसिन, दानंजेसि पॆंजीकटि गप्पिन, जीकाकै पारुचुन्न वानरुलंगनि, वायुनंदनुंडु श्रीरामचंद्रुनितो निट्लनियॆ : ॥ १०२ ॥

कन्द— वायव्यास्त्रमु चेतनु
बायुनु जुम्मंधकारबाणविशेषं,
बीयॆड नेयुडु श्रीरघु-
नायक ! यनि विन्नविप नव्वुचु नंतन् ॥१०३॥

कन्द— विल्लॆक्कुवॆट्टि मारुत-
भल्लमु संधिंचि तिविचि पार्थिवुडलुकन्
बॆल्लार्चि येसॆ, गगनं-
बॆल्लॆनु वडि दूल दैत्युडिलपै गूलन् ॥१०४॥

आट०— राजतिलकु डंबरम्मुन कॆगयंग
वायु शरमु दॊडिगि वेय दडवॆ
माय शक्ति तॊलगि पोयिन नंतलो
मेघनादुर्डुविमीद बडियॆ ॥१०५॥

चम्प०- पडियुनु मेघनादुडु सुपर्वुलु बॆग्गिल, नुग्रबाणमुल्
तॊडिगि प्लवंग सेनपयि दोरमुगा नर्डरिप, नंतटन्
बॆडबॆडनार्चि, मारुतिविभीषणु लुग्रत दानवावळिन्
बॊडिपॊडि सेय, लक्ष्मणुडु पूनिक नातनिदाकॆ नार्चुचुन् ॥१०६॥

कन्द— अंतट दानवसेनलु
पंतमु चॆंडि, तलकु वीड बारंगनि, ता-
नॆंतयु वॆरवकु डनुचुनु
गुंतमु द्रिप्पुचुनु दैत्यकुंजरुडंतन् ॥१०७॥

एवं गन्धमाल्य का धारणकर, लौह-पात्र में कृष्ण सर्प के रक्त को भर कर, तर्पण करते हुए, विधियुक्त होम करने पर, एक कृत्ति (शक्ति) सम्मुख प्रत्यक्ष हो बोली, "मैं प्रसन्न हुई। वर माँग लो।" तब उसने प्रार्थना की कि आकाश से भण्डन करते समय कपियों को मैं न दीख पड़ूँ ऐसा अन्धकार फैला रखो तो मैं उनको जीत लूँगा।' (प्रार्थना को) स्वीकार करने पर मेघनाद ने आकाश में उछलकर, महान्धकार-बाण को छोड़ने पर उसके प्रभाव से गाढ़ान्धकार छा गया। व्याकुल हो भागने वाले वानरों को देख वायुनन्दन ने श्रीरामचन्द्र से इस प्रकार कहा ॥ १०२ ॥

'वायव्यास्त्र से इस गाढान्धकार-बाण की महिमा (प्रभाव) हट जायेगी। हे रघुनायक ! इस अवसर पर (वायव्यास्त्र) छोड़ो।' (ऐसा) कहकर हनुमान के निवेदन करने पर तब हँसते हुए ॥ १०३ ॥

धनुष का सन्धान कर, वायव्यास्त्र को चढ़ाकर, राजा (राम) ने खींचकर आकाश गूँजे ऐसा हुंकारकर, अतिवेग से (उस बाण को) छोड़ दिया, जिससे दैत्य धरापर झोंका खाकर गिरा ॥ १०४ ॥

राजतिलक (राम) के वायुशर को आकाश में फेंकते ही माया की शक्ति हट गई। तब मेघनाद उर्वी पर गिरा ॥ १०५ ॥

नीचे गिरकर भी मेघनाद देवतावर्ग भयभीत हो, इस प्रकार उग्रबाणों को वानर सेनाओं पर अतिवेग से फेंकने लगा। तब उग्र हो, भयंकरता से सिंहनाद कर, मारुति तथा विभीषण ने दानवावलि को चकनाचूर कर दिया। लक्ष्मण सप्रयत्न उससे टकरा गया ॥ १०६ ॥

तब दानव सेना वीरता छोड़कर, सिर (केशों के) बिखर जाने पर भागने लगी। इसे देख 'बिलकुल डरो मत' कहते हुए, भाला घुमाते हुए, दैत्यकुंजर (मेघनाद) ने तब, ॥ १०७ ॥

लक्ष्मणुनिचे निंद्रजित्तु संहारमु

शार्दू०-सौमित्रि गनि गर्वमॊप्प बलिकॆन् शौर्यंबु संधिल्लगा,
'नामीदं बऱपिप वच्चितिवॆ ना नागास्त्रसंघंबुलन् ?
नेमिम्मंदऱ गट्टुटल् मऱचिते ? नेडैन जिंतिपुमी
नी मा सत्वविशेषमॆल्ल मदिलो निक्कंबुगा लक्ष्मणा' ॥१०८॥

वचनमु-- अनि बाणप्रयोगंबु सेसिन ॥ १०९ ॥

कन्द-- वानिनि व्रतिशरमुलु दा-
बूनिक संधिंचि त्रुंचि भुजबलशक्तिन्
दानवुनि मूर्छपुच्चॆनु
भानुकुलुडंत नॊक्कबाणमु चेतन् ॥११०॥

आट०— इंद्रजित्तुडप्पु डिनकुलोद्भवुनिचे
मूर्छनॊंदि तॆलिसि मूर्खुगतिनि
भासमानमैनबाणत्रयंबुन
नतनि नॊव्वनेसि यार्चॆनंत ॥१११॥

सी०-सौमित्रि तावानि चापंबु नडिमिकि घनतरास्त्रंबुचे दुनुग नेसि,
पदिबाणमुलु वानि बाहुमध्यंबुन गाटंबुगा वडि नाटनेसि,
तुरगंबुलनु नाल्गु तूपुल दुनुमाडि, सारथि नॊक्कट संहरिंचि,
शरवृष्टि गप्पिन, सुखरि कोपिंचि काद्रवेयास्त्र संघंबुलेय,

तेटगीति— गरुडशरमुन दुनिमि लक्ष्मणुडु किनिसि,
वडि गुबेरास्त्र मतनिपै वैचॆ, नसुर
दानि दुनुमाडि वेग नैंद्रास्त्र मेसॆ,
नरवरुडु दानि याम्यबाणमुन द्रुंचॆ ॥११२॥

वचनमु— इट्लु त्रुंचिन ॥ ११३ ॥

कन्द— वरुणास्त्रंबुनु नेसॆनु,
सुरराजविरोधि राजसूनुनि मीदन्,
गरमलिगि रामुसोदरु
डरुदारग दानि द्रुंचॆ नैंद्रास्त्रमुनन् ॥११४॥

वचनमु— मऱियुनु ॥ ११५ ॥

तेटगीति— कनलि दानवुडतनिपै गंधपुष्प
समिति नॊप्पॆडु गंधर्व-शरमु दॊडिगि
वेय गोपिंचि, दशरथोर्वीपसुतुडु,
खंडशशिबाणमुन दानि गंडडंचॆ ॥११६॥

## लक्ष्मण के हाथों इन्द्रजित का संहार

सौमित्र को देख गर्व के साथ, शौर्य प्रकट करते हुए कहा 'लक्ष्मण मुझ पर नागास्त्र-समूहों को प्रसारित करने आये हो क्या ? मेरा तुम सब लोगों को बाँधना भूल गये हो ? आज तो अपने और मेरे सत्त्व की विशेषताओं के सम्बन्ध में मन में सचमुच सोचो।' ॥ १०८ ॥

कहते हुए बाण-प्रयोग करने पर, ॥ १०९ ॥

सप्रयत्न प्रतिशरों का संधानकर, उनका खंडनकर, भुज बलशक्ति से सूर्यवंशी (लक्ष्मण) ने एक बाण से उसे मूर्च्छित कर दिया ॥ ११० ॥

इंद्रजित ने तब इनकुलोद्भव (लक्ष्मण) (के बाण से) से मूर्च्छित हो उठकर, मूर्ख की भाँति भासमान बाणत्रय से उसे पीड़ितकर तब अट्टहास किया ॥ १११ ॥

सौमित्र ने उसके धनुष को घनतर अस्त्र से बीच में तोड़कर, दस बाणों को उसकी बाहुओं के बीच में झट गाढ़ रूप से चुभोकर घोड़ों का चार बाणों से संहारकर, सारथि को एक (बाण) से संहारकर, शरवृष्टि से आच्छादित कर दिया। तब सुरवैरि (इन्द्रजित) कुपित होकर, नागास्त्र समूह को छोड़ा। गरुड़-शर से उन्हें काटकर (लक्ष्मण ने क्रोध से) कुबेरास्त्र को उस पर फेंका। असुर ने उसका खंडनकर, झट ऐन्द्रास्त्र को फेंक दिया। नरवर (लक्ष्मण) ने उसे याम्य बाण से काट दिया ॥ ११२ ॥

इस प्रकार तोड़ने पर, ॥ ११३ ॥

सुरराज-विरोधी ने राजपुत्र पर वारुणास्त्र को फेंका। राम के सहोदर ने अतिक्रोध से विचित्र रीति से ऐन्द्रास्त्र के द्वारा उसे तोड़ दिया ॥ ११४ ॥

और ॥ ११५ ॥

दानव ने गुस्से में आकर उस पर गन्ध पुष्प समूह से विलसित गन्धर्व शर को छोड़ा, तो दशरथोर्वीपसुत (लक्ष्मण) ने खण्ड-शशि बाण से उसका गर्व मिटा दिया ॥ ११६ ॥

वचनमु— इट्लु गंधर्वेशरंबुनु द्रुंचि, यंतटं बोवक, देवेंद्रदत्तंबैन भुजगास्त्रंबु विंट संधिंचि, "वेदंबुलु नित्यंबगुनेनि, रामचंद्रुंडु धर्मात्मुंडेनि, यिंद्रादिबृंदारकद्रोहि यैन यिंद्रजित्तुनि शिरंबु नीशरंबु द्रुंचुंगाक !" यनिवानिपै लक्ष्यंबुचेसि, प्रत्यालीढ़पादस्थुंडै निलिचि, कर्णांतंबुगा दिगिचि येसिन, नदियुनु गालानलाभीलज्वालाजालंबु लुप्पतिल्ल गगनंबुनं बऱ्तेंचि, यक्कऱकु रक्कसुनि शिरंबु द्रुंचिन, ॥ ११७ ॥

कन्द— कनुगोंनि देवतलंदरु
दनु बोंगडग, मरलि रामुतम्मुडु विजयं-
बुन वच्चि म्रोक्क, नातनि
मनुजेंद्रुंडु कौगिलिंचि मऱियिट्लनियेन् ॥११८॥

कन्द— नीचेत वीडु तुंगुट
भूचक्रंबेल्ल मेलुपोंदेनु, विनुमी
नाचेत दशमुखुंडनु
नीचुडु तेंगुटेल्ल निजमु निर्मलचरिता ! ॥११९॥

वचनमु— इट्लु सौमित्रि चेत निंद्रजित्तु तेंगेननि चेप्पिन, नारदुनि वाल्मीकि महामुनींद्रुं डटमीदि कथाविधानंबेट्टिदनि यडुगुटयु, ॥ १२० ॥

आश्वासांत पद्य गद्यमुलु

कन्द— जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !
जलजासन विनुत पादजलजात ! सुधा
जलराशि भव्यमंदिर
जलजाकर चारुहंस ! जानकिनाथा ! ॥१२१॥

गद्यमु

इदि श्री गौरीश्वरवरप्रसादलब्ध, गुरु जंगमार्चन विनोद, सूरिजनविनुत, कविता चमत्कारातुकूरि केसन सेट्टि तनय, मोल्ल नामधेय विरचितंबैन श्रीरामायण महाकाव्यंबुनंदलि युद्धकांडमुनं ब्रथमाश्वासमु ।

इस प्रकार गन्धर्व शर को तोड़कर, उससे शान्त न होकर, देवेन्द्रदत्त भुजगास्त्र का धनुष पर संधानकर, 'वेद यदि शाश्वत हैं, रामचन्द्र यदि धर्मात्मा हैं, तो इन्द्रादि देवताओं का द्रोही इस इन्द्रजित के सिर को यह शर (बाण) काट डालेगा।' कहकर उसे लक्षितकर, वामचरण को आगे रख, खड़े होकर, कानों तक खींचकर छोड़ दिया। उसने भी प्रलय-काल की अग्नि ज्वालाओं के उमड़ने पर आकाश में व्याप्त होकर, उस घोर राक्षस का सिर काट दिया ।। ११७ ।।

(इसे) देखकर सब देवताओं के स्तुति करने पर, राम के भाई (लक्ष्मण) ने विजयी हो, वापस लौटकर, नमस्कार किया। मनुजेंद्र ने उसका आलिंगन कर फिर इस प्रकार कहा ।। ११८ ।।

"तुम्हारे हाथों में इसके मर जाने से समस्त-जगत को शुभ (भला) हुआ। हे निर्मल चरित्रवाले! सुनो! मेरे हाथों में दशमुख का भी मर जाना निश्चित है" ।। ११९ ।।

इस प्रकार सौमित्र के हाथों में इन्द्रजित के वध का कथन सुनकर, वाल्मीकि महामुनीन्द्र के नारद से "आगे की कथा का विधान कैसा है?" पूछने पर, ।। १२० ।।

### आश्वासान्त पद्य और गद्य

हे जलजाक्ष! हे भक्तवत्सल! हे जलाजासन ब्रह्मा से विनुत पाद-जलजात (चरण कमल) वाले! हे सुधाजलराशि के भव्यमंदिर रूपी जलजाकर (सरोवर) में विहारने वाले सुन्दर हंस! हे जानकी-नाथ! ।। १२१ ।।

यह श्री गौरीश्वर के वर के प्रसाद को प्राप्त, गुरु जंगम के अर्चन के विनोदी, (नित्य शैवाचार सम्पन्न), सूरिजन (बुधजन) से विनुत कविता चमत्कार से युक्त, आतुकूरि केसन सेट्टि की तनूजा मोल्ल नामधारी से विरचित श्री रामायण महाकाव्य में युद्धकाण्ड का यह प्रथमाश्वास पूरा (हो गया) है।

द्वितीयाश्वासमु

कन्द— अमलिनशुभचारित्रा !
कमलदळसमाननेत्र ! कौशिक - मित्रा !
द्युमणिकुलवार्धिसोमा !
समदासुरजनविराम ! जानकिरामा ! ।। १ ।।

वचनमु— श्री नारदमहामुनीश्वरुंडु वाल्मीकि कॆऱिंगिचिन तॆऱंगॆ-
ऱिंगिचॆद नाकर्णिपुमट्लु ।। २ ।।

आहव रंगमुनकु रावणागमनमु

आट०— चारुलरुगुदेंचि सौमित्रिचे निंद्र-
जित्तुडीलगॊ ननुचु जॆप्पुटयुनु,
बंक्ति मुखुडु सुतुनि बलुमारु दलचुचु,
वगवजॊच्चॆ नॆल्लवारु विनग ।। ३ ।।

वचनमु— इट्लनेक प्रकारंबुल गुमारुं बलवरिपुचु, दु:खिपुचु,
गॊंततडवुन कूरडिल्लि, धैर्यंबु नूलुकॊल्पि तनकुमारुं
जंपिनवानिनि नेडवश्यंबुनु संग्राम-रंगंबुन जंपुदु ननि
नियमंबु चेसि, तत्क्षणंबु, ।। ४ ।।

सी०-शैलसन्निभमुलौ सामजंबुलतोड, ननिलवेगमु गल्गु हरुलतोड,
गांचनोज्ज्वलमुलौ घनरथंबुलतोड, ब्रतिलेनिघनमूलबलमुतोड,
गिम्मीरवर्णोरुकेतनंबुलतोड, दऱचैनपट्टुछत्रंबुलतोड,
भेरीमृदंगादि पृथुवाद्यमुलतोड, वरशंखकाहलध्वनुलतोड,

तेटगीति— बादघट्टन चलितोर्विभागुडगुचु
वनधुलॆल्लनु बिडलिवंडु गाग
नडिचॆ लंकेशुडधिकसन्नाहमुननु
रामचंद्रुनि तोडनु रण मॊनर्प[1] ।। ५ ।।

मत्ते०— करिघींकारमुलुन्, महाजवतुरंगव्रातहेषावळुल्,
वरकोदंडनिनादमुल्, सुभटदुर्वाराट्टहासंबुलुन्,
गुरुशंखोज्ज्वलनादमुल्,दशदिशाक्रोशंबुगा नॊक्कटै
परगन्, बंक्तिमुखुंडु दानडिचॆ गोपस्फूर्ति निश्वासुडै ।। ६ ।।

---

१. वंदिकैवार वीररावमुलतोड

## द्वितीयाश्वास

हे अमलिन (तथा) शुभचरित वाले! कमलदल के समान नेत्रों वाले! कौशिक के मित्र! द्युमणि-कुल (सूर्यकुल)-सागर के चन्द्र! असुर जनों का विराम (संहार) करनेवाले! हे जानकीराम! (नमः)।। १ ।।

श्री नारद महामुनीश्वर के वाल्मीकि को विदित किया हुआ (कथा) विधान विदित करूँगी। सुनो। उस प्रकार ।। २ ।।

### रणक्षेत्र में रावण का आगमन

गुप्तचरों के आकर कहने पर कि सौमित्र के द्वारा इन्द्रजित मृत हुआ, पंक्तिमुख (रावण) बार-बार पुत्र को याद करते हुए, सब सुनें ऐसा (प्रकट रूप से) विलाप करने लगा ।। ३ ।।

इस प्रकार अनेक प्रकार से पुत्रों के बारे में बड़बड़ाते हुए दुखित होते हुए, कुछ समय के बाद सान्त्वना पाकर, धैर्य धारणकर, अपने पुत्र का वध जिसने किया है, उसका अवश्य संग्राम क्षेत्र में आज वध करूँगा, ऐसा निश्चय कर, उसी क्षण ।। ४ ।।

पहाड़ों के समान हाथियों के साथ, पवन वेग से युक्त घोड़ों के साथ, स्वर्णकांति से उज्ज्वल घन रथों के साथ, अप्रतिम महान् मूल-सेनाओं के साथ, चित्र-विचित्र वर्णों के बड़े झण्डों के साथ, विशिष्ट रेशमी छत्रों के साथ, भेरी मृदंगादि पृथु (बड़े) वाद्यों के साथ, श्रेष्ठ शंख-काहल ध्वनियों के साथ, पदचाप से धरती को कंपित करते हुए, समस्त सागर सूखकर कीचड़ बन जायँ, ऐसा अधिक सन्नाह के साथ (तैयारी के साथ) वन्दि (जनों) के कैवारों (स्तुतियों) के वीर स्वनों के साथ लंकेश निकल पड़ा ।। ५ ।।

हाथियों की चिंघाड़, महान् बलशाली तुरंग-समूह की हिनहिनाहट, श्रेष्ठ कोदण्डों के निनाद, सुभटों के दुर्वार अट्टहास, श्रेष्ठ शंखों के उज्ज्वल निनाद (आदि के) एक होकर (सम्मिलित रूप से), दस दिशाओं को आक्रोशित करते हुए व्याप्त होने पर, पंक्तिमुख (रावण) अत्यधिक क्रोध की स्फूर्ति से युक्त साँसों से स्वयं आगे बढ़ा ।। ६ ।।

## रावण सुग्रीवुल कदनमु

वचनमु— इट्लु चतुरंग बलंबुलु गॊल्व, लोकविद्रावणुंडगु रावणुंडु समरं बॊनर्प नरुदेरं गनि, राघवेश्वरुंडनिकि दंडनायकुलं बनिचिन, वारुनु दरुगिरि पाषाणपाणुलै यॆदुरु नडिचि, सिंहनादंबुलु सेय, नुभयबलंबुलुं दलपडि पोराडु समयंबुन, नमरवैरुलु शस्त्रास्त्रवर्षंबुलु गुरियिंचि नॊप्पिंचिनंत, वानरवीरुलु मरल दानवुलपै बाषाणपादपंबु लडरिंप, नरिबलंबुलु विरिगि पिकापिकलै परचुनत्तरि बक्तिकंधरुं-डुदग्रुंडै कॆरलुचु, ग्रूरनाराचंबुलु चापंबुनंदॊडिगि, पनस पवनतनय नल नील द्विविद शरभ कुमुद गज गवय गवाक्ष गंधमादनांगद मैंदादुल नॊक्कॊक्करि बदेसि-बाणंबुल गुदिगॊन नेसिन, विरिगि यगचरसेनलु सरुगुनय्यवसरंबुन ॥ ७ ॥

कन्द— चेरि विरुपाक्षुनि दगु
तेरि पयिनि नॊक्ककॊंड धीरततोडन्
सूरजुडप्पुडु मिक्किलि
शूरत्वंबडरनेसि चूर्णमुसेसॆन् ॥ ८ ॥

आट०— रथमु विरिगिनंत, रणमध्यमुन नॊक्क
वारणंबु नॆक्किवच्चु नॆडनु,
वालिकॊडुकु दानि पट्टुरोषमुन दोल
नुरिकि प्लवगु गोल नरिकॆ वाडु, ॥ ९ ॥

कन्द— अक्षयबलुडगु रविसुतु
डाक्षणमुन नुग्रुडगुचु नदरंट विरू
पाक्षुनि वक्षमु बॊडिचिन,
रक्षोवीरुंडु कूलि रणमुनबडियॆन् ॥ १० ॥

वचनमु— इट्लु कूलिन, ॥ ११ ॥

कन्द— हुम्मनि यातनि कूरिमि
तम्मुंडुनु, गनलि वच्चु तपनजु नत्यु
ग्रम्मुग मार्कॊनि जडिगा
नम्मुलवर्षंबु गुरिय, नालो बॆलुचन् ॥ १२ ॥

## रावण (और) सुग्रीव का युद्ध

इस प्रकार चतुर्विध सेनाओं के सेवाएं करते रहने पर, लोक-विद्रावण रावण को संग्राम करने आया देख राघवेश्वर ने दण्डनायकों को भेजा। उन्होंने भी तरु-गिरि-पाषाणों को हाथ में लेकर, सामनाकर, सिंहनाद किया। उभय सेनाओं के परस्पर टकराकर संग्राम करते समय, अमर वैरियों (राक्षसों) ने शस्त्रास्त्रों को बरसाकर पीड़ित किया। तब वानर वीरों के फिर दानवों पर पाषाण एवं वृक्षों को फेंकने पर शत्रु सेनाएँ टूटकर, विखरकर भाग जाने लगीं। उस अवसर पर पंक्तिकंधर (रावण) ने उदग्र हो, विजृंभित होकर, क्रूर (तीक्ष्ण) बाणों को धनुष पर चढ़ाकर पनस, पवनतनय, नल, नील, द्विविद, शरभ, कुमुद, गज, गवय, गवाक्ष, गन्धमादन, अंगद, मैन्द आदि प्रत्येक पर दस-दस बाण सान्द्रता से चलाए। (चलाने पर) टूटकर, बानर सेनाओं के पीछे हटते समय, ।। ७ ।।

विरूपाक्ष के समीप पहुँचकर, पहाड़ को धैर्य के साथ उठाकर, सूरज (सुग्रीव) ने अति शौर्य से उसके रथ पर फेंककर, चूर्ण कर दिया ।। ८ ।।

रथ के टूटने पर, रण के बीच में एक हाथी पर बैठकर (विरूपाक्ष के) आते समय, वालि के पुत्र ने उसे अतिरोष के साथ भगाया। (तब) छलाँग भरकर उसने प्लवग (वानर) को बाण से मारा ।। ९ ।।

अक्षय बलशाली रविसुत (सुग्रीव) ने उसी क्षण उग्र होकर, विरूपाक्ष के वक्षस्थल पर तीव्रगति से (मुष्टि) आघात किया (तो) रक्षोवीर (विरूपाक्ष) विचलित हो रणभूभि में गिरा ।। १० ।।

इस प्रकार गिरने पर ।। ११ ।।

हुंकार करते हुए उसके प्रिय भाई ने क्रोध से आनेवाले तपनज (सुग्रीव) से अत्युग्र रीति से टकराकर, बाणों की निरन्तर वर्षा की। तब अतिशयता से ।। १२ ।।

चम्प०– शरमुलु ताककुंड नोकशैलमुनं दग नोसरिंचि, या
यरदमु नुग्गुगा गपि कुलाग्रणि वैचिन, वाड्डु नेलकुन्
वरभुजशक्ति दाटि करवालुन नेसिन, दप्प ग्रुंकि वा
नरपति कोट्टॆ नप्डु महिनाथुडु संतसमंदि चूडगन्[1] ॥ १३ ॥

कन्द— कदनमुन नोच्चि दानवु
डदलिपुचु भानुसुतुनि यौदल वगुलन्
गदचे नडिचिन, वानिनि
गुदियंगा बट्टिट वैचॆ गुंभिनि मीदन् ॥ १४ ॥

पवनजुडु सुपाश्वुनि मट्टुपॆट्टुट

कन्द— अंत सुपाश्र्वुडु मिक्किलि
पंतमु नॆऱपुचुनु, रथमु पवनात्मजुपै
नॆंतयु बऱपुचु, बाणमु
लंतंतनॆ नाट नेयु नवसरमंदुन् ॥ १५ ॥

सी०-हनुमंतुडा दैत्युनरदंबुपै दाटि, चॆक्कलु वाऱंग द्रॊक्किवेसि,
सैंधवंबुल जंपि, सारथि तलगोट्टि, गोडुगुलु पडगलु पुडमि गलिपि,
वडि वानि चेनुन्न यडिदंबु गैकोनि, दुरुसुगा नेसिन, धरनुगूलि
गोब्बुन दॆप्पिर्लि, कोपंबु दीपिंप ननिलजु नुरमु मूडंबकमुल,

तेटगीति– जांबवंतुनि निरुमूडु सायकमुल,
वडि गवाक्षुनि नैदिट, वालिसुतुनि
नेडु बाणंबुलनु दूलनेसॆ, नंत
नवनि बडि लेचि यंगदुंडाग्रहमुन ॥ १६ ॥

तेटगीति– वानि चेविल्लु विरिचिन, वाडु किनिसि
परिघ गोनि येय, मूर्छिल्लि धरणि व्रालि,
तॆलिसि, यंगदुडादैत्यु दॆगुव नुरमु
पिडुगडंचिनगति मुष्टि बॊडिच्चि चंपॆ ॥ १७ ॥

वचनमु— इट्लु सुपाश्र्वादि रक्षोनायकु लाक्षणंबुनं गूलिन ॥ १८ ॥

---

१. नय्यसुर नाशमु वोंदग बादपंबुलन्

बाणों से बचने के लिए एक पहाड़ को आड़ रखकर, कपिकुलाग्रणी (सुग्रीव) ने (उस पहाड़ को) ऐसा फेंका कि उसका रथ चूर हो गया। वह अपनी भुजशक्ति से जमीन पर कूदकर खड्ग से मारा। उससे बचकर वानरपति ने उसे खूब मारा, जिसे महीनाथ ने (राम) आनन्द के साथ देखा। (* पाठान्तर उस असुर के नाश होने तक उसे वृक्षों से मारा) ।। १३ ।।

युद्धभूमि में पीड़ित हो दानव ने डाँटते हुए भानुसुत के ललाट पर गदा से मारा जिससे सिर फट जाए। (सुग्रीव ने) उसे पकड़कर दबाकर धरापर दे मारा ।। १४ ।।

## पवनज का सुपार्श्व को समाप्त करना

तब सुपार्श्व ने प्रण के साथ रथ को पवनात्मज पर दौड़ाया। और निरन्तर बाणों को बरसाया। उस समय ।। १५ ।।

हनुमान ने उस राक्षस के रथ पर कूदकर उसे कुचलकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। घोड़ों को मारा। सारथि का सिर काट दिया। छत्रों को, झंडों को मिट्टी में मिला दिया। अतिवेग से उसके हाथ के खड्ग को लेकर कठोरता से (उसे) मारा। धरापर गिरकर मूर्च्छित हो शीघ्र उठकर, क्रोध के दीप्त होने पर उसने पवनसुत के उर पर तीन बाण, जाम्बवान पर छः बाण, झट गवाक्ष पर पाँच बाण, वालिसुत (अंगद) पर सात बाण चलाकर (उन्हें) विचलित कर दिया। तब धरती पर गिर कर क्रोधित हो अंगद ने उठकर ।। १६ ।।

उसके हाथ का धनुष तोड़ दिया। उसने क्रोधित हो परिघा से मारा। मूर्च्छित हो धरती पर गिरकर, उठकर, अंगद ने साहस के साथ अशनिपात (गाज) के समान मुष्टिघात कर मार डाला ।। १७ ।।

इस प्रकार सुपार्श्व आदि रक्षोनायकों के उसी क्षण धरापर गिरने पर ।। १८ ।।

राम रावणुल भीकर संग्रामम

कन्द— तन कट्टेदुरनु गूलिन
दनुजुल बेक्कंड्र जूचि दशकंठुडु दा
गनलुचु सूतुन कनियेनु
जननायकुमीद रथमु जननिम्मनुचुन् ॥ १९ ॥

आट०— अधिपुडानतिच्चिनट्टुगा सूतुंडु
रामचंद्रुमीद रथमु वरपे
नपुडु शंख काहलादिरवंबुलु
वंदिजनुलनुतुलु संदडिप ॥ २० ॥

वचनमु— इट्लु शतांगतुरंग हेषारवबुलुनु, बहुळ किंकिणी
घंटिकानिनदंबुलुनु, रणनेमि स्वनंबुलुनु, दनुजभटाट्टहा-
संबुलुनु, बोरु कलंग, संगररंगबुन करुगुदेंचु नक्तंचरेश्वरुंडु
धनुर्धरुंडै प्रतिघटिंचु समयंबुन ॥ २१ ॥

कन्द— तन केंदिरिंचिन रामुनि
गनि दनुजविभुंडु किनुक गदुरग नट ज-
य्यन नागास्त्रमुलनु दन
धनुवुनु गीलिंचि येसे दनभुजशक्तिन् ॥ २२ ॥

कन्द— अवि लेक्क गोनक पोरि बोरि
ननवीनायकुडु गिनुक नसुराधिपुपै
दिविजारुलुलिकि पारग
बवि सन्निभमैन तीव्रबाणमुलेसेन् ॥ २३ ॥

सी०- लंकेशुडवि येल्ल लक्ष्यंबु सेयक तिमिरांबकमुलु संधिचि येय,
निबिडमै चीकटि निंडंग बर्विन गपुलेल्ल नंधुलै कळवळिप,
नुर्वीश्वरुंडप नुग्रबाणंबुल नंधकारंबंत नडगजेसि,
वासवारातिपै वह्निबाणमु नेय नतंडु रौद्रास्त्र मडरनेसे

तेटगीति— रेंडु बाणंबुलुनु गूडि गंडेसंग
बेनगि याकाशमुन नुंडि पृथ्विमीद
बडियें नद्भुत गति जगत्प्रळयमुगनु,
सुरलु गपुलुनु दैत्युलु जोद्यपडग ॥ २४ ॥

वचनमु— अट्लु महाद्भुतकरंबुगा समरंबु जरुगुचुन्न
समयंबुन ॥ २५ ॥

## राम और रावण का भयंकर संग्राम

एकदम अपने समक्ष मृत अनेक दनुजों को देख, दशकण्ठ ने अपने में कुपित होते हुए, सूत से कहा कि 'जननायक पर रथ जाने दो' ॥ १९ ॥

अधिप की आज्ञा के अनुसार सूत ने रामचन्द्र पर रथ दौड़ाया। तब शंख, काहलादि की ध्वनियों का (तथा) बन्दीजनों की स्तुतियों का कोलाहल हुआ ॥ २० ॥

इस प्रकार शतांग (रथ) तुरंगों की हिनहिनाहट, बहुल किंकिणियों (एवं) घंटिकाओं का निनाद, रण में रथचक्रों के स्वन, राक्षस भटों के अट्टहासों के तुमुल नाद (आदि के) होते समय नक्तंचरेश्वर (रावण) के रणरंग में धनुर्धारी होकर प्रतिरोध करने के अवसर पर, ॥ २१ ॥

अपना सामना करनेवाले राम को देख, क्रोधित हो, दनुज-विभु ने क्रोध के अधिक होने पर, झट नागास्त्रों को धनुष पर चढ़ाकर, भुजशक्ति के साथ, चलाया ॥ २२ ॥

उनकी परवाह न कर, अवनीनायक (राम) ने बारबार क्रोध से असुराधिप (रावण) पर, दिविजारि-वर्ग (राक्षसवर्ग) भयभीत होकर भाग जाय, ऐसा वज्रायुध के समान तीक्ष्ण बाणों को फेंका ॥ २३ ॥

लंकेश के उन सबकी परवाह न कर, तिमिर बाणों का संधानकर छोड़ने पर, निबिडान्धकार व्याप्त हुआ तो समस्त कपिवर्ग अन्धा होकर व्याकुल हुआ। उर्वीश्वर राम ने उग्र बाणों से अन्धकार को हटा दिया। इन्द्र के शत्रु (रावण) पर अग्नि बाण फेंका तो उसने अतिशयता से रौद्रास्त्र फेंका। दोनों बाण आकाश में अतिशयता से टकराकर, संघर्ष कर अद्भुत गति से जगत-प्रलय के रूप में सुरों, दैत्यों (एवं) कपियों को चकित करते हुए, आकाश से पृथ्वी पर गिरे ॥ २४ ॥

इस प्रकार महा अद्भुतप्रद रूप में संग्राम के होते समय में ॥ २५ ॥

कन्द-- रामुनि मेननु बाण-
स्तोमंबुलु नाटनेसॆ सुररिपु डलुकन्
रामुडु घननाराच-
स्तोमंबुलु नाटनेसॆ सुररिपुमीदन् ।। २६ ।।

चम्प०- धरणिपुमीदनु गनलि दानवनायकु डेसॆ नंतभी-
करशरभोष्ट्र काक फणि गंडक घूक बलाक भेक सू-
कर किरि ऋश्य कूर्म शुकगर्दभ भल्लुक नीलकंठ के-
सरि वृक गृध्रकीट बक सैंधव सैरिभ वक्त्रबाणमुल् ।। २७ ।।

वचनमु-- इट्लु निरंतरंबुगा ब्रयोगिंचिन ।। २८ ।।

चम्प०- परुवडि मीदवच्चु पटु बाणचयंबुल जूचि, राघवुं-
डरुदुग वानि नन्निटि वियत्तल वीथिनि द्रुंचि, क्रम्मरन्
सुररिपु मीद नेसॆ बलसूदनमुख्युलु सूचि मॆच्च, नि-
ब्बरमुग नग्निबाणमु नभंबुन गीललु पर्वुचुंडगन् ।। २९ ।।

वचनमु— अम्महास्त्रंबु वलन ।। ३० ।।

कन्द— दहन मुखंबुल शरमुलु
ग्रहमुखमुलु गलुगुनट्टि घनतरशरमुल्
मिहिरमुखंबुल शरमुलु
बहुळमुगा गलिग दैत्यपतिपै बर्वॆन् ।। ३१ ।।

आट०— अंत दानवेंद्रुडाबाणततुलॆल्ल
दृणमुलट्लु नडुम द्रॆंचि वैचि,
मयुनिचेत गॊन्न महनीय मगुनट्टि
शंबराख्यमैन शरमु वैचॆ ।। ३२ ।।

कन्द— आ शरमुन बहुशस्त्रमु
लाशुगतिं गलिगि गविय, नन्निटि नॊकटन्
नाशमु चेसॆनु रामुं-
डाशापतु ललर मन्मथास्त्रमुचेतन् ।। ३३ ।।

आट०— शंबराख्य शरमु जगदीशु बाणंबु
वलन जॆडक रामुवक्ष मडर
नाटॆ, नंतलोन नाकारिपै नेसॆ
विशिखततुलु वेयि, वेयुनॆडनु, ।। ३४ ।।

राम के शरीर पर लगे, ऐसा सुररिपु ने क्रोध से बाण चलाए। राम ने सुररिपु पर महान् बाण समूह का प्रयोग किया ॥ २६ ॥

(तब) धरणिप (राम) पर कुपित हो दनुजनायक ने भीकर शरभ, उष्ट्र, काक, फणि, गंडक, घूक, बलाक, भेक, सूकर, किटि, ऋष्य, कूर्म, शुक, गर्दभ, भल्लुक, नीलकण्ठ, केसरि, वृक, गृध्र, कीट, बक, सैंधव, सैरिभ के वक्त्र (मुख के आकारवाले) बाणों को चलाया ॥ २७ ॥

इस प्रकार निरन्तर प्रयोग करने पर ॥ २८ ॥

अतिवेग से (अपने) पर आनेवाले शक्तिशाली बाणसमूहों को देख राघव ने उन सबको अद्भुत गति से आकाश वीथी में ही खंडितकर, इन्द्र आदि की स्तुति पाते हुए, फिर सुररिपु पर धैर्य के साथ अग्निबाण छोड़ दिया जिसने आकाश में ज्वालाओं को फैला दिया ॥ २९ ॥

उस महान् अस्त्र के कारण ॥ ३० ॥

जलते हुए मुखवाले, शर, ग्रहमुखवाले घनतर शर, मिहिर (सूर्य) मुखवाले शर (आदि) बहुलता से दैत्यपति (रावण) पर प्रसरित हुए ॥ ३१ ॥

तब दानवेन्द्र ने उन बाणसमूहों को तृण के समान बीच में ही काट-कर, मय से गृहित महनीय शंबराख्य (शंबर नामक) शर चलाया ॥ ३२ ॥

उस शर से बहुल शस्त्र आशुगति से युक्त हो निकलकर, घिर आने पर, उन सबको एक ही मन्मथास्त्र से राम ने नाश कर दिया, जिसे देख आशापति (दिक्पति) प्रसन्न हुए ॥ ३३ ॥

शंबराख्य शर जगदीश के बाण से न कटकर, राम के वक्षस्थल पर अतिशयता से चुभ गया । इसी बीच में नाकारि (रावण) पर (राम ने) हज़ार बाण फेंके । बाण चलाने पर, ॥ ३४ ॥

कन्द— रावणुडाबाणमुलकु [illegible]
वेवेगनु प्रतिघटिंचि वेसिन शरमुल्
चेवमोयि दाकि वडि धा-
त्रीवलयंबुननु बडि धरित्रि वडंकेन् ।। ३५ ।।

रावणुनि शक्ति प्रहारमुचे लक्ष्मणुनि मूर्छ

उत्प०— तल्लडमंदि रामवसुधापति कड्डमु सोच्चि, लक्ष्मणुं
डुल्लमु नोव्व नाडुचु महोन्नतकोपमुतोड दैत्युचे
विल्लुनु नारियुं दुनिमिवेसि, वडिन् शरसप्तकम्मुचे
बल्लिदुडैन दैत्यकुलपालुनिवक्षमु दूंचि यार्चिनन् ।। ३६ ।।

कन्द— अंत विभीषणुडमरें-
द्रांतकु नरदंबु गूल नट नेसिन, न-
त्यंतजवंबुन धरणिकि
गंतुगोनेन् वडिनि बंक्तिकंधरुडलुकन् ।। ३७ ।।

वचनमु— इट्लु तनरथंबु गूलनेसिन, विरथुंडै रावणुंडु मयदत्तंबैन शक्तिनि बूनि तम्मुनि नेय जूचुचुन्नंत, शरणागतवज्रपंज-रुंडगु राघवेश्वरुनि तोबुट्टवगुटंजेसि लक्ष्मणुंडु करुणापरुंडै विभीषणुंदनवेनुक निडिकोनि येदिर्चिनं गनि, नीवु नापगऱ कडुंबवैतिवि, गावुन नीव यीशक्तिचेत हतुडवु गम्मनि येसिन, नदियुनु शतघंटिकारंजितंबुनु, शतकोटि-निनदंबुनु, बावकज्वाला भीलकीलान्वितंबुनुनै पऱतेरंगनि, सुरेंद्रादि देवगणंबुलु भयंबंदि, रामुतम्मुनकु दीर्घायुवगुं-गावुत मनि दीविप, जगंबुलु तल्लडिल्ल, समुद्रंबुलु घूर्णिल्ल, गुलाचलंबुलु वडंक, जंद्रार्क बिंबंबुलु दलंक, नेगुदेंचि, सौमित्रि युरंबु नाटि धात्रि बडियें नट्टियव-सरम्मुन, ।। ३८ ।।

सीसमु—
पंक्तिकंधरुडेयुबाणंबु लवि लेक्क सेयक रघुकुलसिंहुडपुडु
तम्मुनि मेयि नाटि धरणि गाडिनशक्ति नोगि वानरुलु तीय नोपकुन्न
नवलील दानि नोय्यन दीसि पोवैचि घनुलैन कपुलनु गापु वेट्टि
'नेने रामुडनैतिनेनि मज्जनकुंडु दशरथुं डगुनेनि दप्पकुंड

उन बाणों का शीघ्र प्रतिरोध कर फेंके गये रावण के बाण, तीव्रगति से (राम के बाणों के) लगने से धात्रीवलय पर गिरे जिससे धरित्री कम्पित हुई ॥ ३५ ॥

### रावण के शक्ति-प्रहार से लक्ष्मण की मूर्च्छा

(राम के) लड़ते देख व्याकुल होकर प्रभु राम की सहायता में लक्ष्मण ने आकर हृदय बेधक बातें करते हुए, महोन्नत क्रोध से राक्षस के हाथ का धनुष तथा नारि को तोड़ दिया और झट सात शर बलशाली दैत्यकुल-पालक के वक्षस्थल पर गड़ाकर सिंहनाद किया ॥ ३६ ॥

तब विभीषण ने अमरेन्द्रान्तक (रावण) का रथ गिराया तो पंक्तिकंधर (रावण) अतिबल से, क्रुद्ध हो, धरती पर कूद पड़ा ॥ ३७ ॥

इस प्रकार रथ को गिराने पर रथहीन होकर रावण मयदत्त शक्ति को पकड़कर भाई (विभीषण) को मारने गया। उसे देखकर, शरणागत-वज्र-पंजर (शरणागत के लिए वज्र के पिंजड़े के समान राम) राघवेश्वर के सहोदर होने के कारण करुणा करके विभीषण को अपने पीछे रखकर (उसकी रक्षा करते हुए) सामना करते देखकर, 'तुम मेरे शत्रु की रक्षा में आये हो। इसलिए तुम इस शक्ति से हत हो जाओ' कहते हुए रावण ने अस्त्र को छोड़ दिया। वह शत घंटिका-रंजित, शतकोटि-निनाद (से युक्त) हो, पावक-ज्वालाओं के आभील (भयंकर) कीलान्वित हो आने लगा। सुरेन्द्रादि देवगणों के भयभीत हो राम के अनुज को दीर्घायु होने की आशीषें देने पर, समस्त लोकों के व्याकुल होने पर, सभी सागरों के आकुल होने पर, कुल पर्वतों के कम्पित होने पर, चन्द्र और अर्क (सूर्य) बिम्बों के विचलित हो जाने पर वह शक्ति (बाण) आकर सौमित्र के उर में चुभकर, धरती पर गिर गयी। उस अवसर पर, ॥ ३८ ॥

पंक्तिकंधर (रावण) के द्वारा प्रयुक्त बाणों की परवाह न कर, रघुकुल-सिंह ने भाई के शरीर को लगकर धरणी में गड़ गई शक्ति को जिसे निकालने में वानर असफल हुए, अति सरलता से निकालकर बलशाली कपियों को रक्षा में नियोजित कर (प्रतिज्ञा करते हुए) कहा 'हे कपियो! कानों को आनन्द हो, ऐसी मेरी बातें सुनो। यदि मैं राम हूँ, और मेरे

तेटगीति– गलन नेंदिरिंचि नातोड गय्यमुनकु
निलिचेनेनियु दनुजेंद्रु निजमु गाग
नमरु' लेरुगंग जंपुदु नतनिचेत
जत्तु निंतिय कानि ने रित्तमगुड ।। ३९ ।।

वचनमु– अनि मरियुनु ।। ४० ।।

कन्द– रामुडु रावणुडनुचुनु
भूमिपयिन्निर्वुरुनिकि पोंसगदु सुंडी !
नामाट विनुडु लेस्सग
रामुड नेनोंडे भुविनि रावणु डोंडेन् ।। ४१ ।।

वचनमु– उंडुदुमनि, वीरालापंबुलाडुचु, रामचंद्रुंडु धनुर्धरुंडै शरवर्षंबुलु गुरियिंचिन, नसुरेश्वरुंडुनु ब्रतिशरंबुल वानि नन्निर्टिनि दूलनेसिन, गनलि रामचंद्रुंडु तोंडिगिनि यम्मुनु, वेडलु तूपुलुनु, विल्लुगुड्डसु पड्डटयु, नेरुंगरानि चंदंबुन बिजपिजंगरचि पारुचुंडुनट्लुगा, हस्तंबु मुड्डुचुटयु, जूचुटयु, देलियराकुंड, रावणु कालुसेतुलाडकुंड, शरलाघवंबु नेरपुचुनेयुचुन्न यप्पुडु विरिगि शरीर-भूषणंबुलुरुल, गिरीटंबुलु डुल्ल, दललु वीड, मरलि मरलि चूचुचु, मृगेंद्रुंगन्न गजेंद्रुनि चंदंबुन भीतचेतस्कुंडै दशमुखुंडु लंकापुरंबु जोच्चे ददनंतरंबुन, ।। ४२ ।।

कन्द– आवेळ लावुसूपुचु
रावणुचे शक्ति दाकि रणरंगमुनन्
जेव सेडि पडिनलक्ष्मण
देवुन् डग्गरग रामदेवुडु वच्चेन् ।। ४३ ।।

वचनमु– इट्लरुगुदेंचि, ।। ४४ ।।

तेटगीति– रक्त सिक्तांगुडै, धात्रि शक्ति नाटि
युन्न तम्मुनि गनुगोनि युस्सुरनुचु,
दुःखमंतंत नागक तोंगलिप,
दोडलपै निडि बाष्पमुल् दोप्पदोग ।। ४५ ।।

---

१. जंपुदुनु नोंडे, गाक ने जत्तुनोंडे
विनुडु कपुलार ! नामाट वीनुललर'

पिता यदि दशरथ ही हैं तो युद्ध में मेरा सामना कर मेरे साथ संघर्ष में खड़े हुए दनुजेन्द्र को सत्य ही मार डालूँगा अथवा मैं ही मर जाऊँगा ॥ ३९ ॥

और फिर, ॥ ४० ॥

राम और रावण दोनों का इस धरती पर रहना नहीं होगा। मेरी बात ध्यान से सुन लो। धरती पर राम रहेगा या रावण ही ॥ ४१ ॥

(दोनों में कोई एक ही) रहेगा', ऐसा वीरालाप करते हुए रामचन्द्र के धनुर्धारी हो, शरवर्षा करने पर असुरेश्वर ने प्रतिशरों से उन सबको काट दिया। तब रामचन्द्र के कुपित होकर, बाणों का संधान करना, बाणों का छोड़ना, धनुष का संकुचित होना (आदि), कोई समझ न पाए, ऐसा लगातार बाण चलाते रहने पर, हाथ का मोड़ना, देखना, आदि भी जान न पाये, रावण के हाथ पैर न हिले ऐसा, शर-लाघव (-चातुर्य) के प्रदर्शन करने पर, तब धैर्य टूटकर शरीर के भूषणों के टूट गिरने पर, किरीट के गिर पड़ने पर, केशपाश के बिखर जाने पर, मुड़-मुड़कर देखते हुए, मृगेन्द्र को देखने वाले गजेन्द्र की भाँति, भय कम्पित मन से, दशमुख (वाला) लंकापुर में घुसा। इसके पश्चात् ॥ ४२ ॥

उस दिन बल प्रदर्शन करते हुए, रावण की शक्ति लगकर रणक्षेत्र में शक्तिहीन हो मूर्च्छित पड़े हुए लक्ष्मण के समीप रामचन्द्र आ गये ॥ ४३॥

इस प्रकार आकर ॥ ४४ ॥

रक्त में सने हुए अंगवाले तथा शक्ति के कारण धरती पर पड़े हुए अनुज को देख आहें भरते हुए, दुःख के न रुककर अधिक होने पर (उसे) अपनी जाँघों पर रखा (और) आँसुओं में डुबोया ॥ ४५ ॥

श्रीरामुनि संतापमु

सीसमु—
'हा ! भानुकुलदीप ! हा सत्यसल्लाप ! हा ! सुगुण कलाप ! हासुरूप !
हा ! धर्मसंचार ! हा ! वैरिसंहार ! हा ! कीर्ति विस्तार ! हा ! सुधीर !
हा ! नित्यसुज्ञान ! हा ! पुण्यसंधान ! हा ! पूज्यसम्मान ! हा! निधान!
हा ! शौर्यगुणवृद्ध ! हा ! युद्धसन्नद्ध ! हा ! चित्त संशुद्ध ! हा! प्रसिद्ध !
तेटगीति— हा ! मुनीश्वरसंरक्ष ! युसुरशिक्ष !
हा ! गुणस्तोत्र ! सत्पात्र ! यब्जनेत्र !
हा ! सदाचार संपन्न ! हा ! प्रसन्न !'
यनुचु शोकातुरात्मुडै यंतकंत ॥ ४६ ॥

कन्द— जनकुनि पंपुन नडविकि
जनुदेंचियु निडुम कोंचि सन्मुनि वृत्तिन्
ननु गूडि नडव नेंचिन
यनुजन्मा ! येंदु बोयितय्या ! तलपन् ॥ ४७ ॥

कन्द— वनमुन गल फल मूलमु-
लनुदिनमुनु भक्ति युक्ति नर्पिपुचु, म-
ज्जनकुनि भंगिनि नन्नुनु
जनकज बोषिंचि येंदु जनितिवि तंड्री ! ॥ ४८ ॥

कन्द— नीवंटितोडबुट्टुवु,
नीवंटि गुणोत्तरुंडु निजमूहिंपन्
भूवलयमंदु गलडे ?
भाविंपग नीवेतक्क बावन चरिता ! ॥ ४९ ॥

कन्द— नेंड्रयक निद्राहारमु
लेंरुगक, पदुनालुगेंड्लु हितमतितो म-
म्मरिमुरि नरसिन निन्नुनु
मरुवनगुनें नीति गल्गु मनुजुल केंदुन् ? ॥ ५० ॥

कन्द— निन्निचट विडिचि पुरिकिनि
जन्ननु, निनु गन्नतल्लि सनुदेंचि ननुन्
निन्नडुग, दडव मदिलो
जिन्नबोवुचुनु नेमि चेप्पदु दंड्री ! ॥ ५१ ॥

वचनमु— अनि मरियुनु ॥ ५२ ॥

श्रीराम का संताप

"हाय ! हे भानुकुलदीपक ! सत्य सल्लाप (करने वाले) ! सुगुण कलाप (समूह) ! सुरूपवाले ! हाय धर्म संचारक ! वैरि-संहारक ! कीर्ति-विस्तारक ! सुधीर ! हाय ! नित्य सुज्ञानी ! पुण्य सन्धानकर्त्ता ! पूज्य सम्मान वाले ! हे निधान ! हे शौर्यगुण में वृद्ध ! हे युद्ध के लिए सन्नद्ध ! संशुद्ध चित्तवाले। प्रसिद्ध पुरुष ! मुनीश्वर संरक्षक ! असुरों को दण्ड देनेवाले। स्तुत्य गुणवाले। सत्पात्र ! कमलनेत्र (वाले)। सदाचार सम्पन्न ! प्रसन्न चित्तवाले।" ऐसा कहते अनेक रीतियों से कहते हुए अधिकाधिक शोकातुर होते हुए (राम यों कहने लगे) ॥ ४६ ॥

जनक की आज्ञा से वन में आकर भी, कष्टों को सहते हुए, सन्मुनि वृत्ति धारणकर मेरा साथ दे सकनेवाले हे अनुजन्मा (भाई !) (तुम) कहाँ चले गये हो ? ॥ ४७ ॥

वन में स्थित फल तथा कन्दमूलों को प्रतिदिन भक्ति तथा युक्ति से (मुझे) समर्पित करते हुए, मेरे पिता के समान मेरा और जनकजा (सीता) का पोषण कर कहाँ चले गये हो तात ? ॥ ४८ ॥

तुम्हारे समान सहोदर, तुम्हारे समान उत्तम गुणवाला, सोच विचार करने पर सचमुच भूवलय में कहीं है क्या ? हे पावन चरितवाले ! तुम्हें छोड़कर और कोई नहीं है ॥ ४९ ॥

वास्तव में निद्राहार छोड़कर, चौदह वर्षों से हितमतिवाले होकर हमारी सेवा करनेवाले तुम्हें नीतिमान् लोग कैसे भुला सकते हैं ?॥ ५० ॥

हे तात ! तुम्हें यहाँ छोड़कर यदि मैं नगर (वापिस) चला जाऊं तो तुम्हारी जननी के आकर पूछने पर, मन में दुखी होते हुए, मैं क्या उत्तर दूं ?" ॥ ५१ ॥

कहकर, और ॥ ५२ ॥

चम्प०- विनुडु कपींद्रुलार! पलविपुचु मज्जनकुंडु नाकमुन्
जनियॆ, धरातनूभव निशाचरुचे जॆरवोयॆ, नेटितो
ननुजुडु दीरॆ, निक नडियासल नुंडुट नाकु धर्ममे?
चनुडु निजाश्रमंबुलकु संशय मॊंदक मीरु गॊब्बुनन् ॥ ५३ ॥

वचनमु— अनि विभीषणुं गनुंगॊनि, ॥ ५४ ॥

उत्प०-अक्कट! नीकु निट गलयट्टि सुबांधव कोटि बासि नी
विक्कड केगुदेंचितिवहीनमुदंबुन मम्मु नम्मि, पॆं-
पॆक्कग रावणुंडु तग नेलॆडि लंक गडंग नीकु ने-
दक्कग नित्तुनन् प्रतिन दप्पॆ, विभीषण! नीवु पोवुमा! ॥ ५५ ॥

वचनमु— अनि यनेक प्रकारंबुल ब्रलपिचुचुन्न रामभूपालुनकु सुषेणुंडिट्लनियॆ: ॥ ५६ ॥

उत्प०- देवर! नीकु नी गति मदि दलपोयग नेल? तीव्रमै
रावणु चेतिशक्ति बवरंबुन नाट्टुटजेसि लक्ष्मणुं-
डीविधि नुंडॆगानि धरणीश्वर! चूडु मुखारविंदमुन्,
जावडु सावडिय्यॆड निजंबुग नम्मु मनंबुलोपलन् ॥ ५७ ॥

उत्प०-पुन्नम चंदुरुंदॆगिडि पॊल्पॆसलारॆडि मोमु दम्मियुन्,
गन्नुलु कल्वरॆकुलनु गांति जयिचॆडु गानि, रक्तिमन्
जॆन्नु दॊलंगियुंड, वरचेतुलु, बादमुलुन् दलंपगा
नुन्नवि वर्णमुल् गलिगि, यॊप्पुतॊरंगदु, राघवेश्वरा! ॥ ५८ ॥

वचनमु— अनि विन्नाविंचुचु हनुमंतु गनुंगॊनि सुषेणुंडिट्टुलनियॆ: ॥ ५९ ॥

संजीविनिकै हनुम पयनमु

कन्द— ईयन प्राणमुलॆत्तग
वायुज! यलनाटि मंदु वडि देवलॆ नी-
वीयॆड नचटिकि दडयक
पोयि वॆसन् रम्मु प्रॊद्दु पॊडुवक मुनुपे ॥ ६० ॥

वचनमु— अनिन भूकांतुंडु हनुमंतुनकिट्लनियॆ: ॥ ६१ ॥

कन्द— रम्मा वायुतनूभव!
यिम्महि सत्कीर्ति बडयु मीतनि प्राणं-
बिम्मुग रक्षिपुमु, ना-
तम्मुललो नीवु नॊक्क तम्मुड वरयन् ॥ ६२ ॥

"सुनो, कपीन्द्र लोगो ! विलाप करते हुए मेरे पिता स्वर्ग सिधारे। धरातनूभवा (सीता) निशाचर से अपहृत हुई। आज तो अनुज गया। अब भी व्यर्थ की आशाएँ रखना क्या मेरे लिए धर्म (समुचित) है ? अब तुम लोग सन्देह किए बिना अपने-अपने आश्रमों (घरों) में शीघ्र चले जाओ।" ॥ ५३ ॥

(ऐसा) कहकर विभीषण को देखकर (कहा) ॥ ५४ ॥

"हाय ! तुम घर पर स्थित सुबन्धु कोटि को छोड़कर, हम पर भरोसा रखकर, अहीन मोद (अधिक आनन्द) से यहाँ आये हो। शोभा की अधिकता से रावण से खूब पालित लंका को अन्त में तुम्हारे अधीन कर दूंगा, ऐसी (मेरी) प्रतिज्ञा झूठी हुई। हे विभीषण ! तुम चले जाओ न।" ॥ ५५ ॥

(ऐसा) कह अनेक प्रकार से प्रलाप करनेवाले (बड़बड़ाने वाले) राम भूपाल से सुषेण ने इस प्रकार कहा ॥ ५६ ॥

"हे देव ! तुम्हें इस प्रकार मन में सोचना क्यों चाहिए ? रावण की तीक्ष्ण शक्ति के गहरे लगने पर लक्ष्मण इस स्थिति में रह गया है। अतः हे धरणीश्वर ! मुखारविन्द (मुख कमल) देखो। यह मरा नहीं, मरा नहीं। मन में सचमुच विश्वास करो ॥ ५७ ॥

हे राघवेश्वर ! मुखकमल पूर्णिमा के चाँद को मातकर विलसित होनेवाला है, नेत्र कुमुदिनीदल की कान्ति को मात करनेवाले हैं। यही नहीं, विचार करने पर हथेली (और) पैर लालिमा (वर्ण) से अलग नहीं हुए हैं। कोई भी (अंग) अपनी शोभा से च्युत नहीं है" ॥ ५८ ॥

इस प्रकार निवेदन करते हुए ही सुषेण ने हनुमान को देखकर यों कहा ॥ ५९ ॥

### संजीवनी के लिए हनुमान का प्रयाण

"हे वायुज ! इनके प्राण बचाने के लिए उस दिन की दवा शीघ्र तुम्हें इस अवसर पर लानी है। तुम्हें अविलंब वहाँ जाकर, पौ फटने से पहले ही लौट आना चाहिए।" ॥ ६० ॥

(ऐसा सुषेण के) कहने पर, भूकान्त ने हनुमान से इस प्रकार कहा ॥ ६१ ॥

"आओ न वायुतनूभव ! प्रेम से इसके (लक्ष्मण के) प्राण बचाकर इसे धरती पर सत्कीर्ति प्राप्त करो। मेरे भाइयों में तुम सचमुच एक भाई हो।" ॥ ६२ ॥

वचनमु— अनि डायंजनि, कौगिटंजेर्चि, दीविंचि यंपेनप्पुडु ।। ६३ ।।

आट०— पदमुलून द्रोक्कि, वदनंबु दिगजूचि
चेतुलूनि[1], चिक्कबट्टि,
क्रुंगि, निक्कि, येगसि, कुप्पिचि वडि दाटि
चनियें गगनवीथि ननिलसुतुडु ।। ६४ ।।

वचनमु— अट्टि समयंबुन ।। ६५ ।।

कालनेमि कपटोपायमु

सी०-दनुजेशुडावार्त विनि कालनेमिगेहमुसोच्चि, नडिरेयि यतनितोड
तनचेत हतुडैन धरणीशुतम्मुनि प्राणंबु लेत्तंग बवनसुतुडु
सनुचुन्नयट्टि यापनि विघ्नमोनरिप ग्रक्कुन नट, बोयि रम्मटन्न,
गालनेमि यिदेटि कार्यंबु तगदन्न, विनक कोपिंचिन, वेगनरिगि

तेटगीति— द्रोणशैलंबु चेरुव त्रोवयंदु
वनमु गाविंचि, तग मुनीश्वरुनि रीति
जपमु सेयुचु गन्नुलु चक्कमूसि
नडुमु निक्किंचि पद्मासनमुन नुंडे ।। ६६ ।।

वचनमु— अप्पुडाकाश मार्गंबुन जनुचुन्न यप्पवनसुतुंडु वनंबु गांचि,
त्रोव दप्पेननि मनंबुन संदिय मोंदि यम्मुनींद्रु नडिगि
चनुवाडै, यतनिकि नमस्करिंचि यिट्लनियें ।। ६७ ।।

कन्द— मुनिनाथ ! नेनु रामुनि
पनिकै चनुचुन्नवाड, बरमौषधमुल्
गोनि रावले, मदि भावि-
चि निजम्मुग निपुडु त्रोव सेप्पुमु नाकुन् ।। ६८ ।।

वचनमु— अनि प्रार्थिंचि दाहोपशमनंबुन कुदकंबु वेडिन, नक्कपट
मुनींद्रुंडिट्लनियें : ।। ६९ ।।

आट०— पवनतनय ! रामभद्रुनि पनि माकु
दीर्पवलयु, गान नेर्पुतोड
ब्राणरक्ष कोरकु द्रोणाद्रि करुगंग
वलदु विनुमु, नादुवनमुनंदु ।। ७० ।।

---

1. योडलु (शरीर)

कहकर (राम ने) समीप जाकर आलिंगनकर, आशीष देकर भेजा। तब, ॥ ६३ ॥

चरणों को बल से जमीन पर दबाकर रखते हुए, मुख ऊपर उठाकर, बाहें फैलाकर, शरीर को संकुचितकर, लघु होते हुए, उछलकर, आकाश में उड़कर, अतिवेग से आकाश-वीथि पर अनिलसुत चल पड़ा ॥ ६४ ॥

उस समय पर ॥ ६५ ॥

### कालनेमि का कपट उपाय

दनुजेश ने उस समाचार को सुनकर, कालनेमि के घर पर आधी रात को जाकर, उससे कहा कि 'मुझसे निहत धरणीश के भाई (लक्ष्मण) के प्राण बचाने के लिए पवनसुत जा रहा है। शीघ्र चलकर उस कार्य में विघ्न डालो, झट वहाँ जाकर आओ।' कालनेमि ने इस कार्य को अनुचित कहा। तो (रावण) अनसुनाकर क्रोधित हुआ। तब (कालनेमि ने) शीघ्र चलकर द्रोणाचल के समीप, मार्ग मध्य में, वन बनाकर (माया से सृजनकर), ढंग से मुनीश्वर की तरह जप करते हुए, आँखें ठीक तरह से बन्दकर, कमर सीधीकर, पद्मासन मार बैठा रहा ॥ ६६ ॥

तब आकाश मार्ग में जानेवाले पवनसुत को वन देखकर, मन में संदेह हुआ कि 'रास्ता भटक गया हूँ।' उस मुनीन्द्र से पूछकर जाने की इच्छाकर, उसे नमस्कार कर, इस प्रकार कहा ॥ ६७ ॥

"हे मुनिनाथ ! मैं राम के कार्य पर जा रहा हूँ। परम औषधियों को ले आना है। मन में विचारकर अब सही रास्ता मुझे सचसच बता दो।" ॥ ६८ ॥

ऐसी प्रार्थना कर, प्यास बुझाने के लिए जल की प्रार्थना करने पर उस कपट मुनीन्द्र ने इस प्रकार कहा ॥ ६९ ॥

"हे पवनतनय ! रामचन्द्र के कार्य को हमें भी पूरा करना है। इसलिए चतुराई से प्राण रक्षा के लिए द्रोणादि को चलने की आवश्यकता नहीं। सुनो, मेरे वन में ॥ ७० ॥

तेटगीति– घनतरंबैन संजीव - करणि, मॊदलु
गाग दिव्यौषधंबुलु गलवु, गान
गॊंचु बोवच्चु गावुन गोरुपंड्लु
तनिवि दीरंग दिनि नीळ्ळु त्रागुमिचट ।। ७१ ।।

वचनमु— अनि तन हस्तंबुन नुन्न विषयुक्तंबैन कमंडलूदकंबु चूपिनं,
गनि हनुमंतुंडवि चालवनिन नक्कपट मुनींद्रुंडु क्रूरमकरा-
वृतंबैन कमलाकरंबॊकंडॆरिंगिंचि पॊम्मनिन बवनात्म-
जुंडुसनि ।। ७२ ।।

कन्द— विमल मकरंदलुब्ध-
भ्रमरनिकरपक्षपवनपरिकंपित स-
त्कमनीयकुमुद कैरव
कमलंबुलु गलुगुकॊलनु गनुगॊनि यचटन् ।। ७३ ।।

शाप विमुक्तयै देवकन्ययैन मॊसलि

सीसमु—
मडुगु लोपल जॊच्चि कडुपार नुदकंबु ग्रोलंग दिग, नंदु ग्रालु मॊसलि
पादमुल् कबळिंचि पट्टिन, जरणमुल् विदळिप, बट्टूनि विडुवकुन्न
गडुसूक्ष्मरुपुडै कडुपुलोपल जॊच्चि वेगंब भेदिंचि वॆडलॆ नंत,
नदि देवकन्ययै याकाशमुननुंडि तनदु वृत्तांतमंतयुनु जॆप्पि,

तेटगीति– वीडु दैत्युंडु नम्मकु, वीनि जंपि,
पॊम्मु संजीविकॊंडकु ब्रॊद्दु गलुग
नीकतंबुन शापंबु नाकु दीरॆ
ननुचु दीविंचि चनियॆ दा नमरपुरिकि ।। ७४ ।।

वचनमु— अंत हनुमंतुंडु तेजोवंतुंडै यरुगुदॆंचि कपट संयमिनिं
गनिन नतंडिट्लनियॆ ।। ७५ ।।

कालगति चॆंदिन कालनेमि

चम्प०- तडसितिवेल यितवडि ? दापुनने वसियिंचिनट्टि यी
मडुवुन केगि राकुनिकि,माकनुमानमु दोचॆनय्य! यि-
प्पुडु गलदेनि गॊंत गुरुपूजकु वित्तमु कान्कवॆट्टि, नी
वडुगुमु मंदुलॆट्टिवि प्रियं वगुनट्टिवि नीकु निच्चॆदन् ।। ७६ ।।

घनतर संजीव-करणि आदि दिव्य औषधियाँ हैं। अतः (इनको) ले जा सकते हो। मनचाहे फलों को अघाकर खाओ और पानी पी लो।" ॥ ७१ ॥

(ऐसा) कह अपने हाथ में स्थित विषयुक्त कमण्डल-जल को दिखाया तो, हनुमान ने उन्हें अपर्याप्त बताया। उस कपट मुनीन्द्र ने क्रूर मगर-मच्छों से आवृत्त, एक कमलाकर (सरोवर) को दिखाकर वहाँ जाने को कहा, तब पवनात्मज वहाँ जाकर, ॥ ७२ ॥

विमल मकरन्द (मधु) में लुब्ध भ्रमर-समूहों के पंखों के पवन से परिकम्पित, सत् कमनीय कुमुद, कैरव (तथा) कमलों से युक्त तालाब को देखकर वहाँ ॥ ७३ ॥

### शाप विमुक्ता हो देवकन्या बना मकर

कुंड में प्रवेशकर पेट भर पानी पीने के लिए (उसमें) उतर पड़ा, वहाँ रहनेवाले मगर के चरणों को मुँह में दबाकर पकड़ने पर (हनुमान ने) चरण विदलित किये। दृढ़ता से पकड़े रहकर, न छोड़ने पर अति सूक्ष्म-रूप (वाला) हो, उसके पेट में प्रवेशकर शीघ्र बेधकर (बाहर) निकला। तब उसने देवकन्या हो, आकाश में रहकर अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। 'यह दैत्य है। (इसका) विश्वास मत करो। इसका वध कर, संजीवनी पर्वत शीघ्र जाओ। तुम्हारे कारण मेरा शाप पूर्ण हो चुका (शाप विमोचन हुआ)।' ऐसा कहते आशीष देकर वह अमरपुरी को चली गई ॥ ७४ ॥

तब हनुमान ने तेजोवान् हो आकर कपट मुनि को देखा। उसने इस प्रकार कहा ॥ ७५ ॥

### कालनेमि का कालगति को प्राप्त होना

"इतना अधिक विलंब क्यों किया ? समीप में स्थित इस कुण्ड में जाकर (शीघ्र) न आने से हमें सन्देह हो गया। अब हो तो कुछ धन गुरुपूजा में भेंट चढ़ाकर, पूछो कि तुम्हें कौन सी दवाएं चाहिए। उन प्रिय (औषधियों) को तुम्हें दे दूंगा" ॥ ७६ ॥

चम्प०- अनवुडु गोपमॆंत्ति पवनात्मजुडप्पुडु नीकु बूज गॊ-
म्मनि युरुमुष्टिचे बॊडुव, नातडु ढीकॊनि पक्षिरूपुडै
तनु गदियंग वच्चुटयु, दानि नपक्षमुगाग द्रुंचिनन्
गिनिसि मृगेंद्रुडै पॊडुव, गेसरिपुत्त्रुडु दानि गूल्चिनन् ।। ७७ ।।

तेटगीति– अंत सुग्रीवुडै वच्चि, यनिलतनय !
व्रतिकॆ सौमित्रि, मंदुलपनि तलंप
वलदु रम्मनि, नन्नु भूवरुडु पनिचॆ
मगिडि पोदमु पदमन्नमाट विनुचु ।। ७८ ।।

वचनमु— सुग्रीवुंडनि विचारिंचि काकुंडुटॆरिगि, वानि बाहुमध्यंबुन
बॊडिचिन, नतंडारूपंबु विडिचि, शतशृंगुडै नॊप्पिचिन,
नलिगि जगत्पाण-नंदनुंडु वालंबुन नडिचि, करंबुलु
छेदिंचि, शिरंबु द्रुंचिवैचि, सिंहनादंबु चेसि, जयलक्ष्मि
गैकॊनि ।। ७९ ।।

हनुमंतुडु पॆकलिंचि तॆच्चिचन संजीवि पर्वतमु

कन्द— द्रोणाद्रि केगि मंदुलु
पोणिमि नीकुन्न गिनिसि पॊल्पलरग ना-
क्षोणीधर मगलिपुचु
बाणितलाग्रमुन बॆट्टि पट्टुकरागन् ।। ८० ।।

सी०-कावलि युन्नट्टि गंधर्वगणमुलु पदुनाल्गुवेलु कोपंबुतोड
नाहवंबॊनरिंप, नंदरू नच्चोट वालमुखंबुन वसुध गूल्चि,
गगनमार्गंबुन गडुतीव्रगतितोड बोव, नंदिग्रामपुरमुनंदु
दैलयुक्तंबैन तललतो बॊरलाड गलिगिन रामलक्ष्मणुल तॆरगु

तेटगीति– भरतु डारात्रि कल गनि, भयमु दोचि,
तॊडरि दुस्वप्नदोषंबु दॊलगि पोव
विप्रवरुलकु दानमुल् वेड्क निच्चि,
वॆलुपलनुनुन्न भरतभूविभुनि गांचि, ।। ८१ ।।

तेटगीति– रामुडे यंचु नूहिंचि, रामुडेल
वच्चु निचटिकि ? सौमित्रि, वनचरुलनु,
जनकनंदन दर्गडिचि, जगमॆरुंग
बगर जंपक रानेमिपनि तलंप ।। ८२ ।।

(ऐसा) कहने पर क्रोधित हो पवनात्मज ने "तेरी पूजा यह लो।" कहते हुए महान् मुष्टि से मारा। वह सामना करने के लिए पक्षि के रूप में निकट आया तो उसके पंखों को तोड़ दिया। क्रोधित हो वह मृगेन्द्र के रूप में मारने आया तो केसरिपुत्र ने (हनुमान) उसे (मार) गिराया ॥ ७७ ॥

तब सुग्रीव के रूप में आकर कहने लगा कि 'हे अनिल तनय ! सौमित्र जी गया। औषधियों की आवश्यकता नहीं है। मुझे भूवर ने भेजा है। वापस चलेंगे चलो।' ऐसा वचन सुनकर ॥ ७८ ॥

यह सोचकर कि सुग्रीव ही है, फिर जानकर कि नहीं है, उसकी बाहुओं के बीच में (मुष्टिघात) करने पर, उसने उस रूप को छोड़कर शतशृंगी होकर पीड़ित किया। जगत्प्राण-नन्दन ने कुपित हो, पूँछ से दबाकर, हाथों को छेदकर, सिर काटकर, सिंहनाद करते हुए, जयलक्ष्मी को ग्रहण किया ॥ ७९ ॥

### हनुमान द्वारा उखाड़कर लाया हुआ संजीवनी पर्वत

द्रोणाद्रि को जाकर, औषधियों को ढंग से न देने पर, क्रोधित हो, उस पर्वत को ही उखाड़कर हथेली पर उठाकर लाता रहा ॥ ८० ॥

रखवाली करनेवाले चौदह हज़ार गन्धर्व गणों के क्रोधित हो, युद्ध करने पर, सबको वहाँ पूँछ से धराशायीकर, गगन मार्ग में अति तीव्र गति से जाते रहने पर, नन्दिग्रामपुर में, तैलयुक्त सिरों से लोटनेवाले राम-लक्ष्मणों को उस रात भरत सपने में देखकर, भीत होकर, उस दुःस्वप्न के दोष के निवारण के लिए विप्रवरों को आनन्द से दान देकर बाहर स्थित रहा। उस भरत-भूविभु को (हनुमान ने) देखा ॥ ८१ ॥

सोचा कि राम होंगे। फिर सोचा राम यहाँ कैसे आएँगे ? सौमित्र, वनचर (तथा) जनकनन्दना को छोड़, जगत में प्रसिद्ध रूप में शत्रुओं को न मारकर यहाँ कैसे आयेंगे ॥ ८२ ॥

## माल्यवंतुनि मरणमु

वचनमु— अनि यिट्लु संदियंपडि, काडनि निश्चयिंचि यंत हनुमंतुंडु दक्षिणपाथोनिधि दरियंजनुनप्पुडु, दशाननुपंपुन सेनल गूडि माल्यवंतुंडेदिरिंचि, शस्त्रास्त्रंबुलु गुरियिंचि नोंप्पि-चिनं गनि, वातूलतनूभवुंडु वालमल्लार्चि, यार्चि, पेर्चि, दनुजबलंबुल जलंबुनं दरिमि, वालमुखंबुन गळंबुलु पट्टि, नानामुखंबुल बारुवैचिनन् गनि माल्यवंतुंडु तीव्रशरंबुल नोंप्पिचिन, नडरि यद्दानवेंद्रुनि कंठंबुन वालंबुंगी लिंचि, गिरगिरं द्रिप्पि समुद्र मध्यंबुन बडवैचिन, वाडुनु बाताळंबुनकुं जनियें नाक्षणंब ।। ८३ ।।

तेटगीति— माल्यवंतुनि बोकार्चि मानुषमुन,
गगनमंडलमंदंद पगुलनार्चि,
वच्चुनपुडु शतकोटि वारिजाप्त-
दीप्ति गनुपट्टे ब्राचीन दिक्कुनंदु ।। ८४ ।।

वचनमु— इट्लु वेलुंगुचुन्न महौषधाचलंबु दिव्यदीप्तुलु गनुंगोनि, राघवेश्वरुंडदि सूर्योदयंबनि मनंबुन दलंकि, कपुलतो निट्लनियें ।। ८५ ।।

चम्प०- अदे कनुगोंटिरे ! कलय नर्कुडु पूर्वगिरींद्र शृंगमं-
दुदयमुनोंदे, निंक निटनुंचिन दम्मुनि प्राणवायुवुल्
ब्रदुकुट दुर्लभं बकट ! पलमरु म्रोक्केडु प्रोंद्दे, माकुदा-
नदयत शत्रुडय्यें गपुलार विनुंडिदे मीकु जेप्पेदन् ।। ८६ ।।

तेटगीति— माकुलंबुन केल्लनु महिनि दलप
दाने कर्तये युंडियु धर्ममगुने
युदय मंदंग मनुमडिट्लुन्न येडनु ?
गोंसरि चुट्टालु बगवारि गूडवलेने ।। ८७ ।।

कन्द— ईलागुन दा बोंडिचिन
मालक्ष्मणु प्राणमेल मगुड्नु ? भानुं-
गूलग वेसेंद, विल्लुनु,
गोललु दम्मनुचु नंदिकोंनुनालोनन् ।। ८८ ।।

वचनमु— रामचंद्रुनकु जांबवंतुडिट्लनियें : ।। ८९ ।।

## माल्यवंत का मरण

इस प्रकार सन्देह कर, (और) निश्चय कर कि (ये राम) नहीं हैं, हनुमान के दक्षिण सागर की ओर जाने पर दशानन (रावण) की आज्ञा से सेनाओं के साथ माल्यवान के सामनाकर, शस्त्रास्त्रों को बरसाकर, पीड़ा देने पर, पवनसुत ने (उसे) देखकर, पूंछ हिलाकर, भयंकर ध्वनि करते हुए, दनुज की सेनाओं को पकड़-पकड़कर, जल में भगाया। पूंछ से कण्ठों को पकड़कर, सब दिशाओं में फेंक दिया। (इसे) देख माल्यवान के तीक्ष्ण शरों से पीड़ित करने पर, कुपित हो, दानवेंद्र के कण्ठ को पूंछ से लपेटकर घुमा-घुमाकर समुद्र मध्य में फेंक दिया। और वह भी उसी क्षण पाताल पहुँच गया ॥ ८३ ॥

माल्यवान को मारकर पौरुष से गगनमण्डल जहाँ-तहाँ फट जाए ऐसे भयंकर नाद किया। (ऐसे हनुमान के) आते समय शतकोटि वारिजाप्त (सूर्य) की दीप्ति पूर्व दिशा में दिखाई पड़ी ॥ ८४ ॥

इस प्रकार दीप्तिमान महौषधियों के पहाड़ की दिव्य-कान्तियों को देख, राघवेश्वर ने उसे सूर्योदय समझ मन में विचलित होकर कपियों से इस प्रकार कहा ॥ ८५ ॥

'वही देखो। पूर्व गिरीन्द्र के शिखर पर अर्क उदित हुआ। अब यहाँ रखने से अनुज के प्राण बचाना दुर्लभ है। हाय! जिसको हम अनेक बार नमस्कार करते हैं, वही (सूर्य) निर्दय हो शत्रु बन गया है। कपियो! सुन लो। यही मैं तुमसे कहता हूँ ॥ ८६ ॥

धरती पर सोचने पर हमारे समस्त कुल के स्वयंकर्ता होकर भी पोते की ऐसी स्थिति में रहते समय उदित होना (सूर्य के लिए) धर्म है क्या? समीप के बन्धुवर्ग को भी शत्रुओं में मिल जाना चाहिए? (यह उचित नहीं है।) ॥ ८७ ॥

इस प्रकार उदित हो जाये तो हमारे लक्ष्मण के प्राण कैसे बचेंगे? सूर्य को गिरा दूंगा। धनुष और बाण इधर पहुँचा दो।' (ऐसा) कहते (उन्हें) लेते अन्तर में, ॥ ८८ ॥

रामचन्द्र से जाम्बवान ने इस प्रकार कहा ॥ ८९ ॥

उत्प०— भानुडु काडु चूडु नरपालक ! मंदुलकोंड दीप्तु, ली-
मानमु दोचे गानि यनुमानमु लेदु विनुंडु, वेड्कतो
वानरसेन[1] निकेंदुरु, वायु तनूजुनि गारविपगा
मानवनाथ ! पंपु मनुमात्रने वच्चे नतंडु तीव्रतन् ॥ ९० ॥

कन्द— अनिमिषुलु सन्नुतिपग
हनुमंतुडु द्रोणशैलमति शीघ्रमुगा
गोनिवच्चिच निलिचि रघुरा-
मुनि श्रीपादमुल केलमि म्रोक्किनयंतन् ॥ ९१ ॥

लक्ष्मणुडु संजीविनिचे मूर्छ देरुट

वचनमु— रामचंद्रुंडतनि गौगिलिचुकोनि, सुषेणुं जूचि नी विदलि दिव्यौषधंबुलवलन सौमित्रि प्राणंबुलु तेर्पुमनिन, नटय-धिपुनाज्ञ शिरंबुन दाल्चि वनचर सहितुंडै पर्वतंबेक्कि तोल्लि देवतलमृतपानंबु चेसिन तावुनु, नारायणुंडु मोहिनीरूपंबुन नमृतमु पंचुनप्पुडु सूर्य चंद्रुलनडुम निरिकिन राहुवु शिरंबु द्रुंचिन तावुनु, राक्षसुलु जन्मिचिन तावुनु, शंकर भगवानुंडु पर्वतराजु कूतुनु बेंड्लि याडिन तावुनु, वानरुलकुं जूपुचु नग्गिरींद्रंबु पैनुन्न यौषधंबुलु गोनिवच्चि प्रयोगिंप, नायौषधमुल सामर्थ्यंबुनं जेसि लक्ष्मणुनकु ब्राणंबुलु मगुड वच्चे: नंत सकल वानरुलु नानंद रसाब्धिदेलि, रप्पुडु सौमित्रि रामुनकु नमस्करिंचिन रामचंद्रुंडु कौगिटं जेर्चि, हनुमंतुडोनरिंचिन युपकृतिकि संतोषिंचि, यी पर्वतंबुनु दोल्लिलटि युनिकिने युंचि रम्मनिन, नतंडट्ल काविंचेननि नारदुंडु सेप्पिन वाल्मीकि मुनीश्वरुं डटमीदि कथाविधानं बेट्टिटदनि यडुगुटयु ॥ ९२ ॥

आश्वासान्त पद्य गद्यमुलु

कन्द— जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !
जलजासन विनुतपादजलजात ! सुधा
जलराशि भव्यमंदिर
जलजाकर चारुहंस ! जानकिनाथा ! ॥ ९३ ॥

---

१. वानरसेनल न्रेंदुर

"हे नरपालक ! देखो ! (वह) सूर्य नहीं है। औषधियों के पर्वत की दीप्तियाँ इस प्रकार भासित हुईं। इसमें कोई सन्देह नहीं। सुनो, आनन्द से वानर सेनाओं को वायुसुत का आदर से अगवानी करने भेजो। हे मानवनाथ (श्रीराम) ! भेजो" कहने पर ही वह तुरत आ गया। तब, ॥ ९० ॥

अनिमिष (देवताओं) के स्तुति करने पर, हनुमान ने द्रोण शैल को अति शीघ्रता से ले आकर श्रीराम के चरणों के सम्मुख रखा (और) प्रणामकर खड़ा हो गया। तब— ॥ ९१ ॥

**संजीवनी (के प्रभाव) से मूर्च्छा से लक्ष्मण को होश में लाना**

रामचन्द्र ने उसका (हनुमान) आलिंगन कर सुषेण से कहा 'तुम ! इस (पहाड़) की औषधियों से सौमित्र के प्राणों को बचाओ।' कहने पर उस अधिप की आज्ञा को सर आँखों पर रखकर, वनचरों को लेकर, पहाड़ पर चढ़कर, पूर्व काल में देवताओं का अमृतपान करने का स्थान, नारायण के मोहिनी रूप में अमृत बाँटने के समय, सूर्य चन्द्रों के बीच में फँसे राहु के सिर को काटने का स्थान, बलि चक्रवर्ति के यज्ञ करने का स्थान, राक्षसों का जन्म स्थान, शंकर भगवान के पर्वतराज पुत्री से विवाह का स्थान, (इन सबको) वानरों को दिखाते हुए, उस गिरीन्द्र पर स्थित औषषियों को लाकर प्रयोग करने पर उन औषधियों की सामर्थ्य के कारण लक्ष्मण के प्राण वापिस आ गये (जीवित हुए)। तब सकल वानर आनन्द-रस-सागर में मग्न हुए। तब लक्ष्मण ने राम को नमस्कार किया। (और) राम ने उसे अंक में लेकर हनुमान के किये उपकार के लिए प्रसन्न होकर कहा 'इस पर्वत को यथास्थान रखकर आओ।' उसने वैसा ही किया। इस प्रकार नारद के कहने पर वाल्मीकि मुनीश्वर ने पूछा कि आगे का कथा विधान क्या है ? (ऐसा) पूछने पर, ॥ ९२ ॥

**आश्वासान्त पद्य और गद्य**

हे जलजाक्ष ! हे भक्तवत्सल ! हे जलजासन (ब्रह्मा) से विनुत पाद जलजात (चरण कमल) वाले ! हे सुधा जलराशि के भव्य-मंदिर रूपी जलजाकर (सरोवर) में विहारनेवाले सुंदर हंस ! हे जानकी नाथ ! नमः ॥ ९३ ॥

गद्यमु

इदि श्री गौरीश्वर वरप्रसाद लब्ध, गुरुजंगमार्चन विनोद, (नित्यशैवाचार संपन्न) सूरिजनविनुत, कविताचमत्कारातुकूरि केसनसॆट्टि तनय, मॊल्ल नामधेय विरचितंबैन श्रीरामायण महाकाव्यंबुनंदलि युद्धकांडमुन द्वितीयाश्वासमु ।

तृतीयाश्वासमु

कन्द— विमलसुधाकरवदना !
सुमनश्चेतोब्जसदन ! सुस्थिरकदना !
कमनीयरदन ! शत्रुवि-
षम ! रघुकुलसार्वभौम ! जानकिरामा ! ।। १ ।।

वचनमु— श्रीनारदमुनींद्रुंडु वाल्मीकि कॆऱिंगिंचिन तॆऱंगॆऱिंगिंचॆद
नाकर्णिंपुमु ।। २ ।।

रावणुनि शत्रुंजय होममु

कन्द— कलकल पक्षुलु गूयग,
बलपलनै तारकमुलु पडमट दोपन्,
जलजमुलु विरिय, दूर्पुन
बलपलनै तॆल्लवाऱ भानुडु पॊडमॆन् ।। ३ ।।

सी०-अटमुन्नु दशकंठुडाचार्युडैनट्टि शुक्रानुमति देहशुद्धितोड
रणजयार्थंबुगा रथमुलु गुर्ऱमुल् कवचंबुलस्त्र संघमुलु गलुग
बाताळ गुह जॊच्चि वीतिहोत्रुनि गूर्चि पायक-होमंबु सेयुचुंड
नाहोमधूमंबु लाकसंबुन बर्व गनि विभीषणुडु भूकांतुनकुनु

तेटगीति— विन्नविंचॆनु मायन्न निन्न नरिगि
होम मॊनर्रिपुचुन्न वाडुडुगकिपुडु
मॊनसि याहोम मदि तुद मुट्टॆनेनि
गलन ब्रह्मादुलातनि गॆलुवलेरु ।। ४ ।।

कन्द— ईपनि विघ्नमु सेयग
भूपालक ! कपुल नेंचि पुच्चुमु लेदे
मीपनि विघ्नमगु ननुडु
भापालवरेण्युडपुडु भूधरच्चरुलन् ।। ५ ।।

यह श्री गौरीश्वर के वर के प्रसाद को प्राप्त, गुरु जंगम के अर्चन के विनोदी, (नित्य शैवाचार सम्पन्न) सूरिजन (बुधजन) से विनुत, कविता में चतुर, आतुकूरि केसन सेट्टि की तनूजा मोल्ल नामधारी से विरचित श्री रामायण महाकाव्य में युद्धकाण्ड का यह द्वितीयाश्वास पूरा (हो गया) है।

### तृतीयाश्वास

हे विमल सुधाकर (चन्द्र) के समान मुखवाले! सुन्दर मन तथा चेतना रूपी कमलों के निलय! कदन (युद्ध) में सुस्थिर रहनेवाले! कमनीय (सुन्दर) दाँतोंवाले। रघुकुल सार्वभौम! हे जानकीराम! (नमः) ॥ १ ॥

श्री नारद मुनीन्द्र के वाल्मीकि को विदित किया हुआ (कथा) विधान प्रकट करूँगी। ध्यान से सुनो ॥ २ ॥

### रावण का शत्रुञ्जय होम

कलकल (रव) करते हुए पक्षिगण कूजने लगे। टिमटिमाते तारे पश्चिम में दिखाई पड़े। कमल खिलने लगे। पूरब में झटपट प्रभात हुआ। सूरज निकल आया ॥ ३ ॥

वहाँ दशकंठ, पहले आचार्य शुक्र की अनुमति से देह से शुद्ध हो (पवित्र होकर), रण में विजय की प्राप्ति के हेतु रथ, घोड़ा, कवच, अस्त्र समूह (आदि) प्राप्त हों, (इस इच्छा से) पाताल गुफा में प्रवेशकर वीतिहोत्र के प्रति निरन्तर होम करनें लगा। उस होम के धूम्र को आकाश में प्रसारित होते देख, विभीषण ने भूकान्त (राम) से निवेदन किया—"मेरा अग्रज कल (वहाँ) जाकर निरन्तरता से अब होम कर रहा है। वह होम पूरा हुआ तो युद्ध में ब्रह्मादि लोग भी उसे जीत न सकेंगे। ॥ ४ ॥

हे भूपालक! इस कार्य में विघ्न डालने के लिए कपियों को चुनकर भेज दीजिए। नहीं तो आपका कार्यभंग होगा।" कहने पर भूपालवरेण्य ने भूधरचरों (वानरों) को— ॥ ५ ॥

चम्प०- गवयगवाक्षवालिसुत कंजहितात्मज नील वायुसं-
भव नल गंधमादन विभाषित भल्लुकनाथ मुख्युलन्
दिविज विरोधिपै बनुप दीव्रतनेगि पुरंबु सोँच्चि दा-
नवपतिसेनलं दरिमि नाकमु भेदिल नार्चि यत्तरिन् ॥ ६ ॥

कन्द— गुह सोँच्चि दनुजवल्लभ !
विहितमै साहसमु विडिचि विनु मुनिवृत्तिन्
दहनगत धूमरेखल
नहरहमुनु नीकु व्रेल्व नहँबगुने ? ॥ ७ ॥

कन्द— मगटिमि गलिगिन पुरुषुलॆ
मगतनमुनु विडिचि नडुव मगुवलु नगरा ?
तगदनक नेडु मरुगुन
विगतव्रीडुंड वगुचु व्रेल्वं दगुने ? ॥ ८ ॥

मत्ते०-अनि केतेँचि नृपालशेखरुडु वाह्याळि प्रदेशंबुनन्
निनु रम्मंचुनु बिल्चुचुंड निचटन् नीवुंडि व्याजंबुनन्
दनुजाधीश्वर ! वीरधर्ममगुने तप्पिचुको ? नंचु न-
व्वनचारुल् सिगवट्टि यीड्वगनु ग्रव्यादुंडु निश्चितुडै ॥ ९ ॥

कन्द— कदलक हृदयध्यानमु
वदलक मंत्रंबु चोँप्पु वडितप्पक लो-
जेँदरक व्रेल्चुचु नुग्रत
जेँदरक कूर्चुंडे नट गभीर प्रौढिन् ॥ १० ॥

वचनमु— अट्लु शिलास्तंभबुपगिदिनि जलिपकुन्न नतनिचेति
याहुतुलु विडिचि पोवैचि, स्रुस्त्रुवंबुलु नलुग द्रोँक्कि,
यिध्मंबु होमद्रव्यंबुलु नोँक्कित नग्निलो द्रोचि, होमाग्नि
जिदरवंदर चेसि, भुजंबुलेक्कि, मीसलु पट्टुकोँनि लागि,
तललु गर्दलिचि, वीनुल बेँनुबोँब्बलिडि, कदलकुन्नं
गिनिसि, वालितनूभवुंडंत नंत:पुरंबुनकुं बोयि यंदुन्न
मंदोदरिनि जुट्टुपट्टि यीड्चुचु बरुवुन गोँनिवच्चि,
दशवदनुमुंदर निलुप नक्कांत दु:खाक्रांतयै तन कांतुनु
किट्लनियै : ॥ ११ ॥

गवय, गवाक्ष, वालिसुत, कंजहितातमज (सुग्रीव), नील, वायुसंभव (हनुमान), नल, गन्धमादन, विभाषित, भल्लूकनाथ (जाम्बवान्) आदि प्रमुख लोगों को द्विविज-विरोधी (रावण) पर भेजा। उन लोगों ने तीव्रता (तेजी) से चलकर, पुर में प्रवेशकर, दानवपति की सेनाओं को भगाकर स्वर्ग-भेदी सिंहनाद किया। उस समय, ।। ६ ।।

गुफ़ा में प्रवेशकर (कहने लगे)—हे दनुजवल्लभ! साहस को छोड़कर मुनिवृत्ति से, दहनगत-धूम रेखाओं के साथ, रातदिन आहुतियाँ देना क्या तुम्हारे लिए समुचित है? ।। ७ ।।

पौरुष रखनेवाले पुरुष ही अपने पुरुषत्त्व को छोड़कर चलें (व्यवहार करें) तो स्त्रियाँ हँसेंगी नहीं क्या? अनुचित न जानकर, आज आड़ में छिपकर, लज्जा छोड़कर, आहुतियाँ देना समुचित है क्या? ।। ८ ।।

युद्ध के लिए नृपाल शेखर खुली जगह तुम्हें आने के लिए बुला रहा है और तुम्हारा यहाँ रहकर (किसी) बहाने से हे धनुजाधीश्वर! बचने का (प्रयास करना) क्या वीर धर्म है?'' ऐसा कहते हुए वनचारियों के शिखा पकड़कर खींचने पर वह राक्षस निश्चिन्त हो, ।। ९ ।।

निश्चल हो, हृदय से ध्यान न छोड़कर, मंत्रोच्चारण करते हुए, अन्तर में विचलित न होते हुए, आहुतियाँ देते हुए, उग्रगति से, गम्भीर प्रौढ़ता से न हिल-डुल कर वहीं बैठा रहा ।। १० ।।

इस प्रकार शिला-स्तम्भ के समान अचल रहने पर, उसके हाथों की आहुतियाँ नीचे गिराकर, स्रुक्सुवों को कुचलकर, इध्म (समिधाओं) (और) होम द्रव्यों को झट अग्नि में डालकर, होमाग्नि को तितर-बितर कर, भुजाओं पर चढ़कर, मूँछें पकड़ खींचकर, सिरों को हिला-हिलाकर, कानों में भीकर ध्वनियाँकर, (तब भी) न हिलने पर, क्रोधित हो, वालितनूभव (अंगद) ने तब अन्तःपुर में जाकर उसमें स्थित मन्दोदरी को शिखा पकड़कर, शीघ्र खींच लाकर, दशवदन (रावण) के सम्मुख खड़ा करने पर, उस कान्ता ने दुःख से विलाप करते हुए, अपने कान्त से इस प्रकार कहा— ।। ११ ।।

मंडोदरि दीनालापमुलु

तेटगीति– रामचंद्रुंडे यादिनारायणुंडु
गपुलु देवतलनि नीकु गनबडंग,
नेॅल्ळवेळळ ने जेॅवि निल्लु गट्टि
विन्नपमु सेय नामाट विनकपोति ।। १२ ।।

मत्ते०-मयदैत्येंद्रुनकुं दनूजनयि, सेमंबॊप्प नीपतिननै,
जयवेॅट्टंगनु निंद्रजिज्जननिनै, सर्वांगनापूज्यनै,
भयमेॅन्नंडु नेॅरुंगनट्टि ननु निभ्भंगिन् वनाटुंडु नि-
र्भयवृत्तिदलवट्टि यीड्व गनुगो बालैति नीमुंगलन् ।। १३ ।।

कन्द— रामुनि दूतलु नन्नुन
बामुलु वेॅट्टंग जूड बंडुवे नीकुन् ?
नामानमु गापाडनि
नीमानुषमेटिकिपुडु निर्जरवैरी ! ।। १४ ।।

उत्प०–ई मुनिवृत्ति कन्न दनुजेश्वर! रामुनितोड नेडु सं-
ग्राममु सेसि गेॅलिचिन नखंड रमाविभवंबु गल्गु, ना
रामुनि चेत जच्चिन स्थिरंबगु मोक्षमु गल्गु दीनिकै
येमिटि किंत दैन्यमिसि! यिच्चदलंपुमु राक्षसेश्वरा ! ।। १५ ।।

वचनमु— अनि यनेक विधंबुलुगा दीनालापंबुलाडुचु वेॅक्कि वेॅक्कि येड्वं गनि लज्जिंचि महोग्राकारुंडै लेचि,दग्धशेषकांडंबुलचे वानरवीरुल करंबुलु शिरंबुलु मुक्कुलु जेॅक्कुलु नलुग मोॅत्तिनं बऽचि वारु रामचंद्रुनि सम्मुखंबुनकुं बोयि तामु पोयि वच्चिनपनि विन्नविंचि रट्टि समयंबुन ।। १६ ।।

तेटगीति–नगचरुल दोलि क्रम्मर नगरि करिगि
पंक्तिकंठुंडु धैर्यंबु पादुकोॅलिप
विन्नदनमुन वगवुन जिन्नवोयि
चेॅंतनुन्नट्टि तन कुलकांत जूचि ।। १७ ।।

कन्द— नाकेलु वट्टि वेॅलसिन
नी केला चिन्नवोव नीरजनयना !
नाकुलु बेॅदरग नल यि-
क्ष्वाकुकुलोद्भवुल गेॅलिचिवच्चेॅद निंकन् ।। १८ ।।

**मंदोदरी का दीनालाप**

"रामचन्द्र ही आदिनारायण हैं। कपिवर्ग ही देवतावर्ग हैं। तुम्हें मालूम हो, ऐसे (कई बार) मैंने तुम्हारे कान में घुसकर निवेदन किया था। मेरी बातों को अनसुना किया था ॥ १२ ॥

मय (नामक राक्षस) की पुत्री होकर, कुशलता से तुम्हारी पत्नी होकर, विजयी होनेवाले इन्द्रजित की जननी होकर, सर्व अंगनाओं से पूजित होकर, मैं कभी भय नहीं जानती। ऐसी मुझे इस प्रकार वनचर निडर होकर सिर (बाल) पकड़ खींचें ! तुम्हारे सामने ही (ऐसी दुर्दशा की) भागी बनी हूँ ॥ १३ ॥

राम के दूत मुझे सतावें, यह तुम्हारे लिए नेत्र-पर्व है क्या ? हे निर्जर वैरी (देववैरी) ! मेरे मान की रक्षा न करनेवाला तुम्हारा पौरुष अब क्यों ? (किस काम का) ॥ १४ ॥

हे दनुजेश्वर ! इस मुनिवृत्ति की अपेक्षा (यदि) आज राम से संग्रामकर विजयी होने से रमा (लक्ष्मी) का वैभव प्राप्त होगा। यदि उस राम के हाथ मारे जाओगे तो सुस्थिर मोक्ष की प्राप्ति होगी। हाय, इसके लिए इतना दैन्य क्यों ? हे राक्षसेश्वर ! मन में सोचो तो !" ॥ १५ ॥

(इस प्रकार) कहकर अनेक प्रकार से दीनालाप करते हुए, (मन्दोदरी के) सिसकियाँ भरते रोते देख, (रावण ने) लज्जित हो, अति उग्राकार से उठकर, जलने से बचे हुए लकड़ियों (मुराड़ों) से वानर वीरों के हाथ सिर, नाक, गालों को चकनाचूर करते हुए मारा। मारने पर वे लोग रामचन्द्र के सम्मुख जाकर, गये हुए कार्य का (पूर्ण करने का) निवेदन किया। वैसे समय में, ॥ १६ ॥

नगचरों (वानरों) को भगाकर, फिर नगरी (अन्तःपुर) जाकर पंक्तिकण्ठ ने धैर्य धारणकर, उदासी तथा दुःख के कारण (मुँह) छोटा किये बैठी अपनी कुलकान्ता (मन्दोदरी) को देखकर (कहा)— ॥ १७ ॥

"हे नीरजनयने ! मेरे हाथ पकड़कर, सुशोभित होनेवाली तुम्हें (मन) छोटा करने का कारण क्यों है ? देवतालोग भयभीत हों, ऐसा इक्ष्वाकु-वंश (सूर्यवंश) के उद्भवों (वंशजों) को अब जीतकर आऊँगा ॥ १८ ॥

तेटगीति— तॆलिय मयुपुत्रि ! नाडु प्रतिज्ञ विनुमु
वनचरुलतोड रामभूवरुनि नेडु
चंपुटॊंडॆनु वानिचे जच्चुटॊंडॆ
गानि यूरक मरलुट कानि माट ।। १९ ।।

वचनमु— अनि वीररसंबुप्पॊंग ब्रतिज्ञालापंबुल दनपट्टपुदेवि यगु
मंदोदरि नोदार्चि कॊलुवुकूटंबुन केतॆंचि यच्चट ।। २० ।।

रावणुनि समर संरंभमु

कन्द— शिरमुल वीनुल गळमुल
गरमुल नुरमुन नडुमुन गमनीय पदां-
बुरुहमुल भूषणावळु-
लरुदारग दालिच मोहनाकृति मीऱन् ।। २१ ।।

तेटगीति— गंधमाल्यांबरादुलु बंधुरमुग
मेन गलयंग धरियिंचि दानवेंद्रु-
डंत रणभेरि व्रेयिंचि पंत मलर
बिरुदु राहुत्त वीरुल बिलुव बनिचॆ ।। २२ ।।

वचनमु— अट्टि यवसरंबुन ।। २३ ।।

आट०— रोषमडर खड्गरोमुंडु वृश्चिक-
रोमुडल्ल सर्परोमु डग्नि-
वर्णुडादि गाग वच्चिरि राक्षस
वीरुलपुडु दनुजविभुनि गॊलुव ।। २४ ।।

कन्द— इरुवदि चेतुल शस्त्रो-
त्करमुलु मॆऱयंग दालिच कौतुक मडरन्
दुरगमुलु नूरुगट्टिन
यरदमुपै गूरुचुंड नति विभवमुनन् ।। २५ ।।

सी०- भेरुलु तम्मटल् पॆल्लु निस्साणमुल् बूरगॊम्मुलु कंचुवीरणमुलु
मकिलत्रोवुलु वीरमद्दॆलल् गिडुगिळ्ळु पेरॆन तप्पॆटल् पिल्लग्रोळ्ळु
तारलु चिम्मटतारलु शंखमुल् काहळाल् पसिडिढक्कलुनु बिडुलु
गालिगॊम्मुलु डोळ्ळु कॆवळ्ळु रुंजलु छत्रसंघंबुलु चामरमुलु

हे मय (नामक राक्षस) की पुत्री ! मेरी यह प्रतिज्ञा सुनो ! वनचरों सहित राम को आज मार डालूँगा, नहीं तो उससे मरूँगा। किन्तु खाली हाथ लौटना असम्भव बात है।'' ॥ २१ ॥

(इस प्रकार) कह वीररस के उमड़ने पर प्रतिज्ञालाप करते हुए, अपनी पटरानी मन्दोदरी को सान्त्वना देकर, (रावण) सभा में आ पहुँचा, वहाँ— ॥ २० ॥

### रावण के समर का संरम्भ

सिरों को, कानों को, कण्ठों को, हाथों को, छाती, कमर को, कमनीय चरणकमलों को विशेषरूप से भूषणावलियों से अलंकृतकर, मोहन आकृति में (रावण) सुशोभित हुआ ॥ २१ ॥

गन्धमाल्याम्बर आदि को शरीर पर घने रूप से धारणकर, दानवेन्द्र ने तब रणभेरी बजवाकर, प्रण के साथ श्रेष्ठ राहुत (घुड़सवार) वीरों को बुला भेजा ॥ २२ ॥

उस अवसर पर— ॥ २३ ॥

रोष के उमड़ने पर खड्गरोम, वृश्चिक रोम, सर्परोम, अग्निवर्ण आदि-आदि राक्षसवीर दनुजविभु की सेवा में तब आ गये ॥ २४ ॥

बीसों हाथों में उत्कट रूप से धारणकर चमकते हुए अति कौतुकता से सौ घोड़ों के जुते रथ पर बैठकर, अति वैभव से ॥ २५ ॥

भेरी पटह, निस्साण, तुरहियों, पीतल के वीरण (चर्म वाद्य), बाँस के बाजे, वीर मर्दल (मृदंग), डुग्गियाँ, बाँसुरियाँ, तारे (वाद्य विशेष), झींकार करनेवाले तारे, शंख, काहल, सोने के नगाड़े, सींगी, ढोल, रुंज, छत्र समूह, चमरों के साथ कोलाहल करते हुए, दिशाओं को गुँजायमान

तेटगीति— बोरु कलगंग दिक्कुलु बूरटिल्ल
दनुजवर्गंबु लिरुवंक दविलि कॊलुव
वॆंडलॆ सन्नाहमडरंग वीररवमु
करुवु गट्टिनचंदंबु गानबडग ॥ २६ ॥

कन्द— कालाग्नि कालभैरव
कालांतक कालगंड कालाहिकळा-
भीलसमुद्यद्दिनकर-
कालाकृतितोड बंकितकंठुडु वॆंडलॆन् ॥ २७ ॥

वचनमु— इट्लतयुत्साहंबुगा युद्धरंगंबुनकु बयलुदेरिन समयंबुन ॥२८॥

वंदि चेसिन रावणुनि स्तुति

चूर्णिक— जयजय कैकसीगर्भसमुद्र संपूर्ण सुधाकरा ! जयजय मयतनूजामनोहरा ! जयजय राक्षस कुलसार्वभौमा ! जयजय सागरावरणलंकाधीश्वरा ! जयजय पाकशासन-भद्र श्रीहरण चतुरा ! जयजय कुटिलवैश्वानर पुटभेद निर्धूमधामा ! जयजय समवर्ति संपद्विच्छेदका ! जयजय दनुजवल्लभ हलकल्लोला ! जयजय यब्दीश्वर तोयशोषण-बडबानला ! जयजय पवमानसंहारा ! जयजय यक्षनायक दुर्वारगर्वापहारका ! जयजय यीशानैश्वर्यहरणोद्यमा ! जयजय नवग्रहानुग्रहनिग्रहा ! जयजय दशग्रीवालंकारा ! जयजय कैलास नगेंद्रोत्पाटनकंदुक क्रीडा विनोदा ! जयजय भवानीश्वर श्रीपादकमल शिर:कंजातपूजासमर्था! जयजय पुष्पकारुढ सकल दिगंत विक्रांता ! जयजय ब्रह्मवंश प्रदीपका ! जयजय त्रिलोकविजया ! रावणेश्वरा ! जयीभव ! दिग्विजयीभव ! ॥ २९ ॥

वचनमु— अनि वंदिबृंदंबु लुभयपार्श्वंबुल जयजय ध्वनुलतो बिरुदु गद्यपद्यंबुलु वक्काणिंप मुक्तातपत्रंबुल नडुम महिळा-मंडलार्पित चामरपवनकंपित कुंतलुंडगुचु वीररसंबु पुरुषाकारंबु दाल्चिन लील नेतॆर मुज्जगंबुलु गडगड वडकॆ, गुलाचलंबु लॊड्डगिल्लॆ, जंद्रार्क मंडलंबुलु तडबडॆ, नक्षत्रंबुलु डुल्लॆ, नट्टि समयंबुन गरिबृंहितंबुलु, नश्वहेषा-रवंबुलुनु, दनुजभटाट्टहासंबुलुनु, सुरत्रास जनकंबुलुगा

करते हुए, दोनों पार्श्वों में दनुज वर्ग की सेवाएँ लेते हुए बड़े संरभ के साथ निकल पड़ा मानो वीर-रव (नाद) मूर्तिमान हो गया हो ।। २६ ।।

कालाग्नि, काल भैरव, कालान्तक कालगण्ड, कालाहि, कालभयंकर प्रलयकाल के सूरज के समान पंक्तिकण्ठ (रावण) निकल पड़ा ।। २७ ।।

इस प्रकार अति उत्साह के साथ रणरंग को निकल पड़ते समय, ।। २८ ।।

### वन्दीजन के द्वारा रावण की स्तुति

जय जय कैकसी के गर्भसमुद्र के संपूर्ण-सुधाकर ! जय जय । मय-तनूजा (मन्दोदरी) के मनोहर ! जय जय ! राक्षस-कुल-सार्वभौम ! जय जय सागर से आवृत्त लंका के अधीश्वर ! जय जय पाकशासन (इन्द्र) के भद्र-श्री के हरण में चतुर ! जय जय ! वैश्वानर के पुटभेद (नगर) को निर्धूम (अग्निरहित) करने वाले ! जय जय ! समवर्ति (यमराज) की सम्पदा का विच्छेद करनेवाले ! जय जय ! दनुज वल्लभ के आनन्ददाता ! जय जय ! अब्धीश्वर (सागर) के जल को शोषित करनेवाले बड़वानल ! जय जय ! पवमान संहारक ! जय जय ! यक्षनायक (कुबेर) के प्रबल गर्व का हरण करनेवाले ! जय जय ! ईश्वर के ऐश्वर्य का हरण करने का उद्यम करनेवाले ! जय जय ! नवग्रहों पर आग्रह (क्रोध) एवं अनुग्रह करनेवाले ! जय जय ! दशग्रीवों से अलंकृत ! जय जय ! कैलास पर्वत को उठाकर कंदुकक्रीड़ा करने में विनोदी ! जय जय ! भवानी तथा ईश्वर के श्रीपद-कमलों को (अपने) सिर रूपी कंजातों (कमलों) से पूजा करने में समर्थ ! जय जय ! पुष्पकारूढ़ हो, सकल दिगन्तों में हल-चल मचानेवाले ! जय जय ! ब्रह्म वंश के प्रदीपक ! जय जय ! त्रिलोक विजयी ! हे रावणेश्वर ! जयी भव ! दिग्विजयीभव ! ।। २९ ।।

इस प्रकार वन्दीवृन्द के उभय पार्श्वों में जय-जय ध्वनियों के साथ बिरुदावलियों को गद्य और पद्य कहते रहने पर, मोतियों से अलंकृत छत्रों के मध्य, महिला-मंडली के अर्पित (डुलाये) चामरों के पवन से कम्पित कुन्तल (केश) वाले होते हुए, मानों वीररस ही पुरुषाकार धारणकर आया हो, ऐसा रावण के आने पर तीनों जगत भयकम्पित हुए । कुलाचल लुढ़क गये । चन्द्र-सूर्य मण्डल लड़खड़ा गये । नक्षत्र टूट पड़े । उस समय में गजगण के चिंघाड़, घोड़ों की हिनहिनाहट, दनुजभटों के अट्टहास,

बटहनिस्साण भेरी शंख काहल भांकार रवंबुलुनु प्रति-
ध्वनुल नीन नंत रावणुपै मेघंबुलु रक्तधारलु वर्षिचें,
बिरुदध्वजंबुलु विरिगिपडियें, दुरंगंबुलु वालंबुलनुंडि
निप्पुलुरलें, दिक्कुलधूमंबु निबिडमै पर्वे, नट रामुनिचे
रावणुंडु तेंगुट यवश्यंबनि नभंभुनु म्रोसें, नट्टि
समयंबुन ।। ३० ।।

कन्द— भूनायकुडतिवेगम
दानवसेनलकु नेंदुरु दार्कोंनि पोरन्
वानरसेनल बंपेंनु
भानुजमुख्याधिपतुल बौरुष मडरन् ।। ३१ ।।

मत्ते०— तरुशैलंबुलतोडनार्चुचु भुजादर्पंबु लुप्पोंग वा-
नर वर्गंबु लेंदिर्चि वच्चुनेंड नानाकारु लादक्षिणो-
त्तरवार्धुल् प्रकटिंचि डायुगति नुद्यत्प्रौढि दार्कोंचु सं-
गरमुंजेयग जोंच्चिरंत सुरलाकाशंबुनं जूडगन् ।। ३२ ।।

सी०- करुल नेंक्किकचि भीकरलील द्रोंक्किकचि वाजुलदोलि तीव्रमुग नेय
रथमुल बरपि शिरंबुल जक्काडि चेंलगि पदातुल जेरि पोंडुव
बंतंबु चेकूर बलवगोत्तमुल गेरि तरुवुलु बाषाणततुलु बरपि
शैलंबु लर्डरिंचि संहारमुलु सेय गलगक दैत्युलु गपुलु गलसि,

तेटगीति— पोरुनप्पुडु वानरवीरु लसुर-
वरुलमीदनु बाषाणवर्षमधिक
लील गुरियिंप दनुजु लावेळ विरिगि
तललु वीडंग बरचिरि तत्तरमुन ।। ३३ ।।

सीसमु—
मेंडैन रथमुल मीदिकि गुप्पिचि, विक्रम प्रौढिमै विरुग द्रोंक्कि,
करुलकोंम्मुलु पट्टि बिरबिर वडि द्रिप्पि, जगतीस्थलंबुन जदिय गोंट्टि,
तोंडरि सैंधवकोटि तडकाळ्ळु विर्दळिंचि, पट्टि पेंन् जेंक्कलु वारगोंट्टि,
कालबलंबुलपैकि गदिसि शस्त्रंबुल, तोड गूडनें चुट्टि तुनिय गोंट्टि,

तेटगीति— छत्रमुलु गूल्चि चामरसमिति विरिचि,
कोंरलि यार्चुचु बिरुदु टेंक्कमुलु चिंचि
वाद्य संघंबुलवलील वसुधगूल्चि,
कपुलु दोलिरि दानवगणमु नेंल्ल ।। ३४ ।।

देवताओं को पीड़ा देनेवाले रूप में पटह, निस्साण, भेरी, शंख, काहल, भांकाररवों के प्रतिध्वनित होने पर, रावण पर मेघों ने रक्त की धाराएँ बरसायीं। श्रेष्ठ ध्वज गिर पड़े। घोड़ों की पूँछों से आग निकल पड़ी। दिशाओं में धुआँ फैलकर घना हो फैल गया। "तब राम के हाथों रावण का वध होना तथ्य है" कहते हुए आकाश गूंज उठा। तब ॥ ३० ॥

भूनायक (राम) ने अतिवेग से दानव सेनाओं से टकराकर युद्ध करने के लिए वानर सेनाओं को साथ देकर सुग्रीव आदि मुख्य अधिपतियों को पौरुष के साथ भेजा ॥ ३१ ॥

तरु (और) शैलों के साथ, सिंहनाद करते हुए, भुजाओं के दर्प से फूल उठने पर, वानर वर्ग राक्षसों का सामना करने आए तो ऐसा लगा मानों उत्तर तथा दक्षिण सागर प्रकट रूप से टकरा रहे हों। इस प्रकार अत्यधिक प्रौढ़ता से टकराकर युद्ध करने के लिए आ गए, तो आकाश से सुरों ने (उन्हें चकित हो) देखा ॥ ३२ ॥

(राक्षसों के) हाथियों को चढ़ाकर भयंकर रीति से रौंदवाने पर, घोड़ों को चलाकर तीव्रगति से कुचलवाने पर, रथों को दौड़ाकर सिर कटवाने पर, विजृंभित हो पदातियों के लगकर भाले (आदि के) चुभोने पर तब प्रण के साथ वानर-उत्तमों ने उत्साह से वृक्षों, पत्थरों के समूहों को बरसाने पर (और) पहाड़ों को फेंककर संहार करने पर, दैत्य और वानर विचलित न होकर, एक दूसरे से टकराकर युद्ध करते रहे। उस समय असुरवरों पर वानरवीरों ने तीव्रगति से पाषाणों को बरसाया। तो दनुजवर्ग टूटकर बाल बिखेरकर भयभीत हो, आतुर हो भाग खड़ा हुआ ॥ ३३ ॥

अनेक रथों पर लाँघकर, विक्रम की प्रौढ़ता से उनको कुचलकर, तोड़कर, हाथियों के दाँतों को पकड़कर, शीघ्र घुमा-घुमाकर, धरती पर पटककर, समाप्तकर, शीघ्र घोड़ों की टांगों को पकड़कर, टुकड़े-टुकड़ेकर, पदातिदल पर आक्रमण कर शस्त्रों के साथ ही उन्हें लपेटकर चूर-चूरकर छत्रों को गिराकर, चामर समूहों को तोड़कर, उत्साह से सिंहनाद करते हुए, श्रेष्ठ झण्डों को फाड़कर, वाद्य-संघों को सरलता से वसुधा पर गिराकर कपियों ने समस्त दानवगण को भगा दिया ॥ ३४ ॥

हनुमंतुनिचे खड्गरोमुनि खंडनमु

आट०— अंत बंक्तिवदनु नरदंबु नैंदुरुगा
नड्चुवायुपुत्रुनकुनु खड्ग-
रोमु डनियॆ नतनि रूपिंचि नातोड
रणमु सेय वेग रम्मटंचु ।। ३५ ।।

चम्प०- बिलिचिन रोषमॆत्ति कडु भीकरवृत्तिन् खड्गरोमुतो
दलपड वानि रोममुलु दाकि शरीरमु नॊच्चि यंतलो-
पल नॊकपर्वतंबु गॊनि पावनि दैत्युनिमीद नेय नि-
श्चलतनु खड्गरोमुडुनु जक्कुग जेसिन दत्क्षणंबुनन् ।। ३६ ।।

चम्प०- मरियॊक पर्वतंबु हनुमानुडु गैकॊनि वच्चि क्रम्मरन्
मॆरवडि द्रिप्पि तद्रथमु मीदनु वैचिन वज्रधारचे
बरियलु वारि धात्रि बडुपर्वतमो यन देरितोड नि-
र्भरमुग खड्गरोमुडु सपाटग गूलॆ दुरंबुलोपलन् ।। ३७ ।।

सर्परोमादुल संहारमु

आट०— रोजि कलन खड्गरोमुंडु गूलुट
सर्परोमु डॆरिगि साहसमुन
वालिसुतुनि दाक वानि रोमंबुल
विषमु सोकि नॊच्चि वेग दॆलिसि ।। ३८ ।।

कन्द— आलोन सर्परोमुनि
दूलिचुचु वानि मुक्कुदूलमु पगुलन्
वालितनूजुडु दन्निन
जालंगा नॊगिलि तॆलिसि साहसमॊप्पन् ।। ३९ ।।

उत्प०—वालितनूजुनॆन्नुदुरु व्रक्कलु वारग सर्परोमुडा-
भीलत नाचि चेकॊलदि बेकॊनि कॊट्टिन रक्तधारलन्
देलुचु नंगदंडततनि डीकॊनि पूनि शिरंबु चॆक्कलै
व्रीलि पडंग गॊट्टॆ बृथिवीस्थलि गूलॆनु सर्परोमुडुन् ।। ४० ।।

कन्द— आलोन सर्परोमुडु
गूलुट कनुगॊनुचु मिगुल गोपंबुन दा-
नालो वृश्चिकरोमुडु
नीलुनिपै रथमु दोलॆ निर्भयवृत्तिन् ।। ४१ ।।

## हनुमान द्वारा खड्ग रोम का वध

तब पंक्तिवदन (रावण) के रथ की सीध में चलनेवाले वायुपुत्र से खड्गरोम ने स्पष्टता से कहा— 'मुझसे युद्ध करने शीघ्र आ जाओ।' ॥ ३५ ॥

बुलाने पर रोष के साथ, अति भयंकर रूप से, खड्गरोम से टकराने पर, उसके रोमों के लगने से शरीर को पीड़ा हुई। इसी बीच में (तब) एक पहाड़ को लेकर पावनी ने दैत्य पर डाल दिया तब खड्गरोम ने निश्चल गति से उसी क्षण उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया ॥ ३६ ॥

और एक पहाड़ को लाकर हनुमान ने पुनः अतिवेग से घुमा-घुमाकर उसके रथ पर फेंका। रथ के साथ खड्गरोम टूटकर चपटा हो धरती पर गिर मानों वज्र की धारा से धरा पर विदीर्ण होकर गिरनेवाला पर्वत हो ॥ ३७ ॥

## सर्परोमादि का संहार

युद्धभूमि में खड्गरोम के हाँफकर गिरते जानकर सर्परोम ने साहस के साथ वालिसुत (अंगद) से टकराया। उसके रोमों के विष के लगने से पीड़ित हो शीघ्र उठकर, ॥ ३८ ॥

वालिसुत ने इस बीच में सर्परोम का नाकरूपी स्तम्भ टूटे इस प्रकार एक लात मारी तो वह बहुत पीड़ित हुआ, फिर साहस के साथ ॥ ३९ ॥

वालिसुत का माथा फूटे इस प्रकार सर्परोम ने भयंकरता से सिंहनाद करते हुए पूरी शक्ति लगाकर मारा। (मारने पर) रक्त धाराओं में ऊभचूभ होकर अंगद ने उससे टकराकर ऐसा मारा कि सिर चकनाचूर हो गिर पड़े। तब सर्परोम पृथ्वीस्थल पर गिर पड़ा ॥ ४० ॥

इतने में सर्परोम के धराशायी होते देखकर अतिक्रोध से वृश्चिकरोम ने निर्भय वृत्ति से नील पर रथ दौड़ाया ॥ ४१ ॥

उत्प०—बोरन नीलुडंत नोक भूजमु गैकोनि वानितेरिपै
शूरत नेसि याक्षणमु चूर्णमुगा नोनरिप नेलकुन्
धीरत दाटि भूरुहमु द्रेंचगनुंगोनि नीलुडोक्क मं-
दार महीजमुन् वयिचे धारुणि वृश्चिकरोमुडील्गेन् ।। ४२ ।।

सी०-वृश्चिकरोमुडावेळ द्रुंगुटजेसि वडि रोषमुन नग्निवर्णु डडरि
त्रेताग्नुलोक्कडै तेरलि मंडिन लील दनमेनि मंटलु दरिकोनंग
रावणुनेदुर बराक्रमस्थिति बेंचि रामचंद्रुनि मीद रथमुदोलि
प्रल्लदंबुन बेक्कुभाषलु नुडुवुचु सायकनिचयंबु लेयुनेडनु

तेटगीति—वानि शौर्यंबु देंपुनु वानिबलमु
जूचि भूपालुडप्पुडु चोद्यपडुचु
धनुवुनंदुनु वारुणास्त्रंबु दोडिगि
यग्निवर्णुनितल द्रुंचे नाक्षणंब ।। ४३ ।।

तेटगीति—अग्निवर्णुंड तेगिपोवुट सुरवरुडु
कन्नु लारंग गनुगोनि कलुषवृत्ति
रामचंद्रुनि डायंग रथमु वरपि
पलिके नुत्कटगर्वप्रभावुडगुचु ।। ४४ ।।

कन्द— जारकुमा बीरमु चेंडि
पारकुमा रिपुलु नव्व भयपीड वनमुन्
दूरकुमा पेकोंचुनु
जीरकुमा कपुल दोडु चेकोनि पोरन् ।। ४५ ।।

मत्ते०—अनि विल्लेक्किडि दैत्यनायकुडु रोषायत्त चित्तम्मुनन्
घनमौर्वीनिनदंबु भीकरमुगा गाविंचि पेल्लार्चियुय-
ज्जननाथाग्रणिमीद नुग्रशरमुल् संधिंचि बिट्टैयगा
विनुवीथिन् सुरसंघमुल्गोलुवगा वीक्षिंचे देवेंद्रुडुनु ।। ४६ ।।

वचनमु— इट्लु कनुंगोनि, ।। ४७ ।।

श्रीरामचंद्रुन किंद्रुडु रथमुनु गानुकग बंपुट

कन्द— रथमोक्कि रावणुंडुनु
बृथिवीस्थलि नुंडि राम पृथ्वीपतियुन्
ब्रथनमु सेयुट तगदनि
व्यथ बोंदुचु नात्मलोन वासवुडंतन् ।। ४८ ।।

अधिक नाद करते हुए नील ने एक वृक्ष को लेकर शूरता से उसके रथ पर फेंककर, उसी क्षण उसे चूर्णकर दिया। ज़मीन पर धैर्य से कूदकर एक भूरुह (वृक्ष) को उखाड़ा। (उसे) देख, नील ने एक मन्दरा-वृक्ष को फेंका, तो वृश्चिकरोम धरती पर गिरकर मर गया ॥ ४२ ॥

उस समय वृश्चिकरोम के मरने पर, अतिरोष से अग्निवर्ण अति-शयता से, मानो त्रेताग्नि एक साथ प्रज्वलित हों, इस प्रकार अपने शरीर से ज्वालाओं के व्याप्त होकर बलने पर, रावण के सम्मुख पराक्रम दिखाते हुए, रामचन्द्र पर रथ दौड़ाकर, वाचालता से कई दुर्भाषाएँ (गालियाँ) बकते हुए बाणसमूह छोड़ते समय, उसके शौर्य, साहस, उसके बल को देख, भूपाल ने (रामचन्द्र) चकित होते हुए, धनुष पर वारुणास्त्र चढ़ाकर, उसी क्षण अग्निवर्ण का मस्तक काट दिया ॥ ४३ ॥

अग्निवर्ण के कटते असुरवर ने आँख भर देखकर, कलुषवृत्ति से श्रीरामचन्द्र के निकट रथ को दौड़ाकर अधिक गर्व के प्रभाव से कहा— ॥ ४४ ॥

"वीरता को छोड़कर खिसक मत जाओ ! शत्रुओं के सामने हँसी का पात्र होकर भयभीत हो दौड़ो मत। वन में छिपो मत। साथ देकर लड़ने के लिए कपियों को मत बुलाओ" ॥ ४५ ॥

(इस प्रकार) कहकर धनुष चढ़ाकर दैत्यनायक (रावण) ने मन में रोष भरकर, अति भयंकर रूप से ज्या-निनाद कर, अतिशयता से सिंहनादकर, उस जननाथाग्रणी (राज-श्रेष्ठ राम) पर उग्रशरों का संधानकर उग्रता से चलाया। इसे आकाश-वीथि में सुर-समूह की सेवाएँ लेते हुए (सुर समूह के साथ) देवेन्द्र ने देखा ॥ ४६ ॥

इस प्रकार देखकर, ॥ ४७ ॥

### श्रीरामचन्द्र के लिए भेंट स्वरूप इन्द्र का रथ भेजना

रथ पर आरूढ़ होकर रावण का और पृथ्वी स्थल पर रहकर पृथ्वी-पति राम का युद्ध करना समुचित नहीं है, ऐसा मन में व्यथित होकर वासव (इन्द्र) ने सोचा। तब— ॥ ४८ ॥

कन्द— मातलि चेतनु गवचमु
चातुर्यमु गलुगु रथमु चापमु शरमुन्
भूतलनायकुनकु बुरु
हूतुडु पुत्तेंचे गडु महोन्नत महिमन् ।। ४९ ।।

वचनमु— इट्लु पुत्तेंचिन, ।। ५० ।।

चम्प०- धरणिकि वच्चि मातलि मुदंबुन रामुनि जूचि मीकुगा
सुरपति पंपिनाडधिक शोभन-कृत्यमुलै वेलुंगु नी
शरमुलु विल्लु वज्रकवचंबुनु देरुनु वीनिचेत सं-
गरंमुन दैत्युनि दुनिमि कैकोनु राघव ! श्रीजयंबुलन् ।। ५१ ।।

वचनमु— अनि चेप्पिन मातलि प्रियवचनंबुलकु संतसिंचि विभीषणानुमतंबुन रामभूपालुंडु वज्रकवचंबु दोडिगि शरशरासनंबुलु गैकोनि यिंद्रस्यंदनंबुनकु वलगोनि वंदनं-बाचरिंचि बालादित्युंडु पूर्वपर्वतंबेक्कु चंदंबुन रथंबेक्कुनंत जयजय ध्वनुलतो सुग्रीवांगद हनुमदादुलैन वानरवीरुलु म्रोक्किरप्पुडंतरिक्षंबुन देवसंघंबुलु संग्रामरंगंबु जूड वेड्क पडिवच्चि विमानंबुलतो ग्रिक्किरिसि चूचुचुंडिरा-समयंबुन, ।। ५२ ।।

राम रावणुल निरुपम महासमरमु

कन्द— गिरि गिरि, नभमु नभंबुनु
धर धरयुनु, जलधि जलधि दार्कोनुरीतिन्
सुररिपुडु नसुररिपुडुनु
दुरमुनु नेदिरिंचि रधिकदोर्बलयुक्तिन् ।। ५३ ।।

वचनमु— इट्लु मार्कोनुचु, ।। ५४ ।।

शार्दू०—वीरालापमुलाडुचुं गदिसि दोर्वीर्यंबुतोडन् धनु-
र्ज्यारावंबुलु मिन्नुमुट्ट नतितीव्रंबैन शब्दंबुलन्
वारासुल् कलगंग नार्चि निज गर्व स्फूर्ति नुप्पोंगुचुन्
गूरास्त्रंबुल नेसिरोंडोरुलपे गोदंडपांडित्युलै ।। ५५ ।।

कन्द— दनुजेशु डेयुशरमुनु
मनुजेशुडु तप्प द्रुंचु मार्कोनि कडिसिन्
मनुजेशु डेयुशरमुल
दनुजेशुडु दप्प द्रुंचु दतभुजशक्तिन् ।। ५६ ।।

मातलि के हाथ कवच (तथा) चातुर्य-संयुक्त (अतिवेग से चलने वाला) रथ (तथा) धनुष, बाणों को भूतलनायक के लिए पुरुहूत (इन्द्र) ने अधिक महोन्नत महिमा से भेजा ।। ४९ ।।

इस प्रकार भेजने पर— ।। ५० ।।

धरणी पर आकर, मातलि ने मुदित हो राम के दर्शन कर कहा "आपके लिए सुरपति ने अधिक सुशोभित कार्य के योग्य यह शर, धनुष, वज्रकवच, और रथ भेजा । हे राघव ! इनसे संग्राम में दैत्य का वधकर श्री (और) जय को प्राप्त करो" ।। ५१ ।।

इस प्रकार कहने पर मातलि के प्रियवचनों से प्रसन्न होकर, विभीषण की इच्छा से राम भूपाल ने वज्र कवच को पहनकर, धनुषबाण को लेकर, इन्द्र के रथ की प्रदक्षिणाकर, वन्दनाकर, बालादित्य (बालसूर्य) के पूर्व-पर्वत पर आरूढ़ हो आने की तरह, रथ पर चढ़ते ही जय-जय ध्वनियों से सुग्रीव, अंगद, हनुमान आदि वानरवीरों ने प्रणाम किया । तब अन्तरिक्ष में देवता समूह संग्राम क्षेत्र को देखने के उत्साह से विमानों में आकर ठेलम-ठेली करते रहे । उस समय में— ।। ५२ ।।

### राम (और) रावण का निरुपम महासमर

पहाड़ से पहाड़, मेघ से मेघ, धरती से धरती, सागर से सागर टकराने की रीति से सुररिपु (रावण) और असुररिपु (राम) दोनों अधिक बल और युक्ति से एक दूसरे का सामना कर युद्ध करते रहे ।। ५३ ।।

इस प्रकार सामना करते हुए ।। ५४ ।।

वीरोक्तियाँ कहते हुए, नियराकर, बाहु वीर्य से धनुषटंकारों से आकाश के गूंजने पर, अति तीव्र शब्द करते हुए, सागर व्याकुल हो, ऐसा सिंहनाद कर अपने-अपने गर्व-स्फूर्ति से उमड़ते हुए, दोनों ने कोदण्ड-विद्या में पंडित हो, एक दूसरे पर क्रूर अस्त्रों को फेंका ।। ५५ ।।

दनुजेश के बाणों को मनुजेश अवश्य ही साहस से सामना कर तोड़ता है । मनुजेश के फेंके गये बाणों को दनुजेश अवश्य ही आतत भुजशक्ति से तोड़ता है ।। ५६ ।।

कन्द— कंटुन वेसिन शरमुलु
विटन् दप्पिचुकोनुचु वेस बाणमुलन्
गेंटिपुचु दमगात्रमु
लंटक युंडग नेटुलाडिरि कडिमिन् ।। ५७ ।।

कन्द— मोदल नोकबाण मावल
बदुलुनु बदिपदुलु वेयि बदिवेलुनु ने-
बदिवेलु लक्ष कोटियु
जेंदरक विलुकांड्र मीद शीघ्रम पर्वेन् ।। ५८ ।।

कन्द— तोंडिगिन बाणमु विटनु
दोंडिगिन यट्लुंडु मिगुल दोड्तोनवलन्
वेंडलेडु शरमुलु लेक्ककु
गडगुरुतन राक चित्रगतुलन् बर्वेन् ।। ५९ ।।

वचनमु— अट्टि समयंबुन, ।। ६० ।।

चम्प०- अभव मुरांतकादुलु महात्मुलु विंटिकि वारिकन्ननुन्
त्रिभुवनमंदु वीरें गणुतिपग नेक्कुडटंचु मेच्चुचुन्
नभमुन नुंडि प्रस्तुति घनंबुग जेतुरु देवकोटुल-
ट्लुभयफलंबुनं बोगडुचुंदुरु रामुनि रावणासुरुन् ।। ६१ ।।

चम्प०- धनुवुलस्रोत मेघनिनदंबुलुगा शरदीप्तिजालमुल्
घनवरचंचलावळुलुगा मणिमौक्तिक दीप्ति धात्रि मी-
दनु वडगंड्लुगा क्षतजधारलु संततवर्ष धारगा
ननयमु जेप्प नोप्पें विपुलाहवमप्पुडु वानकालमै ।। ६२ ।।

तेटगीति— पंक्तिकंठुंडु मिगुल गोपंबु गदुर
देवगंधर्वशरमु संधिंचि तिविचि
रामभूपालु मीद विक्रममु मेरसि
वेसि वडि नार्चें दिग्दंति-विसरमडल ।। ६३ ।।

कन्द— दानिकि ब्रतिशरमप्पुडु
मानवनाथुंडु दोंडिगि मानुषमडरन्
बूनिक नेसिन दानिं
बोनीयक त्रुंचि वैचें भुवनमु ललरन् ।। ६४ ।।

शत्रुभाव से फेंके गए बाणों को धनुष से काटते हुए, और झट बाणों को फेंकते हुए, अपने-अपने शरीरों को बचाते हुए, दोनों ने साहस से युद्ध किया ।। ५७ ।।

पहले एक बाण, उसके बाद दस, दसदस (सौ), हजार, दसहजार, पचास हजार, लाख, करोड़ बाण धनुर्धरों पर एकाग्रता से बरसने लगे ।। ५८ ।।

लगता है, धनुष पर चढ़ाया बाण वैसा ही रहता है। उधर अतिशीघ्रता से निकलनेवाले बाणों की संख्या को पहचान नहीं सकते। इस तरह चित्र गतियों से (बाण) बरसने लगे ।। ५९ ।।

ऐसे समय में ।। ६० ।।

'ईश्वर (और) मुरान्तक आदि महात्मा धनुर्विद्या में महान् हैं। किन्तु त्रिभुवन में गणना करने पर उनसे बढ़कर ये ही हैं,' ऐसा कहते आकाश में रहते हुए, देवतागण अधिक प्रशंसा करते हैं। (और) राम और रावण दोनों की चर्चा करते हैं ।। ६१ ।।

धनुषों की टंकार के मेघों की गर्जना के रूप में, शरों के कांतिपुंज के घनतर चंचलाओं के समूह के रूप में, मणि तथा मोतियों की दीप्ति के धरापर बरसनेवाले ओलों के रूप में, क्षतज (घावों की) धाराओं के निरन्तर बरसनेवाली वर्षा की धाराओं के समान (प्रतीत)होने पर, आहव (युद्ध) तब वर्षाकाल के समान प्रतीत हुआ ।। ६२ ।।

पंक्तिकण्ठ(रावण) ने अतिक्रोध से देवगन्धर्व शर का संधानकर खींचकर विक्रम के प्रकाशित होने पर, राम भूपाल पर छोड़कर ऐसा भयंकर सिंहनाद किया जिससे दिग्दन्तियों (दिग्गजों) का समूह काँप उठा ।। ६३ ।।

तब मानवनाथ के उसके प्रतिशर का संधानकर, पौरुष की अतिशयता से सप्रयत्न (उस बाणको) छोड़ देने पर, (उसने) उसे (रावण के वाण को) जाने न देकर, काट दिया जिससे भुवन प्रसन्न हुए ।। ६४ ।।

कन्द— त्रुंचिन गनुगोंनि दनुजुड्डु
मिचिन कोपमुन रामुमीदनु वडि सं-
धिंचि स्फुरद्विषबाणमु
वंचिपक येय दानिवलनन् जालन् ।। ६५ ।।

आट०— नागशरमु लोंदवि नानामुखंबुल
वच्चुनपुड्डु मनुजवल्लभुंड्डु
गरुड बाणमेसि खंडिचें नन्निटि
मिद सुरलु सूचि मेंच्चिच पोंगड ।। ६६ ।।

चम्प०- अदि वृथवोयिनन् दनुजुडाग्रहमूनि करत्रिशूलमु-
य्यदनुन द्रिप्पि वैव विपुलार्चुल बेर्चुचुवच्चु दानिपै
वदलक मुंदुगा द्रिदशवल्लभुडिच्चिन शक्ति नेसिनन्
बोंदलुचु बारि त्रुंचें मणिभूषणजालमुना त्रिशूलमुन् ।। ६७ ।।

वचनमु— अट्लु शूलंबुनु दूलिपोयिन, ।। ६८ ।।

कन्द— सूतुनि रथमुनु वाजुल
गेतुवु दूलंग नेसि किनुक मेंयि जे-
सेतनु नोंप्पिंचिन नृपु-
डातरि दैतेयविभुनि नद्भुतमडरन् ।। ६९ ।।

कन्द— सूटि गोंनि यसुरतलल कि-
रीटमु लवलील डुल्लि रिव्वुन नोंसलुन्
बीटलु वारु शतांगमु
घोटकमुल गुंडेलविसि कूलगनेसेंन् ।। ७० ।।

उत्प०- आयेंड दैत्यनायकुडहंकृति रामुनिमेन नाटगा
वेयुशरंबु लायमुल वेगमें गाडिन रक्तपूरमुल्
कायमु दोंप्पदोग वडिग्रम्मेंड्डु नप्पुड्डु गूड नोंप्पें ब-
ह्वायतलोचनुंड्डु चरमाद्रि तटिं दगु भानुडोयनन् ।। ७१ ।।

आट०— अंत रामचंद्रुडत्यंतकुपितुडै
बाणवृष्टि गुरिय बंक्तिमुखुड्डु
कालुव्रेलु चेंय्यि कदलिप नोपक
मेंदललेक रथमु मीद नोंरिगें ।। ७२ ।।

वचनमु— रावणुंड्डु सोंम्मसिल्लिपोवुटेंरिगि कालकेतुड्डु तेरु दूरंबुगा
गोंनिपोयिन गोंत प्रोंद्दुनकु दनुजेंद्रुड्डु मूर्छ देरि "योरी !

काटने पर देखकर दनुज ने असीम बने क्रोध से राम पर शीघ्र स्फुरत् विषबाण का सन्धानकर, स्पष्ट रूप से छोड़ने पर उससे अनेकानेक ।। ६५ ।।

नागशर उत्पन्न होकर, नाना दिशाओं में आने पर, (तब) मनुज-वल्लभ ने गरुड़बाण चलाकर, सबका खण्डन किया, जिसे देखकर आकाश में सुरों ने प्रशंसा की ।। ६६ ।।

उसके बेकार जाने पर दनुज ने अति क्रोध धारणकर, उस अवसर पर, त्रिशूल को हाथ से घुमा-घुमाकर फेंका। वह विपुल अर्चियों को व्याप्त करते आने लगा। उसे न छोड़कर पूर्व में त्रिदश-वल्लभ (इन्द्र) की दी हुई शक्ति को फेंकने पर, उसने अतिवेग से जाकर मणिभूषण समूह सहित उस त्रिशूल को काट दिया ।। ६७ ।।

इस प्रकार शूल के गिर जाने पर, ।। ६८ ।।

सूत (सारथि) के रथ, घोड़े और झण्डों को गिराकर क्रोध के कारण दुःख पहुँचाने पर, नृप (राम) ने दैतेय विभु (रावण) को अद्भुत (रीति की) अतिशयता से ।। ६९ ।।

निशान लगाकर असुर के शिरों के मुकुट सरल रीति से लुढ़क गिर जायें, झट माथा फट जाये, शतांग (रथ) के घोड़ों के हृदय विचलित होकर गिर जायें, इस प्रकार (बाण से) मारा ।। ७० ।।

उस अवसर पर दैत्यनायक ने अहंकार से राम के शरीर में चुभ जायें ऐसा शर छोड़ने पर, रक्त बहने लगा। रक्तपूर से शरीर के ऊभचूभ (राम) होने पर, उनसे घिरा हुआ वह कमल के समान विशाल आँखोंवाला (राम) ऐसा भासित हुआ मानों पश्चिमाद्रि के तट पर स्थित सूर्य हो ।। ७१ ।।

तब राम के अत्यन्त कुपित हो बाण-वृष्टि करने पर, पंक्तिमुख (रावण) हाथ-पैर-अँगुली (तक) हिला न सक, हिल न सक, रथ पर झुक (गिर) गया ।। ७२ ।।

रावण के मूर्च्छित हो जाते देखकर, कालकेतु रथ को दूर ले गया। कुछ समय के बाद दनुजेन्द्र ने (रावण) होश में आकर (कहा)— 'अरे

पगवारलु नव्व दगदनक रथंबिट्लु तेदगुने"? यनि कोपिंचिन गालकेतुंडुन युद्धमध्यंबुन देवरकु संकटंबैन वेंडलगोंनिपोवुट योटमिगादनि धर्मविदुलु सेप्पुदुरु गावुन नेनिट्लु देच्चितिननि विन्नविंचिन सूतुनि वाक्यंबुलकु मेंच्चि पसदनंबु लिच्चि मनरथंबु रामुनि पयि बरपुमनिन नट्लु काविंचिनन् गनुंगोंनि, ।। ७३ ।।

**कन्द—** आतनि रथमुन केंदुरुग
मातलि ! मनरथमु बऱुपुमा यन नतडुन्
वे तीव्रगतिं बऱपिन
भूतलपति बलिकें दनुजपुंगवुतोडन् ।। ७४ ।।

राम रावणुल वीरालापमुलु

**उत्प०—** भूरिभुजप्रतापमुन बोंगुचु निर्जरकोटि मटिकिन
बोर जयिंचितंचु बलुपोकलु पोदुवु नीवु, भीतिमै
बारक निल्चि नायेंड ब्रतापमु सूपुमु, चूपवेनि ना
वारिज गर्भुंडड्डुपड वच्चिन जंपुदु निन्नु रावणा ! ।। ७५ ।।

**उत्प०—** आलमुलोन वानरुल नालमु सेसिनयट्लु गादु ना-
पालिशरंबु नी नुदुटि व्रालु हरिंपग बालुपड्डु दी-
वेळ वृथापहास्यमुलु वेयि विधंबुल मानलेक ता-
गालुडु कन्नुगीटें निदें कालमु डग्गरॆ नीकु रावणा! ।। ७६ ।।

**चम्प०-** हरिगिरि वह्निगिह्नि ब्रळयांतकु गिंतकु दैत्युगीत्यु वा-
र्वुरुगिरु गाड्पु गीड्पु धनवल्लभु गिल्लभु रुद्रुगिद्रु सं-
गरमुन नोर्चि नट्टि दशकंधर ! नीकु जयिंप वच्चुने ?
सुरनग धीरु नुग्ररणशूरु बयोधिगभीरु राघवुन् ।। ७७ ।।

**कन्द—** मति दलप सुखरतिं बति-
व्रतलनु मुनिवरुल बट्टि व्रतमुलु गर्वो-
न्नति जेऱचिनट्टिदुरिति-
स्थिति निप्पुडु नीवु नाकु जिक्किति विचटन् ।। ७८ ।।

**वचनमु—** अनि गर्वालापंबुलाडुचुन्न युर्वीशुनकु बूर्वगीर्वाणाधीश्व-
रुंडगु रावणासुरुंडिट्लनियें : ।। ७९ ।।

शत्रु-समूह हँसे, ऐसा इस प्रकार रथ ले आना उचित है क्या ?' कहकर क्रोधित होने पर कालकेतु ने (कहा)— 'युद्ध के बीच में श्रीमान के संकट के कारण रथ का बाहर ले जाना धर्मविदों के अनुसार अपजय नहीं है। इसलिए मैं ऐसा लाया हूँ।' ऐसा निवेदन करने पर, सूत के वाक्यों से आनन्दित होकर, पुरस्कृत कर, 'रथ को राम पर दौड़ाओ' कहने पर, उसने वैसा ही किया। (उसे) देखकर, ॥ ७३ ॥

हे मातलि ! 'उसके रथ के सामने अपने रथ को चलाओ' कहने पर उसने तीव्रगति से (वैसा ही) चलाया। भूतलपति (राम) ने दनुजपुंगव (रावण) से कहा— ॥ ७४ ॥

### राम और रावण के वीरालाप

"अत्यधिक भुजप्रताप के कारण फूलते हुए, देवताओं को बार-बार रण में जीता है।' (ऐसा) कहते हुए तुम अनेक प्रकार से दम्भ करते हो। भयभीत होकर भाग न जाकर मेरे सम्मुख प्रताप दिखाओगे तो नीरजगर्भ (ब्रह्मा) भी यदि रोकने आ जाये तो भी हे रावण ! तुम्हारा वध कर दूंगा ॥ ७५ ॥

रावण ! युद्ध में वानरों को भयभीत करने के समान नहीं है। इस समय मेरे हाथ का शर तुम्हारे ललाट लिपि के हरण के उद्योग में लगा है। (तुम्हारे) बेकार के अपहास्यों को हज़ार रूप से सहन न कर सक, आज कालपुरुष ने आँख मारा (इशारा कर दिया) है। हे रावण ! यही तुम्हारा (अन्त) समय नियराया है ॥ ७६ ॥

हरि-गिरि[1], वह्नि (अग्निदेव)-गिह्नि[1] प्रलयान्तक-गिन्तक, दैत्य-गीत्य, वायु, कुबेर, रुद्र आदि सबको संग्राम में हरा देनेवाले हे दशकन्धर ! सुरनग (के समान) धीर, (तथा) उग्ररण में शूर (तथा) सागर समान गम्भीर राघव को क्या तुम जीत सकते हो ? (नहीं) ॥ ७७ ॥

मन में विचार करने पर सुख-रति के लिए पतिव्रताओं (तथा) मुनिवरों को पकड़कर (उनके) व्रतों को गर्व की उन्नति के साथ भंग करनेवाले दुरितस्थिति वाले (दुष्टात्मा) तुम आज यहाँ मेरे हाथों में फँस गये हो" ॥ ७८ ॥

इस प्रकार गर्वालाप करनेवाले उर्वीश (राजाराम) से पूर्व-गीर्वाणाधीश्वर (राक्षसाधीश्वर) रावणासुर ने इस प्रकार कहा ॥ ७९ ॥

---

१. ये शब्द निरर्थक हैं। दुहरे बोलने का चलन है। यथा काम-वाम, घर-बार।

कन्द— अंतटि भूरिपराक्रम-
वंतुड वौटॅरुगुदेनि वसुधेश्वर ! ना
पंत मॅरिगियु नॅरुगक
यिंत प्रगल्भमुल नाड नेटिकि नीकुन् ? ॥ ८० ॥

कन्द— नीलावुनु नालावुनु
वालायमु सुरलु सूचि वर्णिपग ने-
डालमुलोपल जूपुद
मेला गर्वोक्तुलिप्पु डिनकुल-तिलका ! ॥ ८१ ॥

मत्ते०— जननाथाग्रणि ! ना प्रतिज्ञ विनुमा शांतात्मुडै नीकुनै
वनजाप्तुंडिट[1] वच्चि कावु मुनुचुन् वैळंब नन् गोरिनन्
विनुवीथिन् सुरलॆल्ल जूचि वॆरवन् बीरंबु संधिल्लगा
निनु नीतम्मुनि जंपकुंड मरलन् नेलंककुं बोदुने ? ॥ ८२ ॥

वचनमु— अनि कोपोद्दीपित मानसुलै वीरालापंबुलाडुचु निद्दरुनु नुद्दविडि गद्दिपुचु नोल मासगॊनक मीरिन कोपंबुन शरीरंबुलु मरचि जयोल्लासंबुलुल्लसिल्ल नॊसळ्ळ बॊडमु पॆन्जॆमट मॊत्तंबुलुनु रक्त पूरंबुलुनु बॆरसि कालुवलै पारुचुंड, मॆरुंगु करकु टंपगमुलु नाटिनं जुरु कॆरुंगक तमकंबुलनु निष्ठुर बाण संघट्टनंबुलनु बृथुल रथनेमि स्वनंबुलनु, द्विसहस्र तुरंग हेषा रवंबुलनु, भटुल सिंहना-दंबुलनु गगनंबु वगुल, जगंबुलु कलंग, समुद्रंबुलुघूर्णिल्ल, धात्रि वडंक, दिग्गजंबुलु स्रॊग्गतिल्लबड, नभोभागंबुन देव गंधर्व सिद्धसाध्य किन्नर किंपुरुषादुलु सूचि वॆरंगुपड निदि पगलिदि रात्रि यनि यॆरुंगक तमकंबुन नेडहोरात्रं-बुलु पोराडि यलसि बाणप्रयोगंबु लुज्जगिंचि यॊकरि नॊकरु सूचुचुंड नय्यवसरंबुन, ॥ ८३ ॥

तेंगिनतोडने मरल मॊलचुचुन्न रावणुनि शिरमुलु

कन्द— सरसीरुहमित्रान्वयु-
डरुदरुदनि सुरलु वॊगड नसुरेश्वरुन-
क्करमुलु शिरमुलु दॆगिपड
नुरुमुष्टिनि दीसि वेग नुग्रास्त्रमुलन् ॥ ८४ ॥

---

१. वनमालड्ठमु वच्चि कावुमनुचुन् वैळंब चेपट्टिनन्

"हे वसुधेश्वर ! इतना अति पराक्रमशाली हो तो मेरी प्रतिज्ञा को जानकर भी अनजान बनकर, आज इतने गर्वालाप क्यों करते हो ?॥ ८० ॥

तुम्हारी (और) मेरी सामर्थ्यों को आज युद्ध में प्रदर्शित करेंगे, जिसे देख देवता अनिवार्यता से वर्णन करें। हे इनकुलतिलक (रामचन्द्र)! अब गर्वोक्तियाँ क्यों ? ॥ ८१ ॥

हे जननाथाग्रणी ! मेरी प्रतिज्ञा सुनो न। शान्तात्मा होकर वनजाप्त (सूर्य) भी यहाँ आकर अविलम्ब तुम्हारे रक्षार्थ मेरी प्रार्थना करे (तो भी) आकाश में स्थित सारे सुरगण देखकर भयभीत हों, ऐसी वीरता प्रकट करते हुए तुम्हारे और तुम्हारे अनुज (लक्ष्मण) का वध किये बिना लंका वापस जाऊँगा क्या ? (बिल्कुल नहीं !)" ॥ ८२ ॥

(इस प्रकार) वह कोपोद्दीपित मन से, वीरालाप करते हुए, दोनों एक दूसरे को शीघ्रता से धमका लेते हुए, युद्ध में (जीत की) आशा न रखते हुए, अत्यधिक क्रोध से शरीरों को भूलकर, जयोल्लास से उल्लसित हो, माथे पर निकलते अधिक पसीने का समूह तथा रक्त के प्रवाह के मिलकर नहरों के रूप में बहते रहने पर, चमकीले तथा तीक्ष्ण बाणों के चुभने पर उस पीड़ा को न जानते हुए, कौतुक से कठोर बाणों के संघट्टन (घर्षण), पृथुल रथों की नेमि-ध्वनियाँ, दो हज़ार घोड़ों के हेषा-स्वर, भटों के सिंहनाद (आदि) के कारण गगन के टूटने पर, जगत के व्याकुल होने पर, सागरों के विलोड़ित होने पर, धरती के कम्पित होने पर, दिग्गजों के गिर जाने पर, आकाश में देव, गन्धर्व, सिद्ध, साध्य, किन्नर, किंपुरुष आदि के देखकर चकित रह जाने पर, यह दिन है या रात (इसे) न जानकर, उत्कट इच्छा से सात दिन और सात रात संग्रामकर, थककर, बाण प्रयोगों को छोड़कर एक दूसरे को देखते रह गये। उस समय में ॥ ८३ ॥

**कटते ही फिर उगते रावण के सिर**

सुरों के 'असाधारण-असाधारण' कहते हुए प्रशंसा करते समय सरसीरुह-मित्रान्वय (सूर्यवंशी रामचन्द्र) ने असुरेश्वर के कर और सिर काटकर (नीचे) गिरें ऐसा दृढ़ मुष्टि से अतिवेग से उग्र बाण छोड़ दिये ॥ ८४ ॥

कन्द— तेंगि पडिन तललु जेतुलु
देंगिनट्ले मौल्चुचुंड दीव्रत यडरन्
जगतीशुडपुड्डु मदिलो
देंगकुंड्डुट चित्रमनुचु दीकौनि मङ्रियुन् ॥ ८५ ॥

कन्द— औंक कोल दललु जेतुलु
ब्रकटंबुग द्रुंचिनंत बाहुलु दललुन्
विकचांबुजमुल रीतिनि
सकलेशुड्डु वेंड्रगु पडग जय्यन मौलिचेंन् ॥ ८६ ॥

कन्द— तोंडिगेंडि शरमुलु धरपैं
बडियेंड्डु मस्तकमु लेरुपडकुंडग न-
प्पुड्डु राममहीतलवरु-
डेंडतेंगकुंडंग नेसें नेमनि चेंप्पन् ॥ ८७ ॥

वचनमु— अट्टिसमयंबुन, ॥ ८८ ॥

आट०— विंट दोंड्डुगु शरमु वेंडलेंड्डु शरमुनु
दिरुग मौलुचु तललु देंगिन तललु
नेंट्टिवारिकेंन नेंरुगंग राकुंड
रामुडेय दोंडगें रणमुलोन ॥ ८९ ॥

आट०— शरमु[1] दोंडिगि तिविय जक्रंबुवलेंनुंड्डु
शरमु विड्डुचुनपुड्डु चापमगुनु
जूड नोंप्पें नौर शोभितंबगु रामु
चेतिविल्लु सेंप्प जित्रमगुनु ॥ ९० ॥

उत्प०—कांचनपुंख दिव्यविशिखंबुल बाहुल मस्तकंबुलुन्
द्रेंचिन द्रेंचिनट्लें कडुदेज मेंलपंग नद्भविंचु स-
त्कांचनरत्न भूषणनिकायमु दीप्तुलु प्रज्वरिल्लगा
गांचनगर्भदत्तवरगर्व विशेषमुचेत सारेंकुन् ॥ ९१ ॥

चम्प०- पोंरिबोंरिद्रुंचिनन् दिरिगिपुट्टेंड्डु चंदमुगोल नारिपैं
वेंरपुग बूनुचंदमुनु वेसेंड्डु चंदमु बारुचंदमुन्
गरमु नुतिपगा नरुदुगादें तलंपग देवताळिकिन्
शिरमुल चित्रमुन् नृपतिचेति विचित्रमु तूपुचित्रमुन् ॥ ९२ ॥

---

१. विंट नम्मु तोंड्डुग विल्लु चक्रंबुनु

कटकर गिरे सिर और हाथ, कटते ही (तुरत) उगते रहे। तीव्रता के अतिशयता से जगदीश ने तब मन में इस विचित्रता पर विचार करते रहे, फिर, ।। ८५ ।।

एक बाण से सिरों और हाथों को प्रकट रूप से काट देने पर (तुरन्त) सिर और हाथों के विकसित कमलों की रीति, सकलेश को चकित करते हुए, शीघ्र उग आये ।। ८६ ।।

सन्धानकर छोड़े गये शर और धरापर गिरनेवाले सिर (किस शर से कौन सिर कटा) विदित न होते हुए महीतलवर-राम (शरों को) निरन्तर छोड़ते गये। क्या कहूँ ? (वर्णन से अतीत है।) ।। ८७ ।।

वैसे समय में ।। ८८ ।।

धनुषपर संधान किया बाण, छोड़ा गया बाण, कटे सिर (तथा) पुनः उगनेवाले सिर कोई भी जान न पाए इस प्रकार राम रण में (बाणों को) चलाते रहे ।। ८९ ।।

शर का सन्धान करने पर चक्र समान भासित होता हुआ और शर को छोड़ते समय चाप समान विलसित होता हुआ राम के हाथ का धनुष चित्र-विचित्र रीति से शोभित हुआ ।। ९० ।।

स्वर्ण कान्तियों के समान दिव्य शरों से हाथों और सिरों को काटने पर, कटते ही तेज के साथ उद्भव होते, (और) शुद्ध स्वर्ण तथा रत्न-भूषण समूहों की दीप्ति से (रावण के हाथ और सिर) सुशोभित होते रहे। इस प्रकार कांचन गर्भ (ब्रह्मा) के दिये गये वर के प्रभाव-विशेष से बार-बार होता रहा ।। ९१ ।।

बार-बार काटना (और) उनका फिर पैदा होना, बाण को नारी पर विचित्र रीति से चढ़ाना, (और) उसका छोड़ा जाना और उसका चला जाना आदि का वर्णन करना, स्तुति करना, सोचने पर देवतावली के लिए असाधारण (संभव नहीं) है। सिरों की विचित्रता, नृपति के हाथों का विचित्र (कौशल) बाण की चित्रगति सब आश्चर्यजनक हैं ।। ९२ ।।

उत्प०— रावणुडेयु बाणमुलु, रामुनि बाणमु लॊक्कपॆट्टुनन्
रावणु मेन नाटियुनु, रामुनि नाटियु रक्तपूरमुल्
पूवुलतोडि मोदुगनु बूर्व गिरींद्रमु मीदि भानुनिन्,
जेवुरुकॊंड कालुवलसिदुरमुन् दलपिंचु नॆंतयुन् ।। ९३ ।।

कन्द— ऒत्तिलि रामुडु दैत्युनि
कुत्तुक नॊककोल द्रुंचि कूल्चुट दोड्तो
नॆत्तुरु ग्रम्मकमुन्नॆ
मॊत्तमुलुग दललु मरल मॊलुचुट येमो ! ।। ९४ ।।

वचनमु— अनि देवसंघमुलु गॊनियाड श्रीरामचंद्रुडु दैत्यनायकुनि
तललु जेतुलुं द्रुंचि त्रुंचि विसिविनं गनि विभीषणुंडु
नरेंद्रुन किट्लनियॆ : ।। ९५ ।।

विभीषणुडु तॆलिपिन रावण-मरण-रहस्यमु

कन्द— पोलग नातनि नाभी-
मूलंबुन नुन्न यमृतमुनु मॊदलनु नि-
र्मूलमुगा श्रीरघु भू-
पालक ! तॆगन्रेयु मग्निबाणमुचेतन् ।। ९६ ।।

कन्द— अदि तॆगिपोयिन पिम्मट
बदि तललुनु रॆट्टि गलुगु बाहुलु मरलन्
जॆदरक तुनुमग दुनुमग
दुदि मुट्टग मॊलुचु नूट तॊम्मिदि मारुल् ।। ९७ ।।

वचनमु— अंत नंतंबौननि विन्नविंचिन विनि रामभूपालुं डट्लु
गाविंचिन, ।। ९८ ।।

कन्द— ऒक तलयु रॆंडु चेतुलु
नकलंक स्थितिनि गलुगुनट्लितनिन् ने-
डॊकतलकु दॆच्चॆ नौननि
प्रकटिंचिरि सुरलु रामभद्रुनि नॆलमिन् ।। ९९ ।।

तेटगीति— अंतनमृतंबु तॆगिपोव नसुरविभुनि
मेन बाहुलु दललुनु मिन्न कडगि
पोयि कनुपट्टॆ नप्पुडद्भुतमु गाग
रॆंडुचेतुलु नॊकतल गंडु मिगुल ।।१००।।

रावण के छोड़े गये बाण राम को लगकर (और) राम के छोड़े गये बाण रावण को लगकर रक्त बहने लगा (और) वे फूलों से भरे टेसू के वृक्ष के समान, पूर्व गिरीन्द्र पर (उदित) सूर्य के समान, लाल पहाड़ पर सिन्धूर की नदियों के समान भासित हुए ॥ ९३ ॥

लगकर दैत्य के कण्ठ को क्रोध से एक बाण से काट गिराने पर, रक्त के बहने से पहले ही सभी सिरों का उग आना कैसी विचित्रता है ! ॥ ९४ ॥

(इस प्रकार) कह देवता समूह के प्रशंसा करने पर, श्रीरामचन्द्र के दैत्यनायक के सिर (और) हाथ काट-काटकर थक जाने पर (उसे) देख विभीषण ने नरेन्द्र से इस प्रकार कहा— ॥ ९५ ॥

### विभीषण का बताया रावण का मृत्यु रहस्य

'हे रघुभूपाल ! उसकी नाभि के मूल में स्थित अमृत को पहले अग्नि बाण से निर्मूल कर दो ॥ ९६ ॥

उसके कटने के बाद दस सिर और दुगने (बीस) हाथ ऐसे ही फिर उग आयेंगे। काटने पर अविचलित रूप से अन्त में एक सौ नौ बार उग आएंगे ॥ ९७ ॥

तब उनका अन्त होगा।' ऐसा विभीषण के निवेदन करने पर राम ने ऐसा ही किया ॥ ९८ ॥

'एक सिर (और) दो हाथों की अकलंक स्थिति में इसे राम ने लाकर रख दिया है' कहते हुए सुरों ने आनन्द प्रकट किया ॥ ९९ ॥

तब अमृत के कट जाने पर, असुर विभु के शरीर में सिर और हाथ (सब) कटकर, अद्‌भुत रीति से दो हाथ और एक सिर मात्र शेष रहकर दिखाई पड़े ॥ १०० ॥

वचनमु— अंत दैत्येंद्रुंडु तन मनंबुन, ।। १०१ ।।

कन्द— एव्वरु नेरुगनि मर्म-
बिव्विभुनकु नेरुक परुप निट्टु गाविंचेन्
मव्वमुन; नी विभीषणु
क्रोव्वेल्ल नडंतुनंचु ग्रूरततोडन् ।।१०२।।

सी०-तोलिलि वरप्राप्ति दोरिकिनयट्टुवंटि रक्ताभमनु महाशक्ति दिविचि
गंधपुष्पाक्षतकलितमै कनुपट्टि विपुल तेजंबुन वेलयुचुन्न
दानि ब्रयोगिंप दारुणानल तीव्र शिखलु दिक्तटमुल जेलगुचुंड
घनघनारावमै घंटानिनादंबु श्रुतिपुटंबुलकु नश्रुतमु गाग

तेटगीति— जंडतरमुग नट विभीषणुनिपैकि
जिच्चुलुमियुचु नुग्रमै वच्चुदानि
गांचि रामुंडु निशित मार्गणमु चेत
दृणमुकैवडि नडिमिकि द्रुंचिवैचें ।।१०३।।

वचनमु— इट्लु तन शक्ति वृथ यगुट गनि दानवेंद्रुंडु मानवेंद्रुनिपै
गरंबलिगि निट्टूर्पु निगिडिपुचु, नसि मुसल मुद्गर परशु
पट्टिस प्रास गदादंड कोदंड भिंडिवालादि साधनंबुल
नवक्र विक्रमंबुन नालंबु सेयुचुंड गनि विभीषणुंडुलिकि
देवा ! वीडु रेंडुकरंबुलतोडने मेंडुग युद्धंबु सेयं दोडंगें
निंक शिरंबुलु गरंबुलु मरल नुद्भविंचें नेनि गार्यंबु
दप्पुटकु संदियंबु लेदु। कावुन वीनि नीलोनन ब्रह्मास्त्रं-
बुन नडगिंप दगुननि विन्नविंचिन, ।। १०४ ।।

श्रीरामुडु प्रयोगिंचिन ब्रह्मास्त्रमुचे रावण हननमु

मत्ते०— अनघुं डुज्ज्वल चापदंडमुन ब्रह्मास्त्रमु संधिंचि यों-
य्यन गर्णांतमुगा गडुन् दिविचि प्रत्यालीढ पादस्थुडै
दनुजाधीश्वरु बाहुमध्यमु वडि दाकंग लक्ष्यंबुगा
गोनि बिट्टेसें नदलिच तीव्रतरमौ कोपंबु दीपिंपगन् ।।१०५।।

कन्द— आ व्रेटु वडिग नाटिन
रावणुडतिविवशुडगुचु व्रालें धरित्रिन्,
देवतति पोगडि यप्पुडु
पूवुल वर्षंबु गुरिसे भूवरु मीदन् ।।१०६।।

तब दैत्येन्द्र ने अपने मन में ।। १०१ ।।

'दूसरे किसी के लिए अज्ञात इस रहस्य को मार्दवता से विभीषण ने भूविभु को विदित किया । इसका मद सारा हटा दूंगा ।' सोचते हुए वह क्रूरता से ।। १०२ ।।

पूर्व में वर से प्राप्ति रक्तनाभ नामक महाशक्ति को निकालकर, गन्ध (चन्दन) पुष्प और अक्षतों से संयुक्त कर, विपुल तेज से बिलसित अस्त्र का प्रयोग किया । वह भयंकर अग्नि-ज्वालाओं को दिशाओं में फैलाते हुए, घण्टा निनाद करते हुए, घनघनारव से कानों के लिए अति-कठोर ध्वनि करते हुए, प्रचण्ड गति से विभीषण पर आग बरसाते हुए, उग्र रीति से आने लगा । उसे देख, राम ने अपने तीक्ष्ण बाणों से उसे तृण के समान मध्य में काट दिया ।। १०३ ।।

इस प्रकार अपनी शक्ति के वृथा जाते देखकर, दानवेन्द्र के मानवेन्द्र पर अति कुपित होकर, उसाँस भरते हुए, खड्ग, मूसल, मुद्गर, परशु, पट्टिस, प्रास (पाश), गदादण्ड, कोदण्ड, भिण्डिवाल (एक प्रकार की छुरी) आदि साधनों से अवक्र विक्रम के साथ युद्ध करते रहने पर देख, विभीषण ने डरकर कहा 'देव ! यह दो हाथों से ही प्रचण्ड युद्ध करने लगा है । अब फिर से सिर और हाथ उग आयेंगे तो निस्सन्देह कार्य भंग होगा । इसलिए इतने में (तुरत) इसे ब्रह्मास्त्र के द्वारा समाप्त करना ठीक है ।' ऐसा निवेदन करने पर, ।। १०४ ।।

### श्रीराम से प्रयुक्त ब्रह्मास्त्र से रावण का हनन

अनघ (पापरहित-राम) ने उज्ज्वल चापदण्ड पर ब्रह्मास्त्र का संधानकर, आकर्णान्त (नारी) खींचकर, वामचरण झुकाकर, दनुजाधीश्वर की बाहुओं के बीच में लक्ष्यकर, तीव्रतर क्रोध प्रकट करते हुए, अतिवेग से चुभे, इस प्रकार (बाण) छोड़ दिया ।। १०५ ।।

उसके अतिवेग से आकर चुभने पर रावण अत्यधिक विवश हो, धरापर गिरा । तब देव-तति (-समूह) ने प्रशंसा करते हुए भूवर (राम) पर पुष्पों की वर्षा की ।। १०६ ।।

उत्प०— संगरभूमि रावणुडु सत्त्वमु दूलि धरित्रि गूलिनन्
ग्रुंकॆ भरंबुनन् धरणि, क्रुंगॆ गुलाचलवर्गमॆल्ल्, वॆ-
ग्रुंगॆ दिशाकरींद्रमुलु, ग्रुंगॆ महोरगवंशनाथुडुन्,
ग्रुंगॆ ढुलीकुलेश्वरुडु, क्रुंगॆ वराहमु ग्रुड्लु तेलगन् ।।१०७।।

कन्द— जगमुलकुनॆल्ल बाधकु-
डगु रावणुडाजि गूल नंतटितोडन्
बगदीरॆ ननुचु रामुडु
तग दन विल्लॆक्कु डिंचि तम्मुनि किच्चॆन् ।।१०८।।

सीसमु—
अखिल लोकम्मुलकानंद मॊदवॆनु, सुरलकंटिकि निद्रसोकॆ नंत,
मुनुलु चेसिन तपंबुलु चाल[1] फलियिंचॆ, दॊडरि साध्युलकु दुंदुडुकु वासॆ,
गुह्यकावळिकिनि गूडु नॊटिकि बोयॆ, सिद्धुल तलपुलु सिद्धिनॊंदॆ,
दर्वीरकरंबुल तल्लडंबडगॆनु, गिन्नरसंघंबु कीडु तॊलगॆ,
तेटगीति— गरुड गंधर्वखेचर गणमुलकुनु
क्षेमर्मिपारॆ, जनपरिणाममय्यॆ,
वॆड्कलिपॊंदॆ, बाधलु विरुगडय्यॆ,
संगरंबुन दैत्युंडु सच्चुकतन[2] ।।१०९।।

उत्प०— अंत विभीषणुंडु तनयन्न पदंबुल मीद व्रालि, य-
त्यंत विषाददुःख जनिताश्रुकणंबुलु राल नेड्चॆ लो-
कांतकुडैन रावणु महाद्भुत दुष्टपराक्रमंबु भू-
कांतुनि मुंगलन् दडवि गद्गद कंठ कषाय नेत्रुडै ।।११०।।

मंडोदरी विलापमु

वचनमु— अट्टि समयंबुन मंडोदरि मॊदलैन यंतःपुर सुंदरी संदोहंबु-लेतॆंचि तम प्राणेश्वरुंडैन राक्षसकुल-सार्वभौमुंगनि वक्षंबुलु शिरंबुलु मोदुकॊनुचु बहुविधंबुल व्रलपिपुचु बरिवेष्टिंचि-कॊनियुंड भूकांतुंडु शांतालापंबुल ननुनयिंचि विभीषणुं-गनि, नीवु दुःखं बुडिगि मीयन्नकु नग्निसंस्कारादि विधुल नार्चरिपु मनिन नतंडट्ल कांविचिन । यनंतरंब विभीषणुनि लंकानगरंबुनकुं बट्टंबु गट्टिंचित, नतंडु सुगंधद्रव्यंबुलुनु,

१. तग २. तुंगु नंत

संग्राम-क्षेत्र में रावण के सत्त्वहीन होकर धरा पर गिरने पर (उसके) भार से धरती दब गई। समस्त कुलाचल-वर्ग ढह गया। दिग्गज शीघ्र दब गये महोरग-वंशनाथ (आदिशेष) दब गया (झुक गया), ढुली (कच्छप) कुलेश्वर दब गया। वराह दब गया जिससे उसकी आँखें बाहर निकल आईं ॥ १०७ ॥

सब जगतों के लिए बाधक (पीड़ा देनेवाले) रावण के युद्ध में गिरते ही 'शत्रुता समाप्त हुई' कहते हुए राम ने अपने धनुष को ढीलाकर, अनुज के हाथों में धर दिया ॥ १०८ ॥

संग्राम में दैत्य के मरते ही, अखिल लोकों को आनन्द हुआ, सुरों की आँखों को आराम की नींद लगी। मुनियों की तपस्याएँ अत्यधिक सफल हुईं। साध्यों की भीति हट गई। गुह्यकावलि (देवता समूह) के मुँह में कवल (कौर) गया (निश्चिन्तता से खा सके)। सिद्धों की इच्छाएँ सिद्ध हुईं। नागजाति की व्याकुलता दूर हुई। किन्नर समूहों के दुःख दूर हुए। गरुड़, गन्धर्व, खेचरगण सकुशल एवं सानन्द हुए। जनता प्रसन्न हुई, मनोविनोद हुआ, दुःख दूर हुए ॥ १०९ ॥

तब विभीषण ने अपने अग्रज के चरणों में गिरकर अत्यन्त विषाद एवं दुःख से उत्पन्न अश्रुधारा बहाते हुए, लोकान्तक रावण के महा-अद्भुत एवं दुष्ट पराक्रम का वर्णन भूकान्त के सम्मुख करते हुए गद्गद कण्ठ से तथा आँखों में लालिमा लिए विलाप किया ॥ ११० ॥

### मंदोदरी का विलाप

उस समय में मन्दोदरी आदि अन्तःपुर की सुन्दरियों के समूह ने आकर अपने प्राणेश्वर तथा राक्षस कुल के सार्वभौम को देख छाती और सिर पीट लेते हुए, नाना प्रकार से प्रलाप करते हुए, रावण को परिवेष्टित कर विलाप किया। (तब) भूकान्त (राम) ने शान्त वचनों से सान्त्वना देते हुए विभीषण से कहा कि 'तुम दुःख को शान्तकर अपने अग्रज का अग्नि संस्कारादि विधियों का आचरण करो।' (राम के) कहने पर उसने वैसा ही किया। उसके पश्चात् विभीषण को लंकानगर के राजपद के लिए पट्टाभिषिक्त करने पर, उसने सुगन्ध द्रव्यों को, नवरत्न खचित आभूषणों

नवरत्नखचितंबुलैन भूषणंबुलुनु, जीनिचीनांबरंबुलुनु गानुकगा निच्चिनं बरिग्रहिंचि यवियेल्लनु मातलि किच्चि, प्रियोक्तुलं दनिपि यनिपिन नतंडु स्वर्गंबुनकुं जनियॆ नय्यवसरंबुन, ।। १११ ।।

विभीषणुंडु श्रीरामुनि विजय वार्तनु सीतकु निवेदिंचुट

सी०- आलोन राघवुंडा विभीषणु जूचि सत्प्रीति युक्तिमै सरग बिलिचि
पंक्तिकंधरु नाजि बरिमार्चिति नटंचु वसुमतीतनयकु वार्तसेप्पि
नीदेवि मोदलगु नीरजाक्षुलचेत नतिवकु शृंगारममर जेसि
कोंचु रम्मनि चेप्प नंचितगति नेगि सरमादिसतुलका सरणि जेप्प
तेटगीति– सतुलु निर्मल जलमुल जलकमार्चि
पट्टुपुट्टंबु मुदमुन गट्टबेट्टि
चंदनमलंदि सुरभि पुष्पमुलु मुडिचि
मेलि मणिभूषणंबुलु साल दोडिगि ।।११२।।
कन्द— इंदिरतो सरियगु ना
सुंदरि त्रैलोक्य मात सोबगोंदग दा-
रंदलमुन गोनि वच्चिररि
कंदर्पनिभुंडु रामुकडकुं ब्रीतिन् ।।११३।।
वचनमु— इट्लु गोनि वच्चि रामभूपालुनि सम्मुखंबुन नुनिचिन नद्धरातनूजात पतिकि विनयभक्ति तात्पर्यंबुलु वेलय ब्रणमिल्लिन नतंडु वनितारत्नंबगु सीतं गनुंगोनि यिट्लनियॆ ।। ११४ ।।

सीत यग्नि प्रवेशमु

कन्द— कुलसति जेरगोनि पोयिन
यलशात्रवु गेलुव नोपडनु पलुकुलकुन्
गेलिचिति बग चंपिति निक
नेलता ! नी यिच्च जनुमु नेनिन्नोल्लन् ।।११५।।
आट०— अनुचु बलुकुपलुकु लवनीतनुजात
कर्णमुलकु वाडि गलुगुनट्टि
नारसमुलु सोकि नाटिन यट्लैन
सरसिजाक्षि मूर्छ जालनोंदि ।।११६।।

को, सुन्दर रेशमी कपड़ों को भेंट किया तो उन्हें स्वीकार कर, उन सबको मातलि को देकर, प्रिय भाषणकर (उसे) भेजने पर, वह स्वर्ग चला गया। उस समय ।। १११ ।।

### विभीषण का श्रीराम की विजयवार्त्ता को सीता को निवेदित करना

तब राघव ने विभीषण को देख प्रेम के साथ समीप बुलाकर कहा— 'पंक्तिकन्धर को युद्ध में समाप्त कर दिया है। वसुमतीतनया (सीता) को इस समाचार का निवेदन कर, तुम्हारी देवी आदि नीरजाक्षियों (वनिताओं) के द्वारा स्त्री (सीता) का शृंगार करवाकर, यहाँ लाओ।' (विभीषण ने), शीघ्र जाकर, सरमा आदि सतियों को उस विधान को समझाया। तब उन सतियों ने निर्मल जल में स्नानादि कराकर, रेशमी कपड़ों को आनन्द के साथ पहनाकर, चन्दन लगाकर, सुरभित पुष्पों से अलंकृतकर, श्रेष्ठ मणि भूषणों को अतिशयता से पहनाया ।। ११२ ।।

(और) इन्दिरा के समान उस सुन्दरी को त्रैलोक्यमाता की शोभा से विलसित बनाकर, पालकी पर (बिठाकर) कन्दर्प-विभु श्रीराम के समीप प्रेम के साथ लिवा लायीं ।। ११३ ।।

इस प्रकार लाकर रामभूपाल के सम्मुख उपस्थित किया। तब धरातनूजा के पति को विनय तथा भक्तिभाव प्रकट करते हुए प्रणाम करने पर, उसने वनितारत्न सीता को देख इस प्रकार कहा— ।। ११४ ।।

### सीता का अग्नि प्रवेश

"कुलसती (कुलवधू) को बन्दी बनाकर (अपहरणकर) ले जाने वाले शत्रु को जीत न सका' इन वचनों (अपख्याति) के निवारण के लिए मैंने वैरभाव से शत्रु का (रावण) वध किया। अब हे वनिता! तुम (अपनी) इच्छा के अनुसार (कहीं भी) जा सकती हो। मैं तुम्हें स्वीकार नहीं कर सकता" ।। ११५ ।।

ऐसे कहे गये वचन अवनीतनूजा के कानों को तीक्ष्ण बाणों के समान लगकर चुभे। तो सरसिजाक्षी (सीता) मूर्च्छित हुई, (और) अति-दीनता से (कहने लगी) ।। ११६ ।।

चम्प०- नरवर ! नादुचित्तमु मनंबुन नीव यॆरिंगियुंडियुन्
बरुषमुलाड नेमिटिकि, बापमु नायॆड लेदु, कादुपो
सुरलु नुतिंप मेटि सीद जॊच्चॆद मॆच्चुडटन्न, रामभू-
वरुनिमनं बॊडंबडिन, वारिजलोचन सीत यातरिन् ॥११७॥

कन्द— हृदयेशुडलर नप्पुड
सीद जॊच्चॆनु भूमिपुत्रि सुरलु नुतिंपन्
मुदमंदि पद्मभवु डा-
यदनं ब्रत्यक्ष मय्यॆ नौ नौ ननुचुन् ॥११८॥

ब्रह्म सीत सौशील्यमुनु ब्रस्तुतिंचुट

आट०— अंत पद्मगर्भु डवनीशुडगुराम-
भद्रु जूचि पलिकॆ बरमपुरुष !
वनजनेत्र सीतवलन ये दोषंबु
लेदु नम्मुमय्य मेदिनीश ! ॥११९॥

वचनमु— अनि पलिकिन पितामहुनि माटल कुभयसेनलुनु संत-
सिल्लिनवि अनंतर मग्निभगवानुंडु नय्यंगनं गॊनिवच्चि
परम पतिव्रताभरणंबगु निद्धरातनूजातं गैकॊम्मनि
यप्पगिंचिन नय्यॆड दशरथुंडु प्रसन्नुंडैन श्रीरामचंद्रुंडु
सतीसमेतुंडै तम्मुंडुनु दानुनु नमस्करिंचिन गुमारद्वयंबुनु
गोडलिनि नालिंगनंबुचेसि तद्दुःखंबुलं बापि चनियॆ
नप्पुडु सकलदेवतलु निट्लनिरि : ॥ १२० ॥

देवतलु चेसिन श्रीराम स्तोत्रमु

कन्द— मा कौरकु जननमॊंदिति
राकासुल राजु जंपि रक्षिंचिति वौ-
लोकंबु लॆल्ल गृपतो
साकेत - पुराधिनाथ ! सज्जनविनुता ! ॥१२१॥

कन्द— अनि विनुति सेसि कलनन्
जनिपोयिन कपुलनॆल्ल सत्कृप ब्रदुकुं-
डनि वरमुलिच्चि यरिगिरि
घनुलादेवतलु मरलि गगनंबुनकुन् ॥१२२॥

"हे नरवर ! मेरे चित्त को, (भलीभांति) जानते हुए भी परुष वचन क्यों कहते हो ? मेरा कोई पाप नहीं है। नहीं तो सुरों की स्तुति प्राप्त करते हुए, श्रेष्ठ चिता में प्रवेश करूँगी। (उसकी) सराहना कीजिए।" कहने पर राम भूवर के मन के स्वीकार करने पर, वारिज-लोचना सीता ने उस अवसर पर, ।। ११७ ।।

हृदयेश (राम) प्रसन्न हों, इस प्रकार भूमिपुत्री ने, देवताओं के प्रशंसा करने पर चिता में प्रवेश किया। तब, आनन्दित हो पद्मभव (ब्रह्मा) उस अवसर पर 'सत्य-सत्य' कहते हुए प्रत्यक्ष हुआ ।। ११८ ।।

### ब्रह्मा का सीता की सुशीलता की प्रशंसा करना

तब पद्मगर्भ ने अवनीश रामचन्द्र के दर्शनकर कहा 'हे परम पुरुष ! वनजनेत्री सीता का कोई दोष नहीं है। हे मेदिनीश ! विश्वास करो' ।। ११९ ।।

ऐसा कहने पर पितामह के वचन सुनकर दोनों सेनाएं आनन्दित हुईं। उसके पश्चात् अग्नि भगवान उस अंगना को ले आया (और) परम पतिव्रताओं के आभरण (श्रेष्ठ) उस धरातनूजा को स्वीकार करने के लिए सौंप दिया। उस अवसर पर दशरथ के प्रसन्न होने पर सती समेत हो श्रीराम और लक्ष्मण ने प्रणाम किया तो पुत्रद्वय तथा बहू का आलिंगन कर, उनके दुःख दूरकर चले गये। तब सकल देवताओं ने ऐसा कहा ।। १२० ।।

### देवताओं का किया हुआ श्रीराम स्तोत्र

"हे साकेत पुराधिनाथ ! हे सज्जन विनुत ! हमारे लिए (आपने) जन्म लेकर राक्षसों के राजा का वधकर, कृपाकर, समस्त लोकों की रक्षा की।" ।। १२१ ।।

(ऐसा) कह प्रशंसाकर, रण में मृत सब कपियों पर सत्कृपाकर जीवित होने का वर प्रदानकर, घन (महान्) देवतागण गगन में वापस चले गये ।। १२२ ।।

वचनमु-- तदनंतरंबुन, ।। १२३ ।।

तेटगीति- भानु पुत्रादि वानरबलमुतोड
घन विभीषण मुख्य राक्षसुल तोड
मरियु जानकितोड लक्ष्मणुनि तोड
बुष्पकंबेक्कि चनियें नाभूमिविभुडु ।।१२४।।

सीता लक्ष्मण सुग्रीवादुलतो बुष्पक विमानमुन श्रीरामुनि पयनमु

वचनमु-- इट्लु पुष्पकारूढुंडै चनुचुंडि रामभूकांतुंडु कांतारत्नंबुनकु जेयेत्ति चूपुचु संग्रामस्थलंबिदे रावण कुंभकर्णादुलैन राक्षस बलंबुनु मर्दिचिन ताविदे, सुवेलाचलंबिदे, समुद्रंबुनन् बंधिंचिन सेतुबंधनंबिदे, विभीषणुडु मम्मु शरणु चोच्चिचन प्रदेशंबिदे, सुग्रीवुनि किष्किधानगरंबिदे, वालिनि नेल गूलनेसिनचोटिदे, भानुनंदनुंडु मम्मु बोडगन्नस्थलंबिदे, ऋश्यमूकाचलंबिदे, वायुतनूभवुंडु मम्मु बोडगन्न ताविदे, पंपा सरोवरंबुनिदे, कबंधुडनु दानवुनि वधिंचिन प्रदेशंबिदे, जटायुवनु पक्षींद्रुंडुनिन्नु गोनिपोवुनप्पुडु रावणासुरुनि तोडंबोरि मडिसिन स्थानंबिदे, जनस्थानंबिदे, दशवदनुंडु निन्नुजेरगोनि पोयिन चोटिदे, मायामृगंबुनु बडनेसिन चोटिदे, खरदूषणादुलु नातोड बोरि पोलसिन ताविदे, शूर्पणख यनुदानिमुक्कु सेवुलुं जक्किन यिक्कयिदे, सुतीक्ष्णुंडनु मनींद्रुडु वर्तिचुनाश्रमंबिदे, यगस्त्याश्रमंबिदे, यत्रि महामुनींद्रुनि पत्नि यनसूयादेवि यंगरागंबुलु नीकिच्चिचन चक्कयिदे, विराधुंडनु राक्षसुंडुनिन्नु बट्टुकोनि पोवुचुंड विडिपिंचिन चोटिदे, चित्रकूटाचलंबिदे, भरतुंडु मनल नोडंबरचि मरल गोनिपोव वच्चिचन चोटिदे, गंगानदि यल्लदे, कनुंगोनुमनि चेप्पुचु भरद्वाजाश्रमंबु जेरंजनि यच्चट बुष्पकंबु डिग्गि यम्मुनींद्रुनकु नमस्करिंचिन नतंडु रामुनि दीविंचिन महानंदंबु नोंदि, यनिलसंभवा ! वेवेग नीवेग नदिग्रामम्मुननुन्न भरतुनकु माराक येरिंगिचि रम्मनि यनिपिन, ।। १२५ ।।

उसके पश्चात् ॥ १२३ ॥

भानुपुत्र आदि वानर बल के साथ, घन (महान्) विभीषण मुख्य (आदि) राक्षसों के साथ, तथा जानकी के साथ, लक्ष्मण के साथ, पुष्पक पर आरूढ़ हो, उस भूमिविभु ने प्रस्थान किया ॥ १२४ ॥

### सीता-लक्ष्मण-सुग्रीव आदि के साथ पुष्पक विमान पर श्रीराम का प्रयाण

इस प्रकार पुष्पकारूढ़ हो चलते हुए राम भूकान्त कान्तारत्न को हाथ उठाकर, बताते हुए (कहने लगे) कि 'यही संग्राम स्थल है, जहाँ रावण कुम्भकर्ण आदि राक्षस बल का संहार किया सो स्थान यही है, सुवेलाचल यही है, समुद्र पर बाँधा गया सेतुबन्ध यही है, जहाँ विभीषण हमारी शरण में आया सो प्रदेश यही है, सुग्रीव का किष्किन्धा नगर यही है, वालि को जहाँ धराशायी कर दिया सो स्थान यही है, भानुनन्दन (सुग्रीव) के हमारे दर्शन करने का स्थान यह है, यही ऋष्यमूक पर्वत है जहाँ वायुतनूभव ने हमें देखा था, वह स्थान यही है, कबन्ध नामक दानव का वध किया सो प्रदेश यही है, जटायु नामक पक्षीन्द्र (रावण के) तुम्हें ले जाते समय रावण के साथ संघर्ष कर जहाँ विगत हुआ, सो स्थान यही है, जनस्थान यही है, दशवदन (रावण) के तुम्हें अपहरणकर ले जाने का स्थल यही है, मायामृग को गिराया सो स्थान यही है, खर-दूषणादि के मेरे साथ संग्रामकर प्राण छोड़ने का स्थान यह है, शूर्पणखा नामक राक्षसी के नाक-कान काट दिया सो स्थल यही है, सुतीक्ष्ण नामक मुनींद्र के विचरण करने का आश्रम यही है, अगस्त्य का आश्रम यही है, अत्रि महामुनि की पत्नी अनसूया देवी ने तुम्हें जहाँ अंगराग प्रदान किया था सो स्थान यही है, विराध नामक राक्षस तुम्हें पकड़कर ले जा रहा था, उसके हाथ से जहाँ छुड़ाया था सो स्थल यही है, चित्रकूटाचल यह है, भरत हमें समझा-बुझा कर वापस ले जाने के लिए जहाँ आया था सो प्रदेश यही है, वही गंगा नदी है, देखो।' कहते हुए भरद्वाज के आश्रम पहुँचकर, वहाँ पुष्पक से उतरकर, उस मुनींद्र को नमस्कार कर उनके राम को आशीष देने पर महानन्द का अनुभवकर (हनुमान से कहा) 'हे अनिलसम्भव! तुम अतिवेग से जाकर नन्दिग्राम में स्थित भरत को हमारे आगमन का (समाचार) देकर आओ।' (ऐसा) कह भेजने पर, ॥ १२५ ॥

कन्द—- अरुदेंचि चूचें बावनि
सुरुचिर सौभाग्य भरतु, शोभन चरितुन्,
विरचितपुण्यस्फुरितुन्
निरुपम सत्कीर्ति नित्य निरतुन् भरतुन् ।।१२६।।

वचनमु—- कनुंगोनि वंदनंबु सेसि करंबुलु मोड्चि विनयंबुन, ।।१२७।।

आट०—- भरतुनकुनु रामभद्रुडेतेंचिन
वार्त जेप्प विनुचु वायुसुतुनि
गार्रविंचि निंडु कौगिट जेर्चुचु,
नग्रजन्मु सेममडिगि यडिगि, ।।१२८।।

कन्द—- तल्लुलु मुव्वुरकुनु रघु-
वल्लभु डेतेंचिनट्टि वार्तलु देलुपन्
बल्लिदुडगु तन तम्मुनि
नल्लन साकेतपुरिकि ननिपेन् वेड्कन्, ।।१२९।।

अयोध्या नगर प्रवेशमु

वचनमु—- अट भरद्वाजाश्रमंबुन मज्जनभोजनादुलाचरिंचि नाटि रात्रि निलिचि मरुनाडम्मुनींद्रुनि वीड्कोनि श्रीरामचंद्रुंडु पुष्पकारूढुंडै चनुदेंचुचुन्न यप्पुडन्नकु भरतुंडु सकल सेना-समेतुंडै तल्लुलुं दम्मुंडुनु नेंदुरेगि राघवेश्वरु पादारविंदं-बुलकु वंदनं बाचरिंचिन नतंडनुजन्मुल गौगिलिंचुकोनि लक्ष्मणसहितुंडै जनकराजनंदनं गूडि तल्लुलु मुव्वरकुं ब्रणमिल्लि वारलतिस्नेहंबुन निंडुकौगिळ्ळ नोत्तुचु दीविंप दमलोदामु पेंद्दपिन्न यंतरुवुल वंदनंबुलु सेसिकोनि मरलि, नंदिग्रामंबुन केगि यच्चट बुष्पकंबु डिग्गि, दानि कर्चन लिच्चि कुबेरुनि वीटिकि बोम्मनि यनिपि, भरतु मंदिरंबु प्रवेशिंचें नट्टि शुभ समयंबुन, ।। १३० ।।

कन्द—- दानंबुलिच्चि भद्र-
स्नानंबुलु सेसि भूषणंबुलु पूतल्
चीनांबरमुलु बरिमळ-
सूनंबुलु दाल्चिरधिक शोभनलीलन् ।।१३१।।

वचनमु—- इट्लु रामादि सोदर चतुष्टयंबुनु, भूमिनंदनयुनु दपो वेषंबु लुज्जगिंचि राजचिह्नंबुलु गैकोनि दानव वानरबलं-

आकर पावनी ने सुरुचिर सौभाग्यशाली, पवित्र चरित्रवाले, पुण्य से विराजित, निरुपम सत्कीर्ति से नित्य निरत, भरत को देखा ।। १२६ ।।

देखकर वन्दनाकर, हाथ जोड़कर, विनय के साथ ।। १२७ ।।

भरत को रामभद्र के आगमन का समाचार कहने पर, सुनते ही, वायुसुत का समादरकर, आलिंगनकर, अग्रजन्म (राम) का कुशल समाचार पूछ-पूछकर, ।। १२८ ।।

तीनों माताओं को रघुवल्लभ के आगमन का समाचार विदित करने के लिए बलशाली अनुज (शत्रुघ्न) को तुरन्त साकेतपुरी को उत्साह के साथ भेजा ।। १२९ ।।

### अयोध्या नगर में प्रवेश

वहाँ भरद्वाजाश्रम में स्नान और भोजन आदि करके उस रात को वहीं ठहरकर, दूसरे दिन उस मुनीन्द्र से विदा लेकर, श्रीरामचन्द्र पुष्पकारूढ़ हो आ रहे थे। आनेवाले अग्रज की भरत ने सकल सेना समेत हो तथा माताओं और अनुज (शत्रुघ्न) के साथ अगवानीकर, राघवेश्वर के चरणारविन्दों की वन्दना करने पर उसने (राम ने) अनुजन्मों का आलिंगनकर, लक्ष्मण सहित हो, जनकराज-नन्दना के साथ तीनों माताओं को प्रणाम किया। उन लोगों ने अति स्नेह (प्रेम) के साथ अंकों में लेकर, आशीषें देने पर अपने आप बड़े-छोटे की भावना से प्रणामकर (प्रणाम) लेकर, वापस नन्दिग्राम जाकर वहाँ पुष्पक से उतरकर, उसकी अर्चनाकर, उसे कुबेर के यहाँ जाने के लिए भेजकर, भरत के मन्दिर में प्रवेश किया। ऐसे शुभ समय में— ।। १३० ।।

दान देकर, भद्रस्नानादि कर, भूषणावली, अंगराग तथा चीनाम्बर (रेशमी कपड़े) तथा परिमल-प्रसून से अलंकृत हो, परम शोभा में विलसित हुए ।। १३१ ।।

इस प्रकार रामादि सहोदर-चतुष्टय (तथा) भूमिनन्दना ने तपोवेशों को त्यागकर राजचिह्नों को धारणकर, दानव, (एवं) वानर-सेनाओं

बुलं गूडुकोनि षड्रसोपेतंबुलैन भोजनंबुलं बरितृप्तुलै याराविगडिपि मरुनाडु गजतुरंगस्यंदनादि वाहनंबुलेक्कि, छत्रचामरादुलु मेरय, शंखभेरी भांकारंबुलुल्लसिल्ल, वंदिमागधुल बिरुदु कैवारंबुलु सेलंग नयोध्यापुरंबु ब्रवेशिंचि नगरुलोनिकि जोत्तेंचि वसिष्ठानुमतंबुन शुभमुहूर्तंबुन भद्रसिंहासनंबुन बट्टभद्रुंडै रामभद्रुंडु भूसुरुलकु दानंबुलोसंगि यर्थार्थुल किष्टार्थंबु लिच्चि विभीषण सुग्रीवांगद जांबवद्धनुमदादुल ब्रियवचनंबुलं दनिपि वारिवारिकि दगिन पगिदिनि गट्नंबुलिच्चि वीड्कोलिपिन वारु निजस्थानंबुलकुं जनि रंत महानंदंबुनु, ।। १३२ ।।

आट०-- अशवमेधयाग मननोप्पु जन्नंबु
नेलमिजेसि दिविजुलेल्ल मेच्च
लील बदुनोकंडु वेलेंड्लु धरयेले
बरम धर्म महिम ब्रजलु वोगड ।।१३३।।

श्रीरामुनि धर्म परिपालनमु

सी०-सकलौषध क्रियासंजीवकरणिचे जेलगि दिक्कुलनु रक्षिप जालु
बंधुरोन्नतशस्त्रसंधानकरणिचे गुटिलारुलनु रंभ गूर्प जालु
संततोत्पादनसौवर्ण करणिचे नर्थुल दारिद्र्यमडपजालु
ननुदिन संधानमनुशल्यकरणिचे बुरुषार्थनिकरंबु ब्रोवजालु

तेटगीति– सिद्धिविद्यानुराग प्रसिद्धुडैन
राजचंद्रुडितंडनि राजुलेल्ल
सन्नुतिपग विलसिल्ले जगतियंदु
भाग्यविस्तारि रामभूपालशौरि ।।१३४।।

सी०-कुटिलत नदुलंदु गुंतलंबुल यंदु, बोंकु जूदमुलंदु बूतुलंदु,
लेमि वैरुलयंदु लेमलनडुमंदु, भंगमंबुधुलंदु बरुल यंदु,
गोपंबु खलुलंदु ग्रूरवर्तनुलंदु, वडकु वीणलयंदु व्यसनुलंदु,
बंधंबु रतुलंदु बटुशिरोजमुलंदु, मोहंबु धनमंदु मुदितलंदु,

के साथ षड्रसोपेत भोजनों से परितृप्त होकर, उस रात को (वहाँ) बिताकर, दूसरे दिन गज-तुरग-स्यन्दनादि वाहनों पर आरूढ़ होकर, छत्र चामरों के प्रकाशित (सुशोभित) होने पर, शंख, भेरी, झांकारों के उल्लसित होने पर, बन्दी, मागधजनों के विरुदावलियों के पाठ के विलसित होने पर, अयोध्यापुर में प्रवेश किया। नगर में (अन्तःपुर) में आकर वशिष्ठ के अभिमत (इच्छा) के अनुसार शुभमुहूर्त्त में भद्र सिंहासन पर पट्टाभिषिक्त होकर रामभद्र ने भूसुरों को दान देकर, अर्थाथियों को इष्टार्थ प्रदान किया। विभीषण, सुग्रीव, अंगद, जाम्बवान, हनुमान आदि को प्रिय वचनों से संतृप्तकर, उन-उनको योग्य पुरस्कार देकर, बिदा करने पर, वे लोग निजस्थानों को चले गये। तब महादानन्द के साथ ॥ १३२ ॥

अश्वमेध नामक सुप्रसिद्ध यज्ञ को आनन्द से सम्पन्नकर, दिविजों (देवताओं) के प्रशंसा करने पर, लीला से ग्यारह हज़ार वर्ष परमधर्म की महिमा से मण्डित हो, प्रजा की संस्तुति करने पर धरती (राज्य) का पालन किया ॥ १३३ ॥

### श्रीराम का धर्म परिपालन

सकल औषध क्रियाओं से समेत संजीवकरणि से रोगियों की रक्षा करने में समर्थ हो, बन्धुर (तथा) महान-शस्त्र-संधान-करणि से कुटिल शत्रुओं को रम्भा की संगति कराने में समर्थ (स्वर्ग भेजनेवाले) हो, निरन्तर स्वर्ण के उत्पादन करनेवाली सौवर्ण-करणी से अर्थियों की दरिद्रता को निर्मूल करने में समर्थ हो, प्रतिदिन सन्धान नामक शल्यकरणी (विद्या) से पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) निकर (समूह) की प्राप्ति कर सकने वाले हो, सिद्धि विद्याओं के अनुराग में सुविख्यात रामचन्द्र यही है, कहते हुए राजाओं के द्वारा संस्तुत होकर, जगत में भाग्य (सम्पदाओं) का विस्तारक राम भूपाल-शौरी विलसित हुए ॥ १३४ ॥

कुटिलता नदियों में तथा कुन्तलों (केशों) में ही है। झूठ द्यूत में तथा गालियों में ही है। अभाव वैरियों में तथा सुन्दरियों की कमरों में है। सागरों में और पराये लोगों में (शत्रुओं में) भंग (क्रम से लहर और अपमान) है। कोप खलजनों में तथा क्रूरवर्तन वालों में है। कम्पन वीणाओं तथा व्यसनियों (बुरी आदतों में डूबे हुए लोगों) में है। रतियों, शिरोजों (बालों) में बन्धन है। धन में तथा मुदिताओं (कान्ताओं) में

तेटगीति– जित कवुलंदु दपसुल चित्तमंदु,
वर्णमिळितंबु चित्तरुवंदु यवनु
लंदुननें, कानियोंडेड जेंदकुंड
लील धरयेलें रामभूपालवरुड्डु ।।१३५।।

फलश्रुति

कन्द-- ई रामचरित मेप्पुडु
वारक विन्नट्टिवारु व्रासिनवारुन्
गोरि पठिंचिनवारुनु
श्रीरामुनिकरुण मेलु सेंदुदुरुरेलमिन् ।।१३६।।

आश्वासांत पद्य गद्यमुलु

कन्द-- जलजाक्ष ! भक्तवत्सल !
जलजासनविनुतपादजलजात ! सुधा-
जलराशि भव्यमंदिर !
जलजाकर - चारुहंस ! जानकिनाथा ! ।।१३७।।

मालिनि– कुवलयदळनेत्रा ! कोमल स्निग्धगात्रा !
भवमुखनुतिपात्रा ! भक्त वृक्षाळिचैत्रा !
रविशशिसमधामा[1] ! रक्षिताक्षांध्रि भामा !
कविजननुतनामा ! कावुमा मम्मु रामा ! ।।१३८।।

गद्यमु

इदि श्रीगौरीश्वर वरप्रसादलब्ध गुरुजंगमार्चन विनोद (नित्यशैवाचार संपन्न) सूरि जनविनुत कविता चमत्कारातुकूरि केसनसेट्टि तनय मोल्लनामधेय विरचितंबैन श्रीरामायण महाकाव्यंबुनंदु युद्धकांडमु सर्वंबुनु तृतीयाश्वासमु ।

।। मोल्ल रामायणमु संपूर्णमु ।।

१. रविशतसमधामा

मोह है। चिन्ता (चिन्तन) कवियों तथा तपस्वियों के चित्त में है। वर्ण-संकरता चित्रों तथा यवन (म्लेच्छ) लोगों में है। इनको छोड़कर ये गुण कहीं व्याप्त न हों ऐसा रामभूपालवर ने लीला से धरा (राज्य) का पालन किया ॥ १३५ ॥

### फलश्रुति

इस रामचरित को जिन लोगों ने लगातार सुना है (तथा) लिखा है और इच्छा से पठन किया है, वे श्रीराम की करुणा से, सुन्दरता से धरती पर शुभ को प्राप्त कर रहेंगे (सुखी जीवन बितायेंगे।) ॥ १३६ ॥

### आश्वासान्त पद्य और गद्य

हे जलजाक्ष ! हे भक्तवत्सल ! हे जलजासन (ब्रह्मा) से विनुत पाद जलजात (चरण कमल) वाले ! हे सुधा-जलराशि के भव्य मंदिररूपी जलजाकर (सरोवर) में विहार करनेवाले सुंदर हंस ! हे जानकीनाथ ! (वन्दना करती हूँ।) ॥ १३७ ॥

हे कुवलयदल नेत्रवाले ! कोमल स्निग्ध शरीरवाले ! भवमुख (ब्रह्मा आदि) से स्तुत्य होनेवाले ! भक्त-वृक्षालि को चैत (मास) के समान पोषण करनेवाले ! रवि तथा शशि के समान (अथवा शत रवियों के समान भव्य) धाम (निलय) वाले ! चरण धूलि से भामा (अहल्या) का उद्धार करनेवाले ! कविजन से संस्तुत्य नामवाले ! हे राम ! हमारी रक्षा करो।

यह श्री गौरीश्वर के वर के प्रसाद को प्राप्त, गुरुजंगम के अर्चन के विनोदी (नित्य शैवाचार सम्पन्न) सूरिजन (श्रेष्ठजन) से विनुत, कविता में चतुर, आतुकूरि केसन सेट्टि की तनूजा मोल्ल नामधारी से विरचित श्रीरामायण महाकाव्य में युद्धकाण्ड का यह तृतीयाश्वास पूरा (हो गया) है।

॥ मोल्ल रामायण सम्पूर्ण ॥

‘ प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी ।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ।। ’

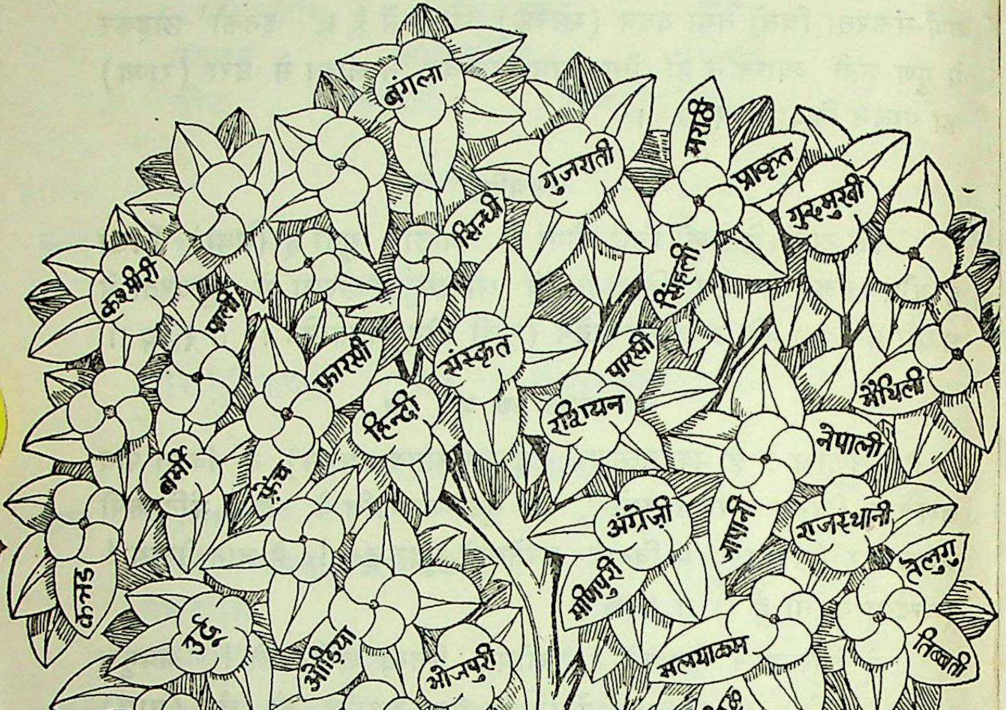


प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी

# ताज़ी विज्ञप्ति

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थः—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६० मूल्य ६०·००

२ ,, प्रेमानन्द रसामृत— ना० लिप्य० हिन्दी अनुवाद पृ० संख्या ४९६ मूल्य ३५·००

३ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत) १५वीं शती हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ०सं० ७५२ मू० ४०·००

४ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू०६०·००

५ बँगला— कृत्तिवास रामायण (पाँचकाण्ड)—१५वीं शती। हिन्दी पद्या० सहित नागरी लिप्य० पृ० ६२४ मू० २५·००

६ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० २५·००

७ ,, ,, उत्तरकाण्ड ,, ,, मूल्य २५·००

८ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ०४८९ मू०२०·००

९ ,, ललद्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ०१२० ,, १०·००

१० राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल पदमभगत कृत। पृ० ३०० मू० १५·००

११ तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवळ्ळुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ०३५२मू०२०·००

१२ ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ०६५२ मूल्य ४०·००

१३ ,, ,, अयोध्या-अरण्य पृष्ठ १०२४ मूल्य ७०·००

१४ ,, ,, किष्किन्धा-सुन्दर ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१५ ,, ,, युद्धकाण्ड पूर्वार्ध ,, १०१६ मूल्य ७०·००

१६ ,, ,, ,, उत्तरार्ध ,, ८४० मूल्य ७०·००

१७ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं, अभिनव पम्प विरचित (जैन-मतानुसार रामचरित्र ११वीं शती) पृ० ६९० मूल्य ४०·००

१८ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मूल्य २०·००

१९ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०·००

२० ,, श्री पोतन्न महाभागवतमु १-४ स्कन्धपृ० ८५६ मूल्य ७०·००

२१ ,, ,, ,, ५-९ ,, मूल्य ७०·००

२२ ,, ,, ,, १०-१२ स्कन्ध मूल्य ७०·००

२३ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू०६०·००

२४ ,, श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत) पृष्ठ १००४ मू० ७०·००

२५ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषद-व्या०) २८०मू०२०·००

२६ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मूल्य ८·००

२७ ,, गुज़श्तः लखनऊ (मौ० शरर) पृ० ३१६ मूल्य २०·००

२८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मूल्य ४०·००
२९ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०·००
३० ,, ,, ,, तीसरी सैंची पृ० ९६४ मूल्य ५०·००
३१ ,, ,, ,, चौथी सैंची पृ० ८०० मूल्य ५०·००
३२ ,, श्री दसम गुरुग्रन्थ साहिब प्रथम सैंची पृ० ८२० मू० ५०·००
३३ ,, ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ७०४ मू० ५०·००
३४ ,, ,, ,, ,, यंत्रस्थ मूल्य ५०·००
३५ ,, ,, ,, ,, ,, मूल्य ५०·००
३६ ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाज: दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ०१६४मू० १०·००
३७ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४·००
३८ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०·००
३९ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
४० असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
४१ ओड़िआ—बैदेहीश-विळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ०१०००,, ६०·००
४२ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०·००
४३ संस्कृत—मानस-भारती रामचरितमानस-सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद। पृ० ७४० मू० ५०·००
४४ ,, अद्भुत रामायण हिन्दी अनुवाद सहित पृ० २४४ मूल्य २०·००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

४५ अरबी क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४६·००
४६ ,, ,, केवल मूल; अरबी, नागरी दोनों लिपि में पृ०५२०मू० २३·००
४७ ,, ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मूल्य २३·००
४८ ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मूल्य १०·००
४९ ,, ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) भाग १ पृ० ३३६ मू० १५·००
५० ,, तफ़्सीर माजिदी (पार: १ से ५) क़ुर्आन शरीफ़ अरबी व नागरी, दोनों में मूल पाठ, तथा स्व० मौलाना अब्दुल् माजिद दर्याबादी का अनुवाद एवं वृहत् भाष्य हिन्दी में पृ० ५१२ मूल्य ५०·००
५१ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १५·००

---

प्राप्ति-स्थान— भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

# भुवन वाणी ट्रस्ट,

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८ चोपटियां रोड, लखनऊ—३

**यह ग्रन्थ सम्पूर्ण हो चुके हैं (सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण):—**

१—(बंगला) कृत्तिवास रामायण—आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर काण्ड बंगला मूल नागरी लिप्य०, अवधी पद्यानुवाद— मूल्य २५·००
२—(बंगला) कृत्तिवास रामायण लंका काण्ड ,, १५·००
३—(मलयाळम) एळुत्तच्छन्कृत महाभारत हिन्दी अनु० सहित ,, ४०·००
४—(कश्मीरी) रामावतारचरित—प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत ,, २०·००
५—बाइबिल सार (सालोमन के नीतिवचन) संस्कृत उद्धरणयुक्त ,, १·००
६—(उर्दू) श्री 'रुस्वा' कृत शरीफ़ज़ाद: (आर्यपुत्र) ,, ५·००
७—(गुरमुखी) जपुजी तथा सुखमनी साहब—गुरमुखी मूल पाठ तथा गीता के यशस्वी अनुवादक खा० ब० ख्वाज: दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनो देवनागरी लिपि में— मूल्य ५·००
८—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, श्वेताश्वतर) की फ़ारसीव्याख्या हिन्दी में— ,, २०·००
९—ज़ादे सफ़र (इस्लामी हदीस) ,, १२·००
१०—(तमिळ) तिरुक्कुरळ् नागरी में मूल, हिन्दी गद्यपद्यानुवाद— ,, २०·००
११—(मराठी) श्रीराम-विजय—पं० श्रीधर कृत सानुवाद ,, ४५·००
१२—(नेपाली) रामायण भानुभक्त कृत ,, २०·००
१३—(तेलुगु) मोल्ल रामायण ,, २०·००
१४—(कन्नड) पम्प रामायण—जैनसाहित्य ,, ४०·००
१५—(कश्मीरी) लल्लद्यद ,, ७·००
१६—(राजस्थानी) रुक्मिणीमंगल—पदम भगत कृत ,, १५·००
१७—(वाणी सरोवर)—उपर्युक्त अनुपम ग्रंथों का सानुवाद धारावाहिक देवनागरी लिप्यन्तरण का त्रैमासिक पत्र—वार्षिक ,, १०·००

**ट्रस्ट के अतिरिक्त, सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण के अन्य कार्य, जो अन्यत्र हो चुके हैं:—**

१८—(अरबी) क़ुर्आन (मूल आयतें अरबी व देवनागरी लिपि में, अनुवाद, टिप्पणी सहित)—इस्लामी धर्माचार्यों द्वारा प्रतिपादित— ,, ४०·००

**ट्रस्ट में प्रकाशित हो रहे सानुवाद देवनागरी-लिप्यन्तरण ग्रन्थ (यन्त्रस्थ):—**

१—(तमिळ) कम्ब रामायण २—(तेलुगु) रंगनाथ रामायण
३—(असमिया) माधवकंदली रामायण ४— ,, पोतन्न भागवतमु
५—(गुजराती) गिरधर रामायण ६—(सिंधी) स्वामी, शाह, सचल की त्रिवेणी
७—(मलयाळम) तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत अध्यात्म रामायण
८—(ओड़िआ) वैदेहीशविळास—उपेन्द्र भञ्ज ९—(गुरमुखी) श्रीगुरुग्रंथ साहब
१०—(मराठी) श्रीहरि-विजय—पं० श्रीधर कृत मूलपाठ अनुवाद सहित
११—(उर्दू) गुज़श्त: लखनऊ—मौ० शरर १२—(फ़ारसी) दाराशिकोह कृत ५० उपनिषदों की फ़ारसी-व्याख्या का धारावाहिक हिन्दी अनुवाद (द्वि. खण्ड)
१३—(अरबी) रियाज़ुस्सालिहीन (हदीस)—(ज़ादे सफ़र)
१४—रामचरितमानस (तुलसी)—संस्कृत पद्यानुवाद सहित, तथा
१५— ,, ओड़िया लिपि में लिप्यन्तरण एवं ओड़िया गद्य-पद्यानुवाद
१६— ,, बंगला ,, ,, बंगला पद्यानुवाद

---

वाणी प्रेस, लखनऊ—३ में मुद्रित एवं भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३ द्वारा प्रकाशित।
—द्वारा नन्दकुमार अवस्थी, सम्पादक